ऑपरेशन सिंदूर जारी है

चित्रगुप्त

BlueRose ONE.com
Stories Matter
NewDelhi • London

BLUEROSE PUBLISHERS
India | U.K.

Copyright © Chitragupt 2026

All rights reserved by author. No part of this publication may be reproduced, stored in a retrieval system or transmitted in any form or by any means, electronic, mechanical, photocopying, recording or otherwise, without the prior permission of the author. Although every precaution has been taken to verify the accuracy of the information contained herein, the publisher assumes no responsibility for any errors or omissions. No liability is assumed for damages that may result from the use of information contained within.

BlueRose Publishers takes no responsibility for any damages, losses, or liabilities that may arise from the use or misuse of the information, products, or services provided in this publication.

For permissions requests or inquiries regarding this publication, please contact:

BLUEROSE PUBLISHERS
www.BlueRoseONE.com
info@bluerosepublishers.com
+91 8882 898 898
+4407342408967

ISBN: 978-93-7825-508-3

Cover design: Mrs Meenu
Typesetting: Namrata Saini

First Edition: May 2026

अनुक्रमणिका

वर्ष 2025 - पहलगाम हमला 1

भारत का राजनीतिक एकीकरण.. 21

1947 भारत-पाकिस्तान युद्ध 26

1962 भारत-चीन युद्ध... 50

1965 भारत-पाक युद्ध... 74

नाभिकीय कार्यक्रम (Nuclear Programme)..................................104

बांग्लादेश मुक्ति युद्ध..106

कश्मीर आतंकवाद 128

‘कारगिल युद्ध’ 140

संसद भवन हमला 167

मुंबई हमला 178

उरी हमला..197

सुंजवम हमला 199

पुलवामा हमला 201

अनुच्छेद 370 205

‘ऑपरेशन सिंदूर’ जारी है 207

ऑपरेशन सिंदूर – अभी जारी है 214

वर्ष 2025 - पहलगाम हमला

दिनांक 22 अप्रैल 2025 का दिन कश्मीर घाटी के अनंतनाग जिले में, पहलगाम के समीप खूबसूरत बैसरन घाटी में एक सामान्य दिन था। बैसरन घाटी का यह खूबसूरत स्थान पहलगाम शहर से सात किलोमीटर दूर स्थित है। यह इलाका चारों तरफ देवदार के घने जंगलों से घिरा हुआ है और इस खूबसूरत स्थान को 'मिनी स्विट्ज़रलैन्ड' के नाम से भी जाना जाता है। इसलिए यह स्थान पर्यटकों के लिए आकर्षण का केंद्र है। सभी पर्यटक कश्मीर घाटी के खुशनुमा मौसम व खूबसूरती का आनंद ले रहे थे।

तभी भारतीय समयानुसार दिन के 2 बजकर 50 मिनट पर सेना की वर्दी पहने हुए, चार आतंकवादी बैसरन घाटी के, घास के मैदान में घुस आए। ये चारों आतंकवादी 'एम-4 कार्बाइन' व 'ए के-47 राइफल' से लैस थे। सर्वप्रथम आतंकवादियों ने पर्यटकों से उनके नाम व धर्म पूछे। फिर आतंकवादियों ने हिन्दू पुरुषों को मुस्लिम पुरुषों से अलग कर दिया। कुछ पर्यटकों को उनका धर्म पहचानने हेतु इस्लामी 'कलमा' पढ़ने को कहा गया। जब कुछ हिन्दू, 'कलमा' नहीं पढ़ पाये तो उनको पतलून (Trouser) उतारने पर मजबूर किया। आतंकवादियों ने देखा कि इन पुरुषों का 'ख़तना' हुआ है अथवा नहीं, जैसे ही आतंकवादियों को यह सुनिश्चित हुआ कि वे हिन्दू हैं, फिर आतंकवादियों ने बड़ी बेरहमी से, एकदम नजदीक से उन्हें गोली मार दी।

- इस हमले में पहला शिकार कानपुर (उ.प्र) निवासी नवविवाहित श्री शुभम द्विवेदी हुए। आतंकवादियों ने श्री शुभम द्विवेदी से उनका धर्म पूछा। श्री शुभम द्विवेदी ने जैसे ही बताया कि वह हिन्दू हैं, आतंकवादियों ने, उनकी नवविवाहिता पत्नी के सामने ही, उनके सिर में गोली मार दी। गोली लगते

ही श्री शुभम द्विवेदी गिर पड़े एवम् घटना स्थल पर ही उनकी मृत्यु हो गई।

इसी प्रकार

- भारतीय नौ सेना के लेफ्टिनेंट विनय नारवाल को, हिन्दू होने के कारण, उनकी धर्म पत्नी के सामने ही, तीन गोलियाँ मारी गईं।
- पुणे, महाराष्ट्र के निवासी श्री संतोष जगधा को 'कलमा' न पढ़ पाने के कारण सिर व पीठ में तीन गोलियाँ मारी गईं।
- विशाखापट्टनम, आंध्रप्रदेश के निवासी श्री जे सच्चंद्रा मोली ने जब दो बार पूछे जाने के बाद आतंकवादियों के प्रश्न का उत्तर नहीं दिया, तो उन्हें गोली मार दी गई।
- इंदौर, मध्य प्रदेश के निवासी श्री सुशील नाथ्याल को आतंकवादियों ने 'कलमा' पढ़ने के लिए कहा, जब वे कलमा नहीं पढ़ पाए तो उनकी पत्नी के सामने आतंकवादियों ने उन्हें गोली मार दी। उनकी पत्नी ने बताया कि आतंकवादियों ने मृत शरीर के साथ 'सेल्फ़ी' भी ली।
- एक स्थानीय कश्मीरी शिया मुस्लिम, सैयद आदिल हुसैन शाह ने बहादुरी दिखाते हुए हमलावर आतंकवादियों में से एक हमलावर के हाथ से राइफल छीनकर पर्यटकों को बचाने का और हमले को रोकने का प्रयास किया। किंतु आतंकवादियों ने बिना किसी संकोच के उन्हें भी तुरंत गोली मार दी। इस प्रयास में वह बेकसूर भी मारा गया।
- आतंकवादियों ने कुछ हिन्दू महिलाओं से कहा कि उन्हें इसलिए जीवित छोड़ा जा रहा है ताकि वे भारत के प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी को यह घटना सुना सकें।
- बाद में जांच के दौरान घटनास्थल से प्राप्त वीडियो में एक हृदय विदारक दृश्य देखा गया। एक महिला अपने पति की सहायता के लिए गुहार लगा

रही है और उसके सामने ही घास के मैदान पर खून से लथपथ उसके पति का मृत शरीर पड़ा हुआ है।

इस भयावह दुर्घटना में अपने प्राण गँवाने वाले पर्यटकों को सिर्फ इसलिए अपना जीवन गँवाना पड़ा क्योंकि वे 'हिन्दू' थे।

इस हमले में मारे गए पुरुष पर्यटकों के नाम इस प्रकार हैं-

क्रमांक	**नाम**	**निवास स्थान**	**मंतव्य**
1.	श्री सुशील नाथ्याल	इंदौर, (मध्य प्रदेश)	पर्यटक
2.	श्री हेमंत सुहास जोशी	मुंबई, (महाराष्ट्र)	पर्यटक
3.	श्री विनय नरवाल	करनाल, (हरियाणा)	पर्यटक
4.	श्री अतुल श्रीकांत सोनी	डोंबिवली, (महाराष्ट्र)	पर्यटक
5.	श्री नीरज उधवानी	उत्तराखण्ड	पर्यटक
6.	श्री बिरन अधिकारी	कोलकाता, (प. ब.)	पर्यटक
7.	श्री सुदीप न्यौपाने	बुरवल (नेपाल)	पर्यटक
8.	श्री शुभम द्विवेदी	कानपुर, (उत्तरप्रदेश)	पर्यटक
9.	श्री प्रशांतकुमार सतपथी	बालेश्वर, (उडीसा)	पर्यटक
10.	श्री मनीष रंजन	बिहार	पर्यटक
11.	श्री एम रामचंद्रन	कोच्चि (केरल)	पर्यटक
12.	श्री संजय लक्ष्मण लाली ठाणे,	मुंबई (महाराष्ट्र)	पर्यटक
13.	श्री दिनेश अग्रवाल	चंडीगढ़	पर्यटक
14.	श्री समीर गुहार	कोलकाता, (प.ब.)	पर्यटक
15.	श्री दिलीप दासली	पनवेल, मुंबई (महाराष्ट्र)	पर्यटक
16.	श्री जे सच्चंद्रा मोली	विशाखापट्टनम (आंध्रप्रदेश)	पर्यटक
17.	श्री मधुसूदन सोमिसेट्टी	बेंगलूरू (कर्नाटक)	पर्यटक
18.	श्री कस्तूबा गनवोटाय	पुणे (महाराष्ट्र)	पर्यटक
19.	श्री भारत भूषण	बेंगलुरू (कर्नाटक)	पर्यटक
20.	श्री सुमित परमार	भावनगर (गुजरात)	पर्यटक
21.	श्री यतेश परमार	भावनगर (गुजरात)	पर्यटक
22.	श्री तागेहापींग (वायुसेना कर्मचारी)	जीरो (अरुणाचल प्रदेश)	पर्यटक
23.	श्री शैलेशभाई एच. हिम्मतभाई कालादिया	सूरत, (गुजरात)	पर्यटक

24.	श्री मंजुनाथ राव	कर्नाटक	पर्यटक
25.	श्री संतोष जगधा	पुणे (महाराष्ट्र)	पर्यटक
26.	मो. सैयद आदिल हुसैन शाह	तहसील-हापतनगर, पहलगाम, (जे एण्ड के)	पहलगाम निवासी

पहलगाम हमले में घायलों की सूची –

क्रमांक	**नाम**	**निवास स्थान**	**मंतव्य**
1.	डोभीविनोबा,	गुजरात	गोली लगने से घायल
2.	डा, ए. परमेश्वर,	तमिलनाडु	पेट में चोट
3.	शशिकुमारी नाइक	कर्नाटक	गिरने से फ्रैक्चर, पति कुमार
4.	सांतानो,	तमिलनाडु	बेहोश, पुत्र संग्राम
5.	सोबेदे पाटिल,	मुंबई (महाराष्ट्र)	गर्दन पर चोट
6.	विनयभाई,	गुजरात	दाहिने हाथ में स्प्लिंटर चोट
7.	मनीक पटेल,	पनवेल (महाराष्ट्र)	मामूली चोट
8.	रेनू पांडे,	नेपाल	मामूली चोट
9.	वालाचंद	महाराष्ट्र	मामूली चोट
10.	अभिजया एम राव	कर्नाटक	मामूली चोट
11.	आकांक्षा,	इंदौर (मध्यप्रदेश)	मामूली चोट
12.	लक्षिता दास,	रायपुर (छत्तीसगढ़)	मामूली चोट
13.	जेनिफर,	इंदौर (मध्यप्रदेश)	सदमा
14.	शबरी गुहा,	कोलकाता (प. ब.)	सीधा टखने में चोट
15.	जया मिश्रा,	हैदराबाद (तेलंगाना)	मामूली चोट
16.	हर्षा जैन	महाराष्ट्र	मामूली चोट
17.	निकिता जैन	महाराष्ट्र	मामूली चोट

हिन्दू पर्यटकों को लक्ष्य बनाकर किये गये, इस क्रूरतापूर्ण हमले में सम्पूर्ण भारतवर्ष को ही नहीं अपितु विश्व को झकझोर कर रख दिया। प्रधानमंत्री श्री नरेंद्र मोदी जी 'पुलवामा हमले' के समय सऊदी अरब की यात्रा पर थे। वह अपनी यात्रा बीच में ही रोककर तुरंत भारत लौट आये। गृहमंत्री श्री अमित शाह जी ने

स्थिति का आकलन करने हेतु श्रीनगर की यात्रा की एवम् घटनास्थल का दौरा किया। दिनांक 23 अप्रैल 2025 को भारतीय सेना ने आतंकवादी विरोधी अभियानों के लिए स्वदेशी हेलिकॉप्टर 'एच ए एल ध्रुव' के संचालन हेतु मंजूरी दी। भारत ने अटारी-वाघा सीमा को तुरंत प्रभाव से बंद कर दिया। जो कि भारत व पाकिस्तान के बीच एकमात्र जमीनी व्यापार मार्ग है।

दिनांक 23 अप्रैल 2025 की रात्रि, भारत सरकार की तरफ से पाकिस्तान के साथ 'सिन्धु जल सन्धि' को तत्काल प्रभाव से निलम्बित करने की घोषणा की गई। भारत सरकार की तरफ से कड़े व स्पष्ट शब्दों में कहा गया कि जब तक पाकिस्तान भारत के विरुद्ध सीमा-पार से आतंकवाद को अपना समर्थन देना बंद नहीं कर देता, तब तक दोनों देशों के बीच 'सिन्धु जल सन्धि' को निलम्बित रखा जायेगा। आतंकवाद के विरुद्ध भारत सरकार द्वारा उठाया गया 'सिन्धु जल सन्धि' निलम्बन कदम, बहुत ही साहसिक कदम था। अब तक के इतिहास में भारत द्वारा पाकिस्तान के विरुद्ध आतंकवाद को बंद करने हेतु, इतना बड़ा साहसिक कदम नहीं उठाया गया था। इस उद्घोषणा के साथ ही पाकिस्तान में हड़कंप मच गया।

[इसलिए यहाँ पर 'सिन्धु जल सन्धि' को संक्षेप में समझना आवश्यक है। तभी हम इसके निलम्बन के प्रभाव को ठीक से समझ पायेंगे।

'सिन्धु जल सन्धि'

दिनांक 19 सितंबर, 1960 को भारत के तत्कालीन प्रधानमंत्री जवाहरलाल नेहरू जी और पाकिस्तान के राष्ट्रपति अयूब खान ने कराची (पाकिस्तान) में 'सिन्धु जल संधि' समझौते पर हस्ताक्षर किए थे। जिसमें विश्व बैंक (तत्कालीन 'पुनर्निर्माण और विकास हेतु अंतरराष्ट्रीय बैंक') ने मध्यस्थता की थी। सिंधु जल समझौते में तीन पश्चिमी नदियाँ — सिंधु, झेलम और चिनाब और तीन पूर्वी नदियाँ - सतलुज, ब्यास और रावी सम्मिलित हैं। इस समझौते के अनुसार, तीन 'पूर्वी' नदियों — ब्यास, रावी और सतलुज — का नियंत्रण भारत को दिया गया था तथा तीन 'पश्चिमी' नदियों — सिंधु, चिनाब और झेलम — का नियंत्रण पाकिस्तान

को दिया गया था। चूंकि पाकिस्तान के नियंत्रण वाली नदियों का प्रवाह पहले भारत से होकर बहता है उसके बाद पाकिस्तान में प्रवाहित होता है। इसलिए पाकिस्तान को भय था कि युद्ध आदि की स्थिति में उसे जल संकट, इत्यादि का सामना न करना पड़े। इस संधि के नियमानुसार सिंधु नदी के कुल पानी का मात्र 20% उपयोग भारत द्वारा किया जा सकता है। जिस समय यह संधि हुई थी उस समय पाकिस्तान के साथ भारत और पाकिस्तान के मध्य परिस्थितियां सामान्य थी। किन्तु दुर्भाग्यवश वर्ष 1965 में भारत व पाकिस्तान के बीच युद्ध हुआ और जिसमें पाकिस्तान कि पराजय हुई। एक बार पुनः वर्ष 1971 में भारत व पाकिस्तान के बीच युद्ध हुआ और पाकिस्तान कि पुनः पराजय हुई। जिसके परिणामस्वरूप पाकिस्तान को अपना एक हिस्सा गंवाना पड़ा और बंगला देश का जन्म हुआ। इन दोनों पराजयों बाद से ही तिलमिलाया, अपमानित पाकिस्तान लगातार सेना और आतंकवाद का इस्तेमाल भारत के विरुद्ध कर रहा है जिसके कारण, यह सिंधु जल समझौता संकट में आ गया। चूंकि जिस प्रकार यह नदियाँ भारत का हिस्सा हैं तो युद्ध कि स्थिति में भारत इस समझौते को नजरअंदाज करके पूरे जल का उपयोग सिंचाई, विद्युत बनाने और जल संचय इत्यादि के लिए कर सकता है।]

इसके साथ ही अटारी-वाघा सीमा पर एकीकृत चेक पोस्ट को बंद करने का आदेश भी भारत सरकार द्वारा दिया गया। पाकिस्तानी नागरिकों के भारत की यात्रा पर प्रतिबंध लगाने का आदेश जारी किया गया एवम् जो भी पाकिस्तानी नागरिक भारत की यात्रा पर थे, उनके वीज़ा को तुरंत प्रभाव से रद्द करने एवम् उन्हें तुरंत भारत छोड़ने का आदेश जारी किया गया। नई दिल्ली स्थित पाकिस्तानी उच्चायोग में कार्यरत पाकिस्तानी सैन्य सलाहकारों को तुरंत प्रभाव से निष्कासित करने का आदेश जारी किया गया एवम् इस्लामाबाद, पाकिस्तान से उनके भारतीय समकक्षों को भारत आने का आदेश दिया गया।

प्रतिक्रियाएं –

हिन्दू पर्यटकों को लक्ष्य बनाकर किये गये 'पुलवामा हमले' के विरोध में तीखी प्रतिक्रियाएं सामने आई।

- राष्ट्रपति श्रीमती द्रौपदी मुर्मू जी ने इसे 'कायरतापूर्ण और अमानवीय कृत्य' बताया।
- उपराष्ट्रपति श्री जगदीप धनखड़ जी ने इसे 'निन्दनीय' बताया एवम् इसकी कड़ी निंदा की।
- प्रधानमंत्री श्री नरेंद्र मोदी जी ने इस कायराना हमले को 'झकझोर देनेवाला और पीड़ादायक' बताया और संकल्प के साथ कहा कि दोषियों को न्याय के कटघरे में लाया जायेगा।
- भारत के रक्षा मंत्री श्री राजनाथ सिंह जी ने इसे 'कायरता का कार्य' कहा।

इस अमानवीय घटना ने भारत को ही नहीं अपितु सम्पूर्ण विश्व को झकझोर दिया था। इसलिये पूरे विश्व की ओर से प्रतिक्रियाएं आयीं।

- संयुक्त राष्ट्र महासचिव श्री एंटोनियो गुटेरेस जी ने इस हमले की कड़ी निंदा की एवम् जोर देकर कहा कि किसी भी परिस्थिति में नागरिकों पर हमले स्वीकार्य नहीं हैं।

संयुक्त राज्य अमेरिका

- राष्ट्रपति श्री डोनल्ड ट्रंप ने अपनी संवेदना व्यक्त की और कहा कि 'आतंकवाद के विरुद्ध संयुक्त राज्य अमेरिका भारत के साथ मजबूती से खड़ा है'।

- उपराष्ट्रपति श्री जे. डी. वेंस, जो 'पुलवामा हमले' के समय भारत यात्रा पर थे, उन्होंने इसे 'विनाशकारी आतंकवादी हमला' बताया और पीड़ितों और उनके परिवारों के प्रति अपनी 'संवेदना और प्रार्थना' व्यक्त की।
- विदेशमंत्री मार्को रूबियो ने कहा कि 'आतंकवाद के खिलाफ संयुक्त राज्य अमेरिका भारत के साथ खड़ा है'।
- महान्यायवादी पामेला लॉन्डी ने इस घटना में मारे गए निर्दोष भारतीयों के लिए प्रार्थना की एवम् भारत के साथ एकजुटता व्यक्त की।
- सीनेटर चक शूमर ने पीड़ितों के लिए अपना दुःख व्यक्त किया एवम् घायलों के शीघ्र स्वस्थ होने की कामना की एवम् इसके साथ ही यह जोर देते हुए कहा कि 'इस तरह की अनुचित हिंसा को जन्म देने वाली नफरत के प्रति कोई सहिष्णुता नहीं है'।
- रिपब्लिकन कांग्रेसी ब्रायन फिट्ज़पैट्रिक ने आतंकवाद का मुकाबला करने में भारत देश व प्रधानमंत्री श्री नरेंद्र मोदी जी के साथ अमेरिका की 'मजबूत एकजुटता' की पुष्टि की।

अन्य देशों की प्रतिक्रियाएं

- रूस के राष्ट्रपति श्री व्लादिमीर पुतिन ने हमले की निंदा की।
- इटली की प्रधानमंत्री जियोर्जिया मेलानी ने भी हमले की निंदा की।
- फ्रांस के राष्ट्रपति श्री इमैनुएल मैक्रो ने अपना गहरा दु:ख व्यक्त किया और पीड़ित परिवारों के प्रति अपनी संवेदना व्यक्त की।
- युनायटेड किंगडम के प्रधानमंत्री श्री कीर स्टारमर ने इस हमले को 'भयानक" और पूर्ण रूप से विनाशकारी' बताया।
- जर्मनी के चांसलर श्री ओलाफ़ शोल्ज़ ने हमले की निंदा की।
- डेन्मार्क के प्रधानमंत्री श्री मेटे फ्रेडरिकसेन ने हमले की निंदा की।

- कनाडा के प्रधानमंत्री श्री मार्क कार्नी ने इसे 'संवेदनहीन और चौंकानेवाली हिंसा' का कार्य बताया और अपनी संवेदना व्यक्त की।
- विपक्षी नेता पियरे पोइलिव्रे ने भी अपनी संवेदना व्यक्त की।
- कतर के विदेश मंत्रालय ने हमले की कड़ी निंदा और भर्त्सना की, पीड़ितों के परिवारों और भारतीय नागरिकों के प्रति संवेदना व्यक्त की।
- यूरोपीय संघ की अध्यक्ष श्रीमती उर्सुला वॉन डेरलेयेन ने इसे 'घिनौना आतंकवादी' हमला बताया।
- चीन के विदेश मंत्रालय ने अपनी सहानुभूति व्यक्त की एवम् हमले की कड़ी निंदा की।

पाकिस्तान को लगा कि सदैव की भाँति भारत व सम्पूर्ण विश्व की तरफ से दिनांक 22 अप्रैल 2025 को उसके द्वारा किये गये आतंकवादी हमले की निंदा व बयानबाजी करने की औपचारिकता के पश्चात् मामला शांत हो जायेगा अथवा छोटी-मोटी कार्यवाही की जायेगी। जैसा कि इससे पूर्व इतिहास में अक्सर होता रहा है। **किंतु इस बार ऐसा नहीं था। देश की बागडोर प्रधानमंत्री श्री नरेंद्र मोदी जी के मजबूत हाथों में थी।** राष्ट्रीय अन्वेषण अभिकरण (NIA-National Investigation Agency) की टीम तुरंत प्रभाव से सक्रिय हुई एवम् 23 अप्रैल 2025 को घटना स्थल का दौरा करने के पश्चात् जाँच आरम्भ की। प्रत्यक्षदर्शियों के बयान लिए गए, जिनकी सहायता से जम्मू और कश्मीर पुलिस तीन आतंकवादियों के स्केच जारी करने में सफल हो पाई। जम्मू-कश्मीर पुलिस द्वारा बनाए गए इन स्केचों ने आगे की जाँच में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई। आगे की जाँच में इस बात की पुष्टि हुई कि ये तीन आतंकवादी ही दिनांक 22 अप्रैल 2025 के पहलगाम हमले के मुख्य आरोपी हैं जो कि उक्त हमले में शामिल थे। आगे की जाँच में ज्ञात हुआ कि उपरोक्त तीनों आतंकवादी पाकिस्तान देश के 'लश्कर-ए-तैयबा' नामक आतंकवादी समूह से जुड़े हुए हैं। इनकी पहचान आसिफ फौजी, सुलेमान शाह और अबू तल्हा के रूप में की गई। इन्हें क्रमशः मूसा, यूनुस एवम् आसिफ कोड नाम से पुकारा जाता था। जाँच में यह भी पाया

गया कि ये तीनों आतंकवादी पुंछ क्षेत्र में उग्रवाद से संबंधित मामलों से भी जुड़े हुए थे।

‘लश्कर-ए-तैयबा’ (LeT) का परिचय

लश्कर-ए-तैयबा (LeT) दक्षिण एशिया के सबसे बड़े और सक्रिय पाकिस्तानी इस्लामी आतंकवादी संगठनों में से एक है। हाफ़िज़ सईद द्वारा स्थापित यह संगठन कश्मीर से भारत का शासन हटाने और उसे पाकिस्तान में एकीकृत करने के लिए मुख्य रूप से भारत के विरुद्ध काम करता है। इसे भारत, अमेरिका, और यू एन द्वारा प्रतिबंधित किया गया है।

लश्कर-ए-तैयबा की मुख्य बातें:

- **स्थापना:** वर्ष 1980 के दशक के मध्य में हाफ़िज़ मुहम्मद सईद, ज़फ़र इक़बाल और अब्दुल्ला अज़्ज़म ने अफ़गानिस्तान के कुनार प्रांत में इसकी स्थापना की।
- **आधार:** यह संगठन पाकिस्तान के लाहौर से अपनी गतिविधियाँ चलाता है और पाक अधिकृत कश्मीर (पी ओ के- पाक ऑक्यूपाइड कश्मीर) में इसके प्रशिक्षण शिविर हैं।
- **उद्देश्य:** जम्मू-कश्मीर में भारतीय शासन को समाप्त करना और उसे पाकिस्तान में शामिल करना है।
- **प्रमुख हमले:** यह समूह भारत में 2008 के मुंबई हमले (26/11), संसद हमले और कई अन्य आतंकी घटनाओं का मुख्य आरोपी है।
- **प्रतिबंध:** इसे संयुक्त राष्ट्र सुरक्षा परिषद (UNSC), अमेरिका, भारत और ब्रिटेन सहित कई देशों और संस्थाओं ने एक विदेशी आतंकवादी संगठन के रूप में प्रतिबंधित किया है।

- **फ्रंट समूह:** जमात-उद-दावा (JuD) को लश्कर की एक धर्मार्थ शाखा और मोर्चे के रूप में जाना जाता है।

जाँच में यह भी सामने आया कि इन आतंकवादियों ने दिनांक 22 अप्रैल 2025 के पहलगाम हमले को रिकॉर्ड करने के लिए बॉडी कैमरे का उपयोग किया था, जो 'लश्कर-ए-तैयबा' के प्रचार का एक तरीका है। सेना, अर्ध सैनिक बल एवम् जम्मू-कश्मीर पुलिस द्वारा संयुक्त घेराबंदी एवम् तलाशी अभियान युद्ध स्तर पर आरम्भ किया गया। पहलगाम में अस्थाई नाकाबंदी लगाई गई। इस संबंध में अधिक जानकारी एकत्र करने के उद्देश्य से हेलिकॉप्टरों की मदद ली गई।

इसके बाद पाकिस्तान एवम् सम्पूर्ण विश्व ने भारत व भारतीय सैन्य ताकत का, वह रूप देखा, जिसकी उन्होंने स्वप्न में भी कल्पना नहीं की थी।

दिनांक 22 अप्रैल 2025 को पाकिस्तान समर्थक आतंकवादी समूह 'लश्कर-ए-तैयबा' द्वारा पहलगाम में 26 हिन्दू पुरुष पर्यटकों (25 भारतीय और एक नेपाली) की क्रूरतापूर्वक हत्या के जवाब में, भारत की 26 बेटियों का सुहाग उजाड़ने के जवाब में। इस भयावह, अमानवीय घटना के 14 दिनों के पश्चात् दिनांक 06-07 मई 2025 की रात्रि, भारतीय समयानुसार 1:05 से 1:30 बजे के बीच भारत ने आतंकवाद के विरुद्ध 'ऑपरेशन सिंदूर' के रूप में पाकिस्तान पर बड़ी सैन्य कार्यवाही की।

जिसमें पाकिस्तान प्रशासित कश्मीर (मुजफ्फराबाद एवम् कोटली) और पाकिस्तान के पंजाब प्रांत (बहावलपुर) में छह स्थानों को लक्ष्य बनाकर चौबीस हमले किए गए। ये समस्त हमले, नियंत्रण रेखा और अन्तर्राष्ट्रीय सीमा, दोनों के पार थे। हमले एकदम सटीक थे। क्योंकि भारतीय सेना एक गोली - एक दुश्मन पर विश्वास करती है। ये हमले इतने सटीक थे कि भारतीय सैन्य क्षमता को देखकर सम्पूर्ण विश्व ने 'दाँतों तले उँगली दबाई'। पाकिस्तान को इन हमलों की कतई उम्मीद नहीं थी।

भारत की तीनों सेनाओं (थल सेना, वायु सेना एवम् नौ सेना) ने मिलकर 'ऑपरेशन सिंदूर' को संयुक्त रूप से सफल बनाया। 'ऑपरेशन सिंदूर' की सफलता भारतीय सेनाओं (थल सेना, वायु सेना एवम् नौ सेना) के संयुक्त सफल प्रयास का एक उत्कृष्ट उदाहरण है। सम्पूर्ण विश्व ने भारत की सैन्य ताकत को देखकर आश्चर्यचकित था।

दिनांक 06-07 मई 2025 की रात्रि को अपने ऊपर भारत द्वार किए गए हमले का जवाब देते हुए पाकिस्तान ने, दिनांक 07 मई 2025 को जम्मू-कश्मीर पर मिसाइल हमले किए। भारतीय सेना के 'एन्टी एयरक्राफ्ट सिस्टम' ने समस्त हमलों को हवा में ही नष्ट कर दिया।

भारतीय वायु सेना ने दिनांक 06-07 मई 2025 की रात्रि, भारतीय समयानुसार 1:05 से 1:30 बजे के बीच 'ऑपरेशन सिंदूर' के तहत पाकिस्तान और पाकिस्तान प्रशासित कश्मीर में नौ आतंकवादी ठिकानों पर एअर स्ट्राइक की एवम् इस एअर स्ट्राइक में भाग लेने वाले सभी पायलट एवम् सैनिक सुरक्षित वापस लौट आए। जबकि पाकिस्तान के सरकारी मीडिया ने यह झूठा दावा किया कि पाकिस्तानी वायु सेना ने दो भारतीय फाइटर विमानों को मार गिराया है एवम् क्षतिग्रस्त भारतीय फाइटर विमान की तस्वीर भी मीडिया पर दिखाई। पाकिस्तानी सरकारी मीडिया ने यह भी झूठा दावा किया कि पाकिस्तानी सेना ने जवाबी कार्यवाही में भारतीय ब्रिगेड मुख्यालय को नष्ट कर दिया है। भारतीय प्रेस परिषद ने पाकिस्तान के इस झूठे बयान से पर्दा उठाते हुए बताया कि कोई भी भारतीय जेट विमान नहीं मार गिराया गया है एवम् यह भी स्पष्ट किया कि पाकिस्तान ने जिस क्षतिग्रस्त भारतीय फाइटर विमान की तस्वीर जारी की है, यह दुर्घटनाग्रस्त मिग 21 को दिखाने वाली तस्वीर कथित तौर पर एक वर्ष पुरानी है। इसके साथ ही, भारतीय प्रेस परिषद ने यह भी स्पष्ट किया कि न तो भारतीय ब्रिगेड मुख्यालय और न ही श्रीनगर एअर बेस पर पाकिस्तान द्वारा कोई भी हमला किया गया है। जब कि पाकिस्तान से संचालित ''जैश-ए-मोहम्मद'' की तरफ से एक बयान आया कि भारतीय सटीक हवाई हमले में बहावलपुर, पाकिस्तान में

आतंकवादियों के सरगना नेता ‘मसूद अजहर’ के परिवार के दस सदस्यों की मृत्यु हो गई है एवम् इसके अलावा चार बेहद करीबी सहयोगी भी मारे गए हैं।

भारत ने देश की दो बहादुर बेटियों, कर्नल सोफिया कुरैशी और विंग कमांडर व्योमिका के माध्यम से ‘ऑपरेशन सिंदूर’ की जानकारी समस्त विश्व को साझा करने का निर्णय लिया।

इस मिशन के दौरान भारत ने पाकिस्तान स्थित आतंकवादियों के 9 ठिकानों को, सटीकता से किये गए हमलों द्वारा सफलतापूर्वक नष्ट किया गया। इस मिशन में इस बात का विशेष ध्यान रखा गया कि किसी भी पाकिस्तानी नागरिक को कोई हानि न पहुँचे। इस संदर्भ में संबंधित एजेंसियों से प्राप्त जानकारियों को बेहद गंभीरता से लिया गया। इस ऑपरेशन में पाकिस्तानी सैन्य ठिकानों को भी निशाना नहीं बनाया गया अपितु सिर्फ आतंकवादी ठिकानों को ही निशाना बनाया गया था।

निम्नलिखित ठिकानों को भारत ने लक्ष्य किया

पाकिस्तानी समाचार एजेंसी ‘पी टी आई’ के हवाले से बताया गया कि प्रतिबंधित आतंकी संगठनों ‘जैश-ए-मोहम्मद’, लश्कर-ए-तैयबा और हिजबुल मुजाहिदीन के मुख्यालयों को लक्ष्य बनाकर रात के समय नौ ठिकानों पर विशेष कार्यवाही की गई-

1. मरकज़ सुभान अल्लाह, बहावलपुर, पाकिस्तान
2. ‘जैश-ए-मोहम्मद’ (JeM) का ठिकाना
3. मरकज़ तैयबा, मुरिदके, पाकिस्तान
4. लश्कर-ए-तैयबा (LeT) का मुख्यालय
5. सरजल, टेहड़ा कलां, पाकिस्तान
6. ‘जैश-ए-मोहम्मद’ (JeM) का एक अन्य ठिकाना
7. महमूना जोया, सियालकोट, पाकिस्तान
8. हिजबुल मुजाहिदीन (HM) का ठिकाना

9. मरकज़ अहले हदीस, बरनाला, पाकिस्तान
10. लश्कर-ए-तैयबा (LeT) का ठिकाना
11. मरकज़ अब्बास, कोटली, पाकिस्तान
12. 'जैश-ए-मोहम्मद' (JeM) का केंद्र
13. मस्कर रहील शहीद, कोटली, पाकिस्तान
14. हिजबुल मुजाहिदीन (HM) का प्रशिक्षण शिविर
15. शवाई नाला कैंप, मुजफ्फराबाद, पाकिस्तान
16. लश्कर-ए-तैयबा (LeT) का आतंकी शिविर
17. सैयदना बिलाल कैंप, मुजफ्फराबाद, पाकिस्तान
    'जैश-ए-मोहम्मद' **(JeM)** का संचालन केंद्र

लगभग 87 घंटे तक चला 'ऑपरेशन सिंदूर' न केवल पाकिस्तान को भारत की तरफ से आतंकवाद के विरुद्ध एक करारा जवाब था, बल्कि अंतरराष्ट्रीय मंच पर भारतीय रणनीतिक व कूटनीतिक क्षमता का भी एक उत्कृष्ट प्रमाण है। यह स्पष्ट करता है कि भारत की भूमि पर कोई भी आतंकी घटना किसी भी अन्य देश के माध्यम से प्रत्यक्ष या अप्रत्यक्ष रूप से की जाती है तो उसके विरुद्ध सख्त सैनिक कार्यवाही की जाएगी।

'ऑपरेशन सिंदूर' के दस मुख्य तथ्य

1. बहावलपुर के अहमदपुर पूर्व में 'जैश-ए-मोहम्मद' का गढ़ निशाने पर : भारतीय मिसाइलों द्वारा चार सफल हमले बहावलपुर के अहमदपुर पूर्व में सुभान मस्जिद के पास किए गए। यह 'जैश-ए-मोहम्मद' और उसके प्रमुख मौलाना मसूद अज़हर का प्रमुख अड्डा है। इस अड्डे ने भारत के खिलाफ आतंकी हमलों के संदर्भ में अति महत्वपूर्ण भूमिका निभाई है।

2. आतंकी निशाना बने : मुजफ्फराबाद स्थित बिलाल मस्जिद और सुभान मस्जिद (जहाँ से मस्जिदों की आड़ में भारत के खिलाफ आतंकवादी गतिविधियों

को अंजाम दिया जा रहा था) पर हमला किया गया। इन हमलों में आठ आतंकवादियों के मारे जाने की पुष्टि हुई।

3. सियालकोट, कोटली, मुरीदके सहित अन्य आतंकवादी ठिकानों पर हमले : डी जी आई एस पी आर ने सियालकोट, मुरीदके, कोटली लोहारा, शकरगढ़ और कोटली इलाकों में भारतीय मिसाइलों के सटीक हमलों की पुष्टि की। इन हमलों से पाकिस्तान में हड़कंप मच गया।

4. भारत द्वारा बालाकोट के बाद दूसरी बड़ी जवाबी कार्यवाही : 'ऑपरेशन सिंदूर' दिनांक 26 फरवरी 2019 को भारत द्वारा की गई बालाकोट एअर स्ट्राइक के पश्चात्, दूसरी बड़ी सैनिक जवाबी कार्यवाही मानी जा रही है। दिनांक 14 फरवरी 2019 को हुए 'पुलवामा हमले' के 6 वर्ष पश्चात् भारत ने एक बार पुन: सख्त सैनिक कार्यवाही के माध्यम से आतंकवाद के खिलाफ अपनी रणनीति स्पष्ट कर दी है।

5. 'ऑपरेशन सिंदूर' में लक्षित 9 आतंकवादी ठिकानों में से 4 पाकिस्तान के अंदर एवम् 5 ठिकाने पाकिस्तान अधिकृत कश्मीर (पी ओ के- पाक ऑक्यूपाइड कश्मीर) में स्थित थे। पाकिस्तान के जिन शहरों में हमले हुए, उनमें बहावलपुर, सियालकोट एवम् मुरीदके प्रमुख हैं।

6. भारतीय 24 मिसाइल हमलों की पुष्टि : भारतीय 24 हमलों की पुष्टि, पाकिस्तानी सेना के प्रवक्ता और 'आई एस पी आर' के डी जी लेफ्टिनेंट जनरल अहमद शरीफ चौधरी ने एक प्रेस कॉन्फ्रेंस के माध्यम से की थी।

7. भारत द्वारा 'ऑपरेशन सिंदूर' के माध्यम से पाकिस्तानी आतंकी ठिकानों पर की गई भारतीय सैनिक कार्यवाही की जानकारी अमेरिका, ब्रिटेन, रूस, सऊदी अरब और UAE जैसे प्रमुख देशों को प्रदान की।

8. भारत की तीनों सेनाओं (जल, थल, नभ) ने मिलकर इस सफल 'संयुक्त ऑपरेशन' को अंजाम दिया।

9. कुल मिलाकर इन हमलों में सौ से ज्यादा आतंकवादियों को यमराज के पास पहुँचाया गया।

10. 'ऑपरेशन सिंदूर' को भारत की आतंकवाद के खिलाफ 'नई लाल रेखा' के रूप में देखा जायेगा।

मैं यह कहना चाहूँगा कि 'ऑपरेशन सिंदूर' एक संवेदनशील मामला है। इसके संदर्भ में एकदम बेहद सटीक तथ्य ज्ञात करना मुश्किल है। भारतीय सुरक्षा एजेंसियों द्वारा सिर्फ न्यूनतम आवश्यक जानकारी ही साझा की जाती है। इसलिए अलग-अलग रिपोर्टों में अलग-अलग दावे किये जा सकते हैं। लेकिन मैं, दावों को लेकर किसी वाद-विवाद में नहीं जाऊंगा। सबसे महत्वपूर्ण यह है कि भारत ने 'ऑपरेशन सिंदूर' में पाकिस्तान पर अनेकों हमले किये, जिनमें ब्रह्मोस मिसाइल, आकाश मिसाइल के अलावा अन्य कई घातक हथियार उपयोग किये गये थे। इन हमलों में पाकिस्तान के लगभग 11 एअरबेस तबाह हो गये थे। रिपोर्टों के अनुसार, भारत ने पाकिस्तान के दो JF-17, एक F-16 विमान को भी सफलतापूर्वक मार गिराया। इसके अलावा पाकिस्तान के 'एअर डिफेंस सिस्टम HQ-9' को भी बरबाद कर दिया था।

भारत की ओर से हुए इस तीव्र हमले में पाकिस्तान को बहुत हानि हुई। परिणामस्वरूप 'ऑपरेशन सिंदूर' के माध्यम से भारत ने पाकिस्तान को चौतरफा हानि पहुँचाई है, सैन्य दृष्टि से मात्र तीन दिन के अंदर ही पाकिस्तान ने घुटने टेक दिए एवम् युद्धविराम के लिए विवश हो गया। कूटनीतिक दृष्टि से भी पाकिस्तान की करारी हार हुई है। दिवालियापन की कगार पर खड़े हुए, कंगाल पाकिस्तान को इस संघर्ष में लगभग 18-22 बिलियन डॉलर का वित्तीय नुकसान होने की संभावना है। इसमें प्रत्यक्ष सैन्य नुकसान लगभग 1.75 से 1.9 बिलियन डॉलर का है एवम् अन्य आर्थिक नुकसान लगभग 16-20 बिलियन डॉलर होने का अनुमान है। इतने बड़े नुकसान ने पाकिस्तान की कमर तोड़ कर रख दी है।

'ऑपरेशन सिंदूर' के पाँच पराक्रम

1. आतंकवाद को करारा जवाब
2. कूटनीतिक रणनीति
3. भारतीय सेनाओं के शौर्य का शानदार प्रदर्शन
4. एकजुट भारत
5. लक्ष्यों की निशानदेही और सटीक निशाना

पाकिस्तानी सेना की तरफ से भी जोरदार जवाबी कार्यवाही की गई, जिसके तहत जम्मू, श्रीनगर एवम् अमृतसर जैसे शहरों को निशाना बनाकर कई मिसाइल एवम् ड्रोन हमले किये गये। किंतु मजबूत भारतीय 'वायु रक्षा नेटवर्क' (एंटी एयरक्राफ्ट सिस्टम) ने इन हमलों को हवा में ही नष्ट कर दिया और भारतीय नागरिकों व सैनिक ठिकानों की सुरक्षा सुनिश्चित की। 'ऑपरेशन सिंदूर' में भारतीय (वायु) सेना की समर, आकाश तीर एवम् एकीकृत 'वायु कमान एवम् नियंत्रण प्रणाली' (IACCS) ने अति महत्वपूर्ण भूमिका निभाई। इनके माध्यम से भारतीय थल सेना, वायु सेना व नौ सेना के बीच एक समन्वय स्थापित हुआ। परिणामस्वरूप कम ऊँचाई वाले व अधिक ऊँचाई वाले समस्त मिसाइल व ड्रोन हमलों को 100% मारक क्षमता के साथ हवा में ही नष्ट कर दिया गया। इन प्रणालियों के माध्यम से जो सटीक डाटा प्राप्त हुआ उसका उपयोग पाकिस्तान के ऊपर सटीक हमला करने में भी किया गया। मैं सभी को गर्व के साथ बताना चाहूँगा कि आकाश तीर भारत की स्वयं निर्मित 'भारतीय वायु रक्षा नियंत्रण एवम् रिपोर्टिंग प्रणाली' (Indian Air Defence Control and Reporting System) है, जिसे भारत इलेक्ट्रॉनिक्स लिमिटेड (BEL) ने निर्मित किया है। पाकिस्तान के ड्रोन्स, मिसाइलें भारत के सशक्त 'एअर डिफेंस सिस्टम' के सामने तिनके की तरह बिखर गए। इन्हें भारतीय सशक्त 'एअर डिफेंस सिस्टम' ने आसमान में ही नष्ट कर दिया।

युद्ध विराम

जब पाकिस्तान ने देखा कि उसकी सेना के समस्त मिसाइल व ड्रोन हमले भारतीय सशक्त 'एअर डिफेंस सिस्टम' ने नष्ट कर दिए हैं एवम् पाकिस्तानी हमलों के बाद भी भारत पूरी तरह सुरक्षित है। जबकि भारतीय मिसाइल हमले एकदम अचूक व सटीक हैं, इनसे बड़े पैमाने पर पाकिस्तान का नुकसान हुआ है। जिससे पाकिस्तान स्वयं के देश में व संपूर्ण विश्व में, कहीं मुंह दिखाने के लायक नहीं रहा है। तब पाकिस्तान, मजबूरी में भारत की आक्रामक कार्यवाही से बचने का रास्ता ढूँढ़ने लगा। पाकिस्तान ने विश्व के अनेक देशों से तनाव कम करने के मद्देनजर युद्ध रोकने हेतु गुहार लगाई, लेकिन कहीं कोई सुनवाई नहीं हुई। अंत में ,इस युद्ध में से बुरी तरह पराजित होने के बाद पाकिस्तान भारत के सामने गिड़गिड़ाया और दिनांक 10 मई 2025 को पाकिस्तानी सेना ने भारतीय 'डी जी एम ओ' से युद्ध विराम के लिए आग्रह किया और पाकिस्तान कि तरफ से यह कहा गया कि भविष्य में पाकिस्तान की तरफ से कोई आतंकी गतिविधि नहीं की जाएगी और सैन्य दुस्साहस नहीं दिखाया जाएगा। पाकिस्तान के इस वायदे के पश्चात् भारत युद्ध विराम के लिए इस शर्त पर तैयार हुआ कि पाकिस्तान के आतंकी और सैन्य ठिकानों पर जवाबी कार्यवाही भारत ने अभी सिर्फ स्थगित की है। भारत ने कहा कि हम आने वाले दिनों में पाकिस्तान के प्रत्येक कदम को कसौटी पर मापेंगे और देखेंगे कि वह क्या रवैया अपनाता है। तब तक भारतीय सेनाएं आर्मी, एयरफोर्स, नेवी व अर्धसैनिक बल लगातार अलर्ट पर रहेंगे। भारत ने स्पष्ट किया कि यदि भविष्य में पाकिस्तान द्वारा भारत पर कोई भी आतंकी हमला करवाया गया तो हम उसे युद्धविराम का उल्लंघन मानेंगे एवम् उस आतंकी हमले का मुँहतोड़ जवाब अपने तरीके से देंगे। भारत ने पाकिस्तान को चेतावनी देते हुए तीन बातें साफ कीं।

पाकिस्तान को तीन चेतावनी

प्रधानमंत्री श्री नरेंद्र मोदी जी ने पाकिस्तान को चेतावनी देते हुए तीन बातें स्पष्ट कर दीं।

पहली : यदि भारत पर पाकिस्तान की तरफ से कोई भी आतंकी हमला हुआ तो भारत द्वारा मुँहतोड़ जवाब दिया जाएगा। भारत अपनी शर्तों पर अपने तरीके से जवाब देगा। प्रत्येक उस स्थान को लक्ष्य करके कठोर कार्यवाही करेंगे जहाँ से आतंकी जड़ें निकलती हैं।

दूसरी : भारत कोई भी परमाणु धमकी नहीं सहेगा। नूक्लीअर ब्लैकमेल (Nuclear Blackmail) की आड़ में पनप रहे आतंकवादी ठिकानों पर भारत सटीक व निर्णायक प्रहार करेगा।

तीसरी : हम आतंकी सरपरस्त सरकार और आतंक के आकाओं को अलग-अलग नहीं देखेंगे।

भारत ने युद्ध विराम अपनी शर्तों पर किया है। केवल सैन्य कार्यवाही रोकी गई है। 'सिंधु जल संधि' का निलंबन और पाकिस्तानी नागरिकों का वीज़ा रद्द करने जैसे नीतिगत फैसले अब भी प्रभावी हैं।

यहाँ प्रश्न उठता है कि दिनांक 22 अप्रैल 2025 को पाकिस्तान समर्थक आतंकवादी समूह 'लश्कर-ए-तैयबा' द्वारा पहलगाम में 26 हिन्दू पुरुष पर्यटकों की क्रूरतापूर्वक हत्या करने का दुस्साहस क्यों हुआ और इसके जवाब में 14 दिनों के पश्चात् दिनांक 06-07 मई 2025 की रात्रि, भारतीय समयानुसार 1:05 से 1:30 बजे भारत को आतंकवाद के विरुद्ध 'ऑपरेशन सिंदूर' के समान बड़ी सैन्य कार्यवाही पाकिस्तान पर क्यों करनी पड़ी एवं 'ऑपरेशन सिंदूर' में विजय कि तरफ अग्रसर भारतीय सेना के विजय अभियान को यह कहकर बीच में ही क्यों रोक दिया कि 'ऑपरेशन सिंदूर' अभी जारी है'। इन सभी सवालों के जवाब जानने कि लिए हमें सन् 1947 में पहुँचना पड़ेगा-

भारत का राजनीतिक एकीकरण

स्वतंत्रता के समय 'भारत' के अन्तर्गत तीन प्रकार के क्षेत्र थे –

1. 'ब्रिटिश भारत के क्षेत्र'-- ये क्षेत्र लंदन के इंडिया ऑफिस तथा भारत के गवर्नर जनरल के सीधे नियंत्रण में थे।
2. देशी राज्य (Princely States)
3. फ्रांस व पुर्तगाल के औपनिवेशिक क्षेत्र (चंदन नगर, पाण्डिचेरी, गोवा आदि)

'भारतीय राष्ट्रीय कांग्रेस' ने इन सभी क्षेत्रों को एकीकृत करने का लक्ष्य घोषित किया था एवम् भारत सरकार ने समय के साथ कमोबेश इन लक्ष्यों को प्राप्त भी किया।

दरअसल सन् 1947 में स्वतंत्र होने के पश्चात् भी भारत पूर्णतया स्वतंत्र नहीं हुआ था, बल्कि अलग-अलग स्वतंत्र रियासतों में बँटा हुआ था। भारत को आज़ाद करने के लिए दिनांक 15 अगस्त 1947 का दिन लॉर्ड लुई माउंटबेटन ने जानबूझकर इसलिए तय किया था क्योंकि यही दिन द्वितीय विश्वयुद्ध में जापान द्वारा समर्पण करने की दूसरी वर्षगांठ थी। दिनांक 15 अगस्त 1945 को जापान ने आत्मसमर्पण किया था। इस वर्षगांठ को इतिहास में यादगार बनाने के उद्देश्य से लॉर्ड लुई माउंटबेटन ने दिनांक 15 अगस्त 1947 का दिन भारत की आज़ादी के लिए चुना था।

आज़ादी प्राप्ति के दौरान भारत में लगभग 565 देशी रियासतें थीं। तब आदरणीय सरदार वल्लभ भाई पटेल अंतरिम सरकार में उप प्रधानमंत्री के साथ देश के गृहमंत्री भी थे। हकीकत में, लॉर्ड लुई माउंटबेटन ने, भारत की आज़ादी के लिए पंडित जवाहरलाल नेहरू जी के समक्ष जो प्रस्ताव रखा था उसमें यह

प्रावधान था कि यह भारत के 565 रजवाड़े, भारत या पाकिस्तान में से किसी एक के साथ विलय को चुन सकते हैं अथवा यदि वे चाहें तो दोनों के साथ न जाकर अपने को स्वतंत्र भी रख सकते हैं। इन 565 रजवाड़ों में अधिकांश प्रिंसली स्टेट (ब्रिटिश भारतीय साम्राज्य का हिस्सा) थे। सरदार वल्लभ भाई पटेल ने, वी पी मेनन (पूरा नाम- राउ बहादुर वाप्पला पंगुन्नि मेनन) के साथ मिलकर इन 565 में से 561 रियासतों को स्वेच्छा से भारतीय परिसंघ में सम्मिलित होने के लिए एक-एक करके हस्ताक्षर करवा लिए थे। अब बचे रह गये थे – हैदराबाद, जूनागढ़, कश्मीर और भोपाल। जूनागढ़ पाकिस्तान में मिलने की घोषणा कर चुका था एवम् कश्मीर स्वतंत्र रहने की घोषणा कर चुका था। जूनागढ़, कश्मीर एवम् हैदराबाद तीनों राज्यों को भारतीय सेना की सहायता लेकर स्वतंत्र भारत में विलीन करवाया गया था। हैदराबाद को भारत में सम्मिलित करने के लिए **'ऑपरेशन पोलो'** चलाया गया।

'ऑपरेशन पोलो'

भारत की स्वतंत्रता के पश्चात् जब भारतीय संघ का गठन हो रहा था, तब हैदराबाद के निजाम नवाब बहादुर जंग ने भारत के बीच में होते हुए भी स्वतंत्र देश रहने की कवायद शुरू की थी। भारत-पाक विभाजन के दौरान हैदराबाद उन शाही घरानों में से था, जिन्हें पूर्ण आज़ादी दी गई थी। हालाँकि सन् 1948 में उनके पास स्वतंत्र रहने का विकल्प बचा ही नहीं था। अब उनके पास दो ही विकल्प बचे थे – भारत अथवा पाकिस्तान में शामिल होना। हैदराबाद में ज्यादातर हिंदू आबादी थी। किंतु वहाँ के मुसलमान शासक और अंतिम निजाम ओस्मान अली खान ने आज़ाद रहने का निर्णय लिया। उनके पास में साधारण सेना थी, निजाम ने साधारण सेना के बल पर ही आज़ाद रहने का निर्णय लिया था। निजाम ने ज्यादातर मुस्लिम सैनिकों वाली रज़ाकारों की सेना का संगठन किया।

भारत सरकार उत्सुकता से हैदराबाद की तरफ इस उम्मीद से देख रही थी कि हैदराबाद के निज़ाम स्वयं ही भारत संघ में सम्मिलित हो जाएंगे। किंतु मुस्लिम

लीग के नेता जिन्ना के प्रभाव में आकर हैदराबाद के निजाम बहादुर जंग ने भारतीय लोकतंत्र को स्वीकार नहीं किया था, नवाब ने काज़मी रज्मी (जो कि एम आई एम - मज़लिसे एत्तहुड मुस्लिमीन का प्रमुख नेता था) की सहायता से ज्यादातर मुस्लिम सैनिकों वाली राजकारस सेना बनाई थी जिसमें लगभग दो लाख सैनिक थे। चूंकि हैदराबाद में रहनेवाले हिंदू, हैदराबाद का भारत में विलय चाहते थे, वे मुस्लिम लीग के नेता जिन्ना व हैदराबाद के निजाम के विरोध में थे। इसलिए राजकारस सेना ने हैदराबाद में मुस्लिम आबादी बढ़ाने व विरोध खत्म करने के उद्देश्य से हैदराबाद में लूटपाट व हिंदुओं का कत्लेआम शुरू कर दिया। हिंदू महिलाओं के साथ सामूहिक बलात्कार व उनकी हत्या भी की गई। आधिकारिक आँकड़ों के अनुसार पाँच हज़ार से ज्यादा हिंदुओं को राजकारस सेना मार चुकी थी। हैदराबाद के निजाम को पाकिस्तान से बर्मा (वर्तमान म्यांमार) के रास्ते लगातार हथियार व पैसे की मदद दी जा रही थी। ऑस्ट्रेलिया की एक कंपनी भी उन्हें लगातार हथियार उपलब्ध करा रही थी। तब सरदार वल्लभ भाई पटेल जी को लगा कि हैदराबाद में स्थिति को नियंत्रण में करने के लिए तुरंत सैनिक कार्यवाही की आवश्यकता है। तब भारतीय सेना ने दिनांक 17 सितम्बर 1948 'ऑपरेशन पोलो' शुरू किया और पाँच दिन में ही राज़कारस की मुस्लिम सेना को आसानी से हराया गया अंततः दिनांक 17 सितम्बर 1948 को हैदराबाद का भारत में विलय हो गया एवम् हैदराबाद के अंतिम निजाम को सत्ता से अपदस्थ कर दिया गया।

इस अभियान के दौरान व्यापक तौर पर जातिगत हिंसा भी हुई थी। अभियान समाप्ति के पश्चात् पंडित जवाहरलाल नेहरू जी ने इस संदर्भ में जाँच के लिए एक कमिटी का गठन किया था। जिसकी रिपोर्ट वर्ष 2014 में सार्वजनिक की गई थी अर्थात् इससे पूर्व कमिटी की रिपोर्ट को जारी ही नहीं किया गया था। रिपोर्ट के अनुसार इस अभियान में 27 से 40 हजार जानें गई थीं। हालाँकि जानकारों के अनुसार यह आँकड़ा दो लाख से भी ज्यादा है।

भोपाल का भारत में विलय

अब अंत में सिर्फ भोपाल ही बचा था और अंततः भोपाल को भी मजबूरन स्वतंत्र भारत में मिलना ही पड़ा। इस प्रकार भोपाल का विलय सबसे अंत में भारत में हुआ था। दिनांक 01 जून 1949 को भोपाल रियासत, भारत का अभिन्न अंग बन गई थी। भोपाल के नवाब हमीदुल्लाह को 11 लाख रुपये का सालाना गुजारा भत्ता देने का निर्णय लिया गया। लगभग 225 वर्ष पुराने (1724 के 1949) नवाबी शासन का प्रतीक रहा तिरंगा (काला, सफेद व हरा) लाल कोठी (वर्तमान राजभवन) से उतारा जा रहा था और भारत का तिरंगा (केसरिया, सफेद व हरा) आन-बान-शान से चढ़ाया जा रहा था।

कश्मीर का भारत में विलय

सन 1947 में अंग्रेजों के भारत छोड़ने के पूर्व व पश्चात् में 'जम्मू व कश्मीर' की रियासत पर, नये बने दोनों राष्ट्रों, भारत व पाकिस्तान में से एक में विलय का भारी दबाव था। अखंड भारत देश के बँटवारे पर हुए समझौते के दस्तावेज़ों के अनुसार समस्त 565 रियासतों के राजाओं को दोनों में से एक राष्ट्र को चुनने का अधिकार दिया गया था। **किन्तु इससे अलग कश्मीर के महाराज हरि सिंह जी अपनी रियासत कश्मीर को स्वतंत्र रखना चाहते थे। इसलिए उन्होंने भारत व पाकिस्तान किसी के भी साथ विलय न होने का निर्णय लिया।** किंतु यह निर्णय लेने के पहले महाराज हरि सिंह जी ने कश्मीर की सुरक्षा हेतु आवश्यक सेना व सैनिक साजों-सामान की उचित व्यवस्था न करने की बड़ी भारी गलती की। पूर्व जम्मू व कश्मीर रियासत की सेना आज़ाद कश्मीर के कबिलाई लड़ाकों के हमले के लिए तैयार नहीं थी, उसे केवल सीमा की रखवाली के लिए बहुत कम संख्या में तैनात किया गया था। इसलिए वे दुश्मन का मुकाबला नहीं कर पायीं। इसके अतिरिक्त महाराज हरि सिंह जी की सेना की कुछ टुकड़ियाँ दुश्मन के साथ मिल गईं। जिसके परिणामस्वरूप पाकिस्तानी सैनिकों और पश्तूनों के कबायली लड़ाके (जो कि उत्तर पश्चिमी सीमांत राज्य के थे) ने कश्मीर पर

हमला कर दिया। इसके साथ-साथ महाराज हरि सिंह को पुंछ इलाके में अपने ही मुस्लिम सैनिकों द्वारा विद्रोह का सामना करना पड़ा। जिसके कारण उन्होंने कश्मीर के पश्चिमी ज़िलों पर अपना नियंत्रण खो दिया। दिनांक 22 अक्तूबर 1947 को, पाकिस्तान के कबायली लड़ाकों कश्मीर राज्य की सीमा पार करके, कश्मीर में घुस गये। अब ये स्थानीय कबायली लड़ाके अनियमित पाकिस्तानी सेना के साथ मिलकर राजधानी श्रीनगर पर कब्ज़ा करने के लिए चल पड़े। लेकिन इन्होंने एक बड़ी भारी गलती कर दी कि बारामूला पहुँचने पर वे लूट-पाट करने के लिए रुक गये। आज़ाद कश्मीर के कबायली लड़ाके शुरुआती आसान सफलताओं के पश्चात् लूट-पाट में व्यस्त हो गये। उन्होंने आगे बढ़कर आसानी से कब्जे में आ सकने वाले नए इलाकों पर हमला करने में अनावश्यक देरी कर दी। इससे महाराज हरि सिंह को भारत के साथ विलय में सहमती प्रदान करने एवम् भारतीय सेना को विमानों की सहायता से कश्मीर में सैनिक पहुँचाने का अवसर दे दिया। **महाराज हरि सिंह जी को समझ में आ चुका था कि रियासत की फौज इनका सामना करने में सक्षम नहीं है। इसलिए उन्होंने भारत से सहायता के लिए गुहार लगायी। तत्कालीन भारत सरकार ने, महाराज हरि सिंह के सामने सैनिक सहायता के एवज में कश्मीर का भारत में विलय का प्रस्ताव रखा। जिसे महाराज हरि सिंह जी ने स्वीकार किया एवम् विलय पत्र पर हस्ताक्षर किये। दिनांक 26 अक्तूबर 1947 को जम्मू व कश्मीर का भारत में विलय पत्र पर महाराज हरि सिंह जी ने हस्ताक्षर किये एवम् दिनांक 27 अक्तूबर 1947 को गवर्नर जनरल माउंटबेटन ने इसे मंजूरी प्रदान करके इसे वैध करार दे दिया गया एवम् इसके साथ ही भारतीय सेना को कबायली लड़ाकों व अनियमित पाकिस्तानी सेना से लड़ने के लिए श्रीनगर भेज दिया गया।**

1947 भारत-पाकिस्तान युद्ध

भारत ने विमान द्वारा सैनिक व उपकरण श्रीनगर पहुँचाये। भारतीय सेना ने श्रीनगर पहुँचकर, महाराज हरि सिंह की सेना को मजबूती प्रदान की एवम् श्रीनगर के चारों तरफ सुरक्षा घेरा बनाया। इस सुरक्षा घेरे में सम्मिलित भारतीय सेना के बख्तरबंद वाहनों ने दुश्मन सेना को पीछे से घेर लिया। भारतीय सेना ने पाकिस्तानी सेना का बारामुला और उरी तक पीछा करके बाहर खदेड़ दिया और इन दोनों शहरों को आज़ाद करवा लिया गया। हालाँकि पुंछ घाटी में पाकिस्तानी सेना द्वारा शहरों की घेराबंदी अभी भी जारी थी। किंतु इधर गिलगित में आज़ाद कश्मीर की कबायली सेना के साथ गिलगित राज्य के अर्धसैनिक बल मिल गये एवम् चित्राल के मेहतर जागीरदार की सेना ने भी अपने जागीरदार के पाकिस्तान में विलय की घोषणा कर दी एवम् उसमें शामिल हो गई। भारतीय सेना ने अपने युद्ध कौशल से पाकिस्तानी सेना और आज़ाद कश्मीर सेना को खदेड़ना शुरू कर दिया, अब भारतीय सेना इन पर भारी पड़ रही थी। पुंछ को एक वर्ष की लम्बी घेराबंदी के पश्चात् स्वतंत्र कर लिया गया था। गिलगित स्काउट जो कि अच्छी सफलता प्राप्त कर रही थी एवम् भारतीय सेना को अब तक कड़ी टक्कर दे रही थी, उसे भी भारतीय सेना ने हरा दिया एवम् कारगिल को स्वतंत्र करा लिया। इसके पश्चात् जोजिला दर्रे को टैंकों द्वारा हमले से अपने कब्ज़े में ले लिया। इससे पूर्व इतनी ऊँचाई पर पूरे विश्व में कभी भी टैंकों का इस्तेमाल नहीं हुआ था एवम् पाकिस्तानी सेना को भी इतनी अधिक ऊँचाई पर टैंकों के हमले की उम्मीद नहीं थी इसलिए तुरंत पाकिस्तानी सेना के पाँव उखड़ गए। जोजिला दर्रे पर कब्ज़े के पश्चात् भारतीय सेना ने द्रास पर आसानी से कब्ज़ा कर लिया।

एक लम्बी बात-चीत, वाद-विवाद व मोल-भाव के पश्चात् भारत व पाकिस्तान, दोनों पक्ष युद्ध विराम के लिए तैयार हो गये। इस युद्ध विराम की शर्तों

को दिनांक 13 अगस्त 1948 को संयुक्त राष्ट्र द्वारा अपनाया गया था। इन शर्तों के अनुसार पाकिस्तान को अपने नियमित व अनियमित सैनिकों को कश्मीर से पूर्णरूप से हटाना था एवम् भारत को कश्मीर में कानून व्यवस्था लागू करने के लिए आवश्यक सैनिक रखने का प्रस्ताव था। किंतु इस युद्ध विराम के पश्चात् भारत के पास कश्मीर का 60% व पाकिस्तान के पास कश्मीर का 40% भू-भाग (पाकिस्तान गुलाम कश्मीर व गिलगिट-बलुचिस्तान) पर कब्ज़ा रहा। एक आँकड़े के अनुसार इस युद्ध में दोनों पक्षों के लगभग 15-15 सौ सैनिक मारे जाने का अनुमान है।

सन् 1947 के अंत तक कश्मीर पर कब्ज़ा करने के पाकिस्तान के नापाक इरादे की हवा निकल गई। केवल हिमालय के ऊपरी हिस्सों में आज़ाद कश्मीर नाम की पाकिस्तानी सेना को कुछ सफलताएं मिली थीं। किंतु अंत में उन्हें लेह के बाहरी हिस्से से जून 1948 में भारतीय सेना ने वापिस खदेड़ दिया। सम्पूर्ण 1948 वर्ष के दौरान भारत व पाकिस्तानी सेना के बीच अनेकों छोटी लड़ाइयाँ हुई थीं किंतु किसी भी पक्ष को कोई भी महत्वपूर्ण सामरिक सफलता प्राप्त नहीं हुई थी एवम् धीरे-धीरे एक 'सीमा रेखा' स्थापित हो गई, जिसे आज हम सभी 'नियंत्रण रेखा' के नाम से जानते हैं। दिनांक 31 अगस्त 1948 को औपचारिक युद्ध की घोषणा कर दी गई थी। किंतु इस विलय की वैधता से पाकिस्तान सहमत नहीं था। पाकिस्तान ने यह दलील दी थी कि महाराज हरि सिंह जी को भारतीय सेना बुलाने का कोई भी अधिकार नहीं था। क्योंकि अंग्रेजों के भारत में आने से पहले कश्मीर के महाराज का कोई भी पद नहीं था एवम् यह पद मात्र अंग्रेजों के द्वारा की गई नियुक्ति थी। इसलिए पाकिस्तान ने युद्ध करने का निर्णय लिया था। किन्तु पाकिस्तानी सेना प्रमुख डगलस ग्रेसी ने पाकिस्तानी प्रधानमंत्री के इस आदेश को मानने से मना कर दिया था। सेना प्रमुख डगलस ग्रेसी का तर्क यह था कि कश्मीर पर कब्ज़ा कर रही भारतीय सेनाएं ब्रिटिश राजसत्ता का प्रतिनिधित्व कर रही हैं, इसलिए वह उनके विरुद्ध युद्ध नहीं कर सकते हैं। हालांकि बाद में पाकिस्तान की ओर से कश्मीर में भारतीय सेना से युद्ध करने के लिए पाकिस्तानी

सेना भेज दी गई थी। किंतु तब तक भारतीय सेना लगभग दो तिहाई कश्मीर (कश्मीर घाटी, जम्मू व लद्दाख) पर कब्ज़ा कर चुकी थीं। भारतीय सेना का विजय अभियान लगातार जारी था। **युद्ध के इस स्थिति में पहुँचने के बावजूद भी भारत के तत्कालीन प्रधानमंत्री पंडित जवाहर लाल नेहरू जी ने इस मामले को संयुक्त राष्ट्र महासभा में ले जाकर उनके द्वारा मामले का समाधान करने का निर्णय लिया। परिणामस्वरूप दिनांक 31 दिसम्बर 1948 को संयुक्त राष्ट्र द्वारा युद्ध विराम की घोषणा कर दी गई।** इस युद्ध विराम होने से कुछ दिनों पहले ही पाकिस्तानी सेना ने एक प्रतिआक्रमण करके उरी व पुंछ के बीच के रास्ते पर कब्ज़ा करके दोनों के बीच सड़क संपर्क तोड़ दिया था। यदि तत्कालीन प्रधानमंत्री पंड़ित जवाहरलाल नेहरू जी इस मामले को संयुक्त राष्ट्र महासभा में न ले जाते तो निस्संदेह भारतीय सेना सम्पूर्ण कश्मीर पर कब्ज़ा कर लेती और कश्मीर समस्या जन्म ही न लेती । इस गलती की सजा भारत देश आज तक भुगत रहा है। **बस यही वह समय था जिस दिन ऑपरेशन सिंदूर कि नींव रखी गई थी और ऑपरेशन सिंदूर इसी दिन से जारी हो गया था।** संयुक्त राष्ट्र सुरक्षा परिषद ने दिनांक 22 अप्रैल 1948 को रेसोलुशन 47 पारित कर दिया। दिनांक 01 जनवरी 1949 की रात्रि 23:59 बजे औपचारिक संघर्ष विराम घोषित किया गया था।

1947 भारत-पाकिस्तान युद्ध में अपनी मातृ भूमि कि रक्षा के किए भारत के अनेकों वीर सैनिकों ने अपने प्राणों की आहुति दी। हमारे स्वर्णिम भविष्य के लिए अपना वर्तमान सहर्ष न्यौछावर कर दिया। उन वीरों से हमें अवश्य परिचय करना चाहिए।

परम वीर चक्र विजेता मेजर सोमनाथ शर्मा

दिनांक 31 जनवरी 1923 को डाढ़, कांगड़ा की भूमि पर एक सैन्य अधिकारी अमर नाथ शर्मा जी के घर एक पुत्र रत्न ने जन्म लिया। जिसका नाम सोमनाथ रखा गया । सोमनाथ का लालन-पालन बेहद लाड़-प्यार किन्तु

अनुशासन के साथ हुआ। क्योंकि उनके पिता भारतीय सेना में अधिकारी तो थे ही और उनके कई भाइयों ने भी भारतीय सेना में अपनी सेवा दी थी। उनके छोटे भाई आगे छोटे भाई विश्वनाथ शर्मा आगे चलकर भारतीय सेना के 14 वें सेनाध्यक्ष भी बने थे। सोमनाथ शर्मा ने शेरवुड कॉलेज, नैनीताल से अपनी स्कूली शिक्षा पूरी की। वह एक मेधावी छात्र थे। सोमनाथ शर्मा जी भगवद् गीता की शिक्षाओं से बहुत प्रभावित थे। स्कूली शिक्षा पूरी करने के उपरांत, उन्होंने स्नातक करने के लिए प्रिन्स ऑफ़ वेल्स रॉयल मिलिट्री कॉलेज, सैंडहर्स्ट में दाखिला लिया।

रॉयल मिलिट्री कॉलेज से स्नातक होने के पश्चात दिनांक 22 फरवरी 1942 को सोमनाथ शर्मा की नियुक्ति ब्रिटिश भारतीय सेना की उन्नीसवीं हैदराबाद रेजिमेंट की आठवीं बटालियन में हुई (जो कि बाद में भारतीय सेना के कुमाऊं रेजिमेंट की चौथी बटालियन बनी)।

1947 भारत-पाकिस्तान युद्ध के दौरान मेजर सोमनाथ शर्मा, भारतीय सेना की इसी '4 कुमाऊं रेजीमेंट, की 'डेल्टा' कंपनी के कंपनी कमांडर थे। उन्हें श्रीनगर हवाई अड्डे के पास 'बड़गाम' क्षेत्र की रक्षा का जिम्मेदारी दी गई थी। श्रीनगर हवाई अड्डे की सुरक्षा के लिए, यह स्थान रणनीतिक रूप से अति महत्वपूर्ण था। दिनांक 22 अक्टूबर 1947 को पाकिस्तानी सेना द्वारा कश्मीर घाटी में आक्रमण किया गया था। जिसके जवाब में दिनांक 27 अक्टूबर 1947 को भारतीय सेना को यहाँ तैनात किया गया था। दिनांक 31 अक्तूबर 1947 को, मेजर सोमनाथ शर्मा अपनी कुमाऊं रेजिमेंट की 4 बटालियन की 'डेल्टा कंपनी' के साथ श्रीनगर पहुंचे थे। इस समय उनका बायाँ हाथ चोटिल था और उस पर प्लास्टर चढ़ा हुआ था। डॉक्टरों ने उन्हें आराम करने की सलाह दी थी, लेकिन उन्होंने किसी की कोई बात नहीं मानी और मातृभूमि की रक्षा के लिए चल पड़े।

दिनांक 3 नवंबर 1947 को पाकिस्तानी सेना ने श्रीनगर हवाई अड्डे पर कब्जा करने के लिए, अचानक जोरदार हमला कर दिया। मेजर सोमनाथ शर्मा ने कुमाऊं रेजिमेंट की 4 बटालियन की 'डेल्टा कंपनी' का नेतृत्व करते हुए दुश्मन

से कड़ा मुकाबला किया। वह दुश्मन की भीषण गोलाबारी के बीच खड़े रहकर लगातार अपने सैनिकों को आवश्यक निर्देश दे रहे थे और उनका मनोबल बढ़ा रहे थे। उन्होंने अपने सैनिकों से कहा- कि जब तक हम में से एक भी सैनिक जीवित है तब तक पाकिस्तानी सेना को आगे नहीं बढ़ने देंगे।

इस भीषण युद्ध के दौरान एक मोर्टार गोला उनके समीप फटा और वह वीरगति को प्राप्त हो गए। लेकिन वीरगति को प्राप्त होने से पहले वह भारत माता के प्रति अपना कर्तव्य पूरा कर गए थे। उनकी वीरता और कुशल नेतृत्व के कारण पाकिस्तानी सेना भरपूर प्रयत्न के बावजूद भी आगे बढ़ नहीं पायी थी और श्रीनगर हवाई अड्डा सुरक्षित रहा। उनके बलिदान के फलस्वरूप भारतीय सेना को कश्मीर में अपनी स्थिति संभालने का अमूल्य समय मिला।

मेजर सोमनाथ शर्मा जी की असाधारण वीरता, कुशल नेतृत्व और सर्वोच्च बलिदान के लिए भारत सरकार ने उन्हें मरणोपरांत सेना के सर्वोच्च वीरता सम्मान 'परमवीर चक्र' से सम्मानित किया। वह इस पुरस्कार को प्राप्त करने वाले भारत के प्रथम सैनिक भी थे एवं यह भी एक बहुत बड़ा संयोग था कि मेजर सोमनाथ शर्मा जी के भाई की पत्नी सावित्री बाई खानोलकर के द्वारा 'परमवीर चक्र' डिजाइन किया गया था। भारत माता के इस वीर सपूत को कोटी-कोटी नमन।

महावीर चक्र विजेता ब्रिगेडियर मोहम्मद उस्मान

जिन्हें पाकिस्तानी सेनाध्यक्ष बनाना चाहती थी पाक आर्मी, किन्तु उन्होंने भारत में रहकर पाकिस्तान के छक्के छुड़ा दिए।

दिनांक 15 जुलाई 1912 को ब्रिटिश भारत में संयुक्त प्रांत (आगरा व अवध) वर्तमान मऊ उत्तर प्रदेश में एक पुलिस अधिकारी महोम्मद फारूख शेख की धर्मपत्नी ने एक ऐसे वीर बालक को जन्म दिया जिससे आगे चलकर देशभक्ति व वीरता का एक उत्कृष्ट उदाहरण प्रस्तुत किया एवम् वीरता का एक नया अध्याय जोड़ते हुए **'नौशेरा का शेर'** के नाम से जाना गया, इनके नाम मात्र से ही पाकिस्तानी सेना काँपने लगती थी।

चूंकि पिता पुलिस अधिकारी थे। इसलिए उनके पिता ने उन्हें बचपन से ही अनुशासन सिखाया एवम इसी अनुशासन ने उनके जीवन में महत्वपूर्ण योगदान दिया। मोहम्मद उस्मान प्रतिदिन अपने पिता को पुलिस की यूनिफार्म में देखते थे। इसलिए उन्हें भी यूनिफार्म के प्रति बचपन से ही विशेष आकर्षण रहा। बनारस के हरीश चंद्र भाई स्कूल से मोहम्मद उस्मान ने अपनी पढ़ाई पूरी की। अपनी पढ़ाई पूरी करने के उपरांत यूनिफार्म से सम्बन्धित नौकरी करने का निर्णय लिया। बस उन्होंने यूनिफार्म का रंग बदली कर दिया। उन्होंने पुलिसी की खाकी यूनिफार्म की जगह सेना की हरी यूनिफार्म पहनने का निर्णय लिया। ब्रिटिश राज में किसी भारतीय के सेना में अधिकारी बनने के अवसर न के बराबर होते थे। इसके लिए बहुत कठिन प्रतियोगिता होती थी एवम कुछ गिन-चुने भारतीयों को ही सफलता प्राप्त होती थी। किन्तु विलक्षण बुद्धि के धनी मोहम्मद उस्मान सभी बाधाओं को पार करते हुए प्रतिष्ठित "रॉयल मिलिटरी एकेडमी" (आर एम ए एस) में सफलतापूर्वक प्रवेश प्राप्त किया।

अपना प्रशिक्षण सफलतापूर्वक पूर्ण करने के उपरांत दिनांक 19 मार्च 1935 उन्हें सेना में कमीशन प्रदान किया गया एवम उन्हें 10वीं ब्लूच रेजीमेंट की 5वीं बटालियन में तैनात किया गया। दिनांक 30 अप्रैल 1936 को लेफ्टिनेंट व दिनांक 31 अगस्त 1941 को उन्हें कैप्टन के पद पर पदोन्नत किया गया। वर्ष 1942 में उन्होंने भारतीय स्टाफ कॉलेज, क्वेटा, ब्लूचिस्तान में सेना से सम्बन्धित कोर्स किया। अप्रैल 1944 में उन्हें अस्थायी मेजर के पद पर पदोन्नत किया गया। द्वितीय विश्व युद्ध के दौरान उन्होंने बर्मा (वर्तमान म्यांमार) में अपनी सेवायें प्रदान कीं। तत्पश्चात् 14वीं बटालियन, 10वीं ब्लूच रेजीमेंट के कमान अधिकारी के रूप में सफलतापूर्वक कार्य किया।

मोहम्मद उस्मान को भारत देश व अपने जन्म स्थान से बहुत प्यार था। इसलिए वर्ष 1947 में जब भारत-पाकिस्तान का बंटवारा हुआ तब उन्होंने भारत में ही रहने का फैसला किया। बंटवारे के समय वह ब्लूच रेजीमेंट में कार्यरत थे। उन पर पाकिस्तानी हुकमरानों की तरफ से, पाकिस्तान में आने के लिए दबाव

बनाया जा रहा था। स्वयं मोहम्मद अली जिन्ना ने उन्हें पाकिस्तानी सेना का चीफ (सेना प्रमुख) बनाने का आकर्षक प्रस्ताव दिया था। किन्तु उन्होंने किसी की एक न सुनी, सभी प्रस्तावों को नकार दिया एवम भारत में ही रहने का उनका फैसला अडिग रहा। बँटवारे के पश्चात् जब ब्लूच रेजीमेंट, पाकिस्तान के हिस्से में आई। जिसके कारण ब्रिगेडियर मोहम्मद उस्मान को भारतीय सेना की डोगरा रेजीमेंट में ट्रांसफर कर दिया गया।

दिसंबर 1947 में पाकिस्तानी सेना ने अपने नापाक इरादों के साथ पश्तून (पठान) जनजाति की सहायता से कश्मीर के, रजौरी के, नौशेरा क्षेत्र पर आक्रमण करने की गलती कर दी। चूंकि पाकिस्तान ने यह आक्रमण छलपूर्वक किया था इसलिए उन्हें दिनांक 25 दिसंबर 1947 को झांगर पर कब्जा करने में सफलता प्राप्त हुई। उस समय ब्रिगेडियर मोहम्मद उस्मान 77वीं पैराशूट ब्रिगेड के ब्रिगेड कमाण्डर की ड्यूटी कर रहे थे। उन्हें पाकिस्तानी आक्रमण को रोकने के लिए 50वीं पैराशूट ब्रिगेड को कमांड करने की बड़ी जिम्मेदारी सौंपी गई। उनके कुशल नेतृत्व, अनुभव व रणनीति के कारण भारतीय सेना को दिनांक 06 फरवरी 1948 को नौशेरा पर विजय प्राप्त करने व वहाँ पर भारतीय तिरंगा फहराने में सफलता प्राप्त हुई। इस युद्ध में पाकिस्तानी सेना के दो हजार सैनिक मारे गये जबकि भारत के 33 जवान शहीद हुए और 102 जवान घायल हुए। इस बड़ी जीत के पश्चात् ब्रिगेडियर मोहम्मद उस्मान को **'नौशेरा का शेर'** नाम की उपाधि प्रदान की गई और वह एक शेर ही थे। उनके नाम मात्र से ही पाकिस्तानी सेना डरती थी। उनकी बहादूरी का अंदाज इसी बात से लगाया जा सकता है कि पाकिस्तानी सेना ने उनका सर काटकर लाने वाले को पचास हजार रूपये पुरस्कार देने का ऐलान किया था। वहीं अपने इरादे के पक्के ब्रिगेडियर उस्मान ने भी कसम खाई थी और पाकिस्तान से कहा था कि वह जब तक झांगर को पाकिस्तान के कब्जे से छुड़ा नहीं लेंगे तब तक न स्वयं चैन से बैठेंगे न पाकिस्तान को चैन से बैठने देंगे एवम उन्होंने यह किया भी।

नौशरा की लड़ाई के दौरान ब्रिगेडियर मौहम्मद उस्मान की बहादुरी व युद्ध कौशल के कारण, पाकिस्तानी सेना का कोई भी पैंतरा व चालबाजी नहीं चली। अंततः अपने वचन के पक्के ब्रिगेडियर मोहम्मद उस्मान ने पाकिस्तानी सेना को उस क्षेत्र से खदेड़ दिया एवम झांगर पर पुनः भारतीय सेना का अधिकार हो गया । अब झंगार पर तिरंगा शान से लहरा रहा था।

पाकिस्तान किसी भी कीमत पर रणनीतिक व भौगोलिक दृष्टि से अति महत्वपूर्ण झांगर क्षेत्र पर अपना अनाधिकृत कब्जा नहीं छोड़ना चाहता था। अतः मई 1948 में पाकिस्तान ने झांगर पर पुनः कब्जा करने के नापाक इरादे से नियमित पाकिस्तानी सैनिकों को युद्ध के मैदान में उतारा। पाकिस्तानी सेना ने वहाँ तोपखाने से भारी बमबारी की, कई सुनियोजित बड़े हमले किये। लेकिन ब्रिगेडियर मोहम्मद उस्मान के कुशल नेतृत्व व बहादुरी ने उनके सभी हमलों को विफल कर दिया। क्योंकि यह **'नौशरा का शेर'** किसी भी कीमत पर झांगर की रक्षा के लिए दृढ़ संकल्प था। इनके दृढ़ संकल्प के सामने पाकिस्तानी सेना का कोई भी प्रयास सफल नहीं हुआ। दुर्भाग्यवश दिनांक 03 जुलाई 1948 को पाकिस्तानी सेना द्वारा दागे गये 25 -पाउंडर तोप के गोले की मार के चपेट मे ब्रिगेडियर मोहम्मद उस्मान आ गये और भारत माता का यह वीर सपूत वीरगति को प्राप्त हो गया। जिस दिन वह वीरगित को प्राप्त हुए, उसके ठीक 12वें दिन उनका 36 जन्मदिवस था।

मरने से ठीक पहले ब्रिगेडियर मोहम्मद उस्मान के अंतिम शब्द थेः

"मैं मर रहा हूँ, लेकिन मुझे इस बात का गर्व है कि हम इस क्षेत्र के लिए दुश्मन से लड़ रहे थे"

उनके प्रेरणादायक नेतृत्व और अदभुत साहस के लिए उन्हें मरणोपरांत भारत के सर्वोच्च दूसरे वीरता पुरस्कार **'महावीर चक्र'** से सम्मानित किया गया।

ब्रिगेडियर मोहम्मद उस्मान युद्ध क्षेत्र में दुश्मन से लड़ते हुए सबसे ऊँची रैंक के अधिकारी थे। उनकी देशभक्ति, कर्तव्यनिष्ठा व बहादूरी के कारण वह अतिसम्मानीय सैन्य अधिकारी थे। इसलिए उनके जनाजे में, अंतिम यात्रा में

गर्वनर जनरल लॉर्ड माउंटबैटन भारत के तत्कालीन प्रधानमंत्री पंडित जवाहर लाल नेहरू, मौलाना अबुल कलाम आजाद और शेख अब्दुल्ला जैसी बड़ी शख्शियतों ने सम्मिलित होकर उनके प्रति अपनाम सम्मान व्यक्त किया व उन्हें अपनी श्रृंदाजली अर्पित की।

दिल्ली की जामिया मिलिया इस्लामिया युनिवर्सिटी के समीप ओखला में इस भारत माता के वीर सपूत **'नौशेरा के शेर'** की कब्र है। जहाँ आज भी लोग उन्हें श्रद्धांजली देने के लिए पहुँचते हैं। आपको कोटि-कोटि नमन !!!

परम वीर चक्र विजेता नायक जदुनाथ सिंह

दिनांक 21 नवंबर 1916 को, उत्तर प्रदेश के शाहजहाँपुर के खजूरी गाँव के किसान बीरबल सिंह राठौर की धर्मपत्नी जमुना कंवर ने एक पुत्र रत्न को जन्म दिया। जिसका नाम जदुनाथ सिंह रखा गया। जदुनाथ सिंह अपने आठ भाई-बहनों में तीसरे थे, उनके छह भाई व एक बहन थी। जदुनाथ सिंह ने अपने गाँव के स्थानीय कॉलेज से चौथी कक्षा तक पढ़ाई की थी एवं परिवार की खराब आर्थिक स्थिति के कारण वह आगे शिक्षा जारी नहीं रख पाये। उन्होंने अपना पूरा बचपन खेतों में काम करके परिवार की मदद करते हुये बिताया था। जदुनाथ सिंह को कुश्ती का शौक था, वह अच्छी कुश्ती करते थे एवं अपने गाँव के कुश्ती के चैंपियन भी बन गये थे। वह आजीवन ब्रह्मचारी थे, उन्होंने कभी विवाह नहीं किया था। इस कारण उन्हें **'हनुमान भगत बाल ब्रह्मचारी'** का उपनाम दिया गया था।

द्वितीय विश्व युद्ध के दौरान, दिनांक 21 नवम्बर 1941 को जदुनाथ सिंह फतेहगढ़ रेजीमेंटल सेंटर में ब्रिटिश सेना की 7वीं राजपूत रेजीमेंट में भर्ती हो गये। उन्होंने सकुशल प्रशिक्षण पूरा किया, फिर उन्हें रेजीमेंट की प्रथम बटालियन में तैनाती मिली। वर्ष 1942 के अंत में उनकी बटालियन ने द्वितीय विश्व युद्ध के अन्तर्गत बर्मा अभियान के दौरान जापानियों के विरूद्ध युद्ध में भाग लिया। वर्ष 1945 मे जदुनाथ सिंह की बटालियन को अन्य भारतीय इन्फैंट्री ब्रिगेड में

सम्मिलित किया गया एवम उन्होंने जापानियों के विरूद्ध अंडमान व निकोबार द्वीप समूह की रक्षा हेतु युद्ध में भाग लिया। इन द्वीपों पर जापानियों का आंशिक कब्जा था। जापानियों ने दिनांक 07 अक्टूबर 1945 को आत्मसमर्पण कर दिया था। इसके बाद सिपाही जदुनाथ सिंह की अपनी रेजीमेंट के साथ भारत वापसी हुई। भारत लौटने के पश्चात् सिपाही जदुनाथ सिंह को नायक के पद पर पदोन्नत किया गया। भारत-पाकिस्तान विभाजन के पश्चात्, 7वीं राजपूत रेजिमेंट को भारतीय सेना में सम्मिलित किया गया। नायक जदुनाथ सिंह नवगठित 7वीं राजपूत रेजीमेंट के साथ ही रहे एवं उसी बटालियन में उन्हें सेवा करने का सुअवसर प्राप्त हुआ।

1947 भारत-पाक युद्ध

अक्टूबर 1947 में जम्मू-कश्मीर में पाकिस्तानी हमलावरों ने आक्रमण कर दिया। जिसके परिणामस्वरूप, भारतीय मंत्री मंडल की रक्षा समिति ने सेना मुख्यालय को पाकिस्तान पर सैन्य कार्यवाही करने का निर्देश दिया। भारतीय मंत्री मंडल के निर्देशानुसार, भारतीय सेना ने पाकिस्तानी हमलावरों को जम्मू-कश्मीर से खदेड़ने के लिए कई अभियानों की योजना बनाई थी। ऐसे ही एक अभियान के अंतर्गत 50वीं पैरा ब्रिगेड को नौशहरा को सुरक्षित करने व नवंबर 1947 के मध्य में झांगर में एक बेस स्थापित करने का आदेश दिया गया था। चूंकि नायक जदुनाथ सिंह की राजपूत रेजीमेंट, 50वीं पैरा ब्रिगेड के अधीन आती थी। अतएव 7वीं राजपूत रेजीमेंट ने झांगर में अपना बेस स्थापित कर लिया।

भारतीय सेना अत्यधिक खराब मौसम होने के कारण उस समय कोई सैनिक कार्यवाही नहीं कर पाई थी एवम दिनांक 24 दिसम्बर 1947 को जम्मू-कश्मीर के नौशहरा सेक्टर में रणनीतिक रूप से अति महत्वपूर्ण स्थान झांगर पर पाकिस्तानियों ने कब्जा कर लिया था। जिसके परिणामस्वरूप मीरपुर व पुंछ के मध्य संचार लाइनों पर पाकिस्तानियों को नियंत्रण मिल गया एवम नौशहरा पर हमला करने के लिए एक उचित स्थान भी मिल गया। जनवरी 1948 में भारतीय

सेना ने पाकिस्तानी सेना को रोकने के लिए नौशहरा के उत्तर पश्चिम में कई सैनिक अभियान चलाये। 50वीं पैरा ब्रिगेड के कमान अधिकारी ब्रिगेडियर मोहम्मद उस्मान ने पाकिस्तानी सेना के संभावित हमले का मुकाबला करने के लिए आवश्यक रणनीति बना ली एवम भारतीय सैनिकों को छोटे-छोटे समूहों में पाकिस्तानी सेना के संभावित ठिकानों पर तैनात कर दिया था।

जम्मू-कश्मीर के नौशहरा के उत्तर में स्थित तैन धार इलाके की सुरक्षा की जिम्मेदारी नायक जदुनाथ सिंह की बटालियन को सौंपी गई थी। दिनांक 6 फरवरी 1948 को प्रातः भारतीय समयानुसार 6 बजकर चालीस मिनट पर पाकिस्तानी सेना ने तैन धार रिज पर गश्त कर रही भारतीय बटालियन की चौकियों पर गोलीबारी शुरू कर थी। भारतीय सेना की तरफ से भी जवाबी कार्यवाही में गोलीबारी की गई। सुबह के घने-कोहरे का लाभ उठाते हुए हमलावर पाकिस्तानी सैनिकों की टुकड़ी, भारतीय सैनिकों को पाकिस्तानी सैनिकों की हलचल सुनाई व दिखाई दी। तैन धार पर स्थित चौकी नम्बर 2 की अग्रिम पंक्ति की कमान नायक जदुनाथ सिंह संभाल रहे थे। भारी प्रतिकूल परिस्थितियों में मात्र नौ जवान इस चौकी पर तैनात थे। पाकिस्तानी सेना ने इस चौकी पर कब्जा करने के उद्देश्य से लगातार अनेकों आक्रामक हमले किये। नायक जदुनाथ सिंह ने अपने कुशल नेतृत्व व असीम वीरता का परिचय देते हुए, अपने पास उपलब्ध सीमित बल का उपयोग, इस सूझबूझ के साथ किया कि पाकिस्तानी सेना का आक्रमण विफल भी हुआ और पाकिस्तानी सैनिकों को पीछे भी हटना पड़ा। किन्तु इस हमले में भारतीय सेना के चार सैनिक घायल हो गये। लेकिन नायक जदुनाथ सिंह ने इस विषम परिस्थिति में भी अपना साहस व धैर्य नहीं खोया उन्होंने घायल भारतीय सैनिकों को पुनः संगठित किया एवम पाकिस्तानी सेना का सामना करने के लिए पुनः मोर्चा संभाल लिया। क्योंकि उन्हें पूर्वानुमान था कि पाकिस्तानी सेना पलटवार अवश्य करेगी एवम ठीक ऐसा ही हुआ। पहले हमले की तुलना में अधिक बड़ा हमला, अधिक दृढ़ संकल्प एवम भारी संख्या बल के साथ पाकिस्तानी सेना ने किया। संख्या में भारी कमी होने के बावजूद भी भारतीय

सैनिकों ने नायक जदुनाथ सिंह के कुशल नेतृत्व में पाकिस्तानी सेना के इस बड़े व भीषण हमले का डटकर मुकाबला किया। लेकिन इस हमले में नायक जदुनाथ सिंह सहित भारतीय सेना के सभी सैनिक बुरी तरह से घायल हो गये। किन्तु घायल होने के बाद समस्त भारतीय सैनिक और भी अधिक घातक हो गये। नायक जदुनाथ सिंह के दायें हाथ में काफी चोट लगी थी। लेकिन इसके बावजूद भी उन्होंने ब्रेंन गनर सैनिक से ब्रेन गन को अपने हाथ में लिया। इस संकट की घडी में स्वयं को शांत किया, अपने बचे हुए मुट्ठी भर घायल सैनिकों का मनोबल बढाया व उन्हें लड़ने के लियए प्रेरित किया। पाकिस्तानी सेना भारतीय चौकी के ठीक सामने थी एवम पाकिस्तानी सेना का हमला इतना तीव्र व विशाल था कि एक बार तो यह प्रतीत हुआ कि पाकिस्तानी सेना भारतीय चौकी पर कब्जा करने में सफल हो जायेगी किन्तु मुट्ठी भर बचे वीर भारतीय सैनिक पाकिस्तानी सेना पर काल बनकर टूट पडे जिसके परिणामस्वरूप पाकिस्तानी सेना की विजय, पराजय में बदल गई। पाकिस्तानी सेना में अफरा तफरी मच गई। चारों तरफ पाकिस्तानी सेना के मृत सैनिकों के शव बिखरे पड़े थे। मुट्ठी भर भारतीय सेना से पराजय व भारी हानि के बाद अपमानित पाकिस्तानी सेना ने भारतीय चौकी पर पुनः दृढ़ संकल्प व भारी संख्या बल के साथ तीसरा बड़ा आक्रमण किया। चूंकि पाकिस्तानी सेना ने दूसरे हमले में 27 में से 24 भारतीय सैनिक या तो मारे गये थे अथवा गंभीर रूप से घायल हो गये थे। सभी भारतीय सैनिक हताहत हो चुके थे तो अब एकमात्र बचे घायल सेक्शन कमांडर नायक जदुनाथ सिंह ने अकेले ही मोर्चा संभाला। अत्यंत साहस, दृढ़, संकल्प व अपने प्राणों की परवाह न करते हुए नायक जदुनाथ सिंह संगर से बाहर आये एवम अंत में स्टेन तोप से लैस होकर, आगे बढती हुए विशाल पाकिस्तानी सेना पर एक अत्यंत प्रभावशाली एकल आक्रमण किया। पाकिस्तानी सेना को इतने बडे हमले का अनुमान नहीं था परिणामस्वरूप उसकी विशाल सेना को बड़ा नुकसान हुआ एवम उसकी सेना तितर-बितर हो गई। लेकिन इस तीसरे व अंतिम आक्रमण में 31 वर्षीय नायक जदुनाथ सिंह वीरगति को प्राप्त हो गये। दो गोलियाँ उनके सिर व सीने में लगी थी।

नायक जदुनाथ सिंह व भारतीय चौकी पर तैनात अन्य भारतीय सैनिकों का बलिदान व्यर्थ नहीं गया। पाकिस्तानी सेना के तीन बड़े हमलों को विफल करने व पाकिस्तानी सेना को रोके रखने का समय नौशहरा की लड़ाई के लिए बहुत महत्वपूर्ण सिद्ध हुआ। इस बीच राजपूत रेजीमेंट की तीसरी (पैरा) बटालियन की एक कंपनी ने वहाँ पहुँचकर मोर्चा संभाल लिया एवम भारतीय चौकी को बचाया जा सका। दिनांक 06 फरवरी 1948 को नायक जदुनाथ सिंह को मरणोपरांत भारत के सर्वोच्च सैन्य सम्मान, **'परमवीर चक्र'** से सम्मानित किया गया। हम सभी नायक जदुनाथ सिंह व शहीद हुए अन्य भारतीय सैनिकों के सदैव ऋणी रहेंगे।

परम वीर चक्र विजेता मेजर रामा राघोबा राणे

दिनांक 26 जून 1918 को, कर्नाटक के उत्तर कन्नड़ जिले के चेंडिगा गाँव के पुलिस कांस्टेबल राघोबा पी. राणे के घर में एक पुत्ररत्न ने जन्म लिया। माता-पिता ने इनका नाम बड़े लाड़ प्यार से 'रामा' रखा। रामा रहोबा राणे की प्रारंभिक शिक्ष अधिकाशं जिला विद्यालय मे हुई थी एवम उनकी शिक्षा पिता के बार-बार तबादलों के कारण काफी अव्यवस्थित रही थी। वर्ष 1930 में भारत ब्रिटिश शासन से भारतीय स्वतंत्रता के लिए 'असहयोग आंदोलन' चला रहा था। राम राघोबा राणे भी असहयोग आंदोलन में सम्मिलित हो गये। उनके, इस व्यवहार से यह प्रतीत हुआ कि उनके अंदर देशभक्ति की भावना कूट-कूट कर भरी हुई थी। किन्तु रामा राघोबा राणे के असहयोग आंदोलन में सम्मिलित होने से उनके पिता चिंतित हो गये एवम उन्हें वापस अपने पैतृक गाँव चेंडिया ले गये। इसी देशभक्ति की भावना को हृदय में लिये मात्र 22 वर्ष की आयु में रामा राघोबा राणे "ब्रिटिश भारतीय सेना" में सम्मिलित हो गये। दिनांक 10 जुलाई 1940 को आप "बॉम्बे इंजीनयिर रेजीमेंट" में भर्ती हुए। आपने प्रशिक्षण में जी तोड़ मेहनत की, जिसके परिणामस्वरूप आपको "सर्वश्रेष्ठ रंगरूट" के लिए पुरस्कृत किया गया एवम कमांडेट की छडी से भी सम्मानित किया गया। इस समय द्वितीय विश्व युद्ध अपने चरम पर था। प्रशिक्षण के पश्चात् रामा राघोबा राणे को 28वीं फील्ड कम्पनी

में तैनाती मिली। जो कि 26वीं इन्फैंट्री डिवीजन के अंतर्गत एक इंजीनियरिंग इकाई थी एवम उस समय वर्मा (वर्तमान म्यामांर) में जापनियों के विरूद्ध लड़ रही थी। इस लडाई के दौरान रामा राघोबा राणे ने अपनी कार्यकुशलता, कुशल नेतृत्व व असीम बहादूरी का परिचय दिया। जिसके परिणामस्वरूप आपको क्रमशः नायक, हवलदार एवम जमादार (नायब सूबेदार) के पद पर पदोन्नत किया गया। आगे चलकर अपने इन्हीं गुणों के कारण जमादार रामा राघोबा राणे को अल्प सेवा कमीशन के लिए भी चुना गया था। वर्ष 1947 में भारत पाकिस्तान बंटवारे व 15 अगस्त 1947 को भारत की स्वतंत्रता के पश्चात आप भारतीय सेना में सेवा करते रहे एवम दिनांक 15 दिसम्बर 1947 को इन्हें भारतीय सेना की बॉम्बे इंजीनियर्स में सेकंड लेफ्टिनेंट के रूप में कमीशन प्रदान किया गया। सेकंड लेफ्टिनेंट के रूप में आपको दिनांक 14 जनवरी 1948 से वरियता/वरिष्ठता प्रदान की गई।

1947 भारत-पाक युद्ध

दिनांक 08 अप्रैल 1948 को सेकंड लेफ्टिनेंट रामा रागोबा राणे एक आदेश प्राप्त हुआ जिसके अनुसार उन्हें जम्मू-कश्मीर में नौशेरा-राजौरी सड़क के माइल 26 से बारूदी सुरंगों को हटाने वाली भारतीय सैनिको की टुकडी का नेतृत्व करना था। माइल 26 सड़क कठिन पहाड़ी इलाके से होकर गुजरती है। आपने बिना एक क्षण गँवाये, वहाँ पहुँचकर मोर्चा संभाल लिया। उसी दिन प्रातः 11:00 बजे, जब सेकंड लेफ्टिनेंट राणे अपनी टीम के साथ नादपुर साउथ के समीप, टैकों के पास जब बारूदी सुरंगों को हटाने के लिए कार्ययोजना बना रहे थे। ठीक उसी समय पाकिस्तानी सेना ने भारी मोर्टार से उन पर हमला कर दिया। इस हमले में उनकी बारूदी सुरंग हटाने वाली टीम के दो जवान शहीद हो गये एवम सेकंड लेफ्टिनेंट रामा राघोबा राणे सहित पाँच अन्य घायल हो गये। इस घायल अवस्था में उन्होंने स्वयं को संभाला, अपनी टीम को पुनः संगठित व उत्प्रेरित किया एवम भारतीय टैंकों को आगे बढने हेतु बारूदी सुरंगो को हटाने का कार्य प्रारम्भ कर दिया। वह पूरे दिन भर पाकिस्तानी सेना की भारी मशीनगन एवम मोर्टार फायरिंग

के बीच, अपने प्राणों की परवाह न करते हुए कार्यस्थल पर भारतीय टैंकों के समीप ही घायल अवस्था में तैनात रहे । उसी दिन सांयकाल लगभग साढे चार बजे भारतीय सेना ने पाकिस्तानी सेना को पीछे ढकेल कर 'बरवाली रिज' पर कब्जा कर लिया था किन्तु आस-पास के इलाके से बरवाली रिज पर भारतीय सेना पर पाकिस्तानी सैनिकों की फायरिंग हो रही थी । यह जानते हुए भी कि अभी पाकिस्तानी सेना को उस इलाके से पूर्णतया हटाया नहीं गया है एवम पाकिस्तानी सेना लगातार फायरिंग कर रही है, लेकिन फिर भी सेकंड लेफ्टिनेंट रामा राघोबा राणे अपनी टुकड़ी के साथ आगे बढे एवम पाकिस्तानी सेना का ध्यान अपनी तरफ खींचा। इस स्थिति का लाभ उठाते हुए, भारतीय टैंकों ने उचित मार्ग से आगे बढ़ना प्रारम्भ कर दिया। उन्होंने उस रात दस बजे तक पाकिस्तानी सेना की भारी गोलीबारी के बीच बारूदी सुरंगे हटाने का काम किया। जिससे सहायक टैंक आगे बढ सके।

भारतीय टैंकों के लिए सुरक्षित रास्ता तैयार करने का कार्य अभी शेष था। आगे का रास्ता और भी अधिक खतरनाक था। क्योंकि पाकिस्तानी सेना को अभी भी उस क्षेत्र से हटाया जाना बाकी थी। यह सुरक्षित रास्ता सेकंड लेफ्टिनेंट रामा राघोबा राणे व उनकी टीम ने घायल होने के बावजूद भी रात भर लगातार काम करके तैयार किया। अगले दिन उनके सेक्शन ने लगातार बारह घंटे तक बारूदी सुरंगों एवम अवरोधों को हटाने का कार्य किया। चूंकि सड़क मार्ग अभी भी बहुत कठिन व दुर्गम था। इसलिए उन्होंने बटालियन को आगे बढने के लिए सुरक्षित वैकल्पिक मार्ग बनाया। इस बीच पाकिस्तानी सेना की ओर से लगातार तोपखाने व मोर्टार की फायरिंग हो रही थी, फिर भी उन्होंने अपना काम लगातार जारी रखा।

दिनांक 10 अप्रैल 1948 को सेकंड लेफ्टिनेंट रामा राघोबा राणे प्रातः जल्दी उठे एवम अपनी टीम के साथ उन बाधाओं को हटाने का कार्य पुनः प्रारम्भ कर दिया जिन बाधाओं को पिछली रात हटाया नहीं जा सका था। दो घंटे की कडी मेहनत के फलस्वरूप उन्होंने बारूदी सुरंगों और मशीनगन की गोलीबारी के बीच

अपनी जान पर खेलते हुए अपनी टीम के साथ पाँच बडे चीड़ के पेड़ों की अवरोध रेखा को रास्ते से हटा दिया। जिसके परिणामस्वरूप चौथी डोगरा बटालियन को तेरह किलोमीटर, बिना किसी रुकावट के आगे बढ़ने का मौका मिल गया। अब स्थिति यह थी कि पाकिस्तानी सेनायें आस पास की पहाडियों पर तैनात थीं एवम अवरोध रेखा तक पहुँचने वाले सभी मार्गों पर गोलीबारी करने में सक्षम थीं। जिससे इन अवरोधों को नष्ट करना संभव नहीं हो पा रहा था। लेकिन दृढ़ संकल्प के धनी सेकंड लेफ्टिनेंट रामा राघोबा राणे ने इसका भी उपाय खोजा निकाला। वह एक टैंक को अवरोध रेखा तक ले गये एवम टैंक की आड़ में छिपकर, पाकिस्तानी सेना की फायरिंग के बीच बारूदी सुरंगों से अवरोध रेखा को उड़ा दिया। जिसके परिणामस्वरूप रात्री समाप्त होने के पूर्व ही भारतीय सेना के आगे बढ़ने के लिए सड़क मार्ग खुल गया।

इसके अगले दिन दिनांक 11 अप्रैल 1948 को सेकंड लेफ्टिनेंट रामा राघोबा राणे ने राजोरी और नौशहरा के बीच स्थित पुराने मुगल मार्ग पर चिंगास एवम उससे आगे का मार्ग खोलने के लिए सत्रह घंटे काम किया एवम सफलता प्राप्त की। इस प्रकार दिनांक 03 अप्रैल से 11 अप्रैल 1948 की अवधि के दौरान सेकंड लेफ्टिनेट रामा राघोबा राणे व उनकी टीम के द्वारा बनाये गये सुरक्षित रास्ते के परिणामस्वरूप भारतीय सेना राजौरी की तरफ बढ़ सकी एवम भारतीय सेना ने पाकिस्तान के लगभग 500 सैनिक मार गिराये और बडी संख्या में पाकिस्तानी सैनिक घायल भी हुए। इसके अलावा चिंगास और राजौरी क्षेत्र में कई भारतीयों की जान बचाना भी संभव हो सका।

दिनांक 21 जून 1950 को जब सेकंड लेफ्टिनेंट रामा राघोबा राणे राजौरी की तरफ अग्रसर थे तब उन्हें दिनांक 08 अप्रैल 1948 को उनके द्वारा किये गये कार्यों के लिए उन्हें भारतीय सेना के सर्वोच्च सैन्य सम्मान **'परमवीर चक्र'** से सम्मानित किये जाने की घोषणा राजपत्रित की गई। वह भारत के सर्वोच्च सैन्य सम्मान **'परमवीर चक्र'** के प्रथम जीवित प्राप्तकर्ता बने।

युद्ध के पश्चात् भी आपने सेना में अपनी अमूल्य सेवा देना जारी रखा। अपने सैन्य कैरियर के दौरान आपको पाँच बार 'वीरता पुरस्कार' से भी सम्मानित किया गया। दिनांक 25 जून 1968 को आप मेजर के पद से भारतीय सेना से सेवानिवृत्त हुए। दिनांक 11 जुलाई 1994 को 76 वर्ष की आयु में भारत के इस वीर सपूत ने सदा के लिए अपनी आंखे मूँद ली एवम इस दुनियां को अलविदा कहा। आपको कोटी-कोटी नमन।

परम वीर चक्र विजेता कंपनी हवलदार मेजर पीरू सिंह शेखावत

भारत में ब्रिटिश राज का अंतिम दौर चल रहा था इसी अंतिम दौर में दिनांक 20 मई 1918 को राजपूताना के बीर जिले के छोटे से गाँव रामपुरा में श्री लाल सिंह के घर एक पुत्र रत्न ने जन्म लिया। वर्तमान में यह स्थान राजस्थान के झुंझुनू जिले के अन्तर्गत आता है। माता-पिता ने इस बालक का नाम पीरू सिंह रखा। लाल सिंह के परिवार में सात बच्चे थे। तीन पुत्र व चार पुत्रियाँ। जिनमें पीरू सिंह सबसे छोटे थे। इसलिए सबसे अधिक लाडले भी थे। पीरू सिंह को उनके पिता ने गाँव की पाठशाला में ही प्रारम्भिक शिक्षा के लिए भर्ती करवा दिया। किन्तु पीरू सिंह स्कूल जाने से बहुत कतराते थे। क्योंकि वह स्कूल के सीमित वातावरण में स्वयं को सहज महसूस नहीं करते थे। एक दिन स्कूल में पीरू सिंह का अपने सहपाठी से किसी बात पर झगड़ा हो गया। जब यह झगड़ा शिक्षक तक पहुँचा तो शिक्षक ने पीरू सिंह को डाँटा। पीरू सिंह नाराज हो कर घर चले आये एवम फिर कभी स्कूल नहीं गये। इसके बाद वह खेती-बाड़ी के काम में अपने माता-पिता की मदद करने लगे। पीरू सिंह को खेल-कूद में विशेष रूचि थी वह अपने गाँव में उपलब्ध खेलकूद में बढ़-चढकर भाग लेते थे। इस तरह पीरू सिंह सुगठित एवम आकर्षक युवक के रूप में बडे होने लगे। पीरू सिंह बचपन से ही सेना में भर्ती होना चाहते थे। उन्हें सेना में भर्ती होने की इतनी जल्दी थी कि उन्होंने बहुत कम उम्र की आयु में ही सेना में भर्ती होने के लिए भर्ती कार्यालय में पहुँच गये एवम उनकी कम आयु के कारण दो बार उन्हें अस्वीकार कर दिया गया। लेकिन

वह सेना की भर्ती को लेकर लगातार प्रयासरत रहे एवम अंततः अठारह वर्ष की आयु में उन्हें सेना में भर्ती होने में सफलता प्राप्त हुई।

दिनांक 20 मई 1936 को पीरू सिंह शेखावत 14 झेलम में प्रथम पंजाब रेजीमेंट की 10वीं बटालियन में भर्ती हुए। झेलम, उस समय पाकिस्तान के उत्तरी पंजाब प्रांत में झेलम नदी के पश्चिमी तट पर स्थित एक प्रसिद्ध शहर था। यह शहर 'सैनिको का शहर' एवम 'शहीदों और योद्धाओं की भूमि' के नाम से विख्यात था। क्योंकि इस शहर के कई सैनिकों ने ब्रिटिश भारतीय सेना, बाद में भारतीय सेना व पाकिस्तानी सशस्त्र बलों में सेवा की थी। इसी कारण पंजाबियों को वीरों के रूप में जाना जाता गया एवम आज भी पंजाब को वीरों की भूमि के रूप में जाना जाता है। इसी वीर भूमि की मिट्टी ने पीरू सिंह शेखावत जैसे परमवीर को जन्म दिया था जिन्होंने वीरता की अमर गाथा में एक और स्वर्ण अध्याय जोड़ दिया।

अपना प्रशिक्षण सफलतापूर्वक पूरा करने के उपरान्त, दिनांक 01 मई 1937 को पीरू सिंह शेखावत को उसी रेजीमेंट की 5वीं बटालियन में तैनाती मिली। सेना में भर्ती होने के बाद पीरू सिंह शेखावत के व्यवहार व सोच में एक बहुत बड़ा बदलाव यह आया कि स्कूली शिक्षा के प्रति अपनी शुरूआती अरुचि होने के बावजूद उन्होंने शिक्षा के महत्व को समझा एवम शिक्षा को गंभीरता से लेने लगे जिसके फलस्वरूप उन्होंने 'भारतीय सेना श्रेणी शिक्षा प्रमाण पत्र' एवम अन्य सम्बन्धित परीक्षायें सही समय पर सफलतापूर्वक उत्तीर्ण कर लीं। परिणामस्वरूप उन्हें क्रमशः दिनांक 07 अगस्त 1940 को लांस नायक, मार्च 1941 में नायक, फरवरी 1942 में हवलदार व मई 1945 में कंपनी हवलदार मेजर के पद पर पदोन्नति प्राप्त की। उन्होंने अक्टूबर 1945 तक प्रशिक्षक के रूप में सेवा की। पीरू सिंह शेखावत को बचपन से ही खेल-कूद में विशेष रूचि थी। वह एक उत्कृष्ट खिलाड़ी भी थे। उन्होंने अंतर-रंजिमेंटल एवम राष्ट्रीय स्तर की चैंपियनशिप में हॉकी, बॉस्केटबाल और क्रॉस-कंट्री दौड में अपनी रेजीमेंट का प्रतिनिधित्व भी किया था। वर्ष 1940 से 1945 के बीच उन्होंने उत्तर-पश्चिम सीमा

पर एक प्रशिक्षक के रूप में अपनी सेवा प्रदान की थी। द्वितीय विश्व युद्ध की समाप्ति के बाद उन्हें 'ब्रिटिश राष्ट्रमंडल कब्जा बल' के हिस्से के रूप में जापान भेजा गया था। जहाँ उन्होंने सितम्बर 1947 तक सेवा की। भारत-पाकिस्तान विभाजन के पश्चात् कंपनी हवलदार मेजर पीरू सिंह शेखावत का तबादला भारतीय सेना की राजपुताना राइफल्स की छठी बटालियन में कर दिया गया था।

1947 भारत-पाकिस्तान युद्ध

अक्टूबर 1947 में जम्मू और कश्मीर की रियासत पर नियंत्रण को लेकर भारत व पाकिस्तान के बीच युद्ध छिड़ गया। जुलाई 1948 में पाकिस्तान ने जम्मू और कश्मीर के तिथवाल क्षेत्र में भारतीय सैनिको पर कई आक्रामक हमले किये एवम दिनांक 08 जुलाई 1948 को एक गोलाकार क्षेत्र पर अनाधिकृत कब्जा कर लिया। इससे किशनगंगा नदी के पार, आगे के मोर्चो पर तैनात भारतीय सैनिकों को मजबूर होकर पीछे हटना पड़ा।

[नीलम नदी को किशनगंगा नदी के नाम से भी जाना जाता है। यह भारत के कश्मीर क्षेत्र में स्थित एक नदी है। यह नदी कश्मीर को गांदरबल जिले, भारत से निकलती है एवम नीलम घाटी से होते हुए, पाकिस्तान प्रशासित कश्मीर में बहती है। जहाँ इसका कुछ भाग भारत-पाकिस्तान नियंत्रण रेखा के साथ लगताहै, एवम आगे चलकर यह नदी मुजफ्फरबाद शहर (पाकिस्तान), के पास झेलम नदी में जाकर मिल जाती है।]

इस स्थिति से निपटने के लिए राजपुताना राइफल्स की छठी बटालियन को उरी से तिथवाल भेज दिया गया। कंपनी हवलदार मेजर पीरू सिंह शेखावत भी इसी बटालियन में कार्यरत थे। इनकी बटालियन को 163वीं ब्रिगेड में सम्मिलित कर दिया गया। पीरू सिंह शेखावत ने अपनी रेजीमेंट के साथ तिथवाल पुल पर मोर्चा संभाल लिया। भारतीय सैन्य अधिकारियों ने आगे की आवश्यक रणनीति बनाई एवम दिनांक 11 जुलाई 1948 भारतीय सैनिको ने, पाकिस्तानी सैनिकों पर हमले करना शुरू कर दिया एवम ये हमले अगले चार दिनों तक लगातार जारी

रहे। लेकिन पाकिस्तानी सैनिक अभी भी एक रणनीतिक रूप में अति महत्वपूर्ण स्थान पर अपना नियंत्रण बनाए हुए थे। भारतीय सैन्य व कमांडरो व अधिकारियों ने यह निर्णय लिया कि आगे बढ़ने से पहले इस महत्वपूर्ण स्थान पर कब्जा करना अति आवश्यक है। इस स्थान के अतिरिक्त एक और भी अन्य महत्वपूर्ण स्थान था जिस पर कब्जा करना अति आवश्यक था। इन दोनों स्थानों पर कब्जा करने की जिम्मेदारी '6वीं राजपुताना राइफल्स' को सौंपी गई। इस महाअभियान के लिए '6वीं राजपुताना राइफल्स' की दो कंपनियों 'सी कंपनी' व 'डी कंपनी' को नियुक्त किया गया। जिसमें बटालियन की 'सी कंपनी' ने पहले स्थान पर सफलतापूर्वक कब्जा किया एवम दूसरे स्थान को सुरक्षित किया। दिनांक 18 जुलाई 1948 को 'डी' कंपनी ने भारतीय समयानुसार दिन के 01:30 बजे अपना पहला हमला प्रारंभ किया। पाकिस्तानी सैनिकों द्वारा नियंत्रित स्थान तक का रास्ता मात्र 1 मीटर (3 फीट 3.37 इंच) चौड़ा था और दोनों तरफ गहरी खाइयाँ थी। इस संकरे रास्ते पर छिपे हुए पाकिस्तानी बंकरों में घात लगाये बैठे सशस्त्र पाकिस्तानी सैनिकों की निगरानी थी। जो उन्हें वहाँ पर किसी भी प्रकार की हलचल करने वाले भारतीय सैनिकों का अवलोकन और स्पष्ट गोलीबारी करने के लिए उचित क्षेत्र प्रदान करते थे। जैसे-जैसे भारतीय सैनिक आगे बढे, उन पर पाकिस्तानी सैनिकों द्वारा भारी गोलाबारी की गई एवम आधा घंटे के अंदर ही 6 राजपुताना राइफल्स की 'डी' कंपनी के 51 सैनिक हताहत हो गये। इस लड़ाई में 'डी' कंपनी का नेतृत्व कंपनी हवलदार मेजर पीरू सिंह शेखावत कर रहे थे। भारी हताहतों के कारण उनके सेक्शन में सैनिकों की संख्या आधी रह गई। उन्होंने देखा कि पाकिस्तान की मीडियम मशीन गन पोस्ट की तरफ से आ रही फायरिंग से अधिकांश भारतीय सैनिक हताहत हो रहे थे। पीरू सिंह शेखावत अपने प्राणों की परवाह न करते हुए उसी मीडियम मशीन गन की तरफ दौडे। उनको रोकने के लिए पाकिस्तानी सैनिकों ने ऊँचाई से उनके ऊपर ग्रेनेड फेंके। ग्रेनेड उनके आस-पास ही फटे, जिससे उनके शरीर पर कई जगह ग्रेनेड के छर्रे घुस गये और वह बुरी तरह जख्मी हो गये। लेकिन बुरी तरह घायल होने के बावजूद भी पीरू सिंह शेखावत ने 'राजा रामचंद्र की जय' लगाते हुये आगे बढ़ान जारी रखा। शीघ्र ही उन्होंने

पोस्ट पर तैनात पाकिस्तानी सैनिकों को अपनी स्टेन गन के फायर व संगीन के प्रहार से मार गिराया। लेकिन जब तक पीरू सिंह शेखावत ने इस पोस्ट पर कब्जा किया तब तक उनकी कंपनी के शेष सैनिक या तो वीरगति को प्राप्त हो गये थे अथवा बुरी तरह घायल हो चुके थे। अब पीरू सिंह शेखावत ने इस घायल अवस्था में यह दृढ़ निश्चय किया कि उसकी 'डी' कम्पनी को दिये गये लक्ष्य को पूरा करने के लिए वह अकेले ही पाकिस्तानी सेना से भिड़ जायेगा और वह अपने लक्ष्य की पूर्ति के लिए खून से लथपथ, अपनी स्टेनगन से फायरिंग करते हुए, पाकिस्तानी मध्यम मशीन गन पोस्ट की तरफ निडर बढ़े। पाकिस्तानी सैनिकों ने पुनः उन पर ग्रेनेड फेंके, इस ग्रेनेड के हमले से उनके चेहरे पर गहरे घाव हो गये, जिससे उनके चेहरे से लगातार खून एक टपक रहा था, उनकी आँखों में भी गहरे घाव हो गये थे जिससे वह साफ-साफ देख नहीं पा रहे थे। इस अवस्था में भी उन्होंने अपने कदमों को पीछे नहीं हटाया। उनकी स्टेन गन की गोलियाँ भी खत्म हो चुकी थी, फिर वह एक खाई में कूदे एवम अपनी संगीन से दो पाकिस्तानी सैनिकों को मार गिराया। फिर वह खाई से रेंगते हुए बाहर निकले व पाकिस्तानी सैनिकों के अगले ठिकाने पर ग्रेनेड फेंके। खाई से बाहर निकलते समय उनके सिर में गोली लगी और वह मात्र 30 वर्ष की आयु में वीरगति को प्राप्त हो गये। इस असाधारण वीरता व पराक्रम के लिए कंपनी हवलदार मेजर पीरू सिंह शेखावत को मरणोपरांत भारत के सर्वोच्च सैन्य सम्मान 'परमवीर चक्र' से सम्मानित किया। धन्य हैं आप, कोटी-कोटी नमन।

परम वीर चक्र विजेता ऑनररी कैप्टन करम सिंह

दिनांक 15 सितम्बर 1915 को वीरों की भूमि पंजाब राज्य के, बरनाला जिले के, सहनाव गाँव के जाट, सिख श्री उत्तम सिंह के यहाँ एक पुत्र रत्न ने जन्म लिया। जिसका नाम करम सिंह रखा गया। करम सिंह का लालन-पालन बहुत लाड़-प्यार में हुआ। उन्होंने अपनी प्राथमिक शिक्षा अपने गाँव में ही प्राप्त की। चूंकि उनके पिता एक किसान थे इसलिए वह भी एक किसान ही बनना चाहते थे। किन्तु विधि का विधान तो कुछ और ही थी। उनके गाँव में अनेक लोगों ने

प्रथम विश्व में भाग लिया था व अपनी वीरता का परिचय दिया था। उन दिग्गजों, नायकों की कहानी ने करम सिंह को बहुत प्रभावित किया एवम उन्होंने सेना में भर्ती होने का निर्णय लिया। इस प्रकार दिनांक 15 सितम्बर 1941 को करम सिंह सिख रंजीमेंट की पहली बटालियन में भर्ती हो गये। चूंकि करम सिंह का जन्म वीरों की भूमि पंजाब में हुआ था। इसलिए वीरता व साहस उनके अंदर कूट-कूट कर भरा हुआ था। इसी कारण जब उन्होंने द्वितीय विश्व युद्ध के बर्मा अभियान (वर्तमान म्यांमार) के दौरान अपनी वीरता व साहस का बखूबी परिचय दिया। जिसके फलस्वरूप उन्हें 'सैन्य पदक' से सम्मानित किया गया एवम उन्हें एक 'युवा युद्ध विजयी सिपाही' के रूप में उनकी बटालियन के साथी सैनिकों ने भी उन्हें सम्मान प्रदान किया। वह उन पाँच चुने हुए होनहार सैनिकों में से एक थे जिन्हें तत्कालीन प्रधानमंत्री पंडित जवाहरलाल नेहरू जी ने वर्ष 1947 में स्वतंत्रता के पश्चात् पहली बार भारतीय ध्वज तिरंगा फहराने के लिए चुना था।

1947 भारत-पाकिस्तान युद्ध

15 अगस्त 1947 को भारत की स्वतंत्रता प्राप्ति के पश्चात्, भारत व पाकिस्तान के बीच कश्मीर मुद्दे पर खूनी संघर्ष चला। इस संघर्ष के शुरूआती चरणों में, पाकिस्तानी कबायली मिलिशिया ने भारत-पाक सीमा पार करके, कश्मीर के कई गाँवों पर अनाधिकृत कब्जा कर लिया था। इन गाँवों में तिथवाल भी सम्मिलित था। यह गाँव भारत के लिए रणनीतिक रूप से अति महत्वपूर्ण था क्योंकि यह गाँव कुपवारा सेक्टर में नियंत्रण रेखा पर स्थित था।

दिनांक 23 मई 1948 को एक खूनी संघर्ष में भारतीय सैनिकों ने, पाकिस्तानी सैनिको को पराजित करके तिथवाल गाँव पर कब्जा कर लिया था। इसके पश्चात् पाकिस्तानी सैनिकों ने रिचमार गली एवम तिथवाल गाँव पर पुनः कब्जा करने के कई प्रयास किये। दिनांक 13 अक्टूबर 1948 को, ईद अल-अधा के दिन, पाकिस्तानी सैनिकों ने तिथवाल गाँव को दरकिनार करते हुए, रिचमार गली को वापस लेने हेतु, आगे बढने के लिए वहाँ तैनात भारतीय ब्रिग्रेड पर हमला करने

की कार्यवाही की। उस समय लांस नायक करम सिंह, रिचमार गली में तैनात थे एवम् एक सेक्शन की कमाल संभाल रहे थे। पाकिस्तानी सैनिकों ने भारी संख्या बल के साथ तोपों व मोर्टारों से भारी गोलाबारी के साथ हमला किया। हमला इतना सटीक व खतरनाक था कि प्लाटून के इलाके में एक भी बंकर सुरक्षित नहीं बचा, सारी संचार खाइयां हमले की चपेट में आकर ढह गई। भारतीय सिख सैनिक, पाकिस्तानी सैनिकों से संख्या में लगभग 10 गुना कम थे। फिर भी भारतीय वीर सिख सैनिकों ने, पाकिस्तानी सैनिकों के कई हमलों को विफल कर दिया। किन्तु इस हमले में लांस नायक करम सिंह समेत अनेकों भारतीय सैनिक बुरी तरह घायल हो गये थे। इस घायल अवस्था में लांस नायक करम सिंह आवश्यकतानुसार एक स्थान से दूसरे स्थान पर जाकर भारतीय सैनिकों का मनोबल बढ़ाते रहे एवम बीच-बीच में पाकिस्तानी सैनिकों पर ग्रेनेड फेंककर हमला करते रहे। लांस नायक करम सिंह के दोनों हाथ घायल हो चुके थे, उन्हें चिकित्सा हेतु पीछे हटने के लिए कहा गया। लेकिन उन्होंने पीछे हटने से इन्कार कर दिया एवम भारतीय सैनिकों की पहली पंक्ति पर मोर्चा संभाले रखा। पाकिस्तानी सैनिकों के हमले की पाँचवीं लहर के दौरान दो पाकिस्तानी सैनिक लांस नायक करम सिंह के एकदम करीब आ गये। करम सिंह बिजली की फुर्ती से अपनी खाई से बाहर कूदे एवम संगीन से ही उन्हें मार डाला। लांस नायक करम सिंह ने अपने साथियों के साथ मिलकर पाकिस्तानी सैनिकों के तीन और बड़े हमलों को पूर्णतः विफल कर दिया। जिसके परिणामस्वरूप पाकिस्तानी सैनिकों को पीछे हटना पड़ा। संकट की इस घड़ी में लांस नायक करम सिंह ने कुशल नेतृत्व व असीम बहादुरी का परिचय दिया। इस युद्ध के दौरान वह इतने घातक हो चुके थे कि पाकिस्तानी सैनिकों का दस गुना बड़ा संख्या बल, भारी गोलाबारी कुछ भी उनके मनोबल को तनिक भी नहीं तोड़ सके। गंभीर रूप से घायल होने के बावजूद भी उन्होंने कई पाकिस्तानी सैनिकों को संगीन से ही मार गिराया एवम भारतीय सैनिकों की अग्रिम पंक्ति में डटे रहे। लांस नायक करम सिंह की असीम बहादुरी, कुशल नेतृत्व के लिए उन्हें भारत के सर्वोच्च सैन्य वीरता सम्मान **'परम वीर चक्र'** से सम्मानित किये जाने की घोषणा राजपत्र में प्रकाशित हुई। 'परम

वीर चक्र’ से सम्मानित होने के बाद भी लांस नायक करम सिंह ने भारतीय सेना में अपनी अमूल्य सेवा प्रदान करना जारी रखा। सितंबर 1969 में आप ऑनरटी कैप्टन के पद से भारतीय सेना से सेवानिवृत्त हुए। दिनांक 20 जनवरी 1993 को 77 वर्ष की आयु में भारत के युद्ध नायक वीर सपूत ने इस दुनियाँ को अलविदा कहा एवम सदैव के लिए अपनी आँखे मूँद ली। आपको कोटि-कोटि नमन है।

1962 भारत-चीन युद्ध

दिनांक 15 अगस्त 1947 को स्वतंत्रता मिलने के पश्चात अनुभवहीन, अपरिपक्व भारतीय राजनेताओं ने भारतीय विदेश नीति की घोषणा की थी। इस घोषणा में कहा गया था कि भारत व चीन एशिया की दो महान महाशक्तियां हैं। चीन इस घोषणा से पूर्णतः असहमत था चीन का मानना था कि वही एशिया की एकमात्र शक्ति है। वर्ष 1914 में भारत व चीन के बीच अरुणाचल प्रदेश इलाके में मैकमोहन नामक ब्रिटिश अधिकारी ने एक सीमा रेखा खींची थी। जिसे मैकमोहन लाइन भी कहा जाता है। इस सीमा रेखा को तिब्बत ने स्वीकार किया था किन्तु चीन ने इस सीमा रेखा को अस्वीकार किया एवम् तिब्बत को स्वतंत्र देश मानने से भी अस्वीकार किया। इसलिए वर्ष 1950 में चीन ने तिब्बत पर आक्रमण करके बलपूर्वक तिब्बत को चीन में मिल लिया। तिब्बती नागरिकों के विरोध करने पर चीन ने उन पर जुल्म व अत्याचार किए। इससे परेशान होकर **तिब्बती नेता दलाई लामा (तिब्बती धर्म गुरु) एवं उनके अनुयायियों ने भारत से शरण माँगी। पुनः अनुभवहीन भारतीयों राजनेताओं ने बिना किसी गहन विचार मंथन के, दूरगामी परिणामों को अनदेखा करते हुए, शरणागत धर्म का पालन करते हुए, दलाई लामा व उनके अनुयायियों को भारत में शरण दे दी। चीन ने इसका कड़ा विरोध किया एवम् भारत सरकार के समक्ष अपनी आपत्ति भी प्रकट की। किन्तु भारत सरकार ने चीन कि आपत्ति को अस्वीकार कर दिया। बस यहीं से भारत व चीन के बीच दुश्मनी का पहला बीज बो दिया गया। जिसकी बड़ी भारी कीमत भारत को वर्ष 1962 में भारत – चीन युद्ध के रूप में चुकानी पड़ी।** भारत द्वारा चीन को दलाई लामा व उनके अनुयायियों को चीन को सौंपने कि माँग को अस्वीकार करने के तुरंत बाद से ही, गुप्त रूप से, चीन ने भारत के विरुद्ध युद्ध कि तैयारियों में

जुट गया। चीन ने इसकी भनक तक किसी भी देश को नहीं लगने दी। बल्कि उसने हिन्दी चीनी भाई-भाई का नारा देकर भारत को गुमराह करना जारी रखा। भारत के अनुभवहीन नेता चीन की धूर्त चाल में फँस गए। उन्होंने कभी भी चीन के विरुद्ध किसी भी प्रकार कि सैनिक अथवा युद्ध कि स्थिति से निपटने कि तैयारी नहीं रखी थी। इसका गंभीर परिणाम भारत को वर्ष 1962 में चीन से युद्ध में मिली पराजय के रूप में भुगतना पड़ा।

अब हम उन घटनाओं के संदर्भ में जानेंगे, जिनके कारण भारत चीन युद्ध हुआ

चीन सरकार ने 1947 भारत-पाकिस्तान युद्ध का गहन अध्ययन किया एवं यह पाया कि भारत सरकार में युद्ध के दौरान, युद्ध का सही आंकलन करने व आवश्यकतानुसार सही निर्णय लेने की क्षमता नहीं है। तभी भारत सरकार ने 1947 भारत-पाकिस्तान युद्ध के दौरान, उस समय युद्ध विराम का गलत निर्णय लिया। जब भारतीय सेना जीत रही थी। यह भी एक अहम कारण था कि 1962 भारत-चीन युद्ध की शुरुआत चीन की तरफ से की गई थी और **दिनांक 31 दिसम्बर 1948 को जिस 'ऑपरेशन सिंदूर' की नींव रखी गई थी वह 'ऑपरेशन सिंदूर जारी रहा'**।

चीन ने अपने मानचित्र में भारत का 50000 वर्ग मील के क्षेत्र को अक्साई चीन का भाग दिखाया था एवं कहा था कि अक्साई चीन इलाका, चीन देश का ही भाग है। भारत ने इसका कड़ा विरोध किया। भारत के तत्कालीन प्रधानमंत्री श्री जवाहरलाल नेहरू जी ने इस संदर्भ में उस समय भारत के दौरे पर आए चीन के तत्कालीन प्रधानमंत्री चाऊ एन लाई से बात भी की थी और उनकी तरफ से इस समस्या के निराकरण का वादा किया गया था। किन्तु कभी भी इस अति गंभीर समस्या को हल करने के लिए कोई भी सकारात्मक कदम नहीं उठाया गया।

वर्ष 1956 में चीन ने जम्मू कश्मीर सीमा से सटे अक्साई चीन क्षेत्र में सड़क बनाना प्रारंभ कर दिया था। भारत ने इसका विरोध किया किन्तु चीन ने भारत के विरोध कि परवाह न करते हुए सड़क निर्माण के कार्य को जारी रखा।

इसके जवाब में भारत ने इस क्षेत्र में अग्रिम सैनिक चौकियाँ स्थापित की। भारत का यह कदम, उस क्षेत्र में चीन कि मौजूदगी व सड़क निर्माण को ध्यान में रखकर उठाया गया था।

जुलाई 1958 में चीन ने खुरनाक किले कि समीप लद्दाख के सीमा क्षेत्र में घुसने का प्रयास किया था।

वर्ष 1959 कि गर्मियों में मिग्यीटुई व पेंगांग झील के क्षेत्र में चीन ने घुसने का प्रयास किया था।

दिनांक 23 जनवरी 1959 को चीन ने सीमा रेखा को अस्वीकार करते हुए, सम्पूर्ण अक्साई चीन क्षेत्र को अपना क्षेत्र कहा एवं सीमा रेखा को गलत बताया। जैसा कि पहले भी बताया जा चुका है कि इस मंशा के द्वारा चीन ने भारत के 50000 वर्ग मील क्षेत्र को भी चीन ने अक्साई चीन क्षेत्र का भाग दिखाया।

वर्ष 1959 में खम्पा क्रांति हुई जिसके परिणामस्वरूप तिब्बती नेता एवं तिब्बती धर्मगुरु दलाई लामा ने भारत से शरण मांगी। भारत ने दलाई लामा का स्वागत किया एवं अपने देश में शरण दी। चीन ने भारत के इस कदम पर अपना विरोध प्रकट किया।

अब चीनी सरकार ने किसी की भी परवाह न करते हुए बर्मा (वर्तमान म्यांमार) देश के साथ बनी मैकमोहन सीमा रेखा को भी अस्वीकार कर दिया। उसने इन राष्ट्रों को भी मान्यता प्रदान नहीं की। यह 1954 के समझौते का खुला उल्लंघन था। चीन ने इस क्षेत्र में भी 50000 वर्ग किलोमीटर के क्षेत्र पर अपना दावा प्रकट किया।

वर्ष 1961 में भारत ने फॉरवर्ड पॉलिसी को अपनी विदेश नीति में शामिल किया एवं इसके अनुसार भारतीय सेना की टुकड़ियों को मैकमोहन रेखा से लगी सीमा रेखा पर तैनात किया। जो कि वर्ष 1959 में चीनी प्रीमियर झोऊ एनलाई के द्वारा घोषित लाइन ऑफ एक्चुअल कंट्रोल के पूर्वी भाग के उत्तर में थी।

भारत-चीन युद्ध की शुरुआत

चीन ने दिनांक 20 अक्तूबर 1962 को लद्दाख में और मैकमोहन रेखा के पार एक साथ हमले शुरू कर दिए। दिनांक 20 अक्टूबर 1962 को चीन पीपुल्स लिबरेशन आर्मी ने थांगला रिज पर हमला किया जो कि उस समय असम (आसाम) राज्य के अंतर्गत आता था, क्योंकि उस समय अरुणाचल प्रदेश राज्य का गठन नहीं हुआ था। चीन ने 1962 का भारत चीन युद्ध मुख्यतः दो स्थानों से लड़ा गया था।

प्रथम- लद्दाख के अक्साई चीन से

दूसरा- अरुणाचल प्रदेश से।

इसलिए इस युद्ध को दो सेक्टरों से लड़ा गया युद्ध भी कहा जा सकता है।

भारत ने यह युद्ध तीन निम्नलिखित क्षेत्रों से लड़ा था –

प्रथम- लद्दाख का अक्साई चीन।

दूसरा- आसाम वर्तमान अरुणाचल प्रदेश में थांगला।

तीसरा – भारत-बर्मा (वर्तमान म्यांमार) सीमा क्षेत्र पर वालोंग नामक स्थान।

चूंकि भारत, इस युद्ध के लिए तैयार नहीं था। इस युद्ध में भारतीय सेना के पास कोई भी मजबूत रणनीति नहीं थी। परिणामस्वरूप इस युद्ध में भारतीय सेना को हथियारों, रसद सामग्री, अन्य आवश्यक वस्तुओं की भारी कमी का सामना करना पड़ा था। यहाँ तक कि ऊंचे-पहाड़ी व ठंडे इलाकों की आवश्यकतानुसार जूते व गरम कपड़े भी नहीं थे। इसके अतिरिक्त भारतीय सेना के पास उस क्षेत्र में

आवागमन के लिए सड़कें भी उपलब्ध नहीं थीं। चूंकि चीन योजनाबद्ध तरीके से इस युद्ध के लिए आया था इसलिए वह काफी बड़ी संख्या बल, आधुनिक हथियारों व अन्य आवश्यक युद्ध साजों समान के साथ युद्ध के मैदान में उतरा था। भारतीय सेना संख्या बल में भी चीन से काफी कम थी। चीन उस समय तक भारत चीन सीमा से सटे इलाकों तक सड़क निर्माण का कार्य प्रारंभ कर चुका था। इन सड़कों ने भी चीन की विजय में अति महत्वपूर्ण भूमिका निभाई थी। पश्चिमी क्षेत्र मे चीन ने दौलत बेग, ओल्डी चुसूल और देमचोक क्षेत्र से हमले किए। चीन ने उन सभी क्षेत्रों पर हमले करके अपना कब्जा कर लिया जिन क्षेत्रों पर वह अपना दावा बता रहा था।

'ला' का तिब्बती भाषा में अर्थ पहाड़ी दर्रा होता है। रेजांगला एक पहाड़ी दर्रा है। यह लद्दाख कि चुशूल् घाटी के दक्षिणी-पूर्वी क्षेत्र से जुड़ा हुआ है। इस क्षेत्र कि लंबाई लगभग 3000 मीटर और चौडाई लगभग 2000 मीटर है एवं यहाँ की औसत ऊंचाई लगभग 16000 फीट है। रेजांगला युद्ध के समय कुमाऊं रेजिमेंट की 13 वीं बटालियन चुसूल सेक्टर में तैनात थी। समुद्र तल से 5000 मीटर (16000 फीट) कि ऊंचाई पर मेजर शैतान सिंह कि 'सी कंपनी' एक स्थान पर तैनात थी इस कंपनी में मात्र 120 वीर भारतीय सैनिक थे एवं इस क्षेत्र को पाँच प्लाटून पोस्टों द्वारा चीनी सेना के बड़े हमले से बचाव किया जा रहा था। दिनांक 18 नवंबर 1962 की सुबह चीनी सेना ने इस इलाके पर आक्रामक हमले की तैयारी की थी। प्रातः पाँच बजे मंद प्रकाश में चीनी सेना आगे बढ़ी, वहाँ पर तैनात भारतीय सैनिकों ने तुरंत उनको पहचाना और बिना देरी किए चीनी सैनिकों पर लाइट मशीन गन, राइफल्स, मोर्टार एवं ग्रेनेड से हमले किए, परिणामस्वरूप बड़ी संख्या में चीनी सैनिक मारे गए। यह चीनी हमला असफल रहा। चूंकि चीनी सैनिक संख्या बल में काफी अधिक थे इसलिए चीनी सैनिकों ने प्रातः पाँच बजकर चालीस मिनट पर पलटवार करते हुए पुनः हमला किया। लगभग 1350 चीनी सैनिकों को भारतीयों सैनिकों ने सामने से आगे बढ़ने नहीं दिया। सामने से असफल होने के पश्चात चार सौ चीनी सैनिकों ने भारतीय चौकी पर पीछे की तरफ

से हमला किया। इसके साथ ही वहाँ तैनात 8वीं प्लाटून पर चीनी सैनिकों ने, पोस्ट कि तार की पिछली तार की बाड़ के पीछे से हमला किया व सातवीं प्लाटून पर भी चीनी सैनिकों ने पीछे से हमला कर दिया। भारतीय सैनिकों ने विशाल चीनी सेना के दो तरफा हमलों का डटकर मुकाबला किया और वीरता की अद्भुत मिसाल कायम की। भारतीयों सैनिकों ने 3 इंच (76 मि मी) मोर्टार के गोले से चीनी सैनिकों पर ताबड़–तोड़ प्रहार किए एवं बड़ी संख्या में चीनी सैनिक मार गिराये, किन्तु चीनी सैनिक संख्या बल में काफी अधिक थे इसलिए इस लड़ाई में अंत में मात्र 20 भारतीय सैनिक जीवित बचे और उन 20 भारतीय सैनिकों ने अपनी अंतिम साँस तक विशाल चीनी फौज का डटकर मुकाबला किया। जब भारतीय सैनिकों के पास गोला बारूद समाप्त हो गया तो वे अपने-अपने बंकरों से बाहर निकाल और चीनी सैनिकों से हाथ से ही लड़ने लगे। किन्तु शीघ्र ही बड़ी संख्या में चीन के अतिरिक्त सैनिक, अपने सैनिकों कि सहायता के लिए वहाँ पहुँच गए। उन्होंने भारतीयों सैनिकों को चारों तरफ से घेर लिया और उन पर हमला बोल दिया। अंत में 7 वीं और 8वीं प्लाटून में कोई भी भारतीय सैनिक जीवित नहीं बचा। प्रत्येक भारतीय सैनिक ने अपने खून की आखिरी बूँद तक, अपनी अंतिम सांस तक विशाल चीनी सेना का सामना किया। किन्तु अपना कदम एक इंच भी पीछे नहीं हटाया। धन्य हैं आप, आपको कोटी-कोटी नमन है।

इस युद्ध के दौरान मेजर शैतान सिंह भाटी ने आगे रहकर सेना का नेतृत्व किया। वह लगातार भारतीय पोस्टों के बीच सामंजस्य तथा पुनर्गठन बनाने का काम कर रहे थे, जवानों का हौसला बड़ा रहे थे। वह भी गंभीर रूप से घायल हो चुके थे घायल होने के बावजूद भी वह एक पोस्ट से दूसरी पोस्ट बीच, बिना किसी सुरक्षा के जा रहे थे और अंत में चीनी सैनिकों का मुकाबला करते हुए। मेजर शैतान सिंह भाटी वीरगति को प्राप्त हो गए । उनकी वीरता, देशप्रेम, कर्तव्यपरायणता को सम्मान देते हुए, भारत सरकार ने वर्ष 1963 में उन्हें मरणोपरांत सेना के सर्वोच्च वीरता पुरस्कार **'परमवीर चक्र'** से सम्मानित किया जो कि दिनांक 18 नवंबर 1962 से प्रभावी हुआ। चूसुल में इन वीर भारतीय

सैनिकों के लिए स्मारक बनाया गया है। भारत के इन वीर सपूतों को कोटी-कोटी नमन।

पूर्वी सेक्टर

दिनांक 20 अक्टूबर 1962 को चीनी सेना ने थांगला और दिनांक 21 अक्टूबर 1962 को वालोंग पर हमला किया। यह दोनों क्षेत्र तत्कालीन असम (वर्तमान अरुणाचल प्रदेश) के अंतर्गत थे। यहाँ पर भी चीनी सैनिकों ने बहुत विशाल सैनिक बल के साथ योजनाबद्ध तरीके से भारी गोलाबारी की थी। चीनी सेना दोनों क्षेत्रों के काफी हिस्सों पर कब्जा कर चुकी थी। हथियारों, गोला—बारूद, राशन व सर्दी के लिए आवश्यक वस्त्रों की भारी कमी होने के बावजूद भी, भारतीय सैनिकों ने बड़ी संख्या में आए, आधुनिक हथियारों से लैस चीनी सैनिकों का बहादुरी से मुकाबला किया था। किन्तु दुर्भाग्यवश चीनी सैनिकों ने थांगला और वालोंग दोनों क्षेत्रों के अधिकांश भाग पर अपना कब्जा कर लिया था। दिनांक 24 अक्टूबर 1962 को भारी गोलाबारी के चौथे दिन चीनी सेना ने युद्धविराम का प्रस्ताव रखा, किन्तु चीन वर्तमान नियंत्रण रेखा से ही सेना कि वापसी चाहता था। भारत ने इसके लिए साफ मना कर दिया। भारत सरकार के मना करते ही चीनी सेना ने बड़े संख्या बल के साथ आक्रमण करते हुए अरुणाचल प्रदेश के अधिकांश भू-भाग पर कब्जा कर लिया था। इस विकट स्थिति में भारत सरकार ने अमेरिका से सैन्य सहायता मांगी। अमेरिका, ब्रिटेन व कनाडा ने भारत के निवेदन को स्वीकार करते हुए दिनांक 03 नवंबर 1962 को सहायता भेजी। किन्तु इस समय तक चीनी सेना ने लगभग ब्रिटेन क्षेत्र के बराबर भारत के भू-भाग पर अनाधिकृत कब्जा कर लिया था। दरअसल चीन कि योजना, भारत को उसके पूर्वी क्षेत्र से अलग करने की थी। दिनांक 13 नवंबर 1962 को भारतीय सेना व चीनी सेना के बीच वालोंग में घमासान युद्ध हुआ। भारतीय सेना ने, चीनी सेना को कड़ी टक्कर दी। किन्तु पुनः चीनी सेना के विशाल संख्याबल व आधुनिक हथियारों से लैस होने के कारण भारतीय सेना इस जीत को अधिक समय तक नहीं बचा पाई और भारतीय सेना को पीछे हटते हुए लोहित घाटी में वापस आना पड़ा

था। दिनांक 18 नवंबर 1962 तक चीनी सेना तेजपुर के बाहरी क्षेत्र तक पहुँच चुकी थी। दिनांक 20 नवंबर 1962 को चीन ने युद्ध विराम कि घोषणा कर दी और दो विवादित क्षेत्र में से एक विवादित क्षेत्र से अपनी वापसी कि भी घोषणा भी कर दी। 1962 भारत-चीन युद्ध के परिणामस्वरूप अरुणाचल प्रदेश के आधे से अधिक भू-भाग पर चीन पीपुल्स लिबरेशन आर्मी ने अस्थायी रूप से अनाधिकृत कब्जा कर लिया था। चीन सरकार ने संभवतः अंतरराष्ट्रीय माहौल को अपने विरुद्ध देखते हुए एकतरफा युद्ध विराम घोषित किया एवं चीनी सेना को मैकमोहन रेखा के पीछे भेज दिया।

1962 भारत चीन युद्ध में भारत कि पराजय के बावजूद भी यह युद्ध बेहद कठिन परिस्थितियों में भारत द्वारा चीन को कड़ी टक्कर देने के लिए उल्लेखनीय है। इस युद्ध में ज्यादा तर लड़ाई 4250 मीटर (14000 फीट) से अधिक ऊंचाई पर लड़ी गई थी। चीनी सेना हिन्दी-चीनी भाई-भाई के नारे की आड़ में छल-पूर्वक आक्रमण करके उच्चतम चोटी क्षेत्रों पर कब्जा करके, युद्ध में विजय प्राप्त करने में सफल रही थी।

1962 भारत-चीन युद्ध में भारतीय सेना की पराजय के कारण

- चीन का भारत सरकार के संदर्भ में यह अध्ययन सही निकला कि 'भारत सरकार में युद्ध का सही आंकलन करने व सही निर्णय लेने कि क्षमता नहीं है'। तभी भारत सरकार ने अमेरिका की सलाह को नजरंदाज किया। अमेरिका ने भारत को सलाह दी थी कि भारतीय वायु सेना का प्रयोग चीनी सेना को वापस खदेड़ने में किया जाना चाहिए। बाद में अमेरिकी गुप्तचर संस्था 'सी आई ए' अपनी एक रिपोर्ट में बताया था कि उस समय चीनी सेना कि पास तिब्बत में न तो पर्याप्त मात्रा में ईंधन था और न ही आवश्यकतानुसार लंबा रनवे था। अर्थात यदि इस युद्ध में भारत द्वारा चीनी सेना के विरुद्ध वायु सेना का प्रयोग करके हवाई हमले किए जाते तो युद्ध का परिणाम भारत के पक्ष में हो सकता था।

- तत्कालीन प्रधानमंत्री पंडित जवाहर लाल नेहरू जी की सरकार चीन के इतने बड़े हमले की आशंका को भांपने, समझने व आवश्यकतानुसार सही समय पर सही निर्णय लेने, सही रणनीति बनाने में पूर्णतः असफल रही थी।
- भारतीय नेताओं ने चीनी सेना चीनी सेना को वापस खदेड़ने कि योजना पर ध्यान व ऊर्जा केंद्रित करने के स्थान पर रक्षा मंत्रालय से रक्षा मंत्री श्री कृष्ण मेनन को हटाने पर कीमती समय बर्बाद किया।
- इधर भारतीय सेना भी रक्षा मंत्रालय से रक्षा मंत्री कृष्ण मेनन के द्वारा "अपने कृपा पात्र को अच्छी" नियुक्ति देने कि नीतियों के कारण विभाजित हो गई थी।
- रक्षा मंत्री श्री कृष्ण मेनन ने कभी भी भारतीय सेना के आधुनिकीकरण पर ध्यान नहीं दिया था।
- भारतीय क्षेत्र में चीनी घुसपैठ के विरुद्ध सार्वजनिक आलोचना में चिंताजनक वृद्धि होने के कारण भारत के तत्कालीन प्रधानमंत्री पंडित जवाहरलाल नेहरू जी ने भारतीय सेना कि सलाह के विरुद्ध, एक अपरिपक्व, अनुभवहीन नौकरशाह द्वारा 'फॉरवर्ड पॉलिसी' नामक योजन को मंजूरी प्रदान कि गई थी। जिसके अनुसार भारत- चीनी सीमा क्षेत्र में की छोटी-छोटी भारतीय पोस्ट बनाने के लिए कहा गया था। चीन को उस इलाके का भौगोलिक लाभ प्राप्त था। चीनी हमले के समय छोटी-छोटी पोस्टों को बनाए रखना तर्कसंगत नहीं था। किन्तु भारत के तत्कालीन प्रधानमंत्री पंडित जवाहरलाल नेहरू जी का यह अनुमान था कि चीन कभी भी भारत पर आक्रमण नहीं करेगा और दुर्भाग्यवश उनका यह अनुमान पूर्णतः गलत साबित हुआ और मक्कार चीन ने भारत के विरुद्ध युद्ध कि शुरुआत कर दी।

भारत चीन युद्ध का प्रभाव

1962 भारत-चीन युद्ध में विजय प्राप्त करके चीन देश ने अपने पश्चिम सेक्टर कि सीमा कि रक्षा नीतियों के लक्ष्यों को प्राप्त करने में सफलता प्राप्त की। क्योंकि चीन ने आक्साई चीन को वास्तविक नियंत्रण रेखा बनाए रखा। इस युद्ध के पश्चात भारत ने भी 'फॉरवर्ड नीति' को त्याग दिया और वास्तविक नियंत्रण रेखा, वास्तविक सीमाओं में परिवर्तित हो गई। इस युद्ध में भले ही चीन ने विजय प्राप्त कर ली हो किन्तु अंतर्राष्ट्रीय स्तर पर चीन की छवि गिर गई। क्योंकि इस युद्ध में चीन स्पष्ट रूप से एक हमलावर की भूमिका में था एवं 1965 भारत-पाकिस्तान युद्ध में चीन देश द्वारा पाकिस्तान को समर्थन प्रदान करने से इस बात की पुष्टि होती है कि चीन का लक्ष्य व उद्देश्य भारत विरोधी था।

1962 भारत-चीन युद्ध के कुछ आँकड़े निम्नानुसार है-

भारत	चीन
शक्ति क्षमता	
10000-12000 सैनिक	80000 सैनिक
मृत्यु एवं हानि	
मृत्यु-1383	मृत्यु-72
घायल-1047	घायल-1697
लापता-1696	
युद्ध बंदी- 3968	

इस युद्ध से भारत ने यह सीख ली कि 'हिन्दी-चीनी भाई-भाई' की नीति को त्यागकर भारत को भारत को सभी स्तरों पर मजबूत बनाने कि सख्त जरूरत है। इस प्रकार कुल मिलकर 1962 भारत-चीन युद्ध को भारतीय राजनीतिक आपदा

के संयोजन के परिणामस्वरूप एक सैन्य पराजय के रूप में देखा जाना चाहिए। अन्यथा भारतीय सेना को चीन किसी भी स्थिति में पराजित नहीं कर पाता।

1962 भारत-चीन युद्ध में उपरोक्त कारणों से भारत को चीन से पराजय अवश्य प्राप्त हुई। किन्तु संख्याबल में चीनी सैनिकों से बहुत कम होने, आधुनिक शस्त्रों से सुसज्जित न होने, राशन कि कमी होने, आवश्यकतानुसार संचार व्यवस्था न होने, यहाँ तक कि रीढ़ की हड्डी को जमा देने वाली जानलेवा सर्दी के अनुसार गरम कपड़े भी न होने के बावजूद भी भारतीय सेना के वीर, जांबाज सैनिकों ने चीनी सेना का डट कर मुकाबला किया। भारतीय सैनिकों के पराक्रम और वीरता को देखकर सम्पूर्ण विश्व अचंभित था। इन वीर भारतीय सैनिकों ने चीनी सेना के छक्के छुड़ा दिए। इस युद्ध में भारतीय सैनिकों ने वीरता की ऐसी गाथाएं लिखीं कि इन वीर सैनिकों को न कि सिर्फ भारत ने, बल्कि सम्पूर्ण विश्व ने एवम् यहाँ तक कि दुश्मन देश चीन ने भी नतमस्तक होकर सलाम किया। इन वीर भारतीय सैनिकों में से कुछ के संदर्भ में, आपका ध्यान आकर्षित करना चाहूँगा।

परम वीर चक्र विजेता मेजर धन सिंह थापा

जिन्होंने अकेले ही 600 चीनी सैनिकों का सामना किया और कई चीनी सैनिकों को 'खुकरी' से ही मार गिराया।

दिनांक 28 अप्रैल 1928 को, शिमला, हिमाचल प्रदेश में पद्म सिंह थापा जी के घर एक पुत्र रत्न ने जन्म लिया। उन्होंने अपने इस लाड़ले पुत्र का नाम धन सिंह रखा। अपनी पढ़ाई पूरी करने के पश्चात धन सिंह थापा ने 28 अगस्त 1949 को प्रथम बटालियन, 8वीं गोरखा राइफल में भर्ती हुए एवं दिनांक 21 फरवरी 1951 को उन्होंने सेकंड लेफ्टिनेंट के रूप में कमिशन प्राप्त किया। उस समय किसी को सपने में भी यह अनुमान नहीं था कि साधारण सा दिखने वाला यह अधिकारी, निहत्था ही दुश्मन से भिड़ जाएगा और देश भक्ति, वीरता, कर्तव्यपरायणता का एक नया अध्याय जोड़ेगा।

1962 भारत-चीन युद्ध के दौरान दिनांक 21 अक्टूबर 1962 को, चीनी सेना ने पैनगाँन्ग झील के उत्तर दिशा में 'श्रीजाप' और 'यूल' पर कब्जा करने के उद्देश्य से घुसपैठ शुरू की थी। चीनी सेना को यह सपने में भी गुमान नहीं था मेजर धन सिंह थापा कि कमान में 8वीं गोरखा राइफल्स की प्रथम बटालियन के द्वारा स्थापित पैनगाँन्ग झील के उत्तरी किनारे पर तैनात श्रीजाप-1 पोस्ट पर हमला करना उन्हें कितना भारी पड़ने वाला है। यह चौकी 'फॉरवर्ड पॉलिसी' के अंतर्गत बनाई गई, भारतीय चौकियों का हिस्सा थी तथा साथ ही चूसुल हवाई अड्डे की रक्षा के लिए रणनीतिक रूप से भी अति महत्वपूर्ण थी।

दिनांक 19-20 अक्तूबर 1962 कि रात, गलवान के नजदीक का हिमालयी क्षेत्र, खून को जमा देने वाली खतरनाक ठंड, चारों तरफ जमीं हुई बर्फ और चारों तरफ अंधेरा फैला हुआ था। इस स्थिति का लाभ उठाते हुए, बड़ी संख्या में चीनी सैनिकों ने वहाँ तैनात भारतीय चौकियों पर हमला बोल दिया था। बड़ी संख्या में चीनी सैनिकों ने लद्दाख के पूर्वी सेक्टर और गलवान कि भारतीय चौकियों पर एक साथ हमला बोल दिया था। इस बड़े हमले के परिणामस्वरूप चीनी सैनिकों ने उसी रात लद्दाख के गलवान, चिप-चाप और पैनगोंग क्षेत्र पर हमला करके वहाँ तैनात भारतीय चौकियों पर कब्जा कर लिया था।

8वीं गोरखा राइफल्स की 'डी कंपनी' के मेजर धन सिंह थापा श्रीजाप-1 चौकी के कमान अधिकारी के रूप में तैनात थे। इस चौकी की जिम्मेवारी का इलाका 48 वर्ग किलोमीटर (19 वर्ग मील) के क्षेत्र का था। चूंकि कई अन्य चौकियों भी स्थापित की जानी थीं। इसलिये श्रीजाप-1 के रक्षा के लिए 'डी कंपनी' के मात्र 28 जवान ही मौजूद रह गए थे। इस बीच चीनी सैनिकों ने इसके आस-पास अपनी तीन चौकियों स्थापित कर लीं थीं।

दिनांक 19 अक्टूबर 1962 को श्रीजाप-1 चौकी के आस-पास के इलाके में भारी मात्रा में चीनी सैनिकों की वृद्धि देखी गई। इस स्थिति को देखते हुए मेजर धन सिंह थापा ने जल्द ही अपनी चौकी पर होने वाले चीनी हमले का अनुमान लगा लिया था। उन्होंने वहाँ तैनात समस्त भारतीय सैनिकों को युद्ध स्तर पर बंकर

बनाने के काम में लगा दिया। वह सैनिकों से जल्द से जल्द, तीव्र गति से गहरे बंकर बनाने के लिए कह रहे थे।

मेजर धन सिंह थापा का अनुमान सही सिद्ध हुआ। दिनांक 20 अक्टूबर 1962 को चीनी सैनिकों ने भारतीय चौकियों पर तोपखाने व मोर्टार से पहला हमला किया। यह हमला ढाई घंटे तक चला। इस हमले के परिणामस्वरूप चीनी सैनिकों को अच्छा आवरण मिला। इस हमले कि आड़ में चीनी सैनिकों ने भारतीय चौकियों तक एड्वान्स किया। ढाई घंटे कि गोलीबारी समाप्त होने तक लगभग 600 चीनी सैनिक, भारतीय चौकी से लगभग 150 गज (140 मीटर) कि दूरी तक पहुँच चुके थे। जैसे ही चीनी सैनिक भारतीय सैनिकों की रेंज (मारक क्षमता) में आए, भारतीय सैनिकों ने तीव्र गति से एल एम जी- लाइट मशीन गन और राइफलों से उन पर ताबड-तोड़ गोलीबारी शुरू कर दी। जिससे बड़ी संख्या में चीनी सैनिक मारे गए। यह हमला भारतीय चौकी से लगभग 100 गज (91 मीटर) की दूरी पर रुक गया। चीनी तोपखाने के हमले से बड़ी संख्या में भारतीय सैनिक भी हताहत हुए थे। इस चीनी हमले ने 'डी कंपनी' का शेष कम्पनियों से संचार भी बाधित कर दिया था। इसलिए मेजर धन सिंह थापा, अपने द्वितीय कमांड, सूबेदार मिन बहादुर गुरंग के साथ लगातार एक स्थान से दूसरे स्थान पर जाकर रक्षा व्यवस्था को समायोजित कर रहे थे। अब चीनी तोपखाने के हमले कि आड़ में चीनी सैनिक, भारतीय चौकी से लगभग 50 गज (46 मीटर) कि दूरी तक पहुँच चुके थे। भारतीय सैनिकों को बंकर से बाहर निकालने के लिए चीनी सैनिकों ने उन पर ग्रेनेड व रॉकेट लांचरों से हमला किया। भारतीय सैनिकों ने भी ग्रेनेड व छोटे हथियारों कि गोलीबारी से चीनी सैनिकों पर हमला किया।

वीरता का पर्याय, गोरखा सैनिकों ने इस विषम परिस्थिति में तनिक भर भी अपना साहस नहीं खोया। उन्होंने चीनी सैनिकों पर छोटे हथियारों से घातक जवाबी कार्यवाही की। चूंकि चीनी सैनिक काफी कम दूरी पर थे। इसलिए वे भी काफी बड़ी संख्या में हताहत हुए। भारतीय सैनिकों का साहस देखकर चीनी

सैनिकों के पसीने छूट गए। चीनी सैनिक और उनके कमांडर समझ नहीं पा रहे थे कि मुट्ठी भर भारतीय सैनिकों को किस प्रकार पराजित किया जाये।

सूबेदार मिन बहादुर गुरंग जो कि एक एल एम जी – लाइट मशीन गन चल रहे थे। उनके बंकर पर चीनी सैनिकों ने ग्रेनेड से हमला किया और वह इस हमले में बंकर के नीचे दब गए। लेकिन उन्होंने स्वयं को बंकर के मलबे से बाहर निकाला एवं बुरी तरह घायल होने के बावजूद भी, पुनः चीनी सैनिकों पर एल एम जी – लाइट मशीन से गोलीबारी शुरू कर दी। जिससे चीनी सैनिकों को भारी नुकसान हुआ। अब बौखलाये हुए चीनी सैनिकों ने चीनी सैनिकों ने एक साथ सूबेदार मिन बहादुर गुरंग को लक्ष्य बनाकर, उनके ऊपर फायरिंग शुरू कर दी। बंकर गिरने के कारण सूबेदार मिन बहादुर गुरंग के सामने की सुरक्षात्मक दीवार ढह चुकी थी, इस कारण वह चीनी सैनिकों द्वारा की गई फायरिंग की चपेट में आ गए और अपनी अंतिम साँस तक लड़ते हुए वीर गति को प्राप्त हुए।

अब मेजर धन सिंह थापा की पोस्ट पर मात्र सात सैनिक शेष बचे थे। लेकिन कोई भी पोस्ट छोड़ने को तैयार नहीं था जबकि मृत्यु उनके सामने साक्षात खड़ी हुई थी। चीनी सैनिकों ने अगला हमला हेवी मशीनगन और रॉकेट लांचरों से किया। लेकिन फिर भी उन्हें सफलता नहीं मिली। वे समझ नहीं पा रहे थे कि किस प्रकार भारतीय सैनिकों पर विजय प्राप्त की जाये। चीनी सैनिकों ने अपना अगला प्लान बनाया। उन्होंने देखा कि भारतीय पोस्ट कि एक तरफ झील है। उन्होंने झील कि तरफ से भारतीय पोस्ट ओर हमला करने कि योजना बनाई। हेवी मशीनगन से लैस चीनी सैनिक 'एम्फिबियस बोट्स' में सवार होकर, झील की तरफ से भारतीय पोस्ट पर हमला करने के उद्देश्य से झील में उतरे। इसके जवाब में भारतीय सैनिक भी दो 'स्टॉर्म बोट्स' में सवार होकर छोटे हथियारों के साथ चीनी सैनिकों का मुकाबला करने के लिए झील में उतरे। चूंकि चीनी सैनिक, भारतीय सैनिकों के मुकाबले अधिक उन्नत किस्म के आधुनिक हथियारों से लैस थे। इसलिए चीनी सैनिकों का हमला ज्यादा कारगर साबित हुआ जिसके परिणामस्वरूप भारतीय सैनिकों की एक नाव डूब गई व दूसरी बुरी तरह क्षतिग्रस्त

हो गई। इस हमले में नायक रबिलाल थापा चीनी, सैनिकों कि गिरफ्त में आने से बाल-बाल बचे। इस बीच चीनी सैनिकों ने भारतीय पोस्ट पर तीसरा बड़ा हमला, टैंक से किया। अब मेजर धन सिंह थापा के बंकर में मात्र तीन सैनिक शेष बचे थे और उनके सारे गोला-बारूद भी समाप्त हो चुके थे। इस परिस्थिति में भी किसी भी भारतीय सैनिक ने, न तो अपनी पोस्ट को छोड़ा और न ही अपने कदम पीछे हटाए। बल्कि, मेजर धन सिंह थापा सहित चारों भारतीय सैनिक शेर की भाँति खुकरी हाथ में लेकर अपने बंकर से बाहर निकलकर चीनी सैनिकों पर काल बनकर टूट पड़े और कई चीनी सैनिकों को मार गिराया। किन्तु, चार सैनिक कितनी देर तक खुकरी के मुकाबले, हथियारों से लैस चीनी सैनिकों से युद्ध करते। अंततः इन चारों को चीनी सैनिकों ने बंदी बना लिया। किन्तु, सौभाग्यवश राइफलमैन तुलसीराम थापा किसी प्रकार चीनी सैनिकों कि पकड़ से बच निकले और सकुशल बटालियन वापस पहुँच गए। जब भारतीय सेना मुख्यालय में चुशूल चौकी पर चीनी सेना के कब्जे का समाचार पहुँचा तो सभी ने यह मान लिया कि वहाँ तैनात मेजर धन सिंह थापा व अन्य भारतीय सैनिक, अपने कर्तव्य का पालन करते हुए वीर गति को प्राप्त हो गए हैं। किन्तु, चीनी सैनिकों ने मेजर धन सिंह थापा को जान से मारा नहीं था बल्कि उन्हें युद्ध बंदी बना लिया था। वे उनसे भारतीय सेना के संदर्भ में गुप्त सूचनाएं उगलवाना चाहते थे। इसके लिए चीनी सैनिकों ने मेजर धन सिंह थापा को अनेक अमानवीय यातनाएं भी दीं। लेकिन, उन्हें कोई भी सफलता नहीं मिली। इधर, दिनांक 28 अक्टूबर 1962 को जनरल पी एन थापर में, भारतीय सेना कि तरफ से पत्र लिखकर, मेजर धन सिंह थापा के परिवार को उनके शहीद होने कि सूचना दी। यह सूचना प्राप्त होते मेजर धन सिंह थापा के परिवारजन दुख में डूब गए और दुखी मन के साथ उनके अंतिम संस्कार कि औपचारिकताएं पूरी कीं। देश के लिए युद्ध के दौरान असीम विपरीत परिस्थितियों में अपने सैनिकों को प्रेरित करने, वीरता व त्याग के लिए भारत सरकार ने वर्ष 1962 में भारत सरकार ने मेजर धन सिंह थापा को मरणोपरांत सबसे बड़े सैनिक सम्मान **'परमवीर चक्र'** से सम्मानित किया।

युद्ध समाप्त होने के पश्चात जब चीन सरकार ने, भारत सरकार को युद्ध बंदियों कि सूची दी तो उसमें मेजर धन सिंह थापा का नाम भी था। इस सुखद समाचार के साथ पूरे भारत देश में प्रसन्नता कि लहर फैल गई। उनके घर देहरादून में जैसे ही यह समाचार पहुँचा, उनकी धर्मपत्नी व अन्य परिवारजनों के प्रसन्नता की कोई सीमा नहीं थी। इस बीच उनकी धर्मपत्नी ने एक शिशु को भी जन्म दिया था। दिनांक 10 मई 1963 को चीन सरकार ने युद्धबंदियों को भारत को सौंपा। भारतीय सेना द्वारा मेजर धन सिंह थापा सहित समस्त युद्धबंदियों का भव्य स्वागत हुआ। दो दिन पश्चात मेजर धन सिंह थापा अपने घर देहरादून पहुंचे। किन्तु वहाँ उनके शहीद होने की खबर प्राप्त होने के बाद उनका अंतिम संस्कार कर दिया गया था। और उनकी धर्मपत्नी एक विधवा कि जिंदगी जी रही थी। अतः गोरखों की धार्मिक परंपराओं के अनुसार उनके कुल पुरोहित ने उनका मुंडन करवाया और पुनः उनका नामकरण किया गया। तत्पश्चात उन्हें विवाह कि बेदी पर खड़े होकर पुनः अपनी धर्मपत्नी के साथ सात फेरे लेने पड़े। इस प्रकार उनका वैवाहिक जीवन पुनः प्रारंभ हुआ। उनके जीवित वापस आने पर उनको प्रदान किए गए परमवीर चक्र में वर्ष 1963 में आवश्यक संशोधन किए गए। परम वीर चक्र विजेता मेजर धन सिंह थापा जी ने आगे भी सेना कि नौकरी जारी रखी एवं अपना अमूल्य योगदान देते हुए, अपना सम्पूर्ण जीवन सेना व देश को समर्पित किया। दिनांक 30 अप्रैल 1980 को धन सिंह थापा जी, लेफ्टिनेंट कर्नल के पद से सेना से सेवानिवृत हुए। सेवानिवृत के पश्चात वह सपरिवार लखनऊ (उत्तर प्रदेश) में बस गए। कुछ समय के लिए उन्होंने 'सहारा एयरलाइन्स' में निदेशक के रूप में भी कार्य किया। दिनांक 06 सितम्बर 1980 को भारत माँ के इस वीर सपूत ने दुनिया को अलविदा कहा और अपनी अंतिम साँस ली। भारत देश सदैव इनका ऋणी रहेगा।

परमवीर चक्र विजेता सूबेदार जोगिंदर सिंह

सूबेदार जोगिंदर सिंह जी, जिनकी वीरता, देशभक्ति के समक्ष दुश्मन देश चीन भी नतमस्तक हो गया था।

ब्रिटिश भारत के पंजाब राज्य के मोगा जिले के महला कलां नामक गाँव में, श्री शेर सिंह सहनान, अपनी धर्म पत्नी बीबी कृष्ण कौर के साथ सपरिवार रहते थे। श्री शेर सिंह सहनान एक कृषि प्रधान सैनी सिख परिवार से थे। दिनांक 26 सितम्बर 1921 को श्री शेर सिंह सहनान व बीबी कृष्ण कौर को एक पुत्र रत्न की प्राप्ति हुई। उन्होंने अपने लाड़ले पुत्र का नाम जोगिंदर सिंह रखा। पंजाब राज्य के 'मोगा' जिले के 'महला कलां' गाँव की गलियों में ही जोगिंदर सिंह जी का बचपन व्यतीत हुआ। जोगिंदर सिंह जी ने 'नाथू अला' गाँव में प्राथमिक शिक्षा प्राप्त की और आगे चलकर 'दारोली' गाँव में माध्यमिक शिक्षा प्राप्त की। वह अपनी एक अलग पहचान बनाना चाहते थे, इसके लिए उन्होंने सेना में भर्ती होने का निर्णय लिया।

दिनांक 28 सितंबर 1936 को, जोगिंदर सिंह ब्रिटिश भारतीय सेना के अंतर्गत सिख रेजीमेंट की पहली बटालियन (1 सिख) में भर्ती हो गये। सेना में भर्ती होने के पश्चात्, उन्होंने शिक्षा में अपनी रुचि दिखाई एवम् शीघ्र ही संबंधित 'सेना शिक्षा परीक्षा' उत्तीर्ण कर ली। जिसके परिणामस्वरूप उन्हें रेजीमेंट में शिक्षा प्रशिक्षक के रूप में नियुक्त किया गया। आपने द्वितीय विश्व युद्ध में बर्मा (वर्तमान म्यांमार) मोर्चे पर, एवम् 1947-48 के भारत-पाकिस्तान युद्ध के दौरान श्रीनगर में अपनी अमूल्य सेवाएं प्रदान कीं। इन लड़ाइयों के अनुभव ने सैनिक जोगिंदर सिंह जी को एक कुशल योद्धा बनाने में अति महत्वपूर्ण भूमिका निभाई।

दिनांक 09 सितंबर 1962 को भारत-चीन युद्ध के के दौरान, तत्कालीन भारतीय रक्षा मंत्री ने 'थागला रिज' के दक्षिण से चीनी सैनिकों को खदेड़ने का निर्णय लिया। तत्कालीन प्रधानमंत्री पंडित जवाहरलाल नेहरू ने इस निर्णय को स्वीकृति को अपनी प्रदान की गई, जो कि उस समय राष्ट्रमंडल प्रधानमंत्रियों के सम्मेलन में भारत का प्रतिनिधित्व करने हेतु लंदन में थे। इसके बाद, '7वीं इन्फेंट्री ब्रिगेड़' द्वारा अपने अंतर्गत आने वाली '1 सिख बटालियन' को 'नामका चू' जाने का आदेश दिया गया। इस स्थान को भारत के लिए सैन्य दृष्टि से असुरक्षित एवम् चीन के लिए लाभप्रद क्षेत्र माना जाता था।

इस पूरे इलाके का तापमान शून्य डिग्री के आसपास या उससे भी नीचे रहता है। भारतीय सेना के पास अपर्याप्त गोला-बारूद, रसद व सर्दी के अनुसार गर्म वस्त्रों की कमी थी। संचार व्यवस्था भी कमज़ोर थी।

इन सभी कारणों से अवगत चीनी सेना ने 'नामका चू' स्थित भारतीय चौकी पर हमला कर दिया। भारतीय सैनिकों ने चीनी आक्रमण का डटकर मुकाबला किया। किंतु गोला-बारूद, रसद की कमी व कमज़ोर संचार व्यवस्था के कारण उन्हें भारी हानि हुई। 'नामका चू' स्थित भारतीय चौकी पर विजय प्राप्त करने के पश्चात् चीनी सेना का हौसला बढ़ गया एवम् चीनी सेना इस हमले के तुरंत बाद 'तवांग' की तरफ बढ़ी। रास्ते में चीनी सेना का सामना 'बुम ला' दर्रे पर स्थित भारतीय चौकी पर तैनात '1 सिख रेजीमेंट' के 20 जवानों की प्लाटून से हुआ। यह चौकी जोगिंदर सिंह जी के नेतृत्व में थी, जो कि अब सूबेदार बन चुके थे।

'बुम ला' दर्रा सैनिक भौगोलिक दृष्टि से एक अति महत्वपूर्ण स्थान है। यह दर्रा तिब्बत के चीन स्थित 'त्सोना काउंटी' एवम् अरुणाचल प्रदेश के भारत स्थित 'त्वांग' ज़िले के बीच एक सीमा दर्रा है। यह दर्रा, भारत के 'तवांग' ज़िले के 'तवांग' शहर से 37 किमी एवम् चीन देश के 'त्सोना काउंटी' के 'त्सोना जोंग' शहर से 43 किमी की दूरी पर है। यह दर्रा वर्तमान में अरुणाचल प्रदेश और तिब्बत के बीच एक व्यापारिक केंद्र के रूप में कार्य करता है। यह चीन व भारत देश के बीच सुरक्षा बल कर्मियों के लिए एक स्वीकृत बैठक स्थल का भी कार्य करता है।

'बुम ला' दर्रा 15000 फीट से अधिक ऊँचाई पर स्थित है। यहाँ का तापमान अधिकांश समय शून्य डिग्री से नीचे ही रहता है। 1962 भारत-चीन युद्ध के समय यहाँ भारी बर्फबारी और जमाने वाली खतरनाक ठंड़ के साथ माइनस 10^0C या उससे भी कम तापमान होने की स्थिति रही होगी। इन विषम परिस्थितियों में अपर्याप्त गरम कपड़ों, गोला-बारूद, रसद कि कमी के बावजूद भी भारतीय सैनिकों ने चीनी सैनिकों का अंतिम साँस तक डटकर मुकाबला किया।

चूंकि चीनी सैनिक पूरी तैयारी के साथ बड़ी संख्या में आये थे, इसलिए उन्हें लगा कि वह 'बुम ला' दर्रे पर स्थित भारतीय चौकी पर तैनात 120 भारतीय सैनिकों पर भी आसानी से विजय प्राप्त कर लेंगे। किंतु ऐसा कुछ भी नहीं हुआ। सूबेदार जोगिंदर सिंह व उनके साथियों ने चीनी सेना का बुरा हाल किया जिससे बड़ी संख्या में चीनी सैनिक घायल हो गये। भारतीय सेना का जवाब इतना खतरनाक था कि चीनी सेना को पहले छुपना पड़ा और फिर पीछे हटना पड़ा। सूबेदार जोगिंदर सिंह तीक्ष्ण बुद्धि के धनी व्यक्ति थे। वह एक चतुर व कुशल कमांडर भी थे। उन्होंने अपनी पोस्ट की भौगोलिक स्थिति को भली-भाँति समझा एवम् अपने पास उपलब्ध सीमित साधनों का ठीक प्रकार से आंकलन किया। उन्होंने, अपने इलाके में चतुराई के साथ बंकर व खंदकें बनवाई थीं। उनकी पलटन के पास मात्र चार दिन का ही राशन था। उनकी पलटन के कपड़े व जूते भी वहाँ के मौसम के अनुकूल नहीं थे। हिमालय की खतरनाक ठंड़ रीढ़ की हड़्डी में सिहरन दौड़ाने वाली व खून जमाने वाली थी। इसके बावजूद भी वहाँ तैनात 120 वीर भारतीय सैनिकों का मनोबल हिमालय से भी ऊँचा था। इसी मनोबल के बल-बूते भारतीय सैनिकों ने विशाल संख्या में आयी, आधुनिक शस्त्रों से लैस, अनुभवी चीनी पीपुल्स लिबरेशन आर्मी को कड़ी टक्कर दी। भारतीय सैनिकों के पास गोला-बारूद भी कम था। इस बात को ध्यान में रखते हुए सूबेदार जोगिंदर सिंह ने अपने साथियों को कहा कि प्रत्येक गोली दुश्मन को ही लगनी चाहिये। जब तक दुश्मन रेंज में न आये, तब तक फायर रोककर रखो, जब दुश्मन रेंज में आये, तभी फायर करो।

चीनी सेना ने तीन चरणों में भारतीय चौकी पर हमला किया। प्रत्येक चरण में 200 चीनी सैनिक थे। सूबेदार जोगिंदर सिंह. 'नेफा' के 'टोंगपेन ला' के समीप पहाड़ी पर मोर्चा संभाले हुए सिख रेजीमेंट की एक प्लाटून के कमांड़र थे। दिनांक 23 अक्तूबर 1962 को प्रातः 5:30 बजे चीनी सैनिकों ने टोवांग तक पहुँचने के इरादे से 'बुम ला' मार्ग पर भारतीय चौकी पर भीषण हमला किया। चीनी सेना की अग्रणी बटालियन में लगभग 200 सैनिकों की तीन टुकड़ियों ने भारतीय चौकी

पर हमला किया। लेकिन भारतीय सैनिकों ने चीनी सैनिकों को बुरी तरह परास्त किया। बड़ी संख्या में चीनी सैनिक घायल हो गये एवम् उन्हें पीछे हटने के लिए मजबूर होना पड़ा। हालाँकि इस हमले में भारतीय पलटन को भी नुकसान पहुँचा। इसके बाद सूबेदार जोगिंदर सिंह जी ने 'टॉन्गपेंग ला' पर स्थित कमांड़ सेंटर से गोला-बारूद भिजवाने के लिये कहा। क्योंकि उन्होंने देखा कि 200 चीनी सैनिकों की दूसरी टुकड़ी, दूसरा हमला करने के लिये एकत्र हो चुकी थी एवम् इस टुकड़ी ने भारतीय चौकी पर दूसरा आक्रमण कर दिया। इस दूसरे आक्रमण के दौरान भयंकर गोलीबारी में सूबेदार जोगिंदर सिंह जी की जांघ में गोली लग गई। वह एक बंकर में घुसे, अपनी जांघ पर पट्टी बाँधी एवम् तुरंत बंकर से बाहर आकर मोर्चा संभाला। वह लगातार अपने साथियों को चिल्ला-चिल्लाकर आवश्यक निर्देश दे रहे थे। उन्होंने शहीद हो चुके भारतीय गनर की, 2-इंच वाली मोर्टार ली एवम् चीनी सैनिकों पर कई राउंड़ फायर करके चीनी सेना की इस दूसरी टुकड़ी को बड़ा नुकसान पहुँचाया। भारतीय सैनिकों ने चीनी सेना की 200 सैनिकों की इस दूसरी टुकड़ी को लगभग पूरा ही समाप्त कर दिया था। लेकिन दुर्भाग्यवश अधिकांश भारतीय सैनिक शहीद हो चुके थे अथवा बुरी तरह घायल हो चुके थे। भारतीय सैनिकों के पास अब गोला-बारूद भी लगभग समाप्त हो चुका था। लगातार भारी नुकसान के बाद दुश्मन कुछ समय के लिये रुका किंतु कुछ ही मिनटों में चीनी सेना की 200 सैनिकों की तीसरी टुकड़ी मुकाबले के लिये सामने आ खड़ी हुई। अब चीनी सेना ने तीसरा हमला भारतीय चौकी पर किया। बुरी तरह घायल, खून से लथपथ सूबेदार जोगिंदर सिंह जी ने स्वयं एल एम जी (लाइट मशीन गन) संभाली व दुश्मन पर काल बनकर टूट पड़े। अन्य मुट्ठी भर बचे भारतीय सैनिकों ने भी दुश्मन को भारी नुकसान पहुँचाया। चीनी सेना को भारी नुकसान हुआ, किंतु फिर भी चीनी सैनिक भारतीय पोस्ट की तरफ बढ़े चले आ रहे थे एवम् इधर भारतीय सैनिकों का गोला-बारूद पूरी तरह समाप्त हो चुका था। सूबेदार जोगिंदर सिंह ने अपनी पलटन के बचे हुए सैनिकों को तैयार किया। उन्होंने अपनी-अपनी बंदूकों पर संगीन चढ़ाई (चाकू लगाये) और **"जो बोले सो निहाल, सत श्री अकाल"** के नारे लगाते हुए, खंदकों से बाहर निकलकर चीनी

सैनिकों पर हमला कर दिया और कई चीनी सैनिकों को मार गिराया किंतु पीछे से चीनी सैनिक लगातार आते जा रहे थे एवम् अंततः उन्होंने बुरी तरह से घायल सूबेदार जोगिंदर सिंह जी को बंदी बना लिया। वहाँ से कुछ भारतीय सैनिक, चीनियों को चकमा देकर बच निकले एवम् उन्होंने इस लड़ाई का पूरा विवरण अपने साथियों को बताया।

बुरी तरह से घायल होने के कारण, बंदी बनाने के कुछ ही देर बाद चीन की पीपुल्स लिबरेशन आर्मी के युद्ध बंदी रहते हुए सूबेदार जोगिंदर सिंह जी की मृत्यु हो गई। सूबेदार जोगिंदर सिंह जी की कर्तव्यनिष्ठा, प्रेरणादायक नेतृत्व और सर्वोच्च कोटि की वीरता का प्रदर्शन करने के लिए दिनांक 23 अक्तूबर 1962 को उन्हें भारत के सर्वोच्च सैन्य सम्मान **'परमवीर चक्र'** से सम्मानित किया गया।

जब चीनी सेना को ज्ञात हुआ कि सूबेदार जोगिंदर सिंह जी को भारत के सर्वोच्च सैन्य सम्मान 'परमवीर चक्र' से सम्मानित किया गया है तो वह भी दुश्मन होने के बावजूद भी उनकी वीरता, देशभक्ति के समक्ष नतमस्तक हो गये एवम् उन्होंने दिनांक 17 मई 1963 को पूरे सैनिक सम्मान के साथ सूबेदार जोगिंदर सिंह जी की अस्थियाँ, उनकी बटालियन को सौंप दीं। उसके अगले ही दिन गुरुद्वारा साहिब में श्रद्धांजलि सभा के आयोजन व पूरे सैनिक सम्मान के साथ उनकी अस्थियों को उनके परिवार को सौंपा गया एवम् उनके परिवार ने भारतीय सिख परंपरा के अनुसार उनका अंतिम क्रिया-कर्म किया। ऐसे थे भारत के वीर परमवीर चक्र विजेता सूबेदार जोगिंदर सिंह जी। आपको कोटी-कोटी नमन।

महावीर चक्र विजेता राइफलमैन जसवंत सिंह रावत

दिनांक 19 अगस्त 1941 को, उस समय ब्रिटिश भारत के अन्तर्गत आने वाले 'बरयून' गाँव, पौढी गढ़वाल में श्री गुमान सिंह रावत के यहाँ एक पुत्र ने जन्म लिया था, जिसका नाम जसवंत सिंह रखा गया। दिनांक 19 अगस्त 1960 को जसवंत सिंह ने मात्र 19 वर्ष की आयु में भारतीय सेना की चौथी गढ़वाल रायफल्स

रेजीमेंट में भर्ती होकर अपने सैन्य जीवन की शुरुआत की एवम् देश सेवा का संकल्प लिया।

दिनांक 17 नवम्बर 1962 उत्तर-पूर्वी सीमांत एजेंसी (वर्तमान अरुणाचल प्रदेश) में 'नूरानंग' की लड़ाई के दौरान, रायफलमैन जसवंत सिंह रावत, गढ़वाल राइफल्स रेजीमेंट की चौथी बटालियन में तैनात थे। 'नूरानंग', वर्तमान अरुणाचल प्रदेश के 'तवांग' क्षेत्र में 14000 फीट से अधिक ऊँचाई पर स्थित है। 1962 भारत-चीन युद्ध के दौरान इस क्षेत्र का तापमान माइनस में था, बर्फबारी हो रही थी एवम् जमीन पर आवाजाही बहुत कठिन थी। 14000 फीट से अधिक ऊँचाई होने के कारण आक्सीजन की कमी एवम् अत्यधिक ठंड के कारण भारतीय सैनिकों के लिए चुनौतियाँ बढ़ गई थीं। क्योंकि जैसा कि पहले भी बताया जा चुका है कि भारतीय सैनिकों के पास मौसम के अनुसार जूते, गर्म कपड़े, पर्याप्त मात्रा में गोला-बारूद, राशन, उचित संचार व्यवस्था का अभाव था। किन्तु फिर भी भारतीय सेना के मनोबल में कोई कमी नहीं थी। भारतीय सैनिकों ने न केवल चीनी सेना का डटकर सामना किया बल्कि खतरनाक ठंड में प्रकृति के साथ भी संघर्ष किया।

इसी दौरान भारी संख्या बल के साथ चीनी सेना ने 'नूरानंग' में भारतीय चौकी पर हमला बोल दिया। हमला काफी खतरनाक था। वहाँ तैनात 'चौथी गढ़वाल राइफल्स' के जवानों ने चीनी सेना का डटकर मुकाबला किया एवम् चीन की हमलावर सैनिक टुकड़ियों के दो हमलों को विफल कर दिया। इसके बाद चीनी सैनिकों ने तीसरा हमला भी किया। यह हमला पिछले दो हमलों से अधिक बड़ा व तीव्र था। चीनी सैनिकों द्वारा किया गया तीसरा हमला भी भारतीय सैनिकों ने विफल कर दिया। किन्तु चीनी सैनिक एक मीडियम मशीन गन (एम एम जी) को भारतीय प्लाटून के अत्यंत निकट लाने में सफल रहे। इस मीडियम मशीन गन (एम एम जी) की फायरिंग से भारतीय रक्षा पंक्ति भारी नुकसान के साथ कमज़ोर पड़ने लगी। तब भारत के तीन जांबाज सैनिकों, रायफलमैन जसवंत सिंह रावत, रायफलमैन गोपाल सिंह गोसाई व लांस नायक त्रिलोक सिंह नेगी ने स्वेच्छा से

शत्रु की एम एम जी- मीडियम मशीन गन को नष्ट करने की जिम्मेदारी ली। तीनों जांबाज भारतीय सैनिक अपने प्राणों की परवाह न करते हुए चट्टानों, झाड़ियों और पेड़ों की आड़ लेते हुए, रेंगकर दुश्मन की एम एम जी- मीडियम मशीन गन पोस्ट से 10 से 15 गज़ की दूरी तक पहुँचने में सफल हुए। लांस नायक त्रिलोक सिंह नेगी के कवरिंग फायर की सहायता से रायफलमैन जसवंत सिंह रावत व रायफलमैन गोपाल सिंह गोसाई ने दुश्मन की एम एम जी- मीडियम मशीन गन पोस्ट पर ग्रेनेड फेंके। ग्रेनेड विस्फोट के तुरंत बाद दोनों ही एम एम जी- मीडियम मशीन गन की तरफ बिजली की तेजी से दौड़े। वहाँ पहुँचकर उन्होंने दो चीनी सैनिकों को मृत पाया व एक अन्य चीनी सैनिक को गंभीर रूप से घायल अवस्था में एम एम जी- मीडियम मशीन गन पकड़े हुए पाया। उन्होंने झपट्टा मारकर उस घायल चीनी सैनिक को काबू में किया और जसवंत सिंह रावत ने उससे एम एम जी- मीडियम मशीन गन छीन ली और लांस नायक त्रिलोक सिंह नेगी द्वारा दिये गये कवरिंग फायर के बीच दोनों अपने मोर्चे की तरफ लौटे। जब वे अपनी भारतीय पोस्ट की तरफ लौट रहे थे तभी चीनी सैनिकों ने काफी नजदीक से इनके ऊपर ताबड़तोड़ गोलीबारी शुरू कर दी। इस ताबड़तोड़ गोलीबारी में रायफलमैन जसवंत सिंह रावत के सिर में गोली लगी और वह मौके पर ही शहीद हो गए, उनके हाथ में अभी भी एम एम जी- मीडियम मशीन गन थी। जिस समय रायफलमैन जसवंत सिंह रावत शहीद हुए, उस समय उनकी आयु मात्र 21 वर्ष कि थी। गंभीर रूप से घायल रायफलमैन गोपाल सिंह गोसाई किसी प्रकार से खाई में कूदने में सफल रहे और उनकी जान बच गई।

रायफलमैन जसवंत सिंह रावत जी को उनकी असाधारण वीरता, त्याग व बलिदान के लिए मरणोपरांत **'महावीर चक्र'** से सम्मानित किया गया।

रायफलमैन जसवंत सिंह रावत जी की असाधारण वीरता को सम्मानित करते हुए, उनके द्वारा संचालित सैन्य चौकी का नाम 'जसवंत गढ़ चौकी' रखा गया एवम् उस चौकी पर उनके नाम पर, वीरता व त्याग के प्रतीक के स्वरूप में 'जसवंत गढ़ युद्ध स्मारक' का निर्माण किया गया। सैन्य चौकी पर स्थित यह स्मारक

‘तवांग’ (अरुणाचल प्रदेश) से 52 किमी की दूरी पर दक्षिण-पूर्व और राष्ट्रीय राजमार्ग-13 (एन एच 13) ट्रांस अरुणाचल राजमार्ग के ‘दिरांग-तवांग खंड’ पर ‘सेला सुरंग’ की उत्तर दिशा में स्थित है। भारतीय सेना मरणोपरांत भी जसवंत सिंह रावत जी को प्रमोशन प्रदान करती है। वर्तमान में जसवंत सिंह रावत कैप्टन के पद पर हैं।

1965 भारत-पाक युद्ध

1965 भारत-पाक युद्ध को कश्मीर के दूसरे युद्ध के नाम से भी जाना जाता है। यह युद्ध भारत व पाकिस्तान के बीच अप्रैल 1965 से सितम्बर 1965 के बीच लड़ा गया था। **पाकिस्तान ने भी 1947 भारत-पाकिस्तान युद्ध और 1962 भारत-चीन युद्ध का गहन अध्ययन किया और पाया कि इन दोनों युद्धों में भारत सरकार ने वह सकारात्मक भूमिका नहीं निभाई जो उसे निभानी चाहिए थी। यह भी एक मुख्य कारण था दिनांक 31 दिसम्बर 1948 को जिस 'ऑपरेशन सिंदूर' की नींव रखी गई थी वह 'ऑपरेशन सिंदूर' एक नई तारीख के साथ जारी रहा।** पाकिस्तान ने योजनानुसार अपने सैनिकों को घुसपैठिये के रूप में कश्मीर में वहाँ की जनता को भारत के खिलाफ़ भड़काने व विद्रोह करने के उद्देश्य से भेजा था। पाकिस्तान को उम्मीद थी कि कश्मीर की जनता उनका साथ देगी एवम् भारत के खिलाफ विद्रोह कर देगी। पाकिस्तान ने इस गुप्त सैनिक अभियान का नाम **'ऑपरेशन जिब्राल्टर'** रखा था। इस अभियान का मुख्य उद्देश्य कश्मीर की जनता में विद्रोह भड़काना और भारतीय संचार तंत्र एवम् परिवहन व्यवस्था को क्षति पहुँचाना था। किंतु कश्मीर की जनता ने पाकिस्तानी घुसपैठियों का साथ नहीं दिया। कश्मीर की जनता ने पाकिस्तानी घुसपैठियों को शीघ्र ही पहचान लिया एवम् इसकी सूचना भारतीय सैनिकों को दे दी। परिणामस्वरूप भारतीय सुरक्षा तंत्र शीघ्र ही हरकत में आ गया और 'ऑपरेशन जिब्राल्टर' पूर्णतः विफल हो गया।

कश्मीर की जनता पाकिस्तान के साथ है एवम् उसने भारतीय खुफिया तंत्र को कोई भी सूचना नहीं दी होगी, इस उम्मीद के साथ दिनांक 5 अगस्त 1965 को लगभग 26000 से 30000 के बीच पाकिस्तानी सैनिकों ने कश्मीर की

स्थानीय आबादी की वेशभूषा बनाकर नियंत्रण रेखा पार करने व भारतीय कश्मीर में प्रवेश करने का दु:साहस किया।

इसके जवाब में भारतीय सेना ने स्थानीय जनता के सहयोग से आवश्यक सूचनायें एकत्र करके, दिनांक 15 अगस्त 1965 को नियंत्रण रेखा पार की एवम् तोपखाने की सहायता से तीन महत्वपूर्ण पहाड़ी ठिकानों पर कब्ज़ा कर लिया। पाकिस्तानी सेना ने भी तिथवाल, उरी व पुंछ क्षेत्रों में महत्वपूर्ण बढ़त प्राप्त कर ली थी, किंतु इसकी तुलना में भारतीय सेना को अच्छी सफलता प्राप्त हुई थी। दिनांक 15 अगस्त 1965 को पाकिस्तानी अभियान की ताकत में कमी आ गयी थी, जबकि भारतीय सेना अतिरिक्त टुकड़ी लाने में सफल हो गई थी एवम् भारतीय सेना ने पाकिस्तान के कब्ज़े वाले कश्मीर में 8 कि.मी. अंदर घुसकर 'हाजी पीर' पर कब्ज़ा कर लिया था। इस कब्ज़े से पाकिस्तान में हड़कंप मच गया था, क्योंकि 'हाजी पीर' पर भारतीय सेना के कब्ज़े के साथ ही, 'ऑपरेशन जिब्राल्टर' के घुसपैठियों का रास्ता भारतीय सेना के कब्ज़े में आ गया था एवम् 'ऑपरेशन जिब्राल्टर' विफल हो गया था। अब बाजी पूर्णत: पलट चुकी थी, क्योंकि पाकिस्तानी कमान को यह लगने लगा था कि अब भारतीय सेना कश्मीर का महत्वपूर्ण शहर मुजफ़्फ़राबाद भी अपने कब्ज़े में ले लेगी। इसी के तहत मुजफ़्फ़राबाद पर दबाव कम करने के लिए पाकिस्तान ने एक नया अभियान 'ऑपरेशन ग्रैंड़ स्लैम' शुरू किया था।

दिनांक 01 सितम्बर 1965 को पाकिस्तान ने पलटवार करते हुए **'ऑपरेशन ग्रैंड़ स्लैम'** की शुरुआत की। 'ऑपरेशन ग्रैंड़ स्लैम' का उद्देश्य कश्मीर घाटी का शेष भारत से सम्पर्क तोड़ कर, भारतीय सेना की संचार व रसद व्यवस्था को बंद करके, वहाँ जमी भारतीय सेना को बरबाद करना था। इस उद्देश्य की पूर्ति के लिए पाकिस्तान ने सामरिक दृष्टि से अति महत्वपूर्ण शहर 'अखनूर' पर कब्ज़ा करने के उद्देश्य से आक्रमण कर दिया। यदि 'अखनूर' शहर पाकिस्तान के कब्जे में आ जाता तो बाजी पलट सकती थी। जिसके परिणामस्वरूप पाकिस्तान की जीत का रास्ता खुलने की प्रबल संभावनायें थीं।

पाकिस्तान के इस आक्रमण के लिए भारतीय सेनायें तैयार भी नहीं थीं। पाकिस्तान ने इस आक्रमण के लिए भारी संख्या में सैनिकों व उन्नत किस्म के टैंकों का उपयोग किया था, जिसके कारण शुरुआत में भारतीय सेना को बड़ी भारी क्षति उठानी पड़ी थी। किंतु भारतीय सैनिक कमांडर भी इस बात को बखूबी जानते थे कि यदि 'अखनूर' पर पाकिस्तान का कब्ज़ा हो गया तो इस बात की प्रबल संभावनाएं हैं कि फिर इस युद्ध में पाकिस्तान की विजय का मार्ग प्रशस्त हो जाएगा। अब भारतीय सेना के पास इस स्थिति से निपटने के लिए 'करो या मरो' की युद्धनीति अपनाने के अतिरिक्त अन्य कोई मार्ग शेष नहीं था। भारतीय सेना ने पाकिस्तानी सेना पर ताबड़तोड़ हवाई हमले किये, जिसके जवाब में पाकिस्तानी सेना ने भी पंजाब व श्रीनगर के हवाई ठिकानों पर हवाई हमले किए। अब इस युद्ध में पाकिस्तान बहुत बेहतर स्थिति में पहुँच चुका था एवम् कश्मीर घाटी में भारतीय सेना की हार का खतरा बढ़ चुका था। तभी पाकिस्तान की तरफ से एक बड़ी भारी गलती की गई, जिसके परिणामस्वरूप पासा पलट गया, एवम् पाकिस्तानी सेना की यही गलती 'ऑपरेशन ग्रैंड़ स्लैम' के विफल होने की मुख्य वजह बनी। जब पाकिस्तान विजय के द्वार पर खड़ा था, तो इस नाजुक समय पर, पाकिस्तान ने अपने सैनिक कमांडर बदलने का गलत निर्णय लिया एवम् सैनिक कमांडर को बदलने की कार्रवाई के कारण पाकिस्तानी सेना को आगे बढ़ने में 24 घंटों की देरी हो गई। इन अति महत्वपूर्ण 24 घंटों में भारतीय सेना ने तत्परता से 'अखनूर' की रक्षा के लिए आवश्यक सैनिक व साजो-सामान एकत्र करके हमले के लिए बेहतर पोजिशन व रणनीति बना ली। इस रणनीति के तहत, भारतीय सेना ने पंजाब से सटी पाकिस्तान की सीमा के रास्ते, पाकिस्तान के अति महत्वपूर्ण शहर 'लाहौर' पर हमला करने का साहसिक निर्णय लिया।

अब भारतीय सेना 'करो या मरो' के इरादे के साथ युद्ध करने का निर्णय ले चुकी थी एवम् दिनांक 06 सितम्बर 1965 को भारतीय सैनिकों ने अपनी मातृभूमि की रक्षा के लिए 'सिर पर कफ़न' बाँध कर, अंतरराष्ट्रीय सीमा पार की एवम् पश्चिमी मोर्चे पर हमला करके युद्ध का आधिकारिक शंखनाद किया। दिनांक 06

सितम्बर 1965 को भारत व पाकिस्तान की वास्तविक सीमा पर स्थित 'इच्छोगिल नहर' पर दोनों सेनाओं की भिड़ंत हुई। 'इच्छोगिल नहर' के पश्चिमी किनारे पर पाकिस्तानी सेना की तरफ से भारतीय सेना पर जोरदार हमला किया गया। भारतीय सेना ने इस हमले का जोरदार जवाब दिया एवम् पाकिस्तानी सेना पर एक जोरदार प्रतिआक्रमण करते हुए, 'बरकी' गाँव के समीप 'इच्छोगिल नहर' को पार करने में महत्वपूर्ण सफलता प्राप्त की। जिसके परिणामस्वरूप अब भारतीय सेना लाहौर के हवाई अड्डे पर हमला करने की सीमा में पहुँच गई अथवा यह कहा जा सकता है कि अब पाकिस्तान के लाहौर का हवाई अड्डा भारतीय सेना के हमले की पहुँच में आ चुका था। इस स्थिति को देखते हुए अमेरिका ने अपने नागरिकों को लाहौर से निकालने के लिए कुछ समय के लिए युद्ध विराम हेतु अपील की। इस युद्ध विराम से पाकिस्तान को समय मिल गया, जिसके परिणामस्वरूप लाहौर पर भारतीय सेना का दबाव कम करने के लिए पाकिस्तान ने 'खेमकरण' पर हमला करके, उसे अपने कब्ज़े में करने में सफलता प्राप्त की, इसके प्रतिआक्रमण में भारत ने पाकिस्तान के 'बेदियां' व उसके आस-पास के गाँवों पर हमला कर दिया।

दिनांक 6 सितम्बर 1965 को, भारतीय सेना के 'प्रथम पैदल सैन्य खण्ड' (इन्फैंट्री डिविजन) के साथ द्वितीय बख्तरबंद उप खण्ड (ब्रिगेड) के तीन टैंक दस्ते, भारत-पाकिस्तान सीमा पार करके 'इच्छोगिल नहर' पहुँच गये। पाकिस्तानी सेना ने भारतीय सेना के रास्ते में पड़ने वाले सभी पुलों पर भारतीय सैनिकों से मुकाबले के लिये पाकिस्तानी सैनिक टुकड़ियाँ तैनात कर दी थीं। जिन पुलों पर पाकिस्तानी सैनिक; भारतीय सैनिकों का मुकाबला नहीं कर पाए, उन्होंने उन पुलों को बम से उड़ा दिया, जिससे भारतीय सेना का आगे बढ़ना रुक गया।

जाट रेजिमेंट की एक इकाई '3 जाट' ने नहर पार करने में सफलता प्राप्त की एवम् पाकिस्तान के 'डोगराई' और 'बातपोर' इलाके पर कब्ज़ा कर लिया। जिसके जवाब में उसी दिन पाकिस्तानी सेना ने बख्तरबंद इकाई एवम् पाकिस्तानी वायुसेना की सहायता से '15वें खण्ड' पर बड़ा भारी प्रतिआक्रमण किया, जिससे

भारतीय सेना के रसद, हथियारों, वाहनों को भारी नुकसान पहुँचा। ‘3 जाट’ को भी भारी नुकसान हुआ। भारतीय सेना के बड़े अधिकारियों को उस इलाके के जमीनी हालातों की सही व आवश्यक जानकारी नहीं थी। अतः उन्होंने इस आशंका से कि ‘3 जाट’ को कोई भारी नुकसान न हो, उसे पीछे हटने का आदेश दे दिया। भारतीय सेना के बड़े अधिकारियों के इस निर्णय से ‘3 जाट’ के कमान अधिकारी को बड़ी निराशा हुई एवम् बाद में उन्हें पुन: ‘डोगराई’ पर कब्ज़ा करने के लिए बड़ी कीमत चुकानी पड़ी थी।

दिनांक 8 दिसम्बर 1965 को ‘5 मराठा लाइट इन्फैंट्री’ का एक दस्ता रणनीतिक दृष्टिकोण से महत्वपूर्ण कस्बे ‘मुनाबाओ’ में तैनात ‘राजस्थान सैन्य बल’ को मजबूती प्रदान करने के लिए भेजा गया था। ‘5 मराठा लाइट इन्फैंट्री’ को पाकिस्तानी सेना के पैदल दस्ते को आगे बढ़ने से रोकने के उद्देश्य से भेजा गया था। किंतु पाकिस्तानी सेना के तोपखाने से हुई भारी बमबारी, पाकिस्तानी हवाई हमले एवम् पाकिस्तानी पैदल सैन्य दल ने ‘5 मराठा लाइट इन्फैंट्री’ को आगे बढ़ने से रोक दिया। किंतु ‘5 मराठा लाइट इन्फैंट्री’ के जवानों ने अपनी चौकी की रक्षा के लिए बड़ी बहादुरी के साथ पाकिस्तानी हमले का मुकाबला किया। इनकी वीरता के परिणामस्वरूप आज भी उस चौकी को मराठा हिल के नाम से जाना जाता है। ‘5 मराठा लाइट इन्फैंट्री’ की सहायता के लिए ‘3 गुरखा’ व ‘954 भारी तोपखाने’ का दस्ता पाकिस्तानी वायु सेना के हमले के कारण पहुँच नहीं पाया था एवम् रसद लेकर बाडमेर से आनेवाली ट्रेन भी ‘गर्दा रोड’ रेल अड्डे के पास पाकिस्तानी हमले का शिकार हो गई थी जिसके परिणामस्वरूप दिनांक 10 सितम्बर 1965 को ‘मुनाबाओ’ पर पाकिस्तान का कब्ज़ा हो गया था।

दिनांक 9 सितम्बर 1965 के बाद की घटनाओं ने इस युद्ध में निर्णायक मोड़ लिया। भारतीय सेना ने उग्र रूप धारण करते हुए, भारतीय सेना की शान कहे जानेवाले ‘1 बख्तरबंद खण्ड़’ ने पाकिस्तान के सियालकोट की दिशा में हमला कर दिया। ‘छविंड़ा’ में पाकिस्तान की 6 बख्तरबंद से भारतीय सेना का कड़ा मुकाबला हुआ, जिसमें भारतीय सेना को लगभग 100 टैंक गँवाने पड़े एवम् पीछे

हटने के लिए मजबूर भी होना पड़ा। इससे उत्साहित होकर पाकिस्तानी सेना ने, भारतीय सेना पर ताबड़तोड़ प्रतिआक्रमण कर दिया एवम् भारतीय सीमा में आगे घुस आयी।

अपने अगले आक्रमण के लिए पाकिस्तानी आर्मी ने अपने 'प्रथम बख्तरबंद डिविजन' और '11वें डिविजन' के साथ अमृतसर पर कब्ज़ा करने के इरादे के साथ 'खेमकरण' इलाके पर हमला कर दिया। पाकिस्तानी आर्मी की योजनानुसार उन्हें अमृतसर जीतने के पश्चात् जालंधर जीतना था और फिर पाकिस्तान के राष्ट्रपति अयूब खान के दिये गये बयान के अनुसार उनका अगला लक्ष्य दिल्ली को जीतना था। पाकिस्तान की सेना 'खेमकरण' से आगे बढ़ी ही थी कि पंजाब के 'असल उत्तर' गाँव के पास भारतीय सेना का चौथा माउंटेन डिविजन, 7 माउंटेन ब्रिगेड़, 62 माउंटेन ब्रिगेड़, शेरमेन टैंक के साथ डेक्कन हॉर्स, अपने अन्य डिविजनों के साथ सिर पर कफ़न बांधे, अपनी मातृ भूमि की रक्षा के लिए, पाकिस्तानी सेना के साथ आर-पार की लड़ाई के लिए तैयार खड़ा था। यहाँ, भारत व पाकिस्तान के बीच, दूसरे विश्व युद्ध के पश्चात्, इतिहास की सबसे बड़ी टैंक की लड़ाई लड़ी गई। इस युद्ध में पाकिस्तान की जबरदस्त पराजय हुई। भारतीय सेना ने पाकिस्तान को चारों खाने चित्त कर दिया था। इस युद्ध में पाकिस्तान ने अपने 97 टैंक गँवा दिये, जिसमें पैटन टैंक की संख्या 72 थी। इसके अतिरिक्त भारतीय सेना ने, चलती हालत में 32 टैंकों पर कब्ज़ा कर लिया था। 'असल उत्तर' युद्ध में बुरी तरह हारने के पश्चात्, युद्ध पूर्णतः भारत के पक्ष में झुक चुका था, जबकि इसके पहले पाकिस्तानी सेना आगे चल रही थी, किंतु अब परिस्थिति एकदम बदल चुकी थी। इस हार के पश्चात् पाकिस्तान की 'प्रथम बख्तरबंद डिविजन' को वापस सियालकोट भेज दिया गया, भविष्य में इसने युद्ध में कभी भाग नहीं लिया। इस समय तक युद्ध में एक ठहराव आ गया था। दोनों देश अपने-अपने द्वारा जीते गए इलाकों की रक्षा पर ज्यादा ध्यान दे रहे थे। एक दूसरे पर आक्रमण नहीं कर रहे थे। **भारत सरकार ने एक बार पुनः वही गलती दोहराई, जो कि 1947 भारत-पाकिस्तान युद्ध में की थी अर्थात जिस समय**

भारतीय सेना पाकिस्तान से जीत रही थी तभी युद्ध विराम की घोषणा कर दी। परिणामस्वरूप पाकिस्तान को भारत पर अगला हमला करने के लिए जिंदा छोड़ दिया और 'ऑपरेशन सिंदूर' जारी रहा।

भारत ने इस युद्ध में 710 वर्ग किलोमीटर इलाके पर कब्ज़ा कर लिया था, जबकि पाकिस्तान ने 210 वर्ग किलोमीटर इलाके पर कब्ज़ा कर लिया था। भारत के कब्ज़े में सियालकोट, लाहौर और कश्मीर के उपजाऊ इलाके थे, जबकि पाकिस्तान के कब्ज़े में सिंध व छंब के बंजर इलाके थे। इस युद्ध में भारत के 3000 व पाकिस्तान के 3300 सैनिक शहीद हुए थे।

स्वतंत्रता के पश्चात्, पहली बार 1965 भारत-पाक युद्ध में भारतीय वायु सेना (आई ए एफ) एवम् पाकिस्तानी वायु सेना (पी पी एफ) के युद्धक विमानों ने एक दूसरे का मुकाबला किया। पाकिस्तानी युद्धक विमान ज्यादातर अमेरिकी थे जबकि भारत के पास सोवियत व यूरोपीय युद्धक विमानों का मिला-जुला बेड़ा था। भारत व पाकिस्तान, दोनों देशों ने हवाई हमले में हुए नुकसान को लेकर एक-दूसरे के विपरीत दावे किए थे। किंतु कुछ विशेषज्ञों के अनुसार इस मोर्चे पर भी भारतीय वायुसेना ने पाकिस्तानी वायुसेना के ऊपर विजय प्राप्त की थी। पाकिस्तानी वायुसेना ने युद्ध की समाप्ति तक अपनी 17 प्रतिशत अग्रिम पंक्ति की ताकत खो दी थी जबकि भारतीय वायुसेना का नुकसान 10 प्रतिशत से भी कम हुआ था। विशेषज्ञों ने यह भी अनुमान लगाया था कि यदि यह युद्ध तीन सप्ताह और चलता तो पाकिस्तानी वायुसेना के नुकसान में 33 प्रतिशत की और वृद्धि होती और भारतीय वायुसेना का नुकसान 15 प्रतिशत तक ही होता।

1965 भारत-पाक युद्ध में नौसैनिक अभियानों ने कोई अहम भूमिका नहीं निभाई थी। कुछ भारतीय सूत्रों से प्राप्त दावे के अनुसार भारत की युद्ध नीति, युद्ध को भूमि आधारित संघर्ष तक सीमित रखने की थी। इसलिए इस युद्ध में भारतीय नौसैनिक बल का विशेष इस्तेमाल नहीं किया गया।

ताशकंद समझौता

संयुक्त राज्य अमेरिका और सोवियत संघ ने भारत व पाकिस्तान के बीच 1965 युद्ध को बढ़ने से रोकने के लिए अति महत्वपूर्ण कूटनीतिक साधनों की सहायता ली। जिसके अंतर्गत सोवियत संघ ने ताशकंद (वर्तमान में उज़्बेकिस्तान में) में शांति वार्ता की मेजबानी की। जहाँ भारतीय प्रधानमंत्री श्री लाल बहादुर शास्त्री एवम् पाकिस्तानी राष्ट्रपति मोहम्मद अयूब खान ने 10 जनवरी 1966 को ताशकंद घोषणा पर हस्ताक्षर किये। इस समझौते के अनुसार, दिनांक 25 फरवरी 1966 से पूर्व दोनों देशों, भारत व पाकिस्तान को अगस्त-पूर्व की रेखाओं पर वापस जाने पर सहमति हुई। भारत में इस समझौते की आलोचना की गई, क्योंकि ताशकंद समझौते में युद्ध विरोधी संधि अथवा कश्मीर में पाकिस्तान द्वारा प्रायोजित गुरिल्ला युद्ध को बंद करने को शामिल नहीं किया गया था।

दिनांक 11 जनवरी 1966 को भारत व पाकिस्तान के बीच ताशकंद समझौते पर हस्ताक्षर के तुरंत बाद भारत के प्रधानमंत्री श्री लाल बहादुर शास्त्री जी को दिल का दौरा पड़ा एवम् उनकी आकस्मिक दुखद मृत्यु हो गई। जिसके परिणामस्वरूप ताशकंद समझौते के विरुद्ध भारतीय जनता का आक्रोश सत्तारूढ़ 'भारतीय राष्ट्रीय कांग्रेस' के लिए सहानुभूति की लहर में परिवर्तित हो गया।

1965 भारत-पाक युद्ध का कारण

1947 में हुए बँटवारे के बाद से ही भारत व पाकिस्तान के बीच कई मुद्दों पर असहमति चल रही थी। इनमें जम्मू और कश्मीर का मुद्दा सबसे अहम था, इसके साथ-साथ अन्य कई सीमा विवाद भी थे। इन अन्य सीमा विवादों में 'कच्छ के रण' पर अधिकार का विवाद भी था। हालाँकि, 'कच्छ का रण' एक बंजर इलाका था। दिनांक 20 मार्च 1965 को पाकिस्तान ने जान-बूझकर 'कच्छ के रण' में भारत के साथ झड़पें शुरू कर दी थीं। प्रारम्भ में इन झड़पों में केवल सीमा सुरक्षा बल ही शामिल थे, किंतु बाद में मामला गंभीर हो गया एवम् दोनों देशों की सेनाएं इसमें सम्मिलित हो गयीं एवम् झड़पें युद्ध में बदल गयीं। दिनांक 01 जून 1965

को ब्रिटिश प्रधानमंत्री हैरोल्ड विल्सन ने भारत व पाकिस्तान के बीच युद्ध को रुकवा कर, इस विवाद को हल करने के उद्देश्य से एक निष्पक्ष मध्यस्थ न्यायालय की स्थापना की। इस न्यायालय का निर्णय बाद में सन् 1968 में आया था किन्तु इस न्यायालय का रुख पहले ही स्पष्ट हो चुका था। इस न्यायालय ने 'कच्छ के रण' की लगभग 900 वर्ग किलोमीटर जमीन पाकिस्तान को दे दी थी। पाकिस्तान 900 वर्ग किलोमीटर 'कच्छ के रण' की जमीन मिलने के बाद भी पीछे हटने को तैयार नहीं था। वह 3500 वर्ग किलोमीटर 'कच्छ के रण' के इलाके पर अपना दावा कर रहा था।

पाकिस्तान के इस दावे के साथ ही भारतीय बुद्धिजीवियों, भारतीय नेताओं, भारतीय अधिकारियों व भारतीय सरकार को यह समझ में आ गया कि भविष्य में भारत व पाकिस्तान के बीच किसी भी सीमा विवाद के लिए अन्य किसी भी तीसरे पक्ष की मध्यस्थता स्वीकार नहीं की जाएगी एवम् पाकिस्तान को एक इंच जमीन भी नहीं दी जाएगी क्योंकि इस देश की नीयत में ही खोट है।

'कच्छ के रण' में 900 वर्ग किलोमीटर जमीन मिलने के पश्चात्, पाकिस्तानी राजनेताओं व पाकिस्तानी सेना के हौसले सातवें आसमान पर पहुँच चुके थे। इसी सफलता से उत्साहित होकर पाकिस्तान के तत्कालीन विदेश मंत्री ज़ुल्फिकार अली भुट्टो ने भारत के खिलाफ एक षड्यंत्र रचा, जिसके अंतर्गत उन्होंने पाकिस्तान के राष्ट्रपति व सेनाध्यक्ष जनरल अयूब खान को अपने विश्वास में लिया एवम् उन पर कश्मीर पर हमला करने का दबाव डाला। पाकिस्तान का अनुमान था कि चूंकि सन् 1962 में भारत, चीन से युद्ध हार चुका था एवम् इस युद्ध में भारत को भारी जान-माल का नुकसान हुआ था। इसलिए भारत युद्ध करने की स्थिति में नहीं होगा एवम् भारत पर आसानी से विजय प्राप्त की जा सकेगी। पाकिस्तान का यह भी अनुमान था कि चूंकि भारत युद्ध करने की स्थिति में नहीं है, इसलिए उसने 'कच्छ के रण' में तीसरे पक्ष की मध्यस्थता को स्वीकार किया एवम् पाकिस्तान को 900 वर्ग किलोमीटर जमीन देने के विषय पर अपनी सहमति प्रदान की।

ज़ुल्फिकार अली भुट्टो को पाकिस्तान के अन्य जनरलों याह्या खान व टिक्का खान ने भी अपना समर्थन प्रदान किया। इन सभी ने एक ख़याली पुलाव पकाया, जिसके अनुसार कश्मीर की जनता युद्ध की स्थिति में भारत से विद्रोह करके पाकिस्तान का साथ देगी। अंततः जनरल अयूब खान दबाव में आ गये, उन्होंने अपने विवेक का इस्तेमाल नहीं किया। उन्होंने इस बात पर ग़ौर नहीं किया कि 1962 में भारत, चीन से इसलिए भी हारा था कि भारत, चीन की धोखेबाजी को समझ नहीं पाया था, लेकिन भारतीय सेना की वीरता व साहस में कोई कमी नहीं थी एवम् चीन से मिली हार से सबक लेकर भारतीय सेना व भारतीय सरकार भविष्य में किसी भी युद्ध से निपटने के लिए पहले से बेहतर स्थिति में थे।

आखिरकार जनरल अयूब खान ने गुप्त सैनिक अभियान **'ऑपरेशन जिब्राल्टर'** को अपनी सहमति दे दी। 'ऑपरेशन जिब्राल्टर' का मुख्य उद्देश्य कश्मीर की जनता में विद्रोह भड़काना एवम् भारतीय संचारतंत्र और परिवहन व्यवस्था को तहस-नहस करना था। तत्पश्चात कश्मीर पर आक्रमण करके उसे पाकिस्तान में शामिल करना था।

किन्तु पाकिस्तान एकदम गलत साबित हुआ। कश्मीर की जनता ने पाकिस्तानी घुसपैठियों को शीघ्र ही पहचान लिया एवम् विद्रोह करने के पश्चात् इसकी सूचना, भारतीय सैनिकों को दे दी, परिणामस्वरूप भारतीय सैनिकों ने सही समय पर आवश्यक सैनिक कार्रवाई की एवम् 'ऑपरेशन जिब्राल्टर' पूर्णतः विफल हो गया।

1965 भारत-पाक युद्ध में अवश्य ही भारत ने पाकिस्तान पर विजय प्राप्त की। किन्तु इस जीत के लिए भारतीय सैनिकों ने असीम बहादुरी का परिचय दिया, अपने प्राण तक मातृभूमि की रक्षा के लिए न्यौछावर कर दिये। तब जाकर हमें विजयश्री प्राप्त हुई। हम सभी व हमारी आने वाली पीढ़ियाँ सदैव ही प्रत्येक भारतीय सैनिक के बलिदान के लिए उनकी ऋणी रहेंगी। इसके साथ ही सम्पूर्ण विश्व का भी भारतीय सेना के युद्ध कौशल व भारतीय सैनिकों की वीरता से परिचय हुआ। इस युद्ध के कुछ नायकों के नाम निम्नलिखित हैं-

परमवीर चक्र विजेता कम्पनी क्वार्टर मास्टर हवलदार अब्दुल हमीद

अब्दुल हमीद का जन्म उत्तर प्रदेश के गाज़ीपुर जिले के धामुपुर गाँव में दिनांक 01 जुलाई 1933 को एक अति साधारण परिवार में हुआ था। उनकी माता का नाम सकीना बेगम और पिता का नाम मोहम्मद उस्मान था। उनके पिता दर्जी का काम किया करते थे। किसी को सपने में भी यह गुमान नहीं था कि अब्दुल हमीद नाम का यह बालक आगे चलकर विश्व पटल पर वीरता का एक नया अध्याय लिखकर जाएगा।

दिनांक 28 दिसम्बर 1954 को अब्दुल हमीद, भारतीय सेना की 'ग्रेनेडियर रेजीमेंट' में भर्ती हुए। प्रशिक्षण के पश्चात् उनकी तैनाती 'ग्रेनेडियर रेजिमेंट' की '4 ग्रेनेडियर बटालियन' में हुई थी। जहाँ उन्होंने अपनी अंतिम साँस तक अपनी सेवाएं दीं। दिनांक 08 सितम्बर 1965 को पाकिस्तान ने भारत पर हमला किया, अपनी मातृभूमि की रक्षा के लिए भारतीय सैनिक अपने सिर पर कफ़न बाँधकर पाकिस्तानी सेना का मुकाबला करने के लिए खड़े हो गये। वीर अब्दुल हमीद पंजाब के 'तरनतारन' जिले के 'खेमकरण' सेक्टर में भारतीय सेना की अग्रिम पंक्ति में तैनात थे। पाकिस्तानी सेना को 'अमेरिकन 'पैटन टैंकों' से सुसज्जित थी एवम् पाकिस्तानी सेना को उस समय अपराजेय माने जाने वाले अमेरिकन 'पैटन टैंकों' पर बहुत गर्व था। इन्हीं अमेरिकन 'पैटन टैंकों' के साथ पाकिस्तानी सेना ने पंजाब के 'खेमकरण' सेक्टर के 'असल उत्तर' गाँव पर तीव्र हमला कर दिया। उस सेक्टर में भारतीय सेना के पास न तो टैंक थे एवम् न ही बड़े हथियार थे। उनके पास साधारण 'थ्री नॉट थ्री' रायफल एवम् एल एम जी (लाइट मशीन गन) थी। वीर अब्दुल हमीद के पास 'गन माउंटेड जीप' थी जो अमेरिकन 'पैटन टैंकों' के समक्ष एक खिलौना मात्र थी। लेकिन इसके साथ ही भारतीय सैनिकों के पास अपनी मातृभूमि की रक्षा के लिए अंतिम साँस तक लड़ने का असीम हौसला था। कम्पनी क्वार्टर मास्टर हवलदार अब्दुल हमीद ने अपनी गन माउंटेड जीप में बैठकर, जीप को उचित स्थान पर लाकर, सटीक पोजिशन बनाई, एक 'पैटन टैंकों' के कमजोर हिस्सों पर सटीक निशाना लगाया, उनका निशाना एकदम सटीक था,

वे बार-बार आवश्यकतानुसार अपनी गन माउंटेड जीप को सही पोजिशन में लगाते थे एवम् दुश्मन के 'पैटन टैंकों' के कमजोर हिस्सों पर निशाना लगाते थे। **देखते-देखते वीर अब्दुल हमीद ने अपनी 'गन माउंटेड जीप' की साथ सटीक निशानेबाजी से पाकिस्तानी सेना के सात 'पैटन टैंकों' को नष्ट कर दिया था।** सात 'पैटन टैंकों' के नष्ट होने के कारण पाकिस्तानी सेना में भगदड़ मच गई एवम् भारतीय सेना का हौसला बढ़ गया, भारतीय सैनिकों ने पाकिस्तानी सैनिकों पर ताबड़तोड़ हमले प्रारंभ कर दिये। परिणामस्वरूप इस युद्ध में भारतीय सेना ने अपने साधारण हथियारों के साथ विजय प्राप्त की एवम् भारतीय सेना के मुकाबले अधिक बड़े हथियार व संख्याबल होने के बावजूद भी पाकिस्तानी सेना की पराजय हुई। पाकिस्तानी सेना युद्ध के मैदान से भाग खड़ी हुई एवम् भागती हुई पाकिस्तानी सेना का पीछा करते हुए वीर अब्दुल हमीद की जीप पर एक गोला गिरा, जिससे वे बुरी तरह घायल हो गये एवम् दिनांक 09 सितम्बर 1965 को वह वीरगति को प्राप्त हो गए। उनकी वीरगति की अधिकारिक घोषणा दिनांक 10 सितम्बर 1965 को की गई। वीर अब्दुल हमीद का नाम उनकी बहादुरी व बलिदान के लिए इतिहास के पन्नों में सदा अमर रहेगा। उनकी असाधारण बहादुरी व बलिदान को मेरा कोटि-कोटि नमन है।

इस युद्ध में साधारण 'गन माउंटेड जीप' के द्वारा, अमेरिका निर्मित, अपराजेय समझे जाने वाले, सात 'पैटन टैंकों' के ध्वस्त होने के कारण, अमेरिका को इन 'पैटन टैंकों' की डिजाइन की पुन: समीक्षा करनी पड़ी थी।

दिनांक 16 सितम्बर 1965 को कम्पनी क्वार्टर मास्टर हवलदार अब्दुल हमीद को उनकी असीम वीरता, साहस व बलिदान के लिए, मरणोपरांत भारत का सर्वोच्च सेना पुरस्कार **'परमवीर चक्र'** प्रदान किया गया। उनके सम्मान में उनके नाम के साथ एक डाक टिकट भी जारी किया गया।

महावीर चक्र विजेता लेफ्टिनेंट जनरल हनूत सिंह राठौड़

लेफ्टिनेंट जनरल हनूत सिंह राठौड़ का जन्म दिनांक 06 जुलाई 1933 को राजस्थान के बाड़मेर जिले के जसौल गाँव में लेफ्टिनेंट कर्नल अर्जुन सिंह जी के घर हुआ था। उन्होंने देहरादून के कर्नल ब्राउन स्कूल से पढ़ाई पूरी की एवम् वर्ष 1949 में एन डी ए में दाखिल हुए। अपना प्रशिक्षण सफलतापूर्वक पूर्ण करने के पश्चात् वह भारतीय सेना में सेकंड लेफ्टिनेंट के पद पर नियुक्त हुए। तत्पश्चात अपनी मेहनत व काबिलीयत से सीढ़ी दर सीढ़ी तरक्की करते हुए स्वतंत्र भारत के 12 प्रमुख जनरलों में शामिल हुए।

1965 भारत-पाक युद्ध में मेजर जनरल के पद पर कार्यरत हनूत सिंह राठौड़ ने बहादुरी व समझ-बूझ के साथ भारतीय सेना का नेतृत्व किया एवम् पाकिस्तान के 60 टैंकों को नष्ट करने में अहम भूमिका निभाई। युद्ध में असाधारण साहस निभाने के लिए उन्हें **'महावीर चक्र'** से सम्मानित किया गया।

महावीर चक्र,परम विशिष्ट सेवा मेडल विजेता लेफ्टिनेंट जनरल रंजीत सिंह दयाल

दिनांक 15 नवम्बर 1928 को ब्रिटिश भारत के पंजाब (वर्तमान में हरियाणा राज्य के कुरुक्षेत्र जिले में) तेओकर गाँव (जिसे तुकर गाँव भी लिखा जा सकता है) में एक सिख परिवार में सरदार बहादुर रिसालदार राम सिंह दयाल को एक पुत्र रत्न की प्राप्ति हुई, जिसका नाम रणजीत सिंह दयाल रखा गया। इसी रणजीत सिंह दयाल नामक बालक ने आगे चलकर देश सेवा, कुशल नेतृत्व, बहादुरी, त्याग व समर्पण का उत्कृष्ट उदाहरण पेश किया एवम् एक महानायक बना।

मेजर रंजीत सिंह दयाल ने दिनांक 25 अगस्त 1965 की रात्रि जम्मू-कश्मीर के 'सांक' इलाके पर पाकिस्तान के विरुद्ध हमला करने के लिए प्रथम बटालियन पैराशूट रेजिमेंट का नेतृत्व किया। दिनांक 25 अगस्त 1965 की रात्रि पाकिस्तानी सेना की भारी गोलीबारी के कारण मेजर रंजीत सिंह की अगुवाई में प्रथम

बटालियन पैराशूट रेजिमेंट का हमला रुक गया। मेजर रंजीत सिंह दयाल ने समझदारी व धैर्यपूर्वक नेतृत्व करते हुए पाकिस्तानी सेना की भारी गोलीबारी से अपनी कंपनी को बचाते हुए, वहाँ से सुरक्षित निकाला। पाकिस्तानी सेना को लगा कि 'सांक' इलाके पर उनका कब्जा बरकरार रहेगा एवम् वे भारतीय सेना को वहाँ से भगाने में सफल रहे, किन्तु यह उनकी बड़ी भारी गलतफहमी थी। जिस प्रकार से शेर कभी-कभी हमला करने से पूर्व दो कदम पीछे लेता है, फिर हमला करता है, ठीक उसी प्रकार भारत माँ के वीर सपूत शेर मेजर रंजीत सिंह दयाल ने पीछे हटकर अपनी आगे कि रणनीति बनाई और अगली ही रात्रि 'सांक' इलाके में जमी पाकिस्तानी सेना पर जोरदार, सटीक जवाबी हमला किया। भारतीय सेना का हमला इतना खतरनाक था कि पाकिस्तानी सेना, भारतीय सेना के हमले का मुकाबला नहीं कर पायी एवम् वहाँ से भाग खड़ी हुई। अब 'सांक' इलाके पर भारतीय सेना का अधिकार था एवम् वहाँ पर भारतीय तिरंगा ध्वज शान से लहरा रहा था। मेजर रंजीत सिंह दयाल व उनकी कंपनी यहीं नहीं रुकी। उन्होंने भागती हुई पाकिस्तानी सेना का लगातार पीछा किया एवम् 27 अगस्त की सुबह ग्यारह बजे तक 'लेदवाली गली' इलाके में मोर्चे संभाले हुई पाकिस्तानी सेना से कड़ा मुकाबला किया। इस कड़े मुकाबले में मेजर रंजीत सिंह दयाल के कुशल नेतृत्व में भारतीय सेना की विजय हुई एवम् 'लेदवाली गली' इलाके पर भी भारतीय सेना का कब्जा हो गया। इसके बाद मेजर रंजीत सिंह दयाल व उनकी कम्पनी ने अपना विजय अभियान जारी रखा। अत्यंत दुर्गम इलाकों से रात में ही मार्च करते हुए आगे बढ़ते रहे एवम् 'हाजी पीर दर्रे' इलाके में जमी पाकिस्तानी सेना से कड़ा मुकाबला किया एवम् पाकिस्तानी सेना को परास्त करके दिनांक 28 अगस्त के 11 बजे तक 'हाजी पीर दर्रे' इलाके पर कब्जा कर लिया। इस कड़े मुकाबलों के बाद उन्होंने एक पाकिस्तानी सेना के अधिकारी व 11 पाकिस्तानी सैनिकों को बंदी भी बना लिया था। इसकी अगली सुबह, एक अन्य स्थान पर कब्जा करने के लिए मेजर रंजीत सिंह दयाल के नेतृत्व में एक प्लाटून को तैनात किया गया। तभी उन्हें संबंधित हैड क्वार्टर से सूचना प्राप्त हुई कि एक भारतीय सेना का एक गश्ती दल पाकिस्तानी सेना की भारी गोलीबारी में फँस गया है। वह

तुरंत एक अन्य प्लाटून के साथ उस भारतीय गश्ती दल की सहायता के लिए तीव्र गति से रवाना हो गए। वहाँ पहुँचकर, अपने साहस व कुशल नेतृत्व से पाकिस्तानी सेना की मशीन गन और मोर्टार की भारी गोलीबारी का सामना करते हुए भारतीय सेना के गश्ती दल को सुरक्षित किया एवम् अपनी प्लाटून व उस गश्ती दल को एकजुट करके, पाकिस्तानी सेना पर बिजली की गति से पलटवार किया। उनका हमला बेहद जोरदार, घातक व सटीक था, परिणामस्वरूप पाकिस्तानी सेना वहाँ से घबराकर भाग गयी।

मेजर रंजीत सिंह दयाल को उनके कुशल नेतृत्व, असीम बहादुरी और वीरता के लिए भारत-पाक 1965 युद्ध में भारतीय सेना की विजय में विशेष योगदान देने से लिए **'महावीर चक्र'** प्रदान किया गया।

मेजर रंजीत सिंह दयाल ने आगे भी भारतीय सेना में अपनी सेवा जारी रखी एवम् वह लेफ्टिनेंट जनरल के पद तक पहुँचे। उन्हें, उनकी अमूल्य सेवा के लिए 'परम विशिष्ट सेवा' मेडल भी प्रदान किया गया। भारतीय सेना में अपनी सर्विस के दौरान लेफ्टिनेंट जनरल रंजीत सिंह दयाल, 'पी वी एस एम', 'एम वी सी' दक्षिणी कमान के जनरल-ऑफिसर-कमांडिंग-इन-चीफ (जी ओ सी इन सी) बने। उन्होंने सन् 2008 में पंजाब रेजिमेंट ऑफिसर्स एसोसिएशन (पी आर ओ ए) के चंडीगढ़ क्षेत्रीय चैप्टर के प्रथम प्रमुख के पद पर भी कार्य किया।

वर्ष 1988 में भारतीय सेना में अपनी सेवा पूरी करने के पश्चात् रंजीत सिंह दयाल, पुडुचेरी के दसवें 'उप राज्यपाल' बने। यहाँ पर उन्होंने जून 1988 से फरवरी 1990 तक अपनी सेवा प्रदान की। इस कार्यकाल के पश्चात् उन्होंने (1990-1993) अंडमान और निकोबार द्वीप समूह के 'उप राज्यपाल' के पद पर भी कार्य किया। दिनांक 29 जनवरी 2012 को 83 वर्ष की आयु में भारत माता के इस वीर सपूत ने पंचकुला (हरियाणा) में अपनी अंतिम साँस ली और इस दुनिया को अलविदा कहा। लेफ्टिनेंट जनरल रंजीत सिंह दयाल, 'पी वी एस एम', एम वी सी को उनके अमूल्य योगदान, बहादुरी, कुशल नेतृत्व व 1965 भारत-

पाक युद्ध में भारतीय सेना की विजय में विशेष योगदान देने के लिए सदैव स्मरण किया जाएगा। भारत माँ के इस वीर सपूत को मेरा कोटि-कोटि नमन है।

महावीर चक्र विजेता स्क्वाड्रन लीडर अजमादा बोपय्या देवय्या

जिन्होंने अपने पुराने 'मिस्टेरे Iva' लड़ाकू बमवर्षक विमान से पाकिस्तान के आधुनिक 'एफ 104 स्टार फाइटर' को मार गिराया था।

दिनांक 24 दिसम्बर 1932 को कर्नाटक के कुर्ग नामक स्थान पर डॉ बोपय्या के घर पर एक पुत्र रत्न का जन्म हुआ। डॉ बोपय्या ने अपने इस लाडले बेटे का नाम अजमादा रखा। उन्हें उस समय सपने में भी यह गुमान न था कि उनका यह लाडला बेटा, भविष्य में आगे चलकर वीरता, शौर्य, बलिदान की अमर गाथा लिख जायेगा, जो कि आनेवाले सैकडों वर्षों तक याद की जाएगी।

अजमादा बोपय्या देवय्या ने अपनी योग्यता के बल पर वर्ष 1954 में भारतीय वायु सेना में एक पायलट के रूप में कमीशन प्राप्त किया। भारत-पाक 1965 युद्ध के समय, वे भारतीय वायु सेना फ्लाइंग कॉलेज में एक प्रशिक्षक के रूप में कार्यरत थे। उन्हें उनकी काबिलीयत के कारण 'विंग्ज ऑफ फायर' के नाम से जाना जाता था। उन्हें नम्बर 1 'टाइगर्स स्क्वाड्रन' में तैनात किया गया था। उन्होंने भारत-पाक 1965 के युद्ध में मिस्टेरे Iva लड़ाकू बमवर्षक विमान उड़ाया था।

भारत ने पाकिस्तान के सरगोधा हवाई अड्डे पर हवाई हमले की योजना बनाई थी। एक वरिष्ठ फ्लाइंग इंस्ट्रक्टर के रूप में स्क्वाड्रन लीडर देवय्या इस हवाई हमले के मिशन का महत्वपूर्ण हिस्सा थे। उन्हें स्टैंडबाय रखा गया था अर्थात् प्रथम 12 विमानों में से किसी एक के किसी कारणवश मिशन से बाहर हो जाने की स्थिति में, उन्हें इस मिशन में भाग लेना था। किंतु उन्होंने स्वेच्छा से इस मिशन में भाग लिया। इस हवाई हमले के दौरान स्क्वाड्रन लीडर देवय्या को पाकिस्तानी पायलट फ्लाइंग लेफ्टिनेंट अमजद हुसैन द्वारा उड़ाए जा रहे युद्ध विमान 'एफ 104 स्टार फाइटर' ने रोका। कुशल फाइटर देवय्या पाकिस्तानी

पायलट फ्लाइंग लेफ्टिनेंट अमजद हुसैन के हमले से सफलतापूर्वक बच निकले लेकिन इस तेज गति वाले 'एफ 104 स्टार फाइटर' ने देवय्या का पीछा किया एवम् उन पर हमला किया। इस हमले में देवय्या का विमान क्षतिग्रस्त हो गया। अपना विमान क्षतिग्रस्त होने के बावजूद भी देवय्या ने अपने कदम पीछे नहीं हटाए, कोई सुरक्षित विकल्प नहीं ढूंढा बल्कि अपने क्षतिग्रस्त विमान से ही दुश्मन पर पलटवार किया। उनका निशाना अचूक था, परिणामस्वरूप पाकिस्तानी 'एफ 104 स्टार फाइटर' विमान नीचे गिर गया एवम् फ्लाइंग लेफ्टिनेंट अमजद हुसैन ने विमान से इजेक्ट होकर पैराशूट से कूद गये और अपनी जान बचाई।

इसके बाद देवय्या का क्या हुआ इसकी कोई जानकारी नहीं है। भारतीय वायु सेना के मिस्टेरे विमानों में ईंधन व दक्षता की कमी थी। यह अनुमान लगाया गया कि देवय्या का मिस्टेरे विमान नष्ट हो गया था एवम् पाकिस्तानी धरती पर भारत माँ का यह वीर सपूत दिनांक 07 सितम्बर 1965 को मात्र 32 वर्ष की आयु में वीरगति को प्राप्त हो गया था।

देवय्या के साथ क्या हुआ, इसकी कोई भी जानकारी भारतीय वायु सेना के पास नहीं थी। इसलिए पहले उन्हें लापता घोषित किया गया तथा बाद में मृत घोषित कर दिया गया। जानकारी के अभाव में देवय्या की वास्तविक मृत्यु का कारण आज भी रहस्य बना हुआ है। पाकिस्तान के द्वारा बहुत समय पश्चात् खुलासा किया गया कि देवय्या का शव, पाकिस्तान के सरगोधा नामक स्थान के पास पाकिस्तानी नागरिकों को सही सलामत अवस्था में प्राप्त हुआ था एवम् उन्हें वहीं पर दफ़ना दिया गया था। वर्ष 1988 में भारत माता के वीर सपूत देवय्या को भारत सरकार द्वारा मरणोपरांत महावीर चक्र प्रदान किया गया। भारत माँ के इस वीर सपूत को कोटि-कोटि नमन है। **श्रीमती देवय्या ने 1965 भारत-पाक युद्ध के लगभग 23 वर्ष पश्चात् वर्ष 1988 में 'महावीर चक्र' स्वीकार किया।**

महावीर चक्र विजेता मेजर जनरल सलीम कालेब

मेजर जनरल सलीम कालेब 1965 भारत पाक युद्ध के महानायकों में से एक थे। उन्होंने इस युद्ध में एक अति महत्वपूर्ण भूमिका निभाई थी एवम् पाकिस्तान पर भारत की जीत सुनिश्चित की थी।

इनका जन्म दिनांक 3 नवम्बर 1924 को लाहौर (वर्तमान पाकिस्तान) में हुआ था। इनके पिता सैमुअल जे. कालेब भी सेना में मेजर के पद पर कार्यरत थे। भारत पाक विभाजन के पश्चात् इस परिवार ने भारत में आकर रहने का निर्णय लिया एवम् फिरोजपुर पंजाब में आकर बस गया। उस समय पाकिस्तान को सपने में भी यह गुमान न था कि इसी परिवार का एक सदस्य भविष्य में होने वाले भारत-पाकिस्तान युद्ध में एक अति महत्वपूर्ण भूमिका निभायेगा एवम् पाकिस्तान को धूल चटा देगा। एक रोचक तथ्य यह भी है कि कई बार उनके नाम के कारण लोग उन्हें मुस्लिम मान लेते थे, जबकि वह एक ईसाई परिवार से थे। उनके भाइयों में से एक भाई इकबाल कालेब सेना में थे व एक अन्य भाई चर्च में पादरी थे। दिनांक 2 फरवरी 1944 को सलीम कालेब ने भारतीय सेना की '3 कैवेलरी रेजिमेंट' को एक अधिकारी के रूप में ज्वाइन किया था।

1965 युद्ध के दौरान, तत्कालीन लेफ्टिनेंट कर्नल सलीम कालेब ने आरमड की '3 कैवेलरी आरमड रेजिमेंट' की कमांड संभाली हुई थी, वह '3 कैवेलरी आरमड रेजिमेंट' के कमांडिंग ऑफिसर थे। दिनांक 10 सितम्बर 1965 को पंजाब के 'खेमकरण सेक्टर' में पाकिस्तानी सेना ने अपने नापाक इरादों के साथ, अपने अजेय समझे जानेवाले शक्तिशाली 'पैटन टैंकों' के साथ भीषण हमला किया। पाकिस्तानी 'पैटन टैंकों' का हमला बेहद खतरनाक था एवम् पाकिस्तानी सेना को लगा कि उनकी जीत सुनिश्चित है। तभी 'असल उत्तर' नामक स्थान पर उनका सामना लेफ्टिनेंट कर्नल सलीम कालेब की कमांड में डटी हुई '3 कैवेलरी आरमड रेजिमेंट' से हुआ। लेफ्टिनेंट कर्नल सलीम कालेब की युद्ध कुशलता, युद्ध नीति बनाने की अद्भुत क्षमता व '3 कैवेलरी आरमड रेजिमेंट' के सैनिकों की बहादुरी एवम् अचूक निशाने ने पाकिस्तानी सेना की जीत के सारे समीकरण बदल

दिये। युद्ध का पासा पलट चुका था। इस लड़ाई में लेफ्टिनेंट कर्नल सलीम कालेब के कुशल नेतृत्व में भारतीय सैनिकों ने पाकिस्तानी टैंकों के भीषण हमले का बहादुरी के साथ सामना किया एवम् पलटवार करते हुए पाकिस्तान के 15 'पैटन टैंकों' को नष्ट कर दिया एवम् 9 पाकिस्तानी 'पैटन टैंकों' को चलती हालत में कब्जे में ले लिया। इस लड़ाई में भारत की जीत हुई।

इस अद्वितीय साहस, कुशल नेतृत्व, बहादुरी के लिए 1965 भारत-पाक युद्ध के नायकों में से एक लेफ्टिनेंट कर्नल सलीम कालेब को भारत के दूसरे सर्वोच्च सम्मान **'महावीर चक्र'** से सम्मानित किया गया। लेफ्टिनेंट कर्नल सलीम कालेब, महावीर चक्र विजेता ने 1965 भारत-पाक युद्ध के पश्चात् भारतीय सेना में अपनी अमूल्य सेवा जारी रखी एवम् अपनी मेहनत व योग्यता के बल पर मेजर जनरल के पद तक पहुँचे। उनका सम्पूर्ण जीवन भारतीय सेना व भारत देश के लिए समर्पित रहा। भारत माता के इस वीर सपूत ने दिनांक 28 जनवरी 2015 को 90 वर्ष की आयु में शिमला में अंतिम साँस ली एवम् इस दुनिया को अलविदा कहा। भारत माता के इस वीर सपूत को मेरा कोटि-कोटि नमन है।

परमवीर चक्र विजेता लेफ्टिनेंट कर्नल ए.बी. तारापोर

लेफ्टिनेंट कर्नल ए.बी. तारापोर का पूरा नाम अर्देशिर बुर्जोरजी तारापोर था। इनका जन्म दिनांक 18 अगस्त 1923 को मुंबई, (उस समय के बंबई प्रेसीडेंसी ब्रिटिश राज) में हुआ था। लेफ्टिनेंट कर्नल ए.बी. तारापोर का सम्बंध जनरल रतंजीबा के परिवार से था। जिन्होंने छत्रपति शिवाजी महाराज जी की सेना का नेतृत्व किया था एवम् उन्हें 100 गाँवों से सम्मानित भी किया गया था। इन गाँवों में तारापोर मुख्य गाँव था। इसी गाँव से लेफ्टिनेंट कर्नल ए.बी. तारापोर के परिवार का सम्बंध रहा है। बाद में अर्देशिर बुर्जोरजी के दादाजी तारपोर गाँव से हैदराबाद स्थानांतरित हो गये थे एवम् उन्होंने जीवन-यापन के लिए हैदराबाद के निजाम के उत्पाद शुल्क विभाग में काम करना शुरू कर दिया था।

अर्देशिर बुर्जोरजी को सात वर्ष की आयु में ही पढ़ाई करने के लिए पुणे में सरदार दस्तूर लड़कों के बोर्ड़िंग स्कूल में भेज दिया गया था। वर्ष 1940 में अर्देशिर बुर्जोरजी ने मैट्रिक की परीक्षा उत्तीर्ण की। तत्पश्चात उन्होंने सेना में भर्ती होने के लिए आवेदन किया और सेना में चयनित होने में सफल हुए। इसके साथ ही भविष्य में भारत व पाकिस्तान के बीच होने वाली ऐतिहासिक 'फिल्लौर की लड़ाई' में पाकिस्तान की पराजय की नींव रख दी गयी। सेना में चयनित होने के साथ ही अर्देशिर बुर्जोरजी ने अपनी सैनिक यात्रा प्रारम्भ की और अधिकारियों के प्रशिक्षण स्कूल गोलकोण्डा में अपना सैनिक प्रशिक्षण सफलतापूर्वक पूर्ण किया। प्रशिक्षण पूर्ण होने के पश्चात् इन्हें बैंगलोर भेजा गया, जहाँ इन्हें '7वीं हैदराबाद इन्फैंट्री' में एक सेकंड लेफ्टिनेंट के रूप में नियुक्त किया गया था। इस प्रकार अर्देशिर बुर्जोरजी ने अपनी सैनिक यात्रा '7वीं हैदराबाद इन्फैंट्री' के साथ प्रारम्भ की थी। किंतु, दिनांक 17 सितम्बर 1948 को हैदराबाद के भारत में विलय के पश्चात् उन्हें भारतीय सेना की 'पूना हॉर्स' में स्थानांतरित कर दिया गया था। किन्तु 'अदी' नाम से लोकप्रिय अर्देशिर तारापोर इन्फैन्ट्री सेना में शामिल होने से प्रसन्न नहीं थे। क्योंकि उनकी दिली इच्छा बख्तरबंद रेजीमेंट में शामिल होने की थी एवम् नियति ने उन्हें यह सुअवसर प्रदान भी किया। जिसको उन्होंने तुरंत लपक लिया। घटना इस प्रकार की है कि एक दिन उनकी बटालियन का निरीक्षण, हैदराबाद राज्य बलों के कमांडर-इन-चीफ, मेजर जनरल 'अल इदरूस' कर रहे थे। तभी दुर्घटनावश ग्रेनेड रेंज में एक जीवित ग्रेनेड कड़ी क्षेत्र में गिर गया। अदी अपनी जान की परवाह न करते हुए बिजली की फुर्ती से ग्रेनेड की तरफ लपके एवम् शीघ्रता से ग्रेनेड को उठाया एवम् दूर फेंकने का प्रयास किया। किंतु इस जोखिम भरे प्रयास में ग्रेनेड 'अदी' के समीप फट गया एवम् अदी घायल हो गये। चूंकि यह घटना मेजर जनरल 'अल इदरूस' की आँखों के सामने ही घटित हुई थी, इसलिए वे 'अदी' के साहस से बेहद प्रभावित हुए। उन्होंने 'अदी' को शाबाशी देने के लिए अपने कार्यालय में बुलाया। तीक्ष्ण बुद्धि के धनी 'अदी' को इन्फेन्ट्री रेजीमेंट से बख्तरबंद रेजिमेंट में स्थानांतरण हेतु अनुरोध का सुअवसर प्राप्त हो गया। उन्होंने अपने मन की बात मेजर जनरल 'अल इदरूस' के समक्ष

कह डाली। मेजर जनरल 'अल इदरूस' ने मुस्कराते हुए उनका अनुरोध स्वीकार कर लिया एवम 'अदी' को 1 हैदराबाद इम्पीरियल सर्विस लान्सर्स में स्थानांतरित कर दिया गया। अपने सैनिक जीवन के इस भाग के दौरान 'अदी' ने द्वितीय विश्व युद्ध के अंतर्गत पश्चिम एशिया में अपनी सक्रिय सेवा प्रदान की थी।

एक रोचक तथ्य यह भी है कि 'ऑपरेशन पोलो' के दौरान 'अदी' स्वतंत्र हैदराबाद की तरफ से लड़ रही '1 हैदराबाद इम्पीरियल सर्विस लान्सर्स' के झंड़े तले भारत की तरफ से लड़ रही 'पूना हॉर्स' रेजीमेंट के विरुद्ध लड़े थे। आगे चलकर जब दिनांक 17 सितम्बर 1948 को हैदराबाद का भारत में विलय हुआ तब यही 'पूना हॉर्स' उनकी यूनिट बनी थी एवम् अर्देशिर तारापोर को दिनांक 1 अप्रैल 1951 की कमीशन तिथि के साथ भारतीय सेना की 'पूना हॉर्स', रेजीमेंट में स्थानांतरित कर दिया गया। आगे चलकर 1965 के भारत पाकिस्तान युद्ध के दौरान वह 'पूना हॉर्स' रेजीमेंट के कमान अधिकारी बने थे।

दिनांक 11 सितम्बर 1965 को लेफ्टिनेंट कर्नल अर्देशिर तारापोर की अगुवाई में 'पूना हॉर्स' रेजिमेंट ने पाकिस्तान के विरुद्ध 'चविंडह' की लड़ाई के दौरान 'सियालकोट सेक्टर' में 'फिलोरा' पर हमला किया। 'फिलोरा' और 'चविंडह' के बीच 'वज़ीरवली' नामक स्थान में पाकिस्तानी सेना के भारी बख्तरबंद का सामना 'पूना हॉर्स' से हुआ। यह युद्ध काफी भयानक था। इतिहास में यह एक ऐसे युद्ध के रूप में दर्ज है जिस युद्ध में सबसे अधिक टैंक नष्ट हुए थे। लेफ्टिनेंट कर्नल अर्देशिर तारापोर ने अपने दृढ़ संकल्प, युद्ध कुशलता व साहस से लगातार दुश्मन के टैंकों पर हमला किया। वह स्वयं टैंक में बैठकर, आगे बढ़कर अपनी सेना का नेतृत्व कर रहे थे। दुश्मन ने उनके टैंक को निशाना बनाकर, उन पर हमला किया। जिससे वह घायल हो गये, घायल होने के पश्चात् उच्च अधिकारियों ने उन्हें वहाँ से चिकित्सा हेतु निकलने के लिए कहा, किन्तु उन्होंने वहाँ से निकलने से मना कर दिया। उन्होंने 'पूना हॉर्स' रेजीमेंट का नेतृत्व करते हुए दिनांक 13 सितम्बर 1965 को 'वज़ीरवली' व दिनांक 16 सितम्बर 1965 को 'जसोरन' इलाके पर विजय प्राप्त की एवम् वहाँ पर भारतीय तिरंगा लहराया।

इनके नेतृत्व से प्रेरित 'पूना हॉर्स' रेजीमेंट दुश्मन के ऊपर काल बनकर टूट पड़ी एवम् दुश्मन के साठ टैंक तबाह कर दिये जबकि 'पूना हॉर्स' रेजीमेंट को अपने मात्र नौ टैंक ही गँवाने पड़े थे। पाकिस्तानी सेना ने लेफ़्टिनेंट कर्नल अर्देशिर तारापोर को लक्ष्य बनाकर उनके टैंक पर हमला किया, उनके टैंक को टक्कर मार दी जिससे उसमें आग लग गई और वह वीरगति को प्राप्त हो गये किन्तु वीरगति को प्राप्त होने से पहले भारत की विजय सुनिश्चित कर गये। लेफ्टिनेंट कर्नल अर्देशिर बुर्जोरजी तारापोर की वीरता, अदम्य साहस, देश प्रेम और बलिदान को सम्मान देते हुए भारत सरकार ने वर्ष 1965 में उन्हें मरणोपरांत सेना के सर्वोच्च वीरता सम्मान 'परमवीर चक्र' से सम्मानित किया जो कि दिनांक 11 सितम्बर 1965 से प्रभावी हुआ।

महावीर चक्र विजेता ब्रिगेडियर डेसमंड हेडे

डेसमंड हेडे का जन्म दिनांक 28 नवम्बर 1926 को इंग्लैंड के एक्सेटर में हुआ था। वे आयरिश मूल के निवासी थे। उनके पिता भारतीय रेलवे में कार्यरत थे। हेडे का विवाह भारतीय मूल की शीला जी से हुआ था जो कि एक गढ़वाली महिला थीं एवम् तत्कालीन उत्तर प्रदेश के कोटद्वार की निवासी थीं।

डेसमंड हेडे, भारतीय सेना में अधिकारी थे। उन्होंने 1965 भारत-पाकिस्तान युद्ध के दौरान प्रसिद्ध 'डोगराई' की लड़ाई में जाट रेजीमेंट की तीसरी बटालियन के कमान अधिकारी के रूप में कार्यभार संभाला था।

1965 के भारत-पाक युद्ध के दौरान ऑपरेशन 'रिडल' के तहत, '3 जाट बटालियन' को प्रारम्भ में 'इचहोगिल नहर' को पार करने का आदेश दिया गया था। 'इचहोगिल नहर' पाकिस्तान के अंदर 8 किलोमीटर तक फैली हुई थी। इस नहर के पश्चिमी किनारे, अर्थात् लाहौर की तरफ, पाकिस्तानी सेना कंक्रीट के बने हुए बंकरों में पोजिशन लेकर तैनात थी एवम् वहाँ से भारतीय सेना पर गोलीबारी की जा सकती थी। ग्रैंड ट्रंक रोड के समीप 'इचहोगिल नहर' के पूर्वी किनारे पर स्थित 'डोगराई बस्ती' पर 3 जाट बटालियन ने दिनांक 06 सितम्बर 1965 की

सुबह 11 बजे तक कब्जा कर लिया था। '3 जाट रेजीमेंट' ने अपना विजयी अभियान जारी रखते हुए, दुश्मन के कड़े प्रतिरोध का बहादुरी से सामना करते हुए, दिनांक 06 सितम्बर 1965 को ही दोपहर 12 बजे तक 'इचहोगिल नहर' के पश्चिमी किनारे पर स्थित 'बटापोर' और 'अट्टोकेवान' इलाकों पर भी कब्जा करके भारतीय तिरंगा लहरा दिया था। यह विजय लेफ्टिनेंट कर्नल डेसमंड हेडे के कुशल नेतृत्व के कारण ही प्राप्त हुई थी। उनके कुशल नेतृत्व व युद्ध कौशल योजना के कारण ही '3 जाट रेजीमेंट' के वीर जवान अपने कब्जे वाले स्थानों से पीछे नहीं हटे, बल्कि पाकिस्तानी सेना की भारी गोलीबारी एवम् हवाई हमलों का सामना करते हुए लगातार आगे बढ़ते रहे। लेफ्टिनेंट कर्नल डेसमंड हेडे द्वारा दिखाए गए महान व्यक्तिगत साहस, असाधारण नेतृत्व गुणों एवम् युद्ध में उनके योगदान के लिए, उन्हें दिनांक 4 सितम्बर 1965 को **'महावीर चक्र'** से सम्मानित किया गया था। लेफ्टिनेंट कर्नल डेसमंड हेडे का विजय अभियान आगे भी जारी रहा। दिनांक 09 सितम्बर 1965 को जब पाकिस्तानी सेना ने पैटन और शेरमैन टैंकों से '3 जाट रेजीमेंट' के जवानों पर हमला किया, तो '3 जाट रेजीमेंट' के वीर जवानों ने दुश्मन के पाँच टैंकों को नष्ट कर दिया था। इस लड़ाई में '3 जाट रेजीमेंट' के वीर जवानों ने अपने कमान अधिकारी लेफ्टिनेंट कर्नल डेसमंड हेडे के कुशल नेतृत्व में असीम वीरता का परिचय दिया एवम् उत्कृष्ट प्रदर्शन के साथ विजय प्राप्त की।

इसके पश्चात् लेफ्टिनेंट कर्नल डेसमंड हेडे को '3 जाट रेजीमेंट' के साथ 'संतपुरा' गाँव में दो सप्ताह तक रक्षात्मक स्थिति में इंतजार करना पड़ा था। दो सप्ताह के इंतजार के बाद उन्हें लाहौर के निकट स्थित 'डोगराई कस्बे' पर कब्जा करने का आदेश प्राप्त हुआ। लेकिन इस समय तक पाकिस्तानी सेना भी हरकत में आ चुकी थी एवम् पाकिस्तानी सेना ने डोगराई किले की भारी किलेबंदी कर दी थी। किंतु भारतीय सेना की '3 जाट रेजीमेंट' के सभी वीर सैनिक अपने कमान अधिकारी लेफ्टिनेंट कर्नल डेसमंड हेडे के साथ जीत के लिए दृढ़ संकल्प थे। इसी दृढ़ संकल्प के साथ, दिनांक 21 सितम्बर 1965 की रात्रि, 'डोगराई कस्बे'

पर होनेवाले संभावित हमले के दौरान ‘3 जाट रेजीमेंट’ के वीर सैनिकों के समक्ष दो मांगें रखीं।

पहली - एक भी सैनिक पीछे नहीं हटेगा।

दूसरी – जिंदा या मुर्दा हमें ‘डोगराई’ में मिलना है।

इसके उत्तर में ‘3 जाट रेजीमेंट’ के वीर सैनिकों ने अपने कमान अधिकारी लेफ्टिनेंट कर्नल डेसमंड हेडे को विश्वास दिलाया कि ‘3 जाट रेजिमेंट’ के सभी वीर सैनिक अपनी अंतिम साँस तक, अपने लहु की अंतिम बूँद तक दुश्मन का सामना करेंगे। इसके बाद लेफ्टिनेंट कर्नल डेसमंड हेडे, ‘3 जाट रेजीमेंट’ के साथ खाइयों के बीच से 8 किलोमीटर का दुर्गम रास्ता तय करके ‘डोगराई’ पहुँचे, जहाँ पाकिस्तानी सेना ने कड़ी मोर्चाबंदी कर रखी थी। पाकिस्तानी सेना में दो पैदल सेना बटालियन और एक टैंक स्क्वाड्रन शामिल थे। लेफ्टिनेंट कर्नल डेसमंड हेडे ने अपने वीर सैनिकों का जोश बढ़ाने के लिए कहा कि “भले ही सब भाग जाएं, मैं अकेले ही युद्ध में डटा रहूँगा”। परिणामस्वरूप ‘3 जाट रेजीमेंट’ का एक-एक सैनिक जोश से भर गया। फिर ‘3 जाट रेजीमेंट’ के जवानों ने अपने सिर पर कफ़न बांधकर पाकिस्तानी सेना से आमने-सामने की लड़ाई की और अंतत: ‘डोगराई कस्बे’ पर 3 जाट रेजिमेंट ने कब्जा कर लिया। इस लड़ाई में ‘3 जाट रेजीमेंट’ के 86 वीर सैनिक शहीद हो गए एवम् पाकिस्तानी सेना के लगभग 300 सैनिक हताहत हुए। इस लड़ाई को ‘डोगराई की लड़ाई’ के नाम से जाना जाता है। लेफ्टिनेंट कर्नल डेसमंड हेडे के कुशल नेतृत्व में ‘3 जाट रेजीमेंट’ के 550 वीर सैनिकों ने पाकिस्तान की उस सेना को बुरी तरह पराजित किया जो उनसे संख्या में दुगनी थी।

1965 भारत-पाक युद्ध के पश्चात् में लेफ्टिनेंट कर्नल डेसमंड हेडे ने भारतीय सेना में अपनी सेवा जारी रखी। अपनी मेहनत व योग्यता के बल पर वह ब्रिगेडियर रैंक तक पहुँचे। दिनांक 25 सितम्बर 2013 को 86 वर्ष की आयु में कोटद्वार,

उत्तराखंड में, भारत माता के इस वीर सपूत ने अपनी अंतिम साँस ली और इस दुनिया को अलविदा कहा।

इतिहास ब्रिगेडियर डेसमंड हेडे को उनकी वीरता, कुशल नेतृत्व, युद्ध कौशल व 1965 भारत-पाक युद्ध के नायक के रूप में सदैव स्मरण करेगा। आपको कोटि-कोटि नमन है।

वीर चक्र विजेता लेफ्टिनेंट जनरल हरबख्श सिंह

1965 भारत-पाकिस्तान के नायक हरबख्श सिंह का जन्म दिनांक 01 अक्टूबर 1913 को 'जिंद रियासत' की राजधानी 'संगरूर' के समीप 'बदरूखान' गाँव में एक समृद्ध मदाहार जाट सिख परिवार में हुआ था। वह अपने परिवार में सात भाई-बहनों में सबसे छोटे थे। इसलिए सभी के लाड़ले भी थे। इनके पिता डॉ. हरनाम सिंह, उच्च शिक्षा प्राप्त व्यक्ति थे। वह उस समय अपने गाँव के पहले व्यक्ति थे, जिन्होंने उच्च शिक्षा प्राप्त करके डॉक्टर की उपाधि प्राप्त की थी। डॉ. हरनाम सिंह ने भी 'जिंद इन्फैंट्री' में सेवा की थी एवम् प्रथम विश्व युद्ध के दौरान पूर्वी अफ्रीकी अभियान में अपनी सेवा प्रदान की थी। 'जिंद इन्फैंट्री' को स्वतंत्रता के पश्चात् सन् 1952 में भारत में विलय करके 'पंजाब रेजीमेंट' बनाया गया था। हरबख्श सिंह ने संगरूर के हाई स्कूल में पढ़ाई की थी, तत्पश्चात 'गवर्नमेंट कॉलेज, लाहौर' में दाखिला लेकर आगे की पढ़ाई पूरी की। हरबख्श सिंह को खेलों में विशेष रुचि थी। वह कॉलेज की हॉकी टीम के सदस्य थे। मार्च 1933 में हरबख्श सिंह, आई एम ए, देहरादून में प्रशिक्षण के लिए चले गए थे। हरबख्श सिंह ने सैनिक प्रशिक्षण सफलतापूर्वक पूर्ण किया एवम् दिनांक 15 जुलाई 1935 को उन्हें कमीशन मिला। उन्होंने अपने कैरियर की शुरुआत रावलपिंडी में तैनात 'अर्गिल' और 'सदरलैंड हाइलैंडर्स' की दूसरी बटालियन के साथ एक वर्ष के पोस्ट-कमीशन अटैचमेंट के साथ की थी। उस समय नव-नियुक्त भारतीय अधिकारियों के लिये यह नियम था कि उन्हें किसी भी भारतीय इकाई में भेजे जाने के पूर्व, एक ब्रिटिश रेजिमेंट से अवश्य जोड़ा जाये।

हरबख्श सिंह का सैन्य जीवन संघर्षपूर्ण रहा। उन्होंने द्वितीय विश्व युद्ध में भी भाग लिया था। अप्रैल 1939 में उनकी बटालियन को विदेश जाने की तैयारी करने का आदेश प्राप्त हुआ। उनकी बटालियन एक विशेष सैनिक ट्रेन से मद्रास (चेन्नई) पहुँची। वहाँ से उनकी बटालियन एक यात्री जहाज पर सवार होकर, समुद्र के रास्ते ब्रिटिश मलाया पहुँची एवम् कुछ दिनों के पश्चात् वहाँ से सिंगापुर पहुँची। इसके पश्चात् वह अपनी बटालियन के साथ 'इपोक' शहर चले गये थे, जो कि 'कुआंटन' पहुँचने से पूर्व उनका अंतरिम स्टेशन था।

दिनांक 05 जनवरी 1942 को 'कुआंटन' से वापसी के दौरान, हरबख्श सिंह की बटालियन पर जापानी सैनिकों ने घात लगाकर हमला किया। इस हमले में हरबख्श सिंह बुरी तरह से घायल हो गये, जहाँ से उन्हें सिंगापुर के 'अलेक्जेंड्रा' अस्पताल में ले जाकर भर्ती कराया गया। सिंगापुर के पतन तक वह उसी अस्पताल में रहे।

दिनांक 15 फरवरी 1942 को, हरबख्श सिंह को सिंगापुर में युद्ध बंदी बना लिया गया था। वह प्रथम भारतीय राष्ट्रीय सेना के जनरल मोहन सिंह द्वारा 'फेरर पार्क' में दिये गये भाषण में उपस्थित युद्ध बंदियों में से एक थे। हरबख्श सिंह को यहाँ से 'क्लुआंग हवाई अड्डे' पर भेजा गया एवम् इंपीरियल जापानी वायु सेना को सौंप दिया गया। उनके भाई, लेफ्टिनेंट कर्नल गुरुबख्श सिंह और 'जिंद इन्फैंट्री' की उनकी बटालियन भी उसी शिविर में उनके साथ थे। हरबख्श सिंह ने युद्ध के शेष वर्ष 'क्लुआंग शिविर' में युद्ध बंदी के रूप में बिताए थे। यहाँ उन्हें टाइफाइड और बेरी-बेरी की गंभीर बीमारी हो गई थी। बेरी-बेरी की बीमारी जीवन भर उनके साथ रही। युद्ध विराम के पश्चात् सितंबर 1945 में उन्हें भारत वापस भेजा गया। भारत पहुँचकर उन्होंने अंबाला के सैन्य अस्पताल में स्वास्थ्य लाभ लिया। वर्ष 1945 के अंत में हरबख्श सिंह, देहरादून में 'यूनिट कमांडर कोर्स' में सम्मिलित हो गये एवम् अप्रैल 1945 में उन्हें कैंपबेलपुर (वर्तमान अटक) में 11वीं सिख रेजीमेंट (4/11 सिख) की चौथी बटालियन के द्वितीय कमांडर के रूप में

तैनात किया गया था। तत्पश्चात फरवरी 1947 में उन्हें क्वेटा के स्टाफ कॉलेज में प्रथम लंबे पाठ्यक्रम में सम्मिलित होने के लिए चुना गया।

स्वतंत्रता के पश्चात

स्टाफ कॉलेज से स्टाफ कोर्स सफलतापूर्वक पूर्ण करने के पश्चात, उन्हें पूर्वी कमान में 'जी एस ओ 1 संचालन और प्रशिक्षण' के पद पर तैनात लिया गया। अक्टूबर 1947 में जब प्रथम बटालियन सिख रेजिमेंट (1 सिख) के कमान अधिकारी लेफ्टिनेंट कर्नल दीवान रणजीत राय 1948 में कश्मीर अभियान के दौरान वीरगति को प्राप्त हो गए। इस कठिन परिस्थितियों में हरबख्श सिंह, बटालियन कि कमान संभालने के लिए स्वेच्छा से आगे आए। हालांकि उन्हें '161 वीं इनफेनर्टी ब्रिगैड' के उप कमांडर के रूप में तैनात किया गया था। उन्होंने दिनांक 07 नवंबर 1947 को 'शेलतांग पुल' पर हमलावरों के विरुद्ध मुख्य लड़ाई का नेतृत्व किया था। उनके कुशल नेतृत्व के कारण ही इस निर्णायक युद्ध में 'प्रथम बटालियन सिख रेजिमेंट' और 'चौथी बटालियन कुमाऊं रेजिमेंट' ने उल्लेखनीय विजय प्राप्त की एवम् यह विजय भारत के पक्ष में एक अति महत्वपूर्ण विजय साबित हुई। इस प्रकार उन्होंने एक छोटी बटालियन का नेतृत्व किया एवं अपने कुशल नेतृत्व और जोखिम भरे साहसिक अभियान में की लड़ाइयों के पश्चात, उनकी बटालियन ने पाकिस्तानियों को कश्मीर घाटी से खदेड़ दिया। वर्ष 1948 में उन्हें ब्रिगेडियर के पद पर पदोन्नत किया गया। पदोन्नत होते ही उन्होंने '163 इन्फैंट्री ब्रिगेड' की कमान संभाली और तुरंत अपनी सेना के साथ दिनांक 12 मई 1948 को 'तिथवाल' की तरफ बढ़ चले। जहां पाकिस्तानियों ने कब्जा कर रखा था। उन्होंने छह दिन के युद्ध के पश्चात पाकिस्तानियों को वहाँ से खदेड़ कर वहाँ पर कब्जा कर लिया। यह एक अति महत्वपूर्ण जीत थी। इसके लिए ब्रिगेडियर हरबख्श सिंह को उनकी वीरता व कुशल नेतृत्व के लिए वर्ष 1948 में **'वीर चक्र'** से सम्मानित किया गया।

वर्ष 1964 में उन्हें सेना कमांडर के पद पर पदोन्नत किया गया। पदोन्नत होते ही उन्होंने पश्चिमी कमान के जनरल ऑफिसर कमांडिंग इन चीफ (जी ओ सी इन सी) के रूप में कार्यभार संभाला। जिसके जिम्मेवारी का इलाका पंजाब से लेकर लद्दाख तक फैला हुआ था। वर्ष 1962 में भारतीय सेना धूर्त चीन की धोखेबाजी के कारण उससे हार गई थी। उन्होंने पराजित भारतीय सेना का मनोबल बढ़ाने में अति महत्वपूर्ण भूमिका निभाई और 1965 के भारत-पाकिस्तान युद्ध में पूरी सीमा पर पाकिस्तानी सेना के विरुद्ध पश्चिमी कमान का सफलतापूर्वक नेतृत्व किया। जिसके परिणामस्वरूप 1965 भारत पाकिस्तान युद्ध में भारतीय सेना ने पाकिस्तानी सेना को पराजित किया एवं एक ऐतिहासिक जीत प्राप्त की। लेफ्टिनेंट जनरल हरबख्श सिंह, वीर चक्र विजेता को वर्ष 1966 में उनकी विशिष्ट सेवा के लिए भारत के दूसरे सर्वोच्च नागरिक सम्मान **'पद्म विभूषण'** से भी सम्मानित किया गया। वर्ष 1964 से 1969 तक 'पश्चिमी कमान' के जनरल ऑफिसर कमांडिंग इन चीफ (जी ओ सी इन सी) के रूप में अपनी अमूल्य सेवा प्रदान करने के पश्चात सितम्बर 1969 में आप सेवानिवृत हो गए। दिनांक 14 नवंबर 1999 को भारत माता के इस वीर सपूत ने अपनी अंतिम साँस ली व इस दुनिया को अलविदा कहा। भारत देश उनके अमूल्य योगदान के लिए सदैव उनका ऋणी रहेगा। आपको कोटी-कोटी नमन है।

महावीर चक्र विजेता मेजर जनरल राजेन्द्र सिंह

दिनांक 03 अक्तूबर 1911 को पंजाब के गुरदासपुर नामक स्थान पर एक पंजाबी जाट शेरगिल परिवार में भारत माता के वीर सपूत राजेन्द्र सिंह का जन्म हुआ था। इसी बालक ने आगे चलकर वीरता की एक नई कहानी लिखी। राजेन्द्र सिंह ने अपनी पढ़ाई अमृतसर, पंजाब के खालसा कॉलेज से की थी फिर यहीं से उन्होंने 'आर्मी कडेट कॉलेज' में प्रवेश लिया था एवं जनवरी 1948 में राजेन्द्र सिंह एक 'यंग कैडेट' के रूप में '7 लाइट कैवेलरी' में शामिल हुए थे। उनके चेहरे व व्यक्तित्व में एक विशेष आकर्षण था। '7 लाइट कैवेलरी' के साथ राजेन्द्र सिंह

ने द्वितीय विश्व युद्ध में भाग लिया एवं युद्ध के अनुभव प्राप्त किए। इस अनुभवों ने राजेन्द्र सिंह को एक कुशल योद्धा बनने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई।

स्वतंत्रता के पश्चात राजेन्द्र सिंह ने सितंबर 1947 से मई 1949 तक '7 लाइट कैवेलरी' में अपनी अमूल्य सेवाएं प्रदान की। आपको दो बार **'महावीर चक्र'** प्रदान किया गया था। प्रथम, जब वर्ष 1947 भारत-पाकिस्तान युद्ध में आपके कुशल नेतृत्व में भारतीय सेना ने पाकिस्तान को हराकर 'झांगर' व 'जोजिला' पर विजय प्राप्त की। इसके लिए आपको 'महावीर चक्र' से सम्मानित किया गया था।

वर्ष 1965 में एक बार पुनः पाकिस्तान ने भारत के विरुद्ध युद्ध का शंखनाद किया। पाकिस्तान का यह गलत अनुमान था कि 1962 के युद्ध में चीन से पराजित होने के पश्चात भारतीय सेना कमजोर पद चुकी होगी और उसे पराजित करना आसान होगा।

1965 भारत-पाकिस्तान युद्ध में आपने प्रथम बख्तरबंद डिविजन (फर्स्ट आर्मड डिविजन) के 'जी ओ सी' (जनरल कमांडिंग ऑफिसर) के रूप में 'शकरगढ़' में महत्वपूर्ण फिलोरा की निर्णायक लड़ाई में भारतीय सेना का नेतृत्व किया था। आपके कुशल नेतृत्व में 1965 भारत-पाकिस्तान युद्ध में 'सियालकोट सेक्टर' में भारत की प्रथम बख्तरबंद डिविजन (फर्स्ट आर्मड डिविजन) की पाकिस्तानी छठी बख्तरबंद डिविजन (सिक्स्थ आर्मड डिविजन) से 'फिलोरा' निर्णायक लड़ाई में भारतीय सेना ने महत्वपूर्ण विजय प्राप्त हुई थी। इस लड़ाई में पाकिस्तानी सेना, भारतीय सेना की अग्रिम पंक्ति को रोकने में पूर्णतया विफल हुई थी। जिसके परिणामस्वरूप 'फिलोरा' की लड़ाई में भारतीय सेना को पाकिस्तानी सेना पर अति महत्वपूर्ण विजय प्राप्त हुई थी और पाकिस्तानी सेना को 'चविंडह' की तरफ पीछे हटना पड़ा था। इस लड़ाई में पाकिस्तान को पराजय के साथ-साथ बहुत हानि भी हुई थी। भारतीय सेना ने पाकिस्तान के 66 टैंकों को नष्ट भी कर दिया था। 1965 भारत-पाकिस्तान युद्ध में भारतीय सेना कि जीत में अग्रणी भूमिका निभाने व कुशल नेतृत्व के लिए आपको दूसरी बार **'महावीर चक्र'** से

सम्मानित किया गया था। भारतीय सेना में मेजर जनरल राजेन्द्र सिंह, स्पैरो के उपनाम से प्रसिद्ध हो चुके थे। अपनी अमूल्य सेवाएं प्रदान करने के पश्चात महावीर चक्र विजेता मेजर जनरल राजेन्द्र सिंह, दिनांक 26 सितंबर 1966 को भारतीय सेना से सेवानिवृत्त हुए। सेवानिवृत्त के पश्चात आपने राष्ट्रीय कांग्रेस पार्टी के उम्मीदवार के तौर पर विजय प्राप्त की और क्रमशः 1980 व 1984 में जालंधर (पंजाब) लोकसभा सीट से चुनाव जीत कर देश को अपनी अमूल्य सेवाएं प्रदान कीं। मई 1994 में भारत माता के इस वीर सपूत ने अपनी अंतिम साँस ली व इस दुनिया को अलविदा कहा। 'स्पैरो' उपनाम से विख्यात महावीर चक्र विजेता मेजर जनरल राजेन्द्र सिंह असाधारण सैन्य नेतृत्व के लिए सदैव स्मरण किए जाएंगे।

नाभिकीय कार्यक्रम (Nuclear Programme)

इस बीच वर्ष 1967 में भारत ने अपने नाभिकीय कार्यक्रम (Nuclear Programme) की शुरुआत की एवम् दिनांक 18 मई 1974 को पोखरण, राजस्थान में अपना पहला न्यूक्लियर परीक्षण सफलतापूर्वक किया एवम् विश्व के गिने चुने 'न्यूक्लियर शक्ति संपन्न' (Nuclear Power) देशों में शामिल हो गया।

जबकि पाकिस्तान, दिनांक 30 मई 1998 को 'न्यूक्लियर शक्ति संपन्न' (Nuclear Power) देश बना था। इसमें चीन देश ने पाकिस्तान की भरपूर सहायता की थी अर्थात् भारत व पाकिस्तान के 'न्यूक्लियर शक्ति संपन्न' (Nuclear Power) बनने के बीच में लगभग 24 वर्षों का लंबा अंतराल था। भारत, पाकिस्तान से 24 वर्ष पूर्व 'न्यूक्लियर शक्ति संपन्न' (Nuclear Power) देश बन चुका था। भारत सरकार द्वारा इन 24 वर्षों में पाकिस्तान के विरुद्ध 'पाकिस्तान अधिकृत कश्मीर' (पी ओ के – पाक आक्युपाइड कश्मीर) को वापस लेने के लिये कोई भी ठोस कार्यवाही नहीं की गयी। भारत सरकार ने कभी भी इस बात पर ग़ौर नहीं किया कि भारत-पाकिस्तान युद्ध व पाकिस्तान प्रायोजित आतंकवाद के कारण हजारों भारतीय सैनिकों व निर्दोष नागरिकों की अकारण अकाल मृत्यु हुई, हजारों परिवार उजड़ गए एवं उनके आश्रित परिवारजन जीवन भर इस सदमे से उभर नहीं पाये। इसलिए तत्कालीन सरकार का प्रथम कर्तव्य यह होना चाहिये था कि इन 24 वर्षों में (सन् 1974 से 1998 के बीच) पाकिस्तान के विरुद्ध उचित रणनीति बनाकर, कठोर राजनैतिक व सैनिक कार्यवाही करके 'पाकिस्तान अधिकृत कश्मीर' (पी ओ के – पाक आक्युपाइड कश्मीर) को वापस

लेती। इसके साथ ही पाकिस्तान को इतना कड़ा सबक सिखाती कि वह भविष्य में कभी भी भारत के विरुद्ध सिर उठाने का साहस न करता। यही उन समस्त शहीद सैनिकों व पाकिस्तान प्रायोजित आतंकवाद के कारण मारे गए हजारों निर्दोष नागरिकों व उनके पीड़ित परिवारजनों के प्रति सच्ची श्रद्धांजलि होती।

इन 24 वर्षों में भारत देश बेहतर स्थिति में था एवम् युद्ध की स्थिति में पाकिस्तान पर दबाव भी बनाया जा सकता था, चूंकि इस दौरान पाकिस्तान के पास परमाणु क्षमता न होने के कारण, परमाणु युद्ध होने की भी संभावना नहीं थी। किन्तु अफसोस, भारत सरकार ने इस सुअवसर का लाभ नहीं उठाया। हम इन 24 वर्षों में न सिर्फ हाथ पर हाथ धरकर बैठे रहे। बल्कि हमने पाकिस्तानी क्रिकेट टीम के साथ क्रिकेट का आनंद लिया और पाकिस्तानी कलाकारों को भारत में आकर उनका प्रदर्शन करने के लिए आमंत्रित भी किया।

परिणामस्वरूप दिनांक 31 दिसम्बर 1948 को भारत-पाकिस्तान युद्ध के साथ जिस 'ऑपरेशन सिंदूर' की नींव रखी गई थी वह 'ऑपरेशन सिंदूर' जारी रहा।

बांग्लादेश मुक्ति युद्ध

जैसा कि सर्वविदित है कि एक लम्बे संघर्ष के पश्चात् दिनांक 14 अगस्त 1947 को, धर्म को आधार बनाकर, भारतवर्ष के एक भाग को अलग करके पाकिस्तान देश का जन्म हुआ था एवम् दिनांक 15 अगस्त 1947 को भारत देश को स्वतंत्रता प्राप्त हुई थी। चूकि पाकिस्तान देश का जन्मदाता भारत देश ही है, इसलिए होना यह चाहिए था कि पाकिस्तान देश, भारत देश के साथ एक अच्छे पड़ोसी होने का धर्म निभाता एवम् भारत देश के साथ उन्नति की राह पर कदम से कदम मिलाकर चलता, तो निःसंदेह संपूर्ण विश्व के समक्ष दोनों देश एक बड़ी ताकत बनकर उभरते एवम् एक अच्छा उदाहरण पेश करते। परिणामस्वरूप भारत देश की भाँति, पाकिस्तान देश का भी बहुमुखी विकास होता। किन्तु दुर्भाग्यवश ऐसा हो न सका। इसके लिए ज़िम्मेदार पाकिस्तानी हुक्मरानों को इतिहास, पाकिस्तान देश की जनता व आने वाली पीढ़ियाँ कभी क्षमा नहीं करेंगी।

पूर्वी पाकिस्तान के हालात

दिनांक 14 अगस्त 1947 को पाकिस्तान के गठन के समय, पाकिस्तान देश मुख्य रूप से दो भागों में बँटा हुआ था – पूर्वी पाकिस्तान एवम् पश्चिमी पाकिस्तान। पश्चिमी पाकिस्तान में पंजाबी, सिंधी, पठान, बलोच एवम् मुहाजिरों की बड़ी संख्या थी, जबकि पूर्वी पाकिस्तान में बंगाली भाषा बोलने वालों का बहुमत था। पूर्वी और पश्चिमी पाकिस्तानी भागों में सामाजिक, आर्थिक एवम् शैक्षणिक असमानताएँ थीं। पाकिस्तान के स्वतंत्र होने के समय से ही पूर्वी व पश्चिमी पाकिस्तानी क्षेत्रों में सांस्कृतिक, भौगोलिक, राजनीतिक एवम् भाषाई असमानतायें मौजूद थीं। भौगोलिक रूप से भी पाकिस्तान खंडित था। पूर्वी व पश्चिमी पाकिस्तान को एकजुट करके, उन्हें एकता के एक सूत्र में पिरोने में

पाकिस्तान के हुक्मरान पूर्णतः असफल रहे थे। इसी कारण उनका पूर्वी व पश्चिमी पाकिस्तान पर एक साथ शासन करना कठिन हो गया था। इसके अतिरिक्त पश्चिमी पाकिस्तानी सरकार द्वारा पूर्वी पाकिस्तानी नागरिकों पर जबरन एक विशिष्ट पहचान थोपने के प्रयास से भी तनाव उत्पन्न हुआ था। पूर्वी पाकिस्तान में बंगाली प्रमुख भाषा होने के बावजूद भी, उर्दू को पाकिस्तान की आधिकारिक भाषा घोषित कर दिया गया था। इसके विरोध में पूर्वी पाकिस्तान में व्यापक विरोध प्रदर्शन हुए थे। अंततः बांग्लादेश के ऐतिहासिक भाषा आंदोलन (1947-1971) का जन्म हुआ। यह आंदोलन वर्ष 1952 में तब अपने चरम पर पहुँच गया था जब पुलिस ने कई छात्र प्रदर्शनकारियों को जान से मार डाला था। इस क्षेत्र में तनाव का एक मुख्य कारण पहनावे से संबंधित भी था। चूंकि बंगाली महिलाएं परंपरागत रूप से साड़ी पहनती थीं एवम् पाकिस्तानी अधिकारी साड़ी को हिंदू वस्त्र मानते थे और उन्होंने साड़ी के पहनावे को हतोत्साहित किया। इस कारण भी पूर्वी पाकिस्तान की आबादी अलग-थलग पड़ गई थी।

संसाधनों के आधार पर पूर्वी पाकिस्तान, पश्चिमी पाकिस्तान से अधिक समृद्ध था लेकिन राजनीतिक आधार पर पश्चिमी पाकिस्तान अधिक प्रखर एवम् प्रभावशाली था। हालाँकि, पूर्वी पाकिस्तान में कभी भी राजनैतिक चेतना की कमी नहीं पायी गई थी, किन्तु पूर्वी पाकिस्तान को सदैव राजनीतिक रूप से उपेक्षित रखा गया, परिणामस्वरूप पूर्वी पाकिस्तान कभी भी पाकिस्तान देश की सत्ता में उचित प्रतिनिधित्व व उचित स्थान न पा सका।

बांग्लादेश की लड़ाई के दौरान, पाकिस्तानी सेना के अत्याचारों के विरुद्ध पूर्वी पाकिस्तान में **'मुक्तिवाहिनी' सेना** का गठन हुआ। वर्ष 1969 में पाकिस्तान के तत्कालीन अदूरदर्शी सैनिक जनरल अयूब खान के विरुद्ध पूर्वी पाकिस्तान में असंतोष बढ़ गया था एवम् बांग्लादेश के संस्थापक नेता शेख मुजीब-उर-रहमान के द्वारा संचालित आंदोलन के दौरान वर्ष 1970 में यह अपने चरम पर था।

पाकिस्तानी सेना के इशारे पर रज़ाकारों, अल शम्स एवम् अल बद्र ने तत्कालीन पूर्वी पाकिस्तान में बंगाली भाषी अल्पसंख्यकों और बंगाली भाषी

मुस्लिमों पर घोर अत्याचार किये एवम् सरेआम जमकर मानवाधिकारों का उल्लंघन किया। इन अमानवीय घोर अत्याचारों के प्रमाण आज तक बांग्लादेश में सामूहिक कब्रों के रूप में मिलते रहे हैं।

वर्ष 1971 में तत्कालीन पूर्वी पाकिस्तान (वर्तमान बांग्लादेश) में इतनी बड़ी संख्या में बंगाली भाषी अल्पसंख्यकों और बंगाली भाषी मुस्लिमों का नरसंहार किया गया कि उनके शवों को दफ़नाने के लिए जगह कम पड़ गई। तब उन्हें सामूहिक कब्र बनवाकर दफ़ना दिया गया। वर्ष 1999 में ढाका में मस्जिद के पास एक विशाल कब्र का पता चला था। बंगालियों के विरुद्ध किये गये अत्याचार क प्रमाण ढाका में मौजूद अमेरिकी वाणिज्यिक दूतावास से भेजे गये टेलीग्राम से लगता है। इस टेलीग्राम के अनुसार बंगालियों के विरुद्ध युद्ध की पहली रात्रि में ही ढाका युनिवर्सिटी में छात्रों व आम नागरिकों को सरेआम मौत के घाट उतार दिया गया था। उन सभी इलाकों में भारी नरसंहार किया गया था, जहाँ से विरोध की आशंका थी। यहाँ तक कि लोगों को (फिर चाहे वो स्त्री, पुरुष, बच्चे, वृद्ध कोई भी हो) सरेआम घर से निकाल कर गोलियों से भून दिया गया था।

इन्हीं कारणों से पूर्वी पाकिस्तान के लोगों में ज़बरदस्त नाराजगी थी और इसी नाराजगी का राजनैतिक लाभ लेने के लिए, पूर्वी पाकिस्तान के नेता शेख मुजीब-उर-रहमान ने 'आवामी लीग पार्टी' का गठन किया एवम् पाकिस्तान देश के अंदर ही स्वायत्तता की माँग की शुरुआत की। शेख मुजीब-उर-रहमान की लोकप्रियता अपने चरम पर थी जिसके परिणामस्वरूप पाकिस्तान देश में हुए 1970 के आम चुनाव में, पूर्वी पाकिस्तान क्षेत्र में शेख मुजीब-उर-रहमान द्वारा संचालित 'आवामी लीग पार्टी' ने जबरदस्त विजय प्राप्त की। उनके दल ने संसद में बहुमत भी प्राप्त किया। शेख मुजीब-उर-रहमान व उनकी 'आवामी लीग' पार्टी की विजय, लोकप्रियता से पश्चिमी पाकिस्तान के हुक्मरान और उनके प्रतिद्वंद्वी बेहद चिंतित थे। वे किसी भी कीमत पर सत्ता छोड़ने को तैयार नहीं थे। **इसलिए पाकिस्तानी संसद में बहुमत सिद्ध करने के पश्चात् और संवैधानिक नियमानुसार, पाकिस्तान के प्रधानमंत्री पद के योग्य होने के बावजूद भी**

शेख मुजीब-उर-रहमान को प्रधानमंत्री बनाने के स्थान पर पाकिस्तानी जेल में डाल दिया गया। यह एक बहुत बड़ा गलत ऐतिहासिक कदम था एवम् यहीं से पाकिस्तान के विभाजन की नींव रखी गई थी।

दुर्भाग्यवश वर्ष 1971 में पाकिस्तान में जनरल याह्या खान, राष्ट्रपति के पद पर विराजमान थे। चूंकि वह एक सैनिक अधिकारी थे, उनमें राजनीतिक दूरदर्शिता की भी कमी थी और वह इस मामले की गंभीरता को समझने में पूर्णतया असमर्थ रहे। उन्होंने अपना कर्तव्य पूरा करने के नाम पर जनरल टिक्का खान यह को जिम्मेदारी सौंपी। जनरल टिक्का खान भी एक सैनिक अधिकारी थे; उनमें भी राजनैतिक दूरदर्शिता की कमी थी। लिहाज़ा उन्होंने भी मामले की गंभीरता को नहीं समझा एवम् इस गंभीर मामले को दबाव से, बल-पूर्वक हल करने का प्रयास किया। परिणामस्वरूप स्थिति पूरी तरह से बिगड़ गई व नियंत्रण के बाहर हो गई।

दिनांक 25 मार्च 1971 को पूर्वी पाकिस्तानी क्षेत्र में पाकिस्तानी आर्मी व पुलिस के द्वारा बहुत बड़ा नरसंहार किया गया। इसका परिणाम यह हुआ कि पाकिस्तानी सेना में पूर्वी पाकिस्तान क्षेत्र के जो निवासी काम कर रहे थे, उनमें जबरदस्त रोष व्याप्त हो गया एवम् वे सभी एकत्रित होकर पाकिस्तानी सेना के विरुद्ध खड़े हो गए। उन्होंने अपनी अलग 'मुक्ति वाहिनी' सेना का गठन कर लिया। इतना सब कुछ होने के बावजूद भी पाकिस्तानी हुक्मरानों की आँखें नहीं खुलीं। इसके विपरीत पाकिस्तानी आर्मी का, पूर्वी पाकिस्तानी निरपराध मासूम निवासियों पर अत्याचार जारी रहा। बांग्लादेश बनने से पूर्व, पूर्वी पाकिस्तान में, पाकिस्तानी सेना ने स्थानीय नेताओं और धार्मिक चरमपंथियों की मदद लेकर इंसानियत को तार-तार किया एवम् जमकर मानवाधिकारों का हनन किया। दिनांक 25 मार्च 1971 को ही पाकिस्तानी सेना ने पूर्वी पाकिस्तान में **'ऑपरेशन सर्च लाइट'** शुरू किया। 'ऑपरेशन सर्च लाइट' की शुरुआत से लेकर बांग्लादेश की आज़ादी की लड़ाई के दौरान, पूर्वी पाकिस्तान में जमकर हिंसा व नरसंहार हुआ। बांग्लादेश की सरकार के द्वारा दिये गये आँकड़ों के अनुसार इस दौरान लगभग 30 लाख बेकसूर, मासूम लोग मारे गए।

वर्ष 1971 में पूर्वी पाकिस्तान में लाखों महिलाओं के साथ बलात्कार, अत्याचार किया गया एवम् निरपराध, मासूम महिलाओं की हत्या भी की गई। एक अनुमान के मुताबिक लगभग चार लाख पूर्वी पाकिस्तान क्षेत्र की निवासी महिलाओं के साथ ज्यादतियाँ की गईं। जिनमें बलात् यौन संबंध बनाना, सैनिक कैंट में महिलाओं को सेक्स वर्कर के रूप में रखना एवम् सामूहिक बलात्कार जैसी शर्मनाक हरकतें शामिल थीं। बड़ी संख्या में बंगाली महिलाओं को ढाका के डिंगी मिलिट्री कैंट में बंदी बना लिया गया था, इन मासूम बंगाली महिलाओं के साथ पाकिस्तानी सेना के जवान ज्यादतियाँ करते थे। एक अनुमान के मुताबिक, पूर्वी पाकिस्तान में अत्याचारों से तंग आकर, लगभग 80 लाख लोग अनधिकृत रूप से भारत की सीमा में प्रवेश कर गए थे। इतनी बड़ी संख्या में इन लोगों के भारत में अनधिकृत प्रवेश करने के कारण भारत पर बड़ा आर्थिक दबाव पड़ने लगा था, जिस कारण भारत ने अंतर्राष्ट्रीय समुदाय से लगातार अपील की, कि पूर्वी पाकिस्तान की स्थिति को सुधारने की दिशा में उचित कदम उठाए जाएं। लेकिन किसी भी देश ने इस तरफ ध्यान नहीं दिया एवम् पूर्वी पाकिस्तान के विस्थापित नागरिक लगातार भारत आते जा रहे थे। तब अप्रैल 1971 में तत्कालीन प्रधानमंत्री श्रीमती इंदिरा गाँधी ने 'मुक्ति वाहिनी' सेना को अपना समर्थन प्रदान किया।

इधर भारत देश, पाकिस्तानी आकाओं की अल्पसंख्यक बंगालियों, बंगाली मुस्लिमों पर बर्बरता के खिलाफ खड़ी हुई 'मुक्ति वाहिनी' सेना को अपना समर्थन प्रदान कर रहा था। **उधर पाकिस्तानी सेना व सरकार ने एक भारी भूल कर दी। पाकिस्तान ने भारत के खिलाफ 'ऑपरेशन चंगेज़' शुरू किया, जिसमें भारत के उत्तर पश्चिम इलाकों में स्थित हवाई अड्डों को निशाना बनाकर, उन पर सिलसिलेवार हमले कर दिये।** पाकिस्तान की राजधानी इस्लामाबाद से यह दावा किया गया कि भारत के ऊपर ये हवाई हमले 'मुक्ति वाहिनी' सेना को भारत द्वारा अपना समर्थन प्रदान करने के जवाब में किये गये हैं। जब कि नई दिल्ली द्वारा यह दावा किया गया कि ये हमले पूर्व नियोजित थे एवम्

बिना किसी उकसावे के किये गये थे। यह हमले पाकिस्तान की जबरदस्त भूल थी क्योंकि इन हवाई हमलों को भारत ने अपने विरुद्ध युद्ध की कार्यवाही माना एवम् पाकिस्तान के विरुद्ध युद्ध की घोषणा कर दी।

भारतीय सशस्त्र बलों ने तीव्र प्रहार करते हुए थल, वायु एवम् समुद्र तीनों मोर्चों पर घातक आक्रमण किया। भारत की पश्चिमी सीमा पर पंजाब, राजस्थान एवम् जम्मू और कश्मीर सहित कई राज्यों में भीषण युद्ध हुआ। भारतीय वायु सेना ने लाहौर व कराची पर ताबड़-तोड़ कई हवाई हमले करके पाकिस्तानी हमलों का मुँहतोड़ जवाब दिया। भारतीय वायु सेना के समर्थन व तालमेल से, भारतीय थल सेना ने, बहुत ही कम समय में पूर्वी पाकिस्तान के प्रमुख शहरों पर कब्ज़ा कर लिया। इसके साथ ही अब हालात यह थे कि भारतीय वायु सेना ने पूर्वी पाकिस्तान पर 'पूर्ण वायु वर्चस्व' प्राप्त कर लिया था। पूर्वी पाकिस्तान में तैनात पाकिस्तानी सेना, 'मुक्ति वाहिनी' सेना के गुरिल्ला युद्ध एवम् भारतीय सेना के आक्रमण का सामना नहीं कर पाई। इन दो तरफा आक्रमण से पाकिस्तानी सेना कमज़ोर पड़ गई। उधर समुद्र में भारतीय नौ सेना ने पूर्वी और पश्चिमी पाकिस्तान को मिलने वाली सैन्य आपूर्ति को रोक दिया एवम् अरब सागर में तैनात पाकिस्तानी जहाज़ों पर हमले किये। परिणामस्वरूप पूर्वी पाकिस्तान में 'मुक्ति वाहिनी' सेना व भारतीय सेना से युद्ध कर रही पाकिस्तानी सेना को सैन्य आपूर्ति नहीं मिल पायी। जिसका लाभ उठाकर जमीनी स्तर पर त्वरित विजयों के साथ, भारतीय सेना ने पूर्वी पाकिस्तान में युद्ध कर रहे पाकिस्तानी सैनिकों को चारों तरफ से घेर लिया। अब पाकिस्तान ने अपनी सहायता के लिये अमेरिका सहित विश्व के कई देशों से मदद की गुहार लगाई।

युद्ध में पाकिस्तान की पराजय को देखते हुए अमेरिका ने पाकिस्तान समर्थक रुख अपनाया था। उस समय अमेरिकी राष्ट्रपति रिचर्ड निक्सन व विदेश मंत्री हेनरी किसिंगर थे। इन्होंने एक कूटनीतिक चाल चली। इन्होंने विश्व को दिखाने के लिए पाकिस्तान को दी जाने वाली सहायता का सार्वजनिक रूप से निलम्बन किया किन्तु संयुक्त राष्ट्र अमेरिका ने गुप्त रूप से पाकिस्तान को भरपूर सैन्य

सहायता प्रदान की। संयुक्त राष्ट्र अमेरिका ने अपना युद्धक विमानवाहक पोत 'यू एस एस' बंगाल की खाड़ी में भेज दिया। जिसका उद्देश्य भारत को रोकना व पाकिस्तान का समर्थन करना था।

1971 भारत-पाक युद्ध के दौरान चीन ने भी पाकिस्तान का खुलकर समर्थन किया था। चीन ने भारत की आलोचना करते हुए इसे 'बड़े पैमाने पर आक्रामक युद्ध' बताया और कहा था कि 'इस युद्ध ने दक्षिण एशियाई उपमहाद्वीप में शांति को गंभीर रूप से बाधित किया है'।

1971 भारत-पाक युद्ध के दौरान 'संयुक्त राष्ट्र संघ' भी इस युद्ध को रोकने हेतु कोई सकारात्मक कदम उठाने में असफल रहा।

युद्ध में पाकिस्तान की पराजय को देखते हुए संयुक्त राज्य अमेरिका; ब्रिटेन, चीन, फ्रांस इत्यादि देशों को लेकर पाकिस्तान की सहायता करने के लिये भारत के विरुद्ध चल पड़े।

जैसे ही इसकी सूचना सोवियत संघ रूस को मिली तो रूस ने बिना कुछ सोचे-समझे अपनी पूरी ताकत भारत की सहायता के लिये भेज दी एवम् खुली चेतावनी दी कि यदि किसी भी देश ने भारत पर कोई भी आक्रमण किया तो इसका गंभीर परिणाम भुगतने के लिये तैयार रहें। रूस की इस धमकी के परिणामस्वरूप आधे से अधिक देश तो उल्टे पैर वापिस चले गये। लेकिन अमेरिका एवम् ब्रिटेन निरंतर भारत की तरफ बढ़ रहे थे। तब रूस ने खतरा उठाते हुए, अमेरिका व ब्रिटेन को अपनी मारक क्षमता (रेंज) में लाने के लिये स्वयं उनकी तरफ बढ़ा एवम् जैसे ही समुद्र के रास्ते रूस का 'पावर लेस' (जो समुद्र व आसमान दोनों में लड़ने के लिए पर्याप्त था) निकला, इसके निकलते ही अमेरिका व ब्रिटेन दोनों के होश उड़ गए एवम् वे तुरंत ही वापिस चल दिये। यह भारत की तत्कालीन प्रधानमंत्री श्रीमती इंदिरा गांधी जी का सम्पूर्ण विश्व को संदेश था कि किसी भी स्थिति में भारत को कमज़ोर आँकने की भूल न करें।

अंततः दिनांक 16 दिसम्बर 1971 को पूर्वी पाकिस्तान में, पाकिस्तानी सेना ने भारतीय सेना के समक्ष घुटने टेक दिये और आत्मसमर्पण कर दिया। परिणामस्वरूप अगले ही दिन पाकिस्तानी राष्ट्रपति याह्या खान, भारत के साथ युद्ध विराम के लिये सहमत हो गये। **एक बार पुनः भारत सरकार ने वही गलती दोहराई कि जिस समय भारतीय सेना जीत रही थी तभी युद्ध रोकने का गलत निर्णय लिया परिणामस्वरूप '1947 भारत-पाकिस्तान' युद्ध के दौरान जिस 'ऑपरेशन सिंदूर' कि नींव रखी गई थी वह 'ऑपरेशन सिंदूर' जारी रहा।** दिनांक 03 दिसम्बर 1971 से दिनांक 16 दिसम्बर 1971 तक चला, यह संक्षिप्त लेकिन विनाशकारी युद्ध था। जिसके कारण लाखों लोगों की अकारण मृत्यु हुई। प्राप्त सूचनाओं के आधार पर पूर्वी पाकिस्तान (वर्तमान बांग्लादेश) के लगभग 30 लाख नागरिकों (स्त्री, पुरुष, बच्चे, वृद्ध) की मृत्यु हुई। भारतीय सेना के 3500 वीर सैनिक इस युद्ध में शहीद हुए एवम् पाकिस्तानी सेना के लगभग 5000 सैनिक शहादत को प्राप्त हुए। इस युद्ध में 93 हजार पाकिस्तानी सैनिकों ने भारतीय सेना के समक्ष आत्मसमर्पण किया था। इन युद्ध बंदियों को लगभग तीन वर्षों तक भारतीय जेलों में रखा गया था। दिनांक 16 दिसम्बर 1971 को पाकिस्तानी जनरल ए. ए. के. नियाजी ने भारतीय सेना के लेफ्टिनेंट जनरल जगजीत सिंह अरोड़ा के समक्ष आत्मसमर्पण के दस्तावेज़ों पर हस्ताक्षर किये। इसके साथ ही दिनांक 16 दिसम्बर 1971 को विश्व के मानचित्र पर बांग्लादेश नामक देश का उदय हुआ। भारत, पाकिस्तान पर अपनी इस ऐतिहासिक विजय को प्रत्येक वर्ष दिनांक '16 दिसम्बर' को 'विजय दिवस' के रूप में मनाता है। पाकिस्तान पर भारत की यह विजय कई मायनों में ऐतिहासिक थी। इस जीत के माध्यम से भारत ने समस्त विश्व के समक्ष अपनी सैन्य क्षमता, राजनीतिक एकजुटता व कूटनीतिक क्षमता का प्रदर्शन किया। अमेरिका सहित विश्व के समस्त देश भारत की इस सफलता से अचंभित थे। 'आवामी लीग' के नेता, बांग्लादेश के संस्थापक शेख मुजीब-उर-रहमान ने बांग्लादेश की बागडोर संभाली। वह बांग्लादेश के प्रथम राष्ट्रपति व प्रधानमंत्री बने। उन्हें बांग्लादेश का राष्ट्रपिता कहा गया एवम् 'बंगबंधु' की उपाधि से उन्हें सम्मानित किया गया।

13 दिन तक चले, इस युद्ध में मिली शर्मनाक पराजय व 93 हजार पाकिस्तानी सैनिकों को भारतीय सेना के समक्ष आत्मसमर्पण करने के कारण, पाकिस्तानी हुक्मरानों की अपने ही देश पाकिस्तान में व सम्पूर्ण विश्व में थू-थू हुई। जिसके कारण तत्कालीन पाकिस्तानी राष्ट्रपति याह्या खान को अपने पद से इस्तीफ़ा देना पड़ा था एवम् दिनांक 20 दिसम्बर 1971 को जुल्फ़िकार अली भुट्टो ने पाकिस्तानी सत्ता की बागडोर अपने हाथों में ले ली थी। बाद में भुट्टो ने 'फॉरेन अफेयर्स' पत्रिका को दिये गये एक साक्षात्कार में कहा था कि 1971 में भारत से मिली शर्मनाक पराजय के कारण 'पाकिस्तान देश खंडित हो गया था, पाकिस्तानी अर्थव्यवस्था तहस-नहस हो गई थी एवम् राष्ट्र का आत्मविश्वास पूरी तरह टूट गया था'। जबकि भारत इस क्षेत्र में एक प्रमुख शक्ति बन कर विश्व पटल पर उभरा था। पूर्वी पाकिस्तान में सफल सैन्य अभियान ने तत्कालीन भारतीय प्रधानमंत्री श्रीमती इंदिरा गांधी जी की लोकप्रियता को भारत देश व सम्पूर्ण विश्व में बढ़ा दिया था।

किन्तु यहाँ पर भारत ने एक बड़ी भारी राजनैतिक व कूटनीतिक भूल की। 93000 पाकिस्तानी युद्ध बंदी भारत के कब्ज़े में थे एवम् पाकिस्तान का लगभग 15000 वर्ग किलोमीटर का क्षेत्र भी भारत के कब्ज़े में था। भारतीय राजनीतिज्ञों व कूटनीतिकारों को इस अवसर का लाभ उठाकर. पाक अधिकृत कश्मीर (पी ओ के- पाक आक्यूपाइड कश्मीर) को वापिस लेने के लिए उचित कदम उठाना चाहिए था एवम् **'ऑपरेशन सिंदूर' कि भाँति बड़ी सैनिक कार्यवाही करके, घुटने पर आये हुए पराजित पाकिस्तान को अंदर तक घुसकर इतना बरबाद कर देना चाहिये था कि वह भविष्य में कभी भी भारत के खिलाफ सिर उठाने का साहस न कर पाता। जिसके परिणामस्वरूप दिनांक 22 अप्रैल 2025 के दिन कश्मीर घाटी के पहलगाम के समीप बैसरन घाटी (अनंतनाग जिला) में 26 हिन्दू पर्यटकों (25 भारतीय और एक नेपाली) को मारने का साहस न कर पाता और भारत कि 26 बेटियों का सुहाग नहीं उजड़ता।** किन्तु भारत ने ऐसा कुछ भी नहीं किया। भारत ने इन युद्ध बंदियों के

साथ जिनेवा कन्वेंशन के नियमों का पालन करते हुए मानवीय व्यवहार किया एवम् उनकी उचित देखभाल भी की।

शिमला समझौता

दिनांक 02 जुलाई 1972 को भारत व पाकिस्तान के मध्य 1971 युद्ध के पश्चात् भारत के हिमाचल प्रदेश की राजधानी शिमला में एक सन्धि पर हस्ताक्षर हुए। इस सन्धि को 'शिमला समझौते' के नाम से जाना जाता है। इस समझौते के लिए पाकिस्तान के तत्कालीन प्रधानमंत्री ज़ुल्फिकार अली भुट्टो अपनी पुत्री बेनज़ीर भुट्टो के साथ दिनांक 28 जून 1972 को शिमला आये थे। दिनांक 28 जून 1972 से 01 जुलाई 1972 तक दोनों पक्षों में कई दौर की वार्ता हुई किन्तु किसी भी समझौते पर नहीं पहुँचा जा सका। तभी अचानक दिनांक 02 जुलाई 1972 को लंच (दोपहर के खाने) से पहले अचानक दोनों पक्षों में समझौता हो गया। इस समझौते पर भारत की ओर से भारत की तत्कालीन प्रधानमंत्री श्रीमती इंदिरा गांधी जी ने व पाकिस्तान की ओर से पाकिस्तान के तत्कालीन प्रधानमंत्री ज़ुल्फिकार अली भुट्टो जी ने हस्ताक्षर किये। इस समझौते में पाकिस्तान ने अपना सब कुछ लेकर एक थोथा सा आश्वासन भारत को दिया। जबकि दुर्भाग्यवश भारत अपना पक्ष ठीक से प्रस्तुत न कर सका। **परिणामस्वरूप भारत ने 1971 भारत-पाक युद्ध में मिली ऐतिहासिक विजय से मिलने वाले लाभ व सुअवसर को पूर्णतः गँवा दिया। जिसका दुष्परिणाम हम आज तक भुगत रहे हैं।**

'शिमला समझौते' में पाकिस्तान ने भारत को यह आश्वासन दिया था कि भारत व पाकिस्तान के बीच कश्मीर विवाद सहित जितने भी विवाद हैं, उनका समाधान आपसी द्विपक्षीय बातचीत से ही किया जायेगा। इन विवादों को न तो अन्तर्राष्ट्रीय मंचों पर उछाला जायेगा और न ही किसी तीसरे पक्ष की भूमिका को स्वीकार किया जायेगा। लेकिन जैसा कि हम सभी जानते हैं कि पाकिस्तान ने सैकड़ों बार, इस आश्वासन का उल्लंघन किया है एवम् कश्मीर विवाद को पूरी निर्लज्जता के साथ अनेकों बार अन्तर्राष्ट्रीय मंचों पर उठाया है।

ज़ुल्फिकार अली भुट्टो से 'शिमला समझौते' के तहत बातचीत करते समय भारत के राजनीतिज्ञ व कूटनीतिकार यह भूल गये कि यह वही भुट्टो हैं, जिनका कभी भी भारत के प्रति सकारात्मक रवैया नहीं रहा है एवम् जिन्होंने घास की रोटी खाकर भी हज़ारों वर्षों तक भारत से युद्ध करने की कसमें खायी थीं।

'शिमला समझौते' का पाकिस्तान ने रत्ती भर भी पालन नहीं किया। उसने सदैव भारत के विरुद्ध आतंकवादी गतिविधियों को अपना समर्थन देना जारी रखा। वर्ष 1980 और 1990 के दशक में पाकिस्तान के समर्थन से कश्मीर घाटी में सशस्त्र विद्रोह हुए। वर्ष 1999 में कारगिल क्षेत्र में पाकिस्तानी सेना ने अनधिकृत प्रवेश किया। जिसके परिणामस्वरूप इस क्षेत्र में भीषण युद्ध हुआ। वर्ष 2001 में पाकिस्तान द्वारा समर्थित आतंकवादियों ने भारतीय संसद, नई दिल्ली पर हमला किया। वर्ष 2008 में मुंबई में हमला, 2016 में उरी हमला, 2018 सुंजवम हमला, 2019 में पुलवामा हमला हुआ।

युद्ध नायक

1971 भारत-पाक युद्ध में भारतीय सेना के नायक जनरल सैम मानेक शॉ, जनरल जगजीत सिंह अरोड़ा, जनरल जे एफ आर जैकब और जनरल सुजान सिंह उबन रहे। इन्होंने इस युद्ध में पाकिस्तान के विरुद्ध भारत को शानदार जीत दिलाई। इन सभी का नाम इतिहास में सदैव के लिए स्वर्ण अक्षरों से अंकित हो गया।

यहाँ पर मैं एक अति महत्वपूर्ण बिन्दु को रेखांकित करना चाहूँगा कि उपरोक्त चार भारतीय सेना के नायक जनरलों मे एक पारसी, दो सिख एवम् एक यहूदी धर्म के थे। धर्म निरपेक्षता, अनेकता में एकता के प्रति भारत देश के विश्वास का यह एक सर्वोत्तम प्रमाण था।

इन जनरलों में जनरल सुजान सिंह उबन की भूमिका बंगाली मुक्ति सिपाहियों के अनियतकालिक गुरिल्ला बल 'गणो वाहिनी' बनाने में थी। जिसने अपने प्राणों की परवाह न करते हुए दुस्साहस से पाकिस्तानी सेना की टुकड़ियों के हाथ बाँध

दिये थे जिस कारण पाकिस्तानी सेना सीमित इलाकों में सिमट कर रहने को विवश हो गई थी। इस प्रकार उन्होंने पाकिस्तानी सेना के मानसिक बल को ध्वस्त करने में अति महत्वपूर्ण भूमिका निभाई थी। ये चारों दिग्गज जनरल, विश्व सैन्य इतिहास में जीवन कथा-वृत्तांत हो गये हैं।

किन्तु 1971 भारत-पाकिस्तान युद्ध में हमारे कई वीर सैनिकों ने असीम वीरता का परिचय दिया, अपने प्राणों की आहुति भी दी। तब जाकर हमने विजय को प्राप्त किया। इनमें से कुछ सैनिकों के बलिदान की कहानी संक्षेप में बताना चाहूँगा।

परमवीर चक्र विजेता लांस नायक अल्बर्ट एक्का

दिनांक 27 दिसम्बर 1942 को झारखण्ड राज्य के 'गुमला, जिले के 'जारी' गाँव में एक आदिवासी जनजाति परिवार में एक भविष्य के युद्धनायक, परमवीर योद्धा अल्बर्ट एक्का का जन्म हुआ था। अल्बर्ट एक्का के पिता का नाम जूलियस एक्का व माता का नाम मरियम एक्का था। आदिवासियों में शिकार एक दैनिक दिनचर्या का भाग होता है एवम अल्बर्ट एक्का को बचपन से ही शिकार में विशेष रूचि थी इसलिए वह शिकार में बहुत प्रवीण भी थे अथवा यह भी कह सकते हैं कि वह एक कुशल शिकारी थे। इसी कारण उन्हें जमीन व जंगल के वातावरण व स्वभाव को परखने, समझने व उसके अनरूप रणनीति बनाने की विशेष समझ व कुशलता प्राप्त थी। उनके इन अनुभवों व गुणों ने उन्हें एक योग्य व कुशल सैनिक बनाने में विशेष भूमिका निभाई। अल्बर्ट एक्का ने जैसे ही बचपन से जवानी की दहलीज पर कदम रखा, उन्हें भारतीय सेना में भर्ती होने में रूचि विकसित हुई जिसके परिणामस्वरूप दिनांक 27 दिसंबर 1962 को मात्र 20 वर्ष की आयु में वह बिहार रेजिमेंट में भर्ती हो गये।

इधर भारतीय थल सेना भी कई बदलाव के दौर से गुजर रही थी। जिसके अन्तर्गत जनवरी 1968 में ब्रिगेड ऑफ द गार्ड्स की 14वीं बटालियन का गठन हुआ एवम सिपाही अल्बर्ट एक्का को उसमें स्थानांतरित कर दिया गया। उन्होंने

अपने पूर्वोत्तर के कार्यकालय के दौरान अनेक आतंकवादी विरोधी अभियानों में सफलतापूर्वक भाग लिया। वर्ष 1971 में एक बार पुनः अपने चिरपरिचित दुश्मन पाकिस्तान के विरूद्ध भारत में युद्ध की तैयारियाँ शुरू हो चुकी थी एवम सिपाही अल्बर्ट एक्का लांस नायक के पद पर पदोन्नत हो चुके थे।

गंगासागर का युद्ध

जैसे ही 1971 भारत-पाकिस्तान युद्ध शुरू हुआ 14 गार्ड्स बटालियन को चतुर्थ कोर (4 कोर) के अन्तर्गत कार्य करने का आदेश प्राप्त हुआ। भारतीय सेना की रणनीति के अनुसार 'ब्राह्मणबारिया' जिले में 'अखौरा' से 6 किमी (37 मील) दक्षिण में स्थित गंगासागर पर कब्जा करना 4 कोर के लिए अति महत्वपूर्ण था।

ब्राह्मणबारिया जिला, चटगांव डिवीजन में स्थित पूर्वी बांग्लादेश का एक जिला है। भौगोलिक दृष्टि से यह गंगा के मैदान का एक भाग है एवम कृषि भूमि है। यह उत्तर दिशा में किशोरगंज और हबीबगंज जिलों, पश्चिम में नरसिंगडी जिला और नारायणगंज, दक्षिण में कोमिला एवम पूर्व में भारतीय राज्य त्रिपुरा से घिरा हुआ है।

गंगासागर पर कब्जा करने का कार्य 14 गार्ड्स को सौंपा गया। 14 गार्ड्स के अधिकारियों ने तुरंत अपनी रणनीति बनाई एवम उस रणनीति के तहत गंगासागर के दक्षिण में स्थित अखौरा रेलवे स्टेशन से लगभग 4 कि.मी. (2.5 मील) दूर अपनी रक्षा पंक्ति स्थापित कर ली। अखौरा रेलवे स्टेशन के आसपास की जमीन ऊँची थी, इस ऊंची जमीन पर चारों ओर की निगरानी के मद्देनजर 14 गार्ड्स बटालियन ने अपनी मुख्य रक्षा पंक्ति को लगाया था। जिसके बाद उन्होंने टैंक रोधी (एंटी टैंक) और मानव रोधी (एंटी पर्सनल) खदानें बिछाई थी। 14 गार्ड्स के सैनिकों ने गश्त के दौरान, पाकिस्तानी सैनिकों को रेलवे ट्रैक पर चलते हुए देखा। जिसके परिणामस्वरूप, शीघ्र कार्यवाही करते हुए 14 गार्ड्स की दो कंपनियों ने रेलवे ट्रैक के किनारे बने हुए पाकिस्तानी सैनिकों की चौकियों पर हमला कर दिया। इस दौरान लांस नायक अल्बर्ट एक्का 14 गार्ड्स की बाई तरफ

की अग्रिम टुकड़ी में थे। आगे बढ़ने पर भारतीय सैनिकों ने पाया कि पाकिस्तानी सैनिकों ने वहाँ स्थित दो कंपनियों ने किले के समान काफी मजबूत चौकियां व बंकर बना रखे थे। पाकिस्तानी सैनिकों ने अपनी तरफ आते हुए भारतीय सैनिकों पर छोटे व बड़े हथियारों से भारी गोलाबारी शुरू कर दी। लांस नायक अल्बर्ट एक्का ने देखा कि पाकिस्तानी सैनिकों की एक लाइट मशीन गन (एल एम जी) उनकी टुकड़ी को भारी नुकसान पहुँचा रही है जिस कारण उनकी टुकड़ी आगे बढ़ नहीं पा रही है। वह अपनी जान की परवाह न करते हुए सावधानीपूर्वक रेंगकर उस बंकर की तरफ बढ़े जहाँ से लाइट मशीन गन (एल एम जी) का फायर आ रहा था, देखते ही देखते लांस नायक अल्बर्ट एक्का, पाकिस्तानी बंकर के एकदम नजदीक पहुँच गये एवम एकदम नजदीक से पाकिस्तानी बंकर पर फायर खोल दिया। उन्होंने दो पाकिस्तानी सैनिकों को तो संगीन के प्रहार से ही मार गिराया। इस प्रकार लांस नायक अल्बर्ट एक्का ने उस लाइट मशीन गन (एल एम जी) पोस्ट को समाप्त कर दिया। लेकिन इस मुठभेड़ में अल्बर्ट एक्का स्वयं भी गंभीर रूप से घायल हो चुके थे। गंभीर रूप से घायल होने के बावजूद भी अल्बर्ट एक्का वहाँ रूके नहीं बल्कि अब वह और भी अधिक आक्रामक हो गये थे। उन्होंने अपने साथियों के साथ लगभग एक मील तक फैले हुए क्षेत्र में असीम साहस व वीरता के साथ कई पाकिस्तानी बंकरों को नष्ट करते हुए आगे की लड़ाई जारी रखी। इस प्रकार अब भारतीय सेना अपने लक्ष्य के उत्तरी छोर पर पहुँच चुकी थी। लेकिन यहाँ पर पाकिस्तानी सैनिकों ने एक मजबूत किलेनुमा इमारत में अपनी पोस्ट व इसके आस-पास बंकर बना रखे थे। इस किलेनुमा इमारत की दूसरी मंजिल से पाकिस्तानी सैनिकों की मीडियम मशीन गन (एम एम जी) पोस्ट से भारतीय सैनिकों पर ताबाड़तोड़ फायरिंग की जा रही थी जिससे काफी संख्या में भारतीय सैनिक हताहत हुए, भारी हानि हुई एवम भारतीय सैनिकों का विजय अभियान रूक गया। एक बार पुनः लांस नायक अल्बर्ट ने गंभीर रूप से घायल होने के बावजूद दुश्मन के बंकर को नष्ट करने का दृढ़ निश्चय लिया। यह वीर सिपाही अपने प्राणों की परवाह न करते हुए पाकिस्तानी सैनिकों की भारी गोलीबारी के बीच, रेंगते हुए उस इमारत तक पहुँच गया। जहाँ से पाकिस्तानी सैनिकों की

फायरिंग आ रही थी। वहाँ पहुँचकर उन्हंने उस बंकर में ग्रेनेड फेंका जहाँ से फायरिंग आ रही थी। उनके फेंके गये ग्रेनेड के हमले से एक पाकिस्तानी सैनिक मारा गया व दूसरा घायल हो गया किन्तु मीडियम मशीन गन (एम एम जी) से फायरिंग अभी भी हो रही थी। इसके बाद लांस नायक अल्बर्ट एक्का ने वह किया, जिसका दुश्मन को सपने में भी अनुमान नहीं था अथवा यह कहें कि इस कदम का अर्थ था कि सीधे मौत को गले लगाना और मौत के मुँह में कूदना। असाधारण साहस व वीरता का परिचय देते हुए लांस नायक अल्बर्ट एक्का ने दीवार फांदकर बंकर में प्रवेश किया और गोलाबारी कर रहे पाकिस्तानी सैनिक को संगीन के प्रहार से ही मार गिराया। जिसके परिणामस्वरूप मीडियम मशीन गन (एम एम जी) शांत हो गई, भारतीय सैनिकों को हताहत होने से बचाया गया एवम 14 गार्ड्स बटालियन का यह हमला सफल सिद्ध हुआ। लेकिन इस हमले में भारत माँ का यह वीर सपूत, लांस नायक अल्बर्ट एक्का बेहद गंभीर रूप से घायल हो चुके थे। अपने लक्ष्य की प्राप्ती के पश्चात मात्र 28 वर्ष की आयु में वह शहीद हो गये। उनकी असाधारण वीरता व शौर्य के लिए उन्हें मरणोपरान्त भारतीय सेना के सर्वोच्च सैनिक सम्मान ‘परमवीर चक्र’ से सम्मानित किया गया। भारत के इस ‘परमवीर चक्र’ विजेता को कोटि-कोटि नमन।

परमवीर चक्र विजेता प्लाइंग ऑफिसर निर्मल जीत सिंह सेखों

दिनांक 17 जुलाई 1945 को ब्रिटिश भारत के अंतर्गत पंजाब प्रांत के लुधियाना जिला के ‘इसवाल’ नामक गाँव में भारत के महानायक, परमवीर, साहसी योद्धा निर्मल जीत सिंह सेखों का जन्म एक सिख परिवार में हुआ था। पंजाब प्रांत तो सदैव से ही वीरों की जननी, जन्म-भूमि रहा है एवम् इसी कड़ी मे एक नया स्वर्णिम अध्याय निर्मल जीत सिंह सेखों ने जोड़ा। उनकी माता का नाम श्रीमती हरबंस कौर सेखों था एवम उनके पिता का नाम तरलोचन सिंह सेखों था। उनके पिता, भारतीय वायुसेना में मास्टर वारंट अफसर व ऑनररी फ्लाइट लेफ्टिनेंट रहे थे। इसलिए घर में अनुशासन का ही वातावरण था। अपनी पढ़ाई

पूरी करने के उपरांत दिनांक 04 जून 1967 को निर्मल जीत सिंह सेखों ने भारतीय वायु सेना में फाइटर पायलट के रूप में कमीशन प्राप्त किया।

1971 भारत-पाकिस्तान युद्ध के दौरान फ्लाइंग ऑफिसर निर्मल जीत सिंह सेखों भारतीय वायु सेना के 18 स्क्वाड्रन की 'फ्लाइंग बुलेट्स' में श्रीनगर में तैनात थे एवम 'फॉलैंड ग्नेट' लड़ाकू विमान उड़ाते थे। 'फॉलैंड ग्नेट' एक ब्रिटिश कॉम्पैक्ट स्वेप्ट-विंग सबसोनिक लड़ाकू विमान था। जिसे फोलैंड एयरक्राफ्ट ने निर्मित व आवश्यकतानुसार समय-समय पर बदलाव करके विकसित भी किया था। आम लड़ाकू विमानों के बड़े आकार व बढ़ती लागत के विपरीत यह एक छोटे आकार का किफायती विमान था। इस विमान के इन्हीं गुणों के कारण इसे प्रशिक्षण व युद्ध दोनों के लिये बखूबी उपयोग किया गया।

जबकि 'एफ-86' जेट, जिसे सेबरजेट के नाम से भी जाना जाता था। यह नार्थ अमेरिकन एविएशन कंपनी द्वारा निर्मित एक विशुद्ध लड़ाकू विमान था। जो कि उच्च गति वाले हवाई युद्धों में लड़ने में सक्षम था। इस विमान ने कोरियाई युद्ध (1950–1953) के दौरान सोवियत संघ के 'स्वेप्ट-विंग मिग-15' के विरूद्ध उच्च गति वाले, जेट-टू-जेट युद्ध में सफल प्रदर्शन करके, स्वयं को एक उत्तम युद्धक विमान सिद्ध किया था। इसलिए उस समय 'एफ-86' जेट विमान एक सर्वश्रेष्ठ लडाकू विमान के रूप में जाना जाता था।

दिनांक 14 दिसंबर 1971 को, ऑपरेशन चंगेज खान के तहत, पाकिस्तानी वायु सेना के पेशावर बेस से 26 स्क्वाड्रन के छह 'एफ-86' जेट विमानों ने श्रीनगर पर हमला करने का दुःसाहस किया।

उस दिन फ्लाइंग लेफ्टिनेंट निर्मल जीत सिंह सेखों तैयार रहने की ड्यूटी (रेडीनेस ड्यूटी) पर थे। तभी उन्होंने देखा कि भारतीय वायु क्षेत्र में, हवाई अड्डे के ऊपर छह पाकिस्तानी युद्धक विमान मंडरा रहे हैं एवम् उन विमानों तुरंत ही हवाई अड्डे पर ने बमबारी शुरू कर दी। यह देखकर फ्लाइंग लेफ्टिनेंट निर्मल जीत सिंह सेखों बिजली की फुर्ती से उड़ान भरने के लिए अपने विमान की तरफ

दौड़े और हमले के दौरान उड़ान भरने में जानलेवा खतरा होने के बावजूद भी उन्होंने उड़ान भरी। फ्लाइंग ऑफिसर निर्मल जीत सिंह सेखों ने दो ग्नेट विमानों के फार्मेशन में नंबर दो के रूप में उड़ान भरी थी। इस उड़ान में फ्लाइंग लेफ्टिनेंट घुम्मन नेतृत्व कर रहे थे। दुर्भाग्यवश लेफ्टिनेट घुम्मन का टेक ऑफ के तुरंत बाद, अपने साथी निर्मल जीत सेखों से संपर्क टूट गया। अब अकेले फ्लाइंग ऑफिसर निर्मल जीत सिंह सेखों, पाकिस्तान के 6 विमानों का मुकाबला कर रहे थे अर्थात मुकाबला 1-6 का था। बिना इसकी परवाह किये कि मुकाबला 1-6 का है। उन्होंने फिर से फार्मेशन बना रहे पाकिस्तानी 'एफ 86' जेट विमान के जोड़े को तुरंत निशाना बनाया और एक विमान को मार गिराया इसके तुरंत बाद उन्होंने दूसरे पाकिस्तानी युद्धक विमान को भी निशाना बनाया, जिससे उसमें आग लग गई और वह धुआँ छोड़ते हुए राजौरी की दिशा मे जाता हुआ दिखाई दिया। इस बीच पाकिस्तानी चार युद्धक विमान अपने साथियों की सहायता के लिए आ गये। फ्लाइंग लेफ्टिनेंट निर्मल जीत सिंह सेखों एक बार फिर उन चारों से भिड़ गये। इस बार मुकाबला 1-4 का था। अकेले होते हुए भी फ्लाइंग लेफ्टिनेंट निर्मल जीत सिंह सेखों ने दुश्मन का डटकर मुकाबला किया व दुश्मन के होश उड़ा दिये। पेड़ों की ऊँचाई पर हुए, इस युद्ध में लगभग उन्होंने अपनी रक्षा कर ही ली थी। लेकिन दुर्भाग्यवश उनका विमान, एक पाकिस्तानी विमान की गोलीबारी की चपेट में आ गया, और वह अंत तक बहादूरी से लड़ते हुए मात्र 26 वर्ष की आयु में वीरगति को प्राप्त हुए।

इस 26 वर्षीय नवयुवक ऑफर निर्मल जीत सिंह ने निश्चित मृत्यु के समक्ष उत्कृष्ट वीरता, सर्वोच्च शौर्य, असीम दृढ़ संकल्प का प्रदर्शन करके भारतीय वीरों की शृंखला में वीरता की नई ऊँचाईयों को स्थापित किया। उन्हें मरणोपरांत भारतीय सेना के सर्वोच्च सैन्य सम्मान 'परमवीर चक्र' से सम्मानित किया गया। वह 'परमवीर चक्र' से सम्मानित होने वाले 'भारतीय वायु सेना' के इकलौते सैनिक हैं। आपको व आपकी जन्मभूमि को कोटि-कोटि नमन है।

परमवीर चक्र विजेता सेकंड लेफ्टिनेंट अरूण खेतरपाल

दिनांक 14 अक्टूबर 1950 को पुणे, महाराष्ट्र की भूमि पर भारतीय सेना के एक महानायक, परमवीर योद्धा अरूण खेतरपाल का जन्म एक पंजाबी हिंदू खत्री परिवार में हुआ था। अरूण खेतरपाल का परिवार पश्चिमी पंजाब के सरगोधा (वर्तमान पाकिस्तान) से था एवम् भारत-पाकिस्तान विभाजन के पश्चात शरणार्थी के रूप में भारत आ गया था। साहस, वीरता व देशभक्ति अरूण खेतरपाल की रग-रग में थी। क्योंकि उनके परिवार का सैन्य सेवा वीरता व निष्ठा का लंबा इतिहास रहा था। उनके परदादा ने 'सिख खालसा सेना' में सेवा की थी। ('सिख खालसा सेना' जिसे खालसाजी अथवा सिख सेना के नाम से भी जाना जाता था। यह सेना सिख साम्राज्य की सैन्य शक्ति का गौरव रही थी। इसकी बुनियाद श्री गुरु गोविंद सिंह जी द्वारा स्थापित 'खालसा' में रखी गई थी। बाद में इस सेना का महाराजा रणजीत सिंह द्वारा फ्रांसीसी-ब्रिटिश सिद्धांतों पर आधुनिकीकरण किया गया था। जिसके परिणामस्वरूप यह सेना एशिया की प्रमुख लडाकू व शक्तिशाली सेना बन गई थी।)

अरूण खेतरपाल के दादा ने प्रथम विश्व युद्ध (28 जुलाई 1914–11 नवम्बर 1918) में लड़ाई लड़ी थी एवम् उनके पिता लेफ्टिनेंट कर्नल एम एल खेतरपाल भारतीय सेना की इंजीनियर कोर में अपनी अमूल्य सेवायें प्रदान कर रहे थे जो कि आगे चलकर ब्रिगेडियर भी बने थे।

अपने स्कूली दिनों में अरूण खेतरपाल एक प्रतिभाशाली, होनहार छात्र होने के साथ-साथ उन्हें खेल-कूद में भी विशेष रूचि थी, वह एक अच्छे खिलाड़ी भी थे। दिल्ली के सेंट कोलबंस स्कूल और सनावर, कसौली, शिमला (हिमाचल प्रदेश) के लॉरेंस स्कूल से अपनी पढ़ाई पूरी करने के पश्चात् अपने परिवार की परंपरा को आगे बढ़ाते हुए जून 1967 में अरूण खेतरपाल राष्ट्रीय रक्षा अकादमी पुणे (महाराष्ट्र) में शामिल हुए। यहाँ से अपना प्रशिक्षण सफलतापूर्वक पूरा करने के पश्चात वह आगे के प्रशिक्षण के लिए भारतीय सैन्य अकादमी, देहरादून (उत्तराखंड) गये। भारतीय सैन्य अकादमी में उनके उत्कृष्ट प्रदर्शन के फलस्वरूप,

उन्हें राष्ट्रपति के ध्वज को धारण करने का विशेषाधिकार व गौरव प्रदान किया गया। इस प्रकार अपना सैनिक प्रशिक्षण सफलतापूर्वक पूर्ण करने के पश्चात अरूण खेतरपाल को '17 पूना हॉर्स तोपखाना रेजीमेंट' में कमीशन दिया गया।

'17 पूना हार्स तोपखाना रेजीमेंट' का गौरवशाली इतिहास रहा है। इस रेजीमेंट ने 1965 के भारत-पाकिस्तान युद्ध में भी अपने चिर-परिचित शत्रु पाकिस्तान को धूल चटाई थी।

1971 भारत-पाकिस्तान युद्ध के दौरान '17 पूना हॉर्स तोपखाना रेजीमेंट' को, भारतीय सेना की '47वीं इन्फैट्री ब्रिगेड' के अंतर्गत कार्य करने का आदेश प्राप्त हुआ।

'47वीं इन्फैंट्री ब्रिगेड' को सौंपे गये कार्यों में से एक महत्वपूर्ण कार्य 'बसंतर' नदी के पार एक पुल स्थापित करना था। 'बसंतर' नदी जम्मू-कश्मीर के 'सांबा' में बहती है एवम यह पंजाब राज्य में बहने वाली रावी नदी के एक सहायक नदी भी है। दिनांक 04-16 दिसंबर 1971 को भारत व पाकिस्तानी सेना के बीच 'बसंतर' की भीषण लड़ाई के नाम से भी जानी जाती है। यह लड़ाई 'शकरगढ़ सेक्टर' में हुई थी, 'शकरगढ़ सेक्टर' में जरपाल व आसपास के क्षेत्र भी शामिल हैं। यह इलाका कश्मीर से भारत की मुख्य सड़क संपर्क से लगभग 5 से 15 मील की दूरी पर स्थित है। 'शकरगढ़' में कोई बड़ा जल अवरोध अथवा दलदली क्षेत्र नहीं है। यह लगभग समतल स्थान है। रक्षा विश्लेषकों के अनुसार 'शकरगढ' की रक्षा करना आसान नहीं था, उनके अनुसार 'शकरगढ़' की रक्षा करने का अर्थ एक कोरी कल्पना था दिन में सपना देखना जैसा था।

दिनांक 15 दिसंबर रात्री व 9 बजे तक '47वीं ब्रिगेड' ने अपना लक्ष्य प्राप्त कर लिया था। उस क्षेत्र में बड़ी संख्या में बारूदी सुरंगे बिछी हुई थीं जो कि '17 पूना हार्स तोपखाना रेजीमेंट' के टैंकों की शीघ्र तैनाती में बड़ी बाधा थीं इसलिए बारूदी सुरंगों को साफ करने वाला इंजीनियर दल युद्धस्तर पर काम कर रहा था। अभी यह इंजीनियर दल आधा काम ही कर पाया था कि पुल के शीर्ष पर तैनात

भारतीय सैनिकों ने बड़ी भारी संख्या में पाकिस्तानी बख्तरबंद वाहनों की गतिविधि देखी। उन्होने इस सूचना तुरंत वरिष्ठ अधिकारियों को दी एवम् तुरंत आवश्यक सेना भेजने का अनुरोध किया। इस स्थिति में '17 पूना हॉर्स तोपखाना रेजीमेंट', बारूदी सुरंगों से भरे हुए क्षेत्र में, जोखिम उठाते हुए आगे बढी एवम् अगले दिन सूर्य की पहली किरण के साथ ही पुल के शीर्ष पर तैनात भारतीय सेना की इन्फैट्री सेना तक सफलतापूर्वक पहुँच गई एवम मोर्चा संभाल लिया।

अब स्थिति यह ती कि अत्याधुनिक अमेरिकी निर्मित पैटन टैंकों से लैस पाकिस्तानी सेना की '13वीं लासर्स रेजीमेंट' और '17 पूना हार्स तोपखाना रेजीमेंट' आमने सामने थी। दिनांक 16 दिसंबर को प्रातः 8:00 बजे पाकिस्तान की तरफ से युद्ध की शुरुआत की गई एवम् 'झारपाल' स्थित '17 पूना हार्स तोपखाना रेजीमेंट' के 'बी' स्कावड्रन पर धुएं की आड़ में पहला हमला किया। उसी दिन 'बी' स्कावड्रन के कमाण्डर में उच्च अधिकारियों को स्थिति से अवगत कराया एवम अतिरिक्त सहायता की मांग की। क्योंकि पाकिस्तान की बख्तरबंद सेना, भारतीय बख्तरबंद सेना की तुलना में संख्या में काफी अधिक थी। यह सूचना मिलते ही 'ए' स्क्वाड्रन में तैनात सेकंड लेफ्टिनेंट अरूण खेतरपाल स्वेच्छा से 'बी' स्क्वाड्रन की सहायता के लिए बिजली की फुर्ती से सेंटूरियन ट्रैंक के साथ रवाना हो गये। पाकिस्तानी सैनिकों ने बसंतर नदी के इलाके में मजबूत पोस्टें बना रखी थी जिससे यदि कोई भी सहायता 'बी' स्क्वाड्रन के लिये जाये तो उस पर हमला करके उसे रोका जाये एवम् ठीक यही हुआ। जैसे ही सेकंड लेफ्टिनेंट अरूण खेतरपाल ने 'ए' स्क्वाड्रन के साथ बसंतर नदी पार करने की तरफ बढे, उन पर पाकिस्तानी आर सी एल गन पोस्टों से भारी गोलाबारी की गई। उधर 'बी' स्क्वाड्रन की स्थिति बहुत गंभीर होती जा रही थी, उन्हें सहायता की सख्त आवश्यकता थी। इसलिए सेंकड लेफ्टिनेंट अरूण खेतरपाल के पास समय बहुत कम था। अतएव उन्होंने अपनी सुरक्षा की परवाह किये बिना, आगे बढ़कर अपने टैंक से पाकिस्तान के मजबूत ठिकानों पर हमला बोलकर पाकिस्तान की मजबूत रक्षा पंक्ति को ध्वस्त कर दिया एवम कई पाकिस्तानी पैदल सैनिकों व हथियारबंद

दलों को बंदूक की नोक पर बंदी बना लिया। इस हमले में सेकंड लेफ्टिनेंट अरूण खेतरपाल के दस्ते के एक कमांडर भी वीरगति को प्राप्त हो गये। सेकंड लेफ्टिनेंट अरूण खेतरपाल ने तब तक अपना आक्रामक आक्रमण जारी रखा, जब तक वहाँ घात लगाये पाकिस्तानी सैनिकों का प्रतिरोध व आक्रमण पूर्णतः समाप्त नहीं हो गया और अब वह तेजी से 'बी' स्क्वाड्रन की तरफ उसकी सहायता के लिए बढे। सेकंड लेफ्टिनेंट अरूण खेतरपाल का आक्रमण इतना खतरनाक था कि अजेय माने जाने वाले पाकिस्तानी पैटन टैंकों को पीछे हटना पड़ा। सेकंड लेफ्टिनेंट अरूण खेतरपाल ने उन पीछे हटते हुए टैंकों का पीछा किया एवम् उनमें से एक पाकिस्तानी टैंक को मार गिराने में सफल रहे। पाकिस्तानी खेमे में बौखलाहट व हताशा का माहौल था। उन्होंने अगले हमले के लिए रणनीति बनाई। इस बार उन्होंने सेकंड लेफ्टिनेंट अरूण खेतरपाल व दो अन्य भारतीय टैंकों द्वारा नियंत्रित क्षेत्र को अपना निशाना बनाया। इसके बाद एक अविश्वनीय टैंक लड़ाई हुई। जिसमें 21 वर्षीय सेकंड लेफ्टिनेंट अरूण खेतरपाल ने अपने बचे हुए दो टैंकों के साथ बहादुरी से लड़ते हुए 10 पाकिस्तानी पैटन टैंकों को नष्ट कर दिया। इस लड़ाई में सेकंड लेफ्टिनेंट अरुण खेतरपाल को भी भारी नुकसान हुआ। वह भी दुश्मन के हमले की चपेट में आ गये। उनके टैंक में आग लग चुकी थी। उनके एक वरिष्ठ अधिकारी ने उन्हें उनके जलते हुए टैंक को छोड़ने का आदेश दिया लेकिन उनका जवाब व अंतिम शब्द ते-

"नहीं महोदय, मैं अपना टैंक नहीं छोडूंगा।
मेरी मुख्य तोप अभी भी काम कर रही है
और मैं इन कमीनों को मार गिराऊंगा।"

अंततः उन्होंने अपने जलते हुए टैंक को नहीं छोड़ा और दुश्मन से लड़ना जारी रखा। अंततः दुश्मन से घिर जाने से पूर्व भी पाकिस्तान के एक टैंक को नष्ट किया। जिस अंतिम पाकिस्तानी टैंक पर उन्होंने हमला किया था वह उनकी स्थिति से मात्र लगभग 100 मीटर की दूरी पर ही था। इसी समय पाकिस्तानी टैंक ने भी सेकंड लेफ्टिनेंट अरुण खेतरपाल के टैंक पर पलटवार करते हुए हमला किया

और यह भारत माता का वीर सपूत वीरगति को प्राप्त हुआ । उनका शव व 'फमागुस्ता' नामक टैंक पाकिस्तानी सैनिकों द्वारा अपने कब्जे में ले लिया गया जिसे बाद में भारत को सौंप दिया गया था। सेकंड लेफ्टिनेंट अरूण खेतरपाल की वीरता का साक्षी यह टैंक अब भी भारत में प्रदर्शित है।

सेकंड लेफ्टिनेंट अरूण खेतरपाल की शहादत व असाधारण शौर्य की बदौलत पाकिस्तान को वह सफलता प्राप्त नहीं हुई जिसकी उन्हें परम आवश्यकता थी। एक भी पाकिस्तानी टैंक आगे नहीं बढ़ पाया।

सेकंड लेफ्टिनेंट अरुण खेतरपाल के कुशल नेतृत्व, असाधारण शौर्य, दृढ़ संकल्प एवम शत्रु के नजदीक जाने का जो साहस दिखाया वह देश के लिए आत्मबलिदान का सर्वोत्तम उदाहरण था । उनके इसी बलिदान के लिए उन्हें मरणोपरान्त भारत के सर्वोच्च सैन्य सम्मान **'परमवीर चक्र'** से सम्मानित किया गया। जिस समय वह वीरगति को प्राप्त हुए उस समय भारतीय सेना में उनका सेवा काल मात्र 6 माह था एवम् उनकी आयु मात्र 21 वर्ष थी। ऐसे परमवीर योद्धा को मेरा कोटि-कोटि नमन है।

कश्मीर आतंकवाद

चीन, भारत देश की बढ़ती हुई ताकत व प्रभाव से परेशान था। चीन ने पुनः 1947 भारत-पाकिस्तान युद्ध, 1962 भारत-चीन युद्ध और 1971 भारत-पाकिस्तान युद्ध का गहन अध्ययन करके यह निष्कर्ष निकाला कि भारत में विश्व का सर्वोच्च प्रभावशाली व ताकतवर देश बनने कि प्रबल संभावनाएं हैं किन्तु चीन, भारत देश को रोकने के लिए सीधे-सीधे भारत से युद्ध करने से डरता भी था अथवा सीधे-सीधे युद्ध करना नहीं चाहता था। इसलिए चीन ने इस क्षेत्र में अपना दब-दबा कायम करने के लिए भारत को युद्ध में उलझाने हेतु कूटनीतिक चाल चली। उसने अपने उद्देश्य कि प्राप्ति के लिये पाकिस्तान देश को भारत के विरुद्ध उकसाया व पाकिस्तानी सेना का, भारत के खिलाफ़ लड़ने के लिये इस्तेमाल किया। पाकिस्तान, चीन की इस कूटनीतिक चाल में फँस गया अर्थात अब हम यह कह सकते हैं कि चीन देश पाकिस्तान के माध्यम से भारत से युद्ध कर रहा है।

जब श्रीनगर में वर्ष 1989 में आतंकवाद ने अपनी खतरनाक दस्तक दे दी थी, तो उसी समय तत्कालीन सरकार को 'ऑपरेशन सिंदूर' की भाँति सख्त कार्यवाही करके आतंकवाद को वहीं कुचल देना चाहिये था, किंतु सरकार ने आवश्यकतानुसार उचित कार्यवाही नहीं की। जिसके परिणामस्वरूप आतंकवाद ने न सिर्फ कश्मीर को, बल्कि पूरे भारत को अपनी गिरफ्त में ले लिया। जिसकी इस देश ने, देशवासियों ने बहुत बड़ी कीमत चुकाई। आने वाली पीढ़ियाँ आतंकवाद के खिलाफ, तत्कालीन सरकार द्वारा आवश्यकतानुसार उचित कार्यवाही न करने के इस फैसले के लिये कभी भी उन्हें क्षमा नहीं करेंगी। सबसे पहले देश होता है, सरकारें तो आती-जाती रहेंगी, पर देश सही-सलामत, सुरक्षित रहना चाहिये। यदि देश

सुरक्षित रहेगा, तभी सरकारें भी रहेंगी। यदि देश ही सुरक्षित नहीं रहेगा, तो सब कुछ समाप्त ही हो जायेगा।

खैर, सरकार द्वारा आतंकवादियों के खिलाफ कोई सख्त कार्रवाई नहीं की गई, जिसके परिणामस्वरूप 1990 के दशक के प्रारम्भ में, श्रीनगर से कश्मीरी हिंदुओं या कश्मीरी पंडितों का पलायन शुरू हो चुका था। सन् 1989-90 में कश्मीरी मुसलमानों द्वारा भारत से आज़ादी की माँग तेज़ हुई। कश्मीरी हिंदुओं अथवा कश्मीरी पंडितों ने इसमें कश्मीरी मुसलमानों का साथ नहीं दिया। चूंकि कश्मीरी हिंदुओं अथवा कश्मीरी पंडितों की आबादी कश्मीर घाटी में 4% से 6% थी, शेष 94% से 96% कश्मीर घाटी के मुसलमान थे जो कि बड़ी संख्या में सुन्नी इस्लाम के अनुयायी थे। इसलिये कश्मीरी मुसलमानों द्वारा कश्मीरी हिंदुओं व कश्मीरी पंडितों की हत्या करने का दौर शुरु हो गया। जम्मू कश्मीर लिबरेशन फ्रंट (जे के एल एफ) द्वारा चुन-चुनकर कश्मीरी हिंदुओं अथवा कश्मीरी पंडितों की हत्या की गयी एवम् लगभग 30 से 80 उन कश्मीरी हिंदुओं अथवा कश्मीरी पंडितों की हत्या भी की गयी जिसमें कई हाई प्रोफाइल कश्मीरी हिंदू अथवा कश्मीरी पंडित भी शामिल थे। मस्जिदों से लाउडस्पीकर पर हिंदू विरोधी नारे लगाये जाते थे, जिनमें कश्मीरी हिंदुओं अथवा कश्मीरी पंडितों को कश्मीर घाटी छोड़ने के लिये कहा जाता था, उन्हें इस संदर्भ में धमकी भरे पत्र भी दिये जाते थे।

इन सभी घटनाओं के कारण कश्मीरी हिंदू अथवा कश्मीरी पंडित, जिनकी आबादी 1990 में 1,20,000 से 1,40,000 थी। उनमें से लगभग एक लाख कश्मीरी हिंदू अथवा कश्मीरी पंडितों ने 1990 के मध्य में कश्मीर घाटी को छोड़ दिया। परिणामस्वरूप कश्मीरी हिंदू अथवा कश्मीरी पंडितों को अपना घर-बार छोड़कर जम्मू के शरणार्थी शिविरों में रहने को विवश होना पड़ा। कुछ विस्थापित कश्मीरी हिंदुओं अथवा कश्मीरी पंडितों ने 'पनुन कश्मीर' (हमारा अपना कश्मीर) नामक एक संगठन भी खड़ा किया, जिसके द्वारा घाटी में कश्मीरी हिंदुओं अथवा कश्मीरी पंडितों के लिये एक अलग जगह की माँग की गयी थी। लेकिन इसका कोई लाभ नहीं हुआ। कश्मीरी हिंदुओं अथवा कश्मीरी पंडितों द्वारा 19 जनवरी

को 'पलायन दिवस' के रूप में मनाया जाता है। लेकिन फिर भी तत्कालीन कार्यरत सरकार के कान पर जूँ तक नहीं रेंगी। सरकार ने इस दिशा में कोई भी सकारात्मक ठोस कार्रवाई नहीं की। इस दुर्भाग्यपूर्ण घटना स्वतंत्र भारत के इतिहास में सदैव काले अध्याय के रूप में याद किया जाएगा।

दरअसल कश्मीर का इस्लामीकरण तो 1980 के दशक में ही प्रारंभ हो गया था। जब शेख अब्दुल्ला की सरकार ने लगभग 300 स्थानों के नाम बदलकर इस्लामी नाम रखे थे व मस्जिदों से सांप्रदायिक भाषण देना भी प्रारंभ कर दिया था। उन्होंने कश्मीरी हिन्दुओं अथवा कश्मीरी पंडितों को 'हिंदुस्तानी मुखबीर' अथवा 'भारतीय सेना के मुखबीर' भी कहा था। परिणामस्वरूप कश्मीर स्वतंत्रता समर्थक 'जम्मू कश्मीर लिबरेशन फ्रंट' (जे के एल एफ) और 'जमात-ए-इस्लामी' संगठनों के साथ-साथ पकिस्तान के इस्लामवादी समूहों ने मुसलमान कश्मीरियों के बीच उग्र भारत-विरोधी भावनाओं को एक संगठन के रूप में एकत्रित किया। जिसके फलस्वरूप 1984 के वर्ष में कश्मीर में आतंकवादी हिंसा में स्पष्ट वृद्धि देखी गई थी। इसमें हड़ताल व भारत विरोधी प्रदर्शन भी प्रारंभ हो गए थे। इसमें कश्मीरी युवाओं ने बढ़-चढ़कर हिस्सा लिया। वे नहीं जानते थे कि वे गलत रास्ते पर जा रहे हैं, उन्होंने स्वयं के भविष्य को तो अंधकार में डाल ही दिया बल्कि अपनी आने वाली पीढ़ी के उज्ज्वल भविष्य पर भी एक प्रश्नवाचक चिह्न लगा दिया। निःसंदेह उनकी इस गलती की सजा आने वाली पीढ़ी को भी भुगतनी पड़ सकती थी।

उस समय 'जम्मू-कश्मीर' के मुख्यमंत्री श्री फारुख़ अब्दुल्ला थे। उन्होंने स्थिति को नियंत्रित करने के लिए कोई भी आवश्यक कार्रवाई नहीं की। बल्कि इस दौरान उन्होंने पाकिस्तान प्रशासित कश्मीर की एक यात्रा भी की। इससे स्थिति और बिगड़ गई। परिणामस्वरूप दिनांक 02 जुलाई 1984 को श्री गुलाम मोहम्मद शाह ने श्रीमती इंदिरा गांधी जी के समर्थन से अपने बहनोई फारूख अबदुल्ला को मुख्यमंत्री पद से बर्खास्त करवाया एवम् स्वयं मुख्यमंत्री बने।

किंतु दुर्भाग्यवश श्री गुलाम मोहम्मद शाह ने भी मुख्यमंत्री बनने के पश्चात अपने कर्तव्य का निर्वाह नहीं किया व हिंदू विरोधी राह पर चल पड़े। उन्होंने वर्ष 1986 में जम्मू में बने नए सचिवालय क्षेत्र में स्थित एक प्राचीन हिंदू मंदिर के परिसर में एक मस्जिद का निर्माण करवाया। जिसे वहाँ पर कार्यरत मुस्लिम कर्मचारियों के लिए नमाज़ पढ़ने हेतु उपलब्ध करवाया गया था। जम्मू का हिंदू जनमानस इसके विरुद्ध सड़कों पर उतर आया था, परिणामस्वरूप हिंदू-मुस्लिम संघर्ष हुआ।

स्थिति को बिगड़ते देख मुख्यमंत्री श्री गुलाम मोहम्मद शाह, फरवरी 1986 में श्रीनगर वापिस आ गए और उन्होंने जवाबी कार्यवाही की, जो कि हिन्दू विरोधी थी। उन्होंने 'इस्लाम खतरे में है' का नारा देकर कश्मीरी मुसलमानों को भड़काया। परिणामस्वरूप कश्मीरी मुसलमानों ने कश्मीरी हिंदुओं की नृशंस हत्या की, उनकी संपत्तियों को लूटा, मंदिरों को नष्ट किया। सबसे ज्यादा प्रभावित क्षेत्र मुख्य रूप से 'दक्षिण कश्मीर' और 'सोपोर' क्षेत्र थे। फरवरी 1986 में अनंतनाग दंगों के दौरान वहाँ के हिंदुओं की सम्पत्तियों को लूटा गया, उनके घरों में आग लगा दी। दक्षिण कश्मीर में इतने बड़े सांप्रदायिक दंगों के पश्चात् वहाँ के राज्यपाल श्री जगमोहन ने 12 मार्च 1986 को मुख्यमंत्री श्री गुलाम मोहम्मद शाह की सरकार को बरखास्त करके राज्य में राज्यपाल शासन लागू कर दिया।

तत्पश्चात 1987 में राज्य चुनावों के लिए 'जमात-ए-इस्लामी कश्मीर' सहित अनेक इस्लामवादी समूह इस्लामी एकता के नाम पर एकत्र हो गए। इन तमाम संगठनों ने 'मुस्लिम युनाइटेड फ्रंट' के बैनर तले स्वयं को संगठित किया एवम् केंद्र से राजनीतिक हस्तक्षेप के खिलाफ एक घोषणापत्र भी बनाया। दो मुख्य दलों 'एन सी- नेशनल कॉन्फ्रेंस' और 'आई एन सी- इंडियन नेशनल कांग्रेस' (NC और INC) ने एक साथ गठबंधन किया और चुनाव जीता। चुनाव जीतने के लिए कश्मीरी आतंकवादियों ने उन सभी की नृशंस हत्या कर दी, जिन्होंने खुले तौर पर भारत समर्थक नीतियों को व्यक्त किया था। कश्मीरी हिंदुओं को विशेष रूप से निशाना बनाया गया क्योंकि वे किसी भी प्रकार का विरोध चाहते ही नहीं थे।

इसमें जम्मू कश्मीर लिबरेशन फ्रंट (जे के एल एफ) ने मुख्य भूमिका निभाई थी। अगले कुछ महीनों में निज़ाम-ए-मुस्तफ़ा ('शरिया' पर आधारित प्रशासन) की स्थापना करने की वकालत भी की गई। वहाँ के इस्लामवादी समूहों ने पाकिस्तान के साथ विलय की हवा को भी भड़काया। 'पाकिस्तान के साथ विलय' की हवा के साथ ही भारत को त्वरित सैनिक कार्रवाई करके इन्हें कुचल देना चाहिए था, किंतु ऐसा नहीं हुआ।

जिसके परिणामस्वरूप, जुलाई 1988 में जम्मू कश्मीर लिबरेशन फ्रंट (जे के एल एफ) ने भारत से कश्मीर को अलग करने के लिए अलगाववादी विद्रोह की शुरुआत कर दी थी। दिनांक 14 सितम्बर 1989 को, पहली बार कश्मीर घाटी में एक बेकसूर कश्मीरी हिंदू श्री टीकालाल टपलू (जो कि भारतीय जनता पार्टी के एक वकील व प्रमुख नेता थे) की, श्रीनगर में उनके घर में घुसकर जम्मू कश्मीर लिबरेशन फ्रंट (जे के एल एफ) द्वारा, कई प्रत्यक्षदर्शियों के सामने नृशंस हत्या कर दी थी। यह देखकर कश्मीरी घाटी में रह रहे कश्मीरी हिंदुओं अथवा कश्मीरी पंडितों में भय उत्पन्न हो गया। श्री टीकालाल टपलू जी के हत्यारे कभी पकड़े भी नहीं गए एवम् न ही इस संदर्भ में कोई उचित कार्यवाही की गई। इससे कश्मीरी अलगाववादियों का साहस और भी बढ़ गया जिससे कश्मीरी हिंदुओं अथवा कश्मीरी पंडितों में भय उत्पन्न हो गया एवम् उन्होंने कश्मीरी घाटी से पलायन करना आरंभ कर दिया।

इसके साथ ही कश्मीरी घाटी में हिंदुओं की नृशंस हत्या का सिलसिला प्रारंभ हो गया। दिनांक 04 नवम्बर 1989 को श्रीनगर हाईकोर्ट के पास जज श्री नीलकंठ गंजू जी की खुलेआम गोली मारकर हत्या कर दी गई थी। क्योंकि इन्होंने सन् 1968 में कश्मीरी अलगाववादी मकबूल भट को एक मुकदमे में मौत की सजा सुनाई थी।

इसके बाद दिनांक 08 दिसम्बर 1989 को दोपहर 3.45 बजे भारतीय गृहमंत्री श्री मुफ्ती मोहम्मद सईद की 23 वर्षीय बेटी रूबैया सईद का श्रीनगर में कश्मीरी अलगाववादी आतंकवादियों ने अपहरण कर लिया। जब वह 'लाल देद

मेमोरियल अस्पताल' नौगाम से एक स्थानीय मिनी बस से अपने घर लौट रही थी। यहाँ से उनका घर मात्र 500 मीटर की दूरी पर ही था। चार सशस्त्र आतंकवादियों ने उन्हें बंदूक की नोक पर मिनी बस से उतारा और उनका अपहरण कर लिया। इस शर्मनाक घटना को अंजाम, यासीन मलिक द्वारा संचालित जम्मू कश्मीर लिबरेशन फ्रंट (जे के एल एफ) द्वारा दिया गया था। इसके बदले में 5 खूंखार आतंकवादियों (हमीद शेख, शेर खान, नूर मुहम्मद कलवाल, जावेद जरगर और अल्ताफ अहमद) को रिहा करने की माँग की गई थी।

तत्कालीन सरकार ने आतंकवादियों की इस माँग के समक्ष पूर्णतया घुटने टेक दिये। दिनांक 13 दिसम्बर 1989 को सायंकाल 07 बजे 23 वर्षीय रूबैया सईद को आतंकवादियों ने रिहा कर दिया। उसके ठीक 2 घंटे बाद भारत सरकार ने अपर लिखित पाँच खूंखार आतंकवादियों को भी रिहा कर दिया।

उस समय तत्कालीन केंद्र सरकार को, कोई कूटनीतिक चाल चलकर रूबैया सईद को रिहा करवाना चाहिए था, किंतु ऐसा नहीं हुआ। रूबैया सईद की रिहाई के बाद तो सरकार को युद्ध स्तर पर आतंकवादियों के खिलाफ आवश्यक कार्यवाही करके उन्हें जड़ से ही समाप्त कर देना चाहिए था। किंतु ऐसा भी नहीं हुआ। परिणामस्वरूप आतंकवादियों के हौसले और बढ़ गए और कश्मीर घाटी में खून-खराबे का दौर जारी रहा।

इन बढ़े हुए हौसलों के साथ ही दिनांक 04 जनवरी 1990 को श्रीनगर में कार्यरत एक समाचार पत्र के माध्यम से आतंकवादी संगठन 'हिजबुल मुज़ाहिदीन' द्वारा एक संदेश जारी करवाया गया, जिसमें कश्मीर में रह रहे समस्त हिंदुओं को तुरंत कश्मीर छोड़ने की सख्त चेतावनी दी गई। इसी चेतावनी को श्रीनगर के अन्य समाचार पत्र 'अल-सफा' ने पुन: प्रकाशित किया। दीवारों पर पोस्टर चिपकाए गए, जिनके माध्यम से कश्मीरी मुसलमानों को इस्लामी नियमों का सख्ती से पालन करने की धमकी दी गई, जिसके अनुसार इस्लामी ड्रेस कोड का पालन, शराब, सिनेमा और वीडियो पार्लर पर प्रतिबंध सहित सख्त प्रतिबंध शामिल थे। कश्मीर घाटी में समस्त कार्यालय भवनों, दुकानों, मकानों को हरे रंग

से रंगकर इस्लामी शासन का कड़ा संदेश दिया गया। कश्मीरी हिंदुओं अथवा कश्मीरी पंडितों की दुकानें, कारखाने, मंदिर और घर या तो नष्ट कर दिए गए अथवा जला दिए गए। सभी हिंदुओं के दरवाजों पर धमकी भरे पोस्टर चिपकाए गए, जिसमें उन्हें तुरंत कश्मीर छोड़ने को कहा गया था।

दिनांक 18 जनवरी से 19 जनवरी 1990 की मध्यरात्रि के दौरान कश्मीर घाटी में ब्लैक आउट किया गया, जहाँ मस्जिदों को छोड़कर, सभी स्थानों की बिजली काट दी गई। विभाजनकारी और भड़काऊ संदेश जारी किये गये, जिनके माध्यम से कश्मीर घाटी में रह रहे कश्मीरी हिंदुओं के सफाये की जोरदार माँग की गई।

सरकार ने श्रीनगर में स्थिति को नियंत्रित करने के लिए श्री जगमोहन को दूसरी बार श्रीनगर का राज्यपाल नियुक्त किया। ठीक उनकी नियुक्ति के दो दिन बाद, दिनांक 21 जनवरी 1990 को श्रीनगर में 'गावकादल हत्याकाण्ड' हुआ। इस हत्याकाण्ड में गावकादल पुल पर, केंद्रीय रिज़र्व पुलिस बल के भारतीय अर्धसैनिक बलों के रूप में आतंकवादियों ने कश्मीरी नागरिकों के एक समूह पर खुलेआम गोलियाँ चलाई थीं। सरकारी आँकड़ों के अनुसार इसमें मरने वालों की संख्या कम से कम 50 थी, लेकिन जो इस हमले में जीवित बच गए उनके अनुसार मरने वालों की संख्या 280 तक थी। इस घटना के बाद कश्मीर घाटी में और भी तेजी के साथ अराजकता फैल गई। कश्मीरी अलगाववादी खुलेआम भीड़ के रूप में बंदूकों के साथ सड़कों पर हिंदू विरोधी नारे लगाते हुए घूमने लगे एवं और भी अन्य हिंसक घटनाओं की खबरें लगातार आती रहीं। परिणामस्वरूप उसी रात कई हिंदुओं ने कश्मीर घाटी से भागकर अपनी व अपने परिवारों की जान बचाई। दिनांक 25 जनवरी 1990 को श्रीनगर में 'रावलपोरा गोलीबारी' की एक और अप्रिय घटना घटित हुई। जम्मू कश्मीर लिबरेशन फ्रंट (जे के एल एफ) के नेता यासीन मलिक ने अपने कुछ सशस्त्र साथियों के साथ इस घटना को अंजाम दिया। ये लोग 2 से 3 स्वचालित हथियार एवम् एक अर्ध स्वचालित पिस्तौल से लैस थे। इस घटना में आतंकवादियों ने भारतीय वायुसेना कर्मियों को अपना

निशाना बनाया जिसमें स्क्वाड्रन लीडर रवि खन्ना, कॉर्पोरल डी बी सिंह, कॉर्पोरल उदय शंकर और एयरमैन आजाद अहमद को गोली मारकर उनकी नृशंस हत्या कर दी गई। 10 अन्य भारतीय वायुसेना कर्मी इस घटना में घायल हो गए। ये सभी रावलपोरा श्रीनगर बस स्टैंड पर, अपने गंतव्य पर जाने हेतु अपने वाहन का इंतजार कर रहे थे। आतंकवादियों द्वारा भारतीय वायुसेना कर्मियों की खुलेआम नृशंस हत्या के पश्चात् भी तत्कालीन सरकार नहीं जागी। सरकार को उसी समय 'ऑपरेशन सिंदूर' की भाँति जोरदार कार्यवाही करनी चाहिये थी, लेकिन दुर्भाग्यवश ऐसा नहीं हुआ। जिसकी भारी कीमत हमारे निर्दोष भारतीय नागरिकों को चुकानी पड़ी।

जिसके परिणामस्वरूप आतंकवाद कि घटनाओं में तेजी से वृद्धि हुई और निम्नलिखित अप्रिय घटनाएं घटित हुईं-

- जनवरी 1990 के दौरान, कश्मीर घाटी में कई खुफिया अधिकारियों की भी हत्या कर दी गयी।
- दिनांक 02 फरवरी 1990 को एक नौजवान हिंदू सामाजिक कार्यकर्ता श्री सतीश टिकू की उनके घर के पास ही हब्बा कदल नामक स्थान पर श्रीनगर में आतंकवादियों ने हत्या कर दी।
- दिनांक 13 फरवरी 1990 को श्री लस्सा कौल की आतंकवादियों ने गोली मारकर हत्या कर दी। श्री लस्सा कौल श्रीनगर दूरदर्शन के निदेशक जैसे उच्च व महत्वपूर्ण पद पर कार्यरत थे।
- दिनांक 29 अप्रैल 1990 को, वरिष्ठ कश्मीर कवि श्री सर्वानंद कौल प्रेमी और उनके बेटे को पहले तो आतंकवादियों ने गोली मारी, फिर उन्हें फाँसी पर लटकाकर उनकी जान ले ली।
- दिनांक 04 जून 1990 को एक हिंदू शिक्षिका गिरिजा टिक्कू की आतंकवादियों ने क्रूरता पूर्वक हत्या कर दी। हत्या करने से पहले

आतंकवादियों ने उनके साथ सामूहिक बलात्कार किया, उनके पेट को फाड़ दिया और उनके जीवित शरीर को आरी से दो टुकड़ों में काट दिया।

- कश्मीरी हिंदुओं अथवा कश्मीरी पंडितों के कश्मीर घाटी से पलायन के दौरान, उनकी महिलाओं का अपहरण, बलात्कार व हत्या की गई । कश्मीर में हिंदुओं के स्थानीय संगठन, "कश्मीर पंडित संघर्ष समिति" (KPSS) ने 2008 और 2009 में एक सर्वेक्षण किया। उसके बाद यह परिणाम आया कि सन् 1990 में कश्मीर में 357 हिंदुओं की हत्या हुई थी।

पलायन के पश्चात् कश्मीर घाटी में उग्रवाद न तो थमा और न ही कम हुआ, बल्कि और बढ़ गया। आतंकवादियों ने कश्मीरी हिंदुओं अथवा कश्मीरी पंडितों की संपत्तियों को निशाना बनाया।

यदि आँकड़ों की मानें, तो भारतीय गृह मंत्रालय के अनुसार सन् 1991 से सन् 2005 तक कश्मीर घाटी में आतंकवाद के कारण 1406 हिंदू नागरिकों की मौत हुई है। जबकि जम्मू और कश्मीर सरकार के अनुसार सन् 1984 से सन् 2004 के बीच कश्मीर घाटी में हिंदू पंडित समुदाय से संबंधित 219 सदस्य मारे गये हैं। कश्मीर में हिंदुओं के संगठन 'कश्मीरी पंडित संघर्ष समिति' (KPSS) ने इस संदर्भ में सन् 2008 और सन् 2009 में एक सर्वेक्षण किया। उनके इस सर्वेक्षण के अनुसार सन् 1990 से सन् 2011 तक कश्मीर में आतंकवादियों द्वारा 399 कश्मीरी हिंदू मारे गये थे। जिनमें से 75% उग्रवाद के पहले वर्ष में ही मार दिये गये थे।

दरअसल जिस दिन कश्मीर घाटी में उग्रवाद के नाम पर पहले कश्मीरी हिंदू अथवा कश्मीरी पंडित की हत्या की गई थी, **उसी दिन तत्कालीन सरकार को इस संदर्भ में 'ऑपरेशन सिंदूर' की भाँति सख्त कार्यवाही करनी चाहिये थी,** एवम् तब तक कार्यवाही जारी रखनी चाहिये थी, जब तक कश्मीर घाटी में सिर उठा रही, भारत विरोधी ताकतों का पूर्णतया सफाया न हो जाता। किंतु,

दुर्भाग्यवश ऐसा कुछ भी न हुआ। इसके बाद आतंकवादियों के हौसले और बढ़ गये, जिसके विषय में हम आगे जानेंगे।

- दिनांक 04 जुलाई 1995 को अनंतनाग जिले से छह विदेशी पर्यटकों को आतंकवादियों ने अगवा कर लिया, उनमें से एक के सिर को धड़ से अलग कर दिया, एक उनकी पकड़ से भागने में सफल रहा, शेष चार आज तक लापता हैं, संभवतः: उनकी भी हत्या कर दी गई।
- दिनांक 22 मार्च 1997 को श्रीनगर स्थित 'बड़गाँव' जिले के 'संग्रामपोरा' गाँव में आतंकवादियों ने सात कश्मीरी पंड़ितों की हत्या कर दी थी।
- जनवरी 1998 में आतंकवादियों ने भारतीय सेना के अधिकारियों की वर्दी पहनकर श्रीनगर के 'वंधामा' गाँव में रहनेवाले 24 कश्मीरी पंड़ितों की उनके घर में घुसकर गोलीबारी करके हत्या कर दी। यह घटना पूर्व अमेरिकी राष्ट्रपति बिल क्लिंटन की भारत यात्रा के दौरान घटित हुई थी। जिसका उद्देश्य सम्पूर्ण विश्व का ध्यान कश्मीर विवाद की तरफ आकर्षित करने का था।
- दिनांक 27 अप्रैल 1998 को उधमपुर जिले में प्राणकोट नामक स्थान पर वहाँ के 26 हिंदू ग्रामीणों निवासियों की आतंकवादियों द्वारा हत्या कर दी गई।
- दिनांक 19 जून 1998 को चंपाहारी में कश्मीरी आतंकवादियों ने 25 हिंदू ग्रामीणों की हत्या कर दी।
- दिनांक 01-02 अगस्त 2000 को आतंकवादियों ने जम्मू-कश्मीर के अनंतनाग व डोडा जिले में पाँच अलग-अलग हमलों में 89-105 बेकसूर हिंदू अमरनाथ तीर्थ यात्रियों की हत्या कर दी।
- दिनांक 20 मार्च 2000 को लश्कर-ए-तैयबा के आतंकवादियों द्वारा जम्मू-कश्मीर के अनंतनाग जिले के चिट्टीसिंहपुरा नामक स्थान पर 36 सिखों की हत्या कर दी गई थी।

- दिनांक 01 अक्तूबर 2001 को श्रीनगर विधानसभा में कश्मीरी आतंकवादियों द्वारा बम विस्फोट किया गया, जिसमें 38 बेकसूर नागरिकों की जान गई।
- कश्मीरी आतंकवादियों ने सन् 2002 में रघुनाथ मंदिर पर दो हमले किए। पहला आत्मघाती हमला, दिनांक 30 मार्च 2002 को किया। जिसमें 30 सुरक्षाकर्मी सहित ग्यारह नागरिक मारे गए एवम् 20 घायल हो गए। दूसरा फिदायनी आत्मघाती हमला दिनांक 24 नवम्बर 2002 को रघुनाथ मंदिर पर किया गया, जिसमें 14 भक्तों की जान गई व 45 नागरिक घायल हो गए।
- दिनांक 13 जुलाई 2002 को 'लश्कर-ए-तैयबा' के सशस्त्र आतंकवादियों ने श्रीनगर में स्थित कासिम नगर बाज़ार में हथगोले फेंके एवम् वहाँ पर खड़े निर्दोष नागरिकों पर गोलियाँ बरसाईं। जिसमें 27 नागरिकों की जान गई व कई अन्य घायल हो गए।
- दिनांक 23 मार्च 2003 को 'लश्कर-ए-तैयबा' के आतंकवादियों द्वारा ही कश्मीर के 'नादिममर्ग' नामक स्थान पर 24 हिंदुओं की हत्या कर दी गई थी।
- दिनांक 20 जुलाई 2005 को श्रीनगर के 'चर्च लेन' क्षेत्र में 'हिजबुल मुजाहिदीन' आतंकवादी समूह के आतंकवादियों ने भारतीय सेना के एक बख्तरबंद वाहन को निशाना बनाकर, वाहन के पास एक कार में बम विस्फोट किया। जिसमें भारतीय सेना के 4 जवान, एक नागरिक सहित एक आत्मघाती हमलावर की भी मृत्यु हो गई थी।
- दिनांक 29 जुलाई 2005 को श्रीनगर के 'सिटी सेंटर' स्थित 'बुडशाह चौक' पर आतंकवादियों द्वारा किये गये हमले में 2 नागरिकों की मृत्यु हो गई एवम् लगभग 17 से ज्यादा नागरिक घायल हो गये जिसमें से ज्यादातर मीडिया पत्रकार थे।

- दिनांक 18 अक्तूबर 2005 को 'ऑल पार्टी हुर्रियत कॉन्फ्रेंस' के प्रमुख नेता व जम्मू-कश्मीर के तत्कालीन शिक्षा मंत्री की कश्मीरी आतंकवादियों द्वारा एक स्मारक रैली के दौरान हत्या कर दी गई। बाद में 'अल मंसूरिन' नामक आतंकवादी समूह ने इस हत्या की जिम्मेदारी ली।
- दिनांक 03 मई 2006 को जम्मू-कश्मीर के 'डोडा' व 'उधमपुर' जिलों में आतंकवादियों द्वारा 35 हिंदुओं की हत्या कर दी गई थी।
- दिनांक 12 जून 2006 को जनरल बस स्टैण्ड पर वैष्णोदेवी जानेवाली बसों पर आतंकवादियों द्वारा तीन ग्रेनेड फेंक कर हमला किया गया। जिसमें 1 नागरिक की मृत्यु हो गई एवम् 31 अन्य नागरिक घायल हो गये।
- दिनांक 05 दिसम्बर 2014 को चल रहे विधानसभा चुनावों को बाधित करने के उद्देश्य से सेना, पुलिस और नागरिकों पर एक ही दिन में चार हमले किये गये। जिसमें 21 नागरिक मारे गये और कई घायल भी हुए।
- दिनांक 18 सितंबर 2016 को चार सशस्त्र आतंकवादी उरी में स्थित भारतीय सैन्य शिविर में घुस गये। आतंकवादियों ने वहाँ पर कई ग्रेनेड फेंके। जिसमें भारतीय सेना के 19 सैन्यकर्मी शहीद हो गये एवम् सैन्य शिविर में काफ़ी बड़े पैमाने पर आग भी लग गई।
- दिनांक 10 फरवरी 2018 को "जैश-ए-मोहम्मद" के आतंकवादियों द्वारा जम्मू-कश्मीर के 'सुंजवान आर्मी कैम्प' पर हमला करने का दु:साहस किया गया। इस हमले में भारतीय सेना के 4 जवान शहीद हुए, 1 नागरिक मारा गया, 11 नागरिक घायल हुए एवम् 4 आतंकवादी भी मारे गये।
- दिनांक 14 फरवरी 2019 को "जैश-ए-मोहम्मद" के आतंकवादियों द्वारा पुलवामा में सी आर पी एफ (CRPF) सैनिक काफ़िले पर हमला किया गया। इस हमले में 46 जवान शहीद हो गये एवम् 20 घायल हुए।

‘कारगिल युद्ध’

इधर श्रीनगर घाटी में, पाकिस्तान द्वारा समर्थित आतंकवाद अपने चरम पर था। उधर सन् 1998 में भारत व पाकिस्तान, दोनों देशों ने परमाणु परीक्षण किए। भारत द्वारा क्रमशः दिनांक 11 व 13 मई 1998 पोखरण-II सफल परमाणु परीक्षण किए गए। जिसके जवाब में पाकिस्तान ने बलूचिस्तान के चागई हिल्स में पाँच सफल भूमिगत परमाणु परीक्षण किए। इस ऑपरेशन को चागई-I नाम से जाना गया। जिसके परिणामस्वरूप दोनों देशों के बीच तनाव और अधिक बढ़ गया एवम् आक्रामक माहौल बन गया।

इस बीच पाकिस्तान ने भारत के विरुद्ध एक और षड्यंत्र रचा जिसके परिणामस्वरूप दोनों देशों के बीच ‘कारगिल युद्ध’ हुआ।

परवेज़ मुशर्रफ़ को अक्तूबर 1998 पाकिस्तान का सेनाध्यक्ष नियुक्त किया गया था। अपनी नियुक्ति के तुरंत बाद ही पाकिस्तानी सेनाध्यक्ष जनरल परवेज़ मुशर्रफ़ ने अपने बेहद करीबी चार जनरलों के साथ मिलकर कारगिल क्षेत्र में भारतीय चौकियों पर कब्जा करने की योजना पर कार्य करना प्रारम्भ कर दिया। उस समय पाकिस्तान के प्रधानमंत्री नवाज़ शरीफ़ थे। इन्होंने दावा किया कि उन्हें सेनाध्यक्ष जनरल परवेज़ मुशर्रफ़ की इन योजनाओं के संदर्भ में कोई भी जानकारी नहीं थी। जबकि सेनाध्यक्ष जनरल परवेज़ मुशर्रफ़ ने यह दावा किया कि दिनांक 19-20 फरवरी 1999 को भारतीय प्रधानमंत्री श्री अटल बिहारी बाजपेयी जी की लाहौर, पाकिस्तान यात्रा से पूर्व पाकिस्तानी प्रधानमंत्री नवाज़ शरीफ़ को कारगिल ऑपरेशन की जानकारी दे दी गई थी।

भारत, पाकिस्तान की इस चाल से एकदम अनभिज्ञ था। तभी अचानक एक दिन, दिनांक 03 मई 1999 को स्थानीय चरवाहों ने भारतीय सेना को कारगिल जिले में पाकिस्तानी घुसपैठ की सूचना दी।

जिसके जवाब में दिनांक 05 मई 1999 को भारतीय सेना के कुछ गश्ती दल उस इलाके में भेजे गए। जिनमें से 05 भारतीय सैनिकों को धोखे से वहां घात लगाए हुए पाकिस्तानी सैनिकों ने पकड़ लिया और बाद में उन्हें मार दिया।

दिनांक 09 मई 1999 को पाकिस्तानी सेना ने कारगिल क्षेत्र में भारतीय सैनिक ठिकानों पर भारी गोलाबारी की एवम् भारतीय गोला-बारूद भंड़ार को नुकसान पहुँचाया।

दिनांक 10 मई 1999 को 'द्रास', 'काकसर' और 'मुश्कोह' सेक्टरों में भी नियंत्रण रेखा पर पाकिस्तानी सैनिकों के घुसपैठ की पुष्टि हुई।

जिसके परिणामस्वरूप दिनांक 18 मई 1999 को भारत में उच्चस्तरीय बैठक हुई एवम् कारगिल क्षेत्र में पाकिस्तानी सेना द्वारा अनाधिकृत कब्जा की गई भारतीय चौकियों को खाली कराने हेतु सैनिक कार्यवाही की अनुमति प्रदान की गई।

प्रारम्भ में, कई कारणों से पाकिस्तानी घुसपैठ की जानकारी नहीं हो पाई थी। पाकिस्तानी तोपखाने की भारी गोलाबारी द्वारा घुसपैठियों को कवर प्रदान किया गया था, जिसकी आड़ में पाकिस्तानी सेना ने, भारतीय क्षेत्र में अनाधिकृत प्रवेश किया था।

एक स्थानीय चरवाहे की सूचना पर, मई के दूसरे सप्ताह में कैप्टन सौरभ कालिया के नेतृत्व में एक भारतीय गश्ती दल ने 'बटालिक सेक्टर' में पैट्रोलिंग की थी। वहां पर पहले से घात लगाकर बैठे हुए पाकिस्तानी सैनिकों ने कैप्टन सौरभ कालिया व उनकी टुकड़ी पर हमला कर दिया। यहां पर इस घटना के संदर्भ में विस्तार से बताना अति आवश्यक है।

कैप्टन सौरभ कालिया वह प्रथम भारतीय सेना अधिकारी थे जिन्हें कारगिल में नियंत्रण रेखा (LOC-Line of Control) के भारतीय क्षेत्र में पाकिस्तानी सेना और विदेशी भाड़े के सैनिकों की घुसपैठ को देखने व रिपोर्ट करने की जिम्मेदारी दी गई थी। कैप्टन सौरभ कालिया ने 'काकसर' क्षेत्र में घुसपैठ रोकने हेतु 13000-14000 फीट की ऊँचाई पर बनी बजरंग पोस्ट की सुरक्षा संभाली थी।

दिनांक 15 मई 1999 को कैप्टन सौरभ कालिया व पाँच अन्य सैनिक, सिपाही अर्जुन राम, भंवर लाल बागरिया, भीका राम, मूला राम एवम् नरेश सिंह (4 जाट रेजिमेंट के) – लद्दाख के पहाड़ों में 'काकसर' सेक्टर में, बजरंग पोस्ट पर नियमित गश्त पर थे। तब वहां पर बड़ी संख्या में मौजूद पाकिस्तानी सैनिकों ने इन पर घात लगाकर हमला किया एवम् इन्हें बंदी बना लिया गया। इन्हें दिनांक 15 मई 1999 से 07 जून 1999 तक बंदी बनाकर रखा गया एवम् अमानवीय यातनाएँ दी गईं। जब दिनांक 09 जून 1999 को पाकिस्तानी सेना ने, इनके मृत शरीर भारतीय सेना को सौंपे तो उनके शरीर पर अमानवीय यातनाओं के स्पष्ट सबूत मौजूद थे।

भारत द्वारा किए गए पोस्टमार्टम में पाया गया कि उनके शरीर पर सिगरेट से जलाने के कई निशान थे, कान के पर्दे गर्म छड़ों से छिदे हुए थे, कई दाँत व हड्डियाँ टूटी हुई थीं, खोपड़ी में फ्रैक्चर था, आँखें निकालने से पहले छेद दी गई थीं, होंठ कटे हुए थे, नाक छिली हुई थी एवम् अंग व जननांग कटे हुए थे। ये अमानवीय यातनाएँ इनके सिर में गोली मारने से पहले दी गई थीं।

दिनांक 15 जून 1999 को भारत ने पाकिस्तान को, सैनिक युद्धबंदियों को अमानवीय यातना देने एवम् क्रूरतापूर्वक उनकी हत्या करने के लिए जिनेवा कन्वेंशन के उल्लंघन का नोटिस भेजा। भारतीय विदेश मंत्री जसवंत सिंह ने पाकिस्तानी मंत्री सरताज अज़ीज़ के समक्ष इस मुद्दे को उठाया था एवम् इसके लिए जिम्मेदार व्यक्तियों की पहचान करने व उन्हें उचित दण्ड देने की माँग की थी। लेकिन पाकिस्तान ने इन आरोपों से साफ इनकार कर दिया। जबकि जिनेवा कन्वेंशन के अनुसार कोई भी देश, सैनिक युद्ध बंदियों के साथ इस प्रकार का

अमानवीय व्यवहार नहीं कर सकता है एवम् यदि कोई देश जिनेवा कन्वेंशन के नियमों का पालन नहीं करता है, तो उस देश के खिलाफ दण्ड का प्रावधान है।

कैप्टन सौरभ कालिया के परिवार ने भी संयुक्त राष्ट्र संघ में इस संदर्भ में अपील की। उन्होंने संयुक्त राष्ट्र संघ द्वारा इन अमानवीय कृत्यों को युद्ध अपराध घोषित करने एवम् जिनेवा कन्वेंशन के अनुसार जिम्मेदार व्यक्तियों को दण्डित करने के लिए अभियान भी चलाया था। किंतु कोई लाभ नहीं हुआ।

भारत देश सदैव कैप्टन सौरभ कालिया, सिपाही अर्जुन राम, भंवर लाल बागरिया, भीका राम, मूला राम एवम् नरेश सिंह के बलिदान का ऋणी रहेगा। इन बहादुरों को कोटि-कोटि नमन है।

कैप्टन सौरभ कालिया की याद में, उनके बलिदान को याद करते हुए हिमाचल प्रदेश के 'पालमपुर' में एक स्मारक पार्क का नाम 'सौरभ वन विहार' रखा गया है एवम् साथ ही एक सड़क का नाम 'कैप्टन सौरभ कालिया मार्ग' और एक क्षेत्र का नाम 'सौरभ नगर' रखा गया है।

अमृतसर में 'अमृतसर वर्किंग जर्नलिस्ट एसोसिएशन' द्वारा उनके सम्मान में एक प्रतिमा स्थापित की गई है।

पाकिस्तानी सेना को भारतीय सीमा क्षेत्र से खदेड़ने की जिम्मेदारी श्रीनगर में तैनात, अपनी बहादुरी के लिए विख्यात भारतीय सेना की 15वीं कोर को दी गई थी। इस जिम्मेदारी को 15वीं कोर ने बखूबी निभाया। 15वीं कोर के आला अधिकारियों ने रणनीति तैयार की। इनकी पहली प्राथमिकता राष्ट्रीय राजमार्ग 1 (एन एच 1) के आसपास की पहाड़ी चोटियों को पाकिस्तानी सेना से मुक्त करवाना था। इसी रणनीति के तहत भारतीय सेना ने सर्वप्रथम द्रास में ''टाइगर हिल'' और 'टोलोलिंग' परिसर पर निशाना साधा। जो कि श्रीनगर मार्ग पर स्थित थीं।

‘टोलोलिंग’ की लड़ाई

दिनांक 22 मई 1999 को ‘पॉइंट 5062’, 1 नागा और गढ़वाल रेजिमेंट ने ‘‘टोलोलिंग’’ पर जमी पाकिस्तानी सेना के विरुद्ध हमला प्रारम्भ कर दिया, बाद में 16 ग्रेनेडियर्स व 2 राजपुताना राइफल्स ने भी इनका साथ दिया। परिणामस्वरूप, दिनांक 14 जून 1999 को भारतीय सैनिकों ने असीम बहादुरी दिखाते हुए ‘‘टोलोलिंग’’ पर पॉइंट 4590 पर पुन: कब्जा कर लिया। किंतु इस संदर्भ में अनेकों बहादुर भारतीय सैनिकों ने अपने प्राण देश पर न्यौछावर कर दिये। एक अनुमान के मुताबिक इस एक ही लड़ाई में भारतीय सेना को सबसे अधिक हताहतों का सामना करना पड़ा था।

दिनांक 24 मई 1999 को एक उच्चस्तरीय बैठक हुई एवम् बैठक में ‘ऑपरेशन विजय’ में भारतीय वायु सेना के उपयोग की मंजूरी प्रदान की गई। इसी संदर्भ में दिनांक 25 मई 1999 को भारतीय वायु सेना को, भारतीय थल सेना के साथ संयुक्त रूप से कार्य करने की जिम्मेदारी प्रदान की गयी, जिसे ऑपरेशन ‘सफेद सागर’ कोड नाम दिया गया।

किंतु साथ ही भारतीय वायु सेना को यह आदेश दिया गया कि किसी भी स्थिति में नियंत्रण रेखा (LOC-Line of Control) नहीं करेंगे। यह इतिहास में पहली बार था कि समुद्रतल से 6000 से 18000 फीट की ऊँचाई पर हवाई युद्ध लड़ा गया। भारतीय वायु सेना के बमवर्षक विमानों ने इस ऊँचाई पर युद्ध लड़कर एक नया इतिहास रच दिया था।

अब भारतीय क्षेत्र में पहाड़ियों पर जमी पाकिस्तानी सेना पर दो तरफा प्रहार होने लगा - जमीनी रास्ते से भारतीय सेना द्वारा व आसमान से भारतीय वायु सेना द्वारा। भारतीय वायु सेना के बमवर्षक विमान बम बरसाने लगे। भारतीय वायु सेना ने असीम वीरता का परिचय दिया एवम् ‘ऑपरेशन विजय’ कि सफलता में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई।

'ऑपरेशन विजय' के दौरान फ्लाइट लेफ्टिनेंट कम्बम्पति नचिकेता राव ने मिग 27 फाइटर विमान से दिनांक 26 मई 1999 को 'बटालिक सेक्टर' में पाकिस्तानी सेना के विरुद्ध इस ऑपरेशन में हिस्सा लिया एवम् 17000 फिट की ऊँचाई पर, दुश्मन के कई ठिकानों पर घातक प्रहार किये। किंतु दुर्भाग्यवश उनका युद्धक विमान पाकिस्तानी सेना 'मैन पोर्टेबल एअर डिफेंस सिस्टम' (MANPADS) के हमले की चपेट में आ गया और उनके विमान में आग लग गई और उनको विमान से बाहर निकलने के लिए मजबूर होना पड़ा। फ्लाइट लेफ्टिनेंट कम्बम्पति नचिकेता को पाकिस्तानी सैनिकों ने पकड़ लिया एवम् उन्हें युद्धबंदी बना लिया गया।

भारत सरकार के अथक प्रयासों के फलस्वरूप 08 दिनों के पश्चात् दिनांक 03 जून 1999 को फ्लाइट लेफ्टिनेंट कम्बम्पति नचिकेता को पाकिस्तान ने रिहा कर दिया। फ्लाइट लेफ्टिनेंट कम्बम्पति नचिकेता ने पाकिस्तानी कैद में अपने अनुभवों को "शब्दों में वर्णित करना कठिन" बताया एवम् उन्हें लगा था कि मृत्यु एक बेहतर समाधान होता। वर्ष 2000 में नचिकेता को **'वायुसेना पदक'** से सम्मानित किया गया।

दिनांक 27 मई 1999 को, 'कारगिल युद्ध' के दौरान, स्क्वाड्रन लीड़र अजय आहूजा ने पाकिस्तान के विरुद्ध इंडियन एअरफोर्स द्वारा चलाए जा रहे ऑपरेशन 'सफेद सागर' के हिस्से के रूप में अपने फाइटर विमान मिग 27 में उड़ान भरी। वे फोटो टोही मिशन पर थे। स्क्वाड्रन लीड़र अजय आहूजा को, पाकिस्तानी सेना की सतह से हवा में मार करनेवाली मिसाइलों के हमले का अनुमान था, फिर भी उन्होंने खतरे की परवाह न करते हुए अपने कर्तव्य का पालन किया। इस प्रयास में उनका विमान पाकिस्तानी सेना के हमले की चपेट में आ गया। इसके बावजूद, स्क्वाड्रन लीड़र अजय आहूजा विमान से बाहर निकलने व पैराशूट से जमीन पर उतरने में सफल हुए। किंतु जहां पर वे उतरे, वो पाकिस्तान की जमीन थी। उन्हें पाकिस्तानी सैनिकों ने पकड़ लिया और बाद में मार दिया। स्क्वाड्रन लीड़र अजय आहूजा के शरीर को पाकिस्तान से वापस लिया गया तथा पोस्टमार्टम किया गया।

पोस्टमार्टम से ज्ञात हुआ कि उनके घुटने में फ्रैक्चर था और सिर व सीने में दो गोलियों के घाव थे। लेकिन हमेशा की तरह पाकिस्तान ने सभी आरोपों को खारिज कर दिया।

हम सभी भारतीयों के लिए स्क्वाड्रन लीड़र अजय आहूजा महानायक हैं। दिनांक 15 अगस्त 1999 को भारत की स्वतंत्रता की 52वीं वर्षगांठ पर स्क्वाड्रन लीड़र अजय आहूजा को उनकी असीम बहादुरी व बलिदान के लिए मरणोपरांत **‘वीर चक्र’** से सम्मानित किया गया। भारतवर्ष सदैव इन वीरों का कृतज्ञ रहेगा। इन्हें कोटि-कोटि नमन है।

भारतीय वायु सेना ने ‘ऑपरेशन विजय’ के दौरान वीरता की अनेकों कहानियाँ लिख दीं।

15 जून 1999 तक भारतीय थल सेना ने, अपनी सेना का एक बड़ा हिस्सा अंतरराष्ट्रीय सीमा के पास तैनात कर दिया था एवम् भारतीय सैनिक कमांडरों को अंतरराष्ट्रीय सीमा पार करने के लिए तैयार रहने का आदेश दिया गया था।

‘पॉइंट 5140’ पर कब्ज़ा

भारतीय सेना आक्रामक स्थिति में आ चुकी थी। दिनांक 17 जून 1919 को ‘13 जे एण्ड के राइफल्स’ को ‘पॉइंट 5140’ को पाकिस्तानी सैनिकों से मुक्त करवाने की जिम्मेदारी सौंपी गई। दिनांक 20 जून 1999 को ‘13 जे एण्ड के राइफल्स’ ने ऑपरेशन प्रारंभ किया, उनकी ‘पॉइंट 5140’ पर जमे पाकिस्तानी सैनिकों के साथ बेहद नजदीकी लड़ाई हुई। अंततः पाकिस्तानी सेना को पीछे हटना पड़ा एवम् दिनांक 20 जून 1999 को ही ‘13 जे एण्ड के राइफल्स’ ने ‘पॉइंट 5140’ पर कब्ज़ा कर लिया। इस युद्ध में ‘13 जे एण्ड के राइफल्स’ के कैप्टन विक्रम बत्रा ने असीम बहदुरी का परिचय दिया। उनकी सफलता का संकेत **‘ये दिल माँगे मोर**’ प्रसिद्ध हो गया। भारतीय सेना का विजय रथ आगे बढ़ चला। परिणामस्वरूप, ‘पॉइंट 5140’ से सटे ‘रॉकी’ और ‘ब्लैक टूथ’ क्षेत्र पर भारतीय

सेना की 1 नागा रेजिमेंट ने वहां जमे पाकिस्तानी सैनिकों को खदेड़कर, वहां कब्ज़ा कर लिया।

'टोलोलिंग' और 'पॉइंट 5140' से भागकर पाकिस्तानी सैनिक 'पॉइंट 4700' पर फ़िर से एकत्र हो गए। 'पॉइंट 4700' पर कब्ज़ा करने की जिम्मेदारी 'पॉइंट 5062' को दी गई। 'पॉइंट 5062' ने बहादुरी का परिचय देते हुए दिनांक 28 जून से 30 जून 1999 तक पाकिस्तानी सैनिकों के साथ युद्ध किया एवम् सफलतापूर्वक 'पॉइंट 4700' दुश्मन से आज़ाद करवाया और वहां पर 'पॉइंट 5062' ने अपनी बहादुरी का परचम लहरा दिया।

'पॉइंट 5100' एवम् 'एरिया थ्री पिंपल्स' पर कब्ज़ा

अब भारतीय सेना ने 'पॉइंट 5100' एवम् 'एरिया थ्री पिंपल्स' पर कब्ज़ा करने हेतु अपना ध्यान केंद्रित किया। 'एरिया थ्री पिंपल्स' रणनीतिक रूप से बहुत महत्वपूर्ण था क्योंकि यहां से राष्ट्रीय राजमार्ग और द्रास पर नज़र रखी जा सकती थी। 'एरिया थ्री पिंपल्स' में तीन पहाड़ी चोटियाँ नोल, लोन हिल व थ्री पिंपल्स शामिल थीं। थ्री पिंपल्स पर चढ़ाई करना एक कठिन चुनौती थी क्योंकि यहां की भौगोलिक संरचना बेहद जटिल थी एवम् यहां पर जमी पाकिस्तानी सेना स्वचालित हथियारों का उपयोग कर रही थी।

किंतु भारतीय सेना का विजय रथ रुकने का नाम ही नहीं ले रहा था। दिनांक 28 जून 1999 को वीरता का प्रतीक 2 राजपुताना राइफ़ल्स ने पाकिस्तानी सेना पर हमला किया एवम् दिनांक 29 जून 1999 को 'एरिया थ्री पिंपल्स' को पाकिस्तानी सेना के कब्ज़े से मुक्त करवा लिया और अपनी वीरता सिद्ध की।

इस लड़ाई में 250 तोपों का दुश्मन के विरुद्ध उपयोग किया गया। बोफोर्स एफ एच 77बी फील्ड हॉविजर ने बहुत महत्वपूर्ण भूमिका निभाई। भारतीय तोपचियों ने इन हथियारों को तैनात करने के लिए कम स्थान व कम गहराई होने के बावजूद भी, इन हथियारों का दुश्मन के विरुद्ध बखूबी इस्तेमाल किया, बेहतर परिणाम दिए एवम् अपनी युद्ध कौशलता का बखूबी परिचय दिया। इन सभी वीर

सैनिकों को कोटि-कोटि नमन है। यहां पाकिस्तानी सेना को बहुत भारी नुकसान हुआ।

'टाइगर हिल' की लड़ाई

जून 1999 के अंतिम सप्ताह में भारतीय सेना ने अपना अधिकतर ध्यान 'टाइगर हिल' पर केंद्रित किया। 'टाइगर हिल' की लड़ाई, 'कारगिल युद्ध' का एक महत्वपूर्ण हिस्सा थी। यह लड़ाई 03 जुलाई 1999 को प्रारम्भ हुई थी। वायु सेना ने भी आसमान से कारगिल पहाड़ी की चोटियों पर जमी पाकिस्तानी सेना पर बम बरसाये थे। यह आज़ाद भारत में पहली लड़ाई थी जिसका सीधा प्रसारण किया गया था। 04 जुलाई की सुबह सिख, ग्रेनेडियर्स व नागा रेजिमेंट ने 'टाइगर हिल' पर पाकिस्तानी सेना को हराकर भारतीय सेना की विजय यात्रा को आगे बढ़ाया था। 12 घंटे की कठिन लड़ाई के पश्चात् 'टाइगर हिल' पर भारतीय तिरंगा लहराया था। पाकिस्तानी सेना के सभी प्रमुख कमांड़र मारे गये थे।

'टाइगर हिल' की लड़ाई, 'कारगिल युद्ध' में एक अति महत्वपूर्ण मोड़ थी। यह लड़ाई वीर भारतीय सेना के साहस व दृढ़ संकल्प का प्रतीक है। इस लड़ाई में भारतीय सेना ने न केवल 'टाइगर हिल' पर सफलतापूर्वक तिरंगा लहराया बल्कि पाकिस्तानी सेना को कारगिल क्षेत्र में अपने कई ठिकानों से पीछे हटने के लिए विवश किया।

'टाइगर हिल' की लड़ाई के दौरान वीर भारतीय सेना को प्रतिकूल मौसम, खड़ी चढ़ाई एवम् पाकिस्तानी सेना के मजबूत प्रतिरोध जैसी कठिन चुनौतियों का सामना करना पड़ा था। लेकिन वीर भारतीय सेना के दृढ़ संकल्प और वीरता के समक्ष इन चुनौतियों ने भी घुटने टेक दिये एवम् भारतीय सेना ने 'टाइगर हिल' पर विजय प्राप्त की।

'टाइगर हिल' की लड़ाई में 'पॉइंट 5062' के बहादुर जवानों ने मुख्य भूमिका निभाई थी। 'पॉइंट 5062' के वीर जवानों ने पश्चिमी छोर से 'टाइगर हिल' पर चढ़ाई का एक कठिन व अप्रत्याशित रास्ता चुना था। इन्होंने दुश्मन के मजबूत

प्रतिरोध का सामना करते हुए, 36 घंटे की कठिन लड़ाई के पश्चात् 'टाइगर हिल' पर भारतीय तिरंगा फहराया था।

'टाइगर हिल' की लड़ाई में भारतीय सेना के अनेक जवानों ने वीरता व बलिदान का प्रदर्शन किया। देश की रक्षा के लिए अपने प्राणों की आहुति दी। इनमें से एक प्रमुख नाम 'पॉइंट 5062' के जवान योगेंद्र सिंह का है जिन्होंने 'टाइगर हिल' की लड़ाई में कई पाकिस्तानी सैनिकों को मार गिराया व कई चौकियों को तबाह किया था।

'पॉइंट 5062' में कार्यरत ग्रेनेडियर योगेंद्र सिंह यादव, घातक प्लाटून की अग्रणी टीम का हिस्सा थे। इनकी टीम को 3-4 जुलाई 1999 की रात्रि 'टाइगर हिल' को पाकिस्तानी सैनिकों से मुक्त करवाने की जिम्मेदारी सौंपी गई थी। 'टाइगर हिल' जिसे 'पॉइंट 5062' भी कहा जाता है, भारत के लद्दाख के द्रास-कारगिल क्षेत्र में 8482 फीट (2590 मीटर) ऊँचा एक पर्वत है। चूकि यह इस क्षेत्र की सबसे ऊँची चोटियों में से एक है, इसलिए यह श्रीनगर को कारगिल से जोड़ने वाले 'राष्ट्रीय राजमार्ग 1' पर पूरी नजर रखती है एवम् यह कारगिल सेक्टर का मुख्य आपूर्ति मार्ग भी है। इस चोटी पर मौजूद किसी भी दुश्मन की नज़र भारतीय सेना की 56वीं ब्रिगेड़ के मुख्यालय के साथ-साथ 25 किलोमीटर लम्बे राजमार्ग पर भी पड़ती है। 'टाइगर हिल' आस-पास की चोटियों पर निगरानी का केंद्र भी है।

'कारगिल युद्ध' के दौरान पाकिस्तानी सेना की 'नॉर्दन लाइट इन्फंट्री' ने 'टाइगर हिल' पर अनाधिकृत कब्ज़ा कर रखा था। सिख रेजिमेंट की 8वीं बटालियन ने मई 1999 के अंतिम सप्ताह में 'टाइगर हिल' को पुन: जीतने का प्रयत्न किया था किंतु दुर्भाग्यवश वे असफल रहे थे। वहां पर जमी हुई पाकिस्तानी सेना को ऊँचाई का भरपूर लाभ मिल रहा था। लेकिन भारतीय सेना भी दृढ़ संकल्प थी, इसलिए उन्होंने अगला प्रयत्न प्रारम्भ किया। सर्व प्रथम भारतीय सैनिकों ने 'टाइगर हिल' के चारों ओर खुदाई कर दी एवम् अंतिम निर्णायक प्रयास, दिनांक 3 जुलाई 1999 को भारतीय समयानुसार 17:15 बजे भारतीय

तोपखाने की गोलीबारी के साथ प्रारम्भ हुआ। 8 सिख रेजिमेंट ने 'टाइगर हिल' के बायें किनारे से ऊपर की तरफ चढ़ाई की, नागा रेजिमेंट बटालियन 'टाइगर हिल' के दायें किनारे से ऊपर की तरफ बढ़ी एवम् ग्रेनेडियर्स रेजिमेंट की 18वीं बटालियन की घातक पलटन की अल्फा व चार्ली कंपनियों के 200 सैनिकों ने सबसे कठिन 1000 फीट ऊँची खड़ी चढ़ाई, 'टाइगर हिल' के पीछे की तरफ का रास्ता चुना। दुश्मन को सपने में भी यह अनुमान नहीं था कि भारतीय सैनिक 'टाइगर हिल' के पीछे की अविश्वसनीय कठिन चढ़ाई को पार करके उस तक पहुँच जाएंगे। लेकिन, 'पॉइंट 5062' की घातक पलटन ने यह करके दिखाया एवम् यही 'टाइगर हिल' पर भारतीय सैनिकों की जीत का निर्णायक मोड़ साबित हुआ।

ग्रेनेडियर योगेंद्र सिंह यादव 'पॉइंट 5062' की इसी घातक प्लाटून का हिस्सा थे। पाकिस्तानी सेना जो कि 'टाइगर हिल' पर 1000 फीट की ऊँचाई पर बर्फ से ढके हुए बंकरों में पोजिशन लेकर बैठी हुई थी। ग्रेनेडियर योगेंद्र सिंह यादव इसी 1000 फीट की ऊँचाई पर चढ़ गये, एवम् पीछे आने वाले सैनिकों के लिए आवश्यकतानुसार रस्सियाँ बाँध दीं। जब ग्रेनेडियर योगेंद्र सिंह यादव आधे रास्ते में पहुँचे तो उनकी मूवमेंट का पाकिस्तानी सैनिकों को पता चल गया एवम् वहां बंकर में पोजिशन लेकर बैठे हुए पाकिस्तानी सैनिकों ने 'पॉइंट 5062' के सैनिकों के ऊपर मशीनगन व रॉकेट से फायर किया। जिसमें प्लाटून कमांडर व दो अन्य सैनिक शहीद हो गये, ग्रेनेडियर योगेंद्र सिंह यादव के कंधे व गले में तीन गोलियाँ लगीं एवम् वह बुरी तरह घायल हो गये। बुरी तरह घायल होने के बावजूद भी ग्रेनेडियर योगेंद्र सिंह यादव शेष 60 फीट की चढ़ाई चढ़ गये एवम् 'टाइगर हिल' के शीर्ष पर पहुँच गये। गंभीर रूप से घायल होने के बावजूद वे एक बंकर में घुस गये एवम् ग्रेनेड से हमला करके चार पाकिस्तानी सैनिकों को मार गिराया। इस हमले से पाकिस्तानी सैनिक स्तब्ध रह गये। उनके इस हमले के परिणामस्वरूप बाकी प्लाटून को चट्टान पर चढ़ने का अवसर मिल गया। घायल ग्रेनेडियर योगेंद्र सिंह यादव यहीं नहीं रुके, उन्होंने अपने दो साथियों के साथ एक अन्य दूसरे बंकर

पर तीव्र व घातक हमला किया और आमने-सामने की, गुत्थमगुत्था, हाथ से हाथ की लड़ाई में चार पाकिस्तानी सैनिकों को मार गिराया परिणामस्वरूप अंततः 'टाइगर हिल' पर भारतीय सेना ने विजय प्राप्त की। वहां पर भारतीय सेना का कब्जा हो गया और अब वहां पर आसमान में भारतीय ध्वज तिरंगा शान से लहरा रहा था। इस लड़ाई में ग्रेनेडियर योगेंद्र सिंह 14 गोलियाँ और लगीं थीं।

अपने प्राणों की परवाह न करते हुए, दुश्मन की 17 गोलियाँ झेलकर भी अदम्य साहस का परिचय देते हुए, 'कारगिल युद्ध' में अनुकरणीय भूमिका निभाने के परिणामस्वरूप भारत के राष्ट्रपति द्वारा ग्रेनेडियर योगेंद्र सिंह यादव को सर्वोच्च वीरता सम्मान 'परमवीर चक्र' से सम्मानित किया गया। वह 'परमवीर चक्र' से सुशोभित होने वाले देश के सबसे युवा सैनिक भी बने। ग्रेनेडियर योगेंद्र सिंह यादव को **''टाइगर हिल' का टाइगर'** की उपाधि भी दी गयी। देश सेवा के लिए वर्ष 2014 में इनको उत्तर प्रदेश सरकार द्वारा, प्रदेश के सर्वोच्च पुरस्कार 'यश भारती' से भी सम्मानित किया गया। भारत माँ के इस वीर सपूत को कोटि-कोटि नमन है।

'टाइगर हिल' की लड़ाई की विजय ने न केवल भारतीय सेना का मनोबल बढ़ाया बल्कि सम्पूर्ण विश्व को यह भी साबित करके दिखाया कि वीर भारतीय सेना किसी भी परिस्थिति में, किसी भी चुनौती का सामना करने में सक्षम है। 'टाइगर हिल' की लड़ाई व विजय भारतीय सेना की वीरता व बलिदान का एक उत्कृष्ट उदाहरण है। भारतीय सेना को कोटि-कोटि नमन है।

दो महीनों के संघर्ष के पश्चात् वीर भारतीय सेना ने उन अधिकांश पहाड़ियों पर फिर से कब्ज़ा कर लिया था जिनपर पाकिस्तानी सेना ने अनाधिकृत कब्ज़ा किया हुआ था। एक अधिकारिक गणना के अनुसार 75-80% घुसपैठ वाला क्षेत्र व अधिकांश ऊँची पहाड़ी चोटियाँ वीर भारतीय सेना ने अपने नियंत्रण में वापस ले ली थीं।

'पॉइंट 4875' की लड़ाई

'टाइगर हिल' की विजय के पश्चात्, अगला महत्वपूर्ण उद्देश्य मश्कोह घाटी के उत्तर पश्चिम में स्थित 'पॉइंट 4875' पर कब्ज़ा करना था। पुन: वीरता की प्रतीक '13 जे एण्ड के राइफल्स' को यह जिम्मेदारी सौंपी गई। दिनांक 04 जुलाई 1999 को '13 जे एण्ड के राइफल्स' ने मश्कोह घाटी में पाकिस्तानी सेना के विरुद्ध युद्ध का शंखनाद किया। कई घंटे की भीषण लड़ाई के पश्चात् '13 जे एण्ड के राइफल्स' को सफलता नहीं मिली। दिनांक 05 जुलाई 1999 को रात भर बेहद करीबी लड़ाई हुई। पाकिस्तानी सेना इतने करीब थी कि छोटे हथियारों की गोलीबारी के साथ-साथ पूरी रात मौखिक आदान-प्रदान होता रहा था। लड़ाई के दौरान यह ज्ञात हुआ कि 'पॉइंट 4875' के ठीक उत्तर में कब्ज़ा किया जाना इस लड़ाई को जीतने के लिये अति आवश्यक है। घायल कैप्टन विक्रम बत्रा ने स्वेच्छा से इस 'पॉइंट 4875' पर हमले का नेतृत्व किया। दिनांक 7 जुलाई 1999 को 'स्नाइपर' और 'आर पी जी' की गोलीबारी में भारत माँ का वीर सपूत कैप्टन विक्रम बत्रा शहीद हो गए। उनकी शहादत ने 'पॉइंट 4875' पर भारतीय सेना की जीत सुनिश्चित की।

'एरिया फ्लैट टॉप'

भारतीय जीत 'एरिया फ्लैट टॉप' पर कब्जा किये बिना पूर्ण नहीं थी। क्योंकि 'एरिया फ्लैट टॉप', 'पॉइंट 4875' पर पाकिस्तानी सेना की सुरक्षा का निकटवर्ती शिखर स्थान था। '13 जे एण्ड के राइफल्स' ने पाकिस्तानी सेना के साथ भीषण युद्ध किया एवम् दिनांक 05 जुलाई की दोपहर को 'पॉइंट 4875' के 'एरिया फ्लैट टॉप' पर अपना कब्जा कर लिया। लेकिन पाकिस्तानी सैनिकों ने हारे हुए 'एरिया फ्लैट टॉप' को वापस पाने के लिए भारतीय सेना पर तत्काल तीव्र जवाबी हमला किया। वहां पर मौजूद कैप्टन एन्. ए. नागप्पा ने पाकिस्तानी सेना के हमले का मुँहतोड़ जवाब दिया एवम् 'एरिया फ्लैट टॉप' पर भारतीय सेना का कब्जा बरकरार रखा। लेकिन इस हमले के दौरान कैप्टन एन्. ए. नागप्पा गंभीर रूप से

घायल एवम् अक्षम हो गये। इस स्थिति का लाभ उठाते हुए पाकिस्तानी सैनिकों ने पुन: 'एरिया फ्लैट टॉप' को पाने के लिए तेजी से चढ़ाई शुरू कर दी।

इस समय घायल कैप्टन बत्रा मुश्कोह नाले के पास एक स्लीपिंग बैग में लेटे हुए थे। थकान से चकनाचूर एवम् बुखार से भी पीड़ित थे। उनके कमांडिंग ऑफिसर ने उन्हें आराम करने का आदेश दिया था। (इसी बीच उनकी बटालियन '13 जे एण्ड के राइफल्स' ने 'पॉइंट 4875' पर हमला शुरू कर दिया था।) लेकिन कैप्टन बत्रा बेस से भी स्थिति पर नजर रखे हुए थे।

इसी समय सूचना प्राप्त हुई कि पाकिस्तानी सैनिकों ने 'एरिया फ्लैट टॉप' पर दूसरा जवाबी हमला किया है एवम् भारतीय सैनिकों ने इस हमले को भी विफल बना दिया है। लेकिन भारतीय सैनिकों को 'एरिया फ्लैट टॉप' पर कब्जा बनाये रखने के लिए तत्काल सहायता की आवश्यकता है।

यह सूचना प्राप्त होते ही 'पॉइंट 5140' की लड़ाई में घायल हुए कैप्टन बत्रा अपनी थकान व बुखार व चोटों की परवाह न करते हुए अपने कमांडिंग ऑफिसर के पास गए एवम् 'एरिया फ्लैट टॉप' पर चल रहे भीषण युद्ध में भाग लेने हेतु आज्ञा माँगी। उनके कमांडिंग ऑफिसर नहीं चाहते थे कि थकान से चकनाचूर एवम् बुखार से पीड़ित कैप्टन बत्रा युद्ध में भाग लें। इसलिए उन्होंने कैप्टन बत्रा के अनुरोध को अस्वीकार कर दिया एवम् उन्हें पुन: आराम करने की सलाह दी। लेकिन कैप्टन बत्रा के बार-बार जोरदार अनुरोध करने पर कमांडिंग ऑफिसर ने उनकी बात मान ली एवम् उन्हें 'एरिया फ्लैट टॉप' पर चल रहे युद्ध में भाग लेने की अनुमति प्रदान की।

अनुमति प्राप्त होते ही कैप्टन बत्रा ने 'डेल्टा कंपनी' के 25 सैनिकों के साथ अपनी टीम तैयार की एवम् सभी के साथ दुर्गा मंदिर में पूजा-प्रार्थना की। जब कैप्टन बत्रा ने अपनी टीम के साथ चढ़ाई शुरू की उस समय काफी गहरी रात थी।

बेस से वायरलेस पर संदेश दिया गया कि 'शेर शाह' (कैप्टन बत्रा का कोड नाम) आ रहा है। शीर्ष पर पाकिस्तानी सेना का मुकाबला कर रहे भारतीय सैनिकों

में खुशी की लहर दौड़ गई। उन्हें आदेश दिया गया कि 'शेर शाह' के आने तक जमीन पर लेटे रहें व मजबूती से अपनी स्थिति को संभालें, फिर 'शेर शाह' कमान संभाल लेंगे।

घायल कैप्टन विक्रम बत्रा अपने साथियों के पास उनकी सहायता हेतु जल्द से जल्द पहाड़ी की चोटी पर पहुँचना चाहते थे। रास्ते में एक स्थान पर कैप्टन विक्रम बत्रा ने देखा कि पाकिस्तानी सैनिक एक स्थान पर चट्टान के पीछे से मशीनगन से भारतीय सैनिकों पर गोलियाँ बरसा रहे थे, जिससे भारतीय सैनिक एक स्थान पर फँसे हुए थे एवम् आगे बढ़ नहीं पा रहे थे। कैप्टन विक्रम बत्रा अपनी जान की परवाह न करते हुए झुककर रेंगते हुए उस चट्टान के पीछे पहुँच गए, जहां पर पाकिस्तानी सेना की मशीनगन लगी हुई थी एवम् वहां से लगातार गोलीबारी हो रही थी। मशीनगन की स्थिति से उचित दूरी पर पहुँचकर कैप्टन विक्रम बत्रा ने एक ग्रेनेड मशीनगन की तरफ उछाल दिया। एक जोरदार धमाके के साथ दुश्मन की यह पोजिशन नष्ट हो गई। उस चट्टान के पीछे मौजूद समस्त पाकिस्तानी सैनिक मारे गये।

इस प्रकार दिनांक 07 जुलाई 1999 की भोर की पहली किरण निकलने से पहले ही पाकिस्तानी सैनिकों के दो अन्य महत्वपूर्ण ठिकानों को नष्ट करने में सफलता प्राप्त की। इन दोनों ठिकानों से मशीनगन द्वारा भारतीय सेना पर भारी गोलीबारी हो रही थी। लेकिन एक दूसरे किनारे से पाकिस्तानी सेना की गोलीबारी लगातार जारी थी। अब दिन का उजाला हो चुका था।

प्रात: 05:30 बजे लेफ्टिनंट कर्नल जोशी ने कैप्टन विक्रम बत्रा से बात की एवम् उन्हें इलाके की जानकारी ज्ञात करके उचित कदम उठाने के लिए कहा। कैप्टन बत्रा, सुबेदार रघुनाथ सिंह एवम् आर्टिलरी ऑबज़र्वेशन ऑफिसर मेजर भट के साथ एक इलाके की टोह लेने के लिए गश्त पर निकल पड़े। उन्होंने उस स्थान का पता लगा लिया जहां से दुश्मन की मशीनगनें उनकी कंपनी को आगे बढ़ने से रोक रही थीं। एक मोड़ पर आकर कैप्टन विक्रम बत्रा ने महसूस किया कि दुश्मन की पोजीशन पर दायें या बायें से हमला करने का कोई रास्ता ही नहीं

था । इसलिए उन्होंने दिन के उजाले में दुश्मन के ऊपर सीधा हमला करने का खतरनाक व साहसी निर्णय लिया । इस समय कैप्टन विक्रम बत्रा के ऊपर एक जुनून सवार था । वे किसी भी कीमत पर दुश्मन को भारत की भूमि से खदेड़ना चाहते थे । इसलिए वे अपनी जान की परवाह न करते हुए लगातार आगे बढ़ना चाहते थे जबकि वे इस समय अस्वस्थ व घायल थे, किंतु घायल शेर और भी खतरनाक हो चुका था ।

पाकिस्तानी सैनिकों की मशीनगनों व ग्रेनेड़ फायरिंग लांचरों से भारी गोलाबारी के बीच से रास्ता बनाते हुए कैप्टन बत्रा आगे बढ़े । इस दौरान उन्हें गंभीर चोटें भी आयीं । फिर भी इस देश के सपूत, घायल हो चुके शेर ने गश्ती दल की सहायता से दुश्मन के ऊपर अपना आक्रमण जारी रखा एवम् दुश्मन के बेहद नजदीक पहुँचकर किए गए हमले में सात पाकिस्तानी सैनिकों को मार गिराया।

इस अप्रत्याशित हमले से आश्चर्यचकित होकर पाकिस्तानी सेना ने वहां से पीछे हटना शुरु कर दिया । अब उस स्थान पर भारतीय सेना का कब्ज़ा था । हालांकि उस कगार पर अभी भी एक स्थान से दुश्मन की मशीनगन फायरिंग कर रही थी, जिसे शांत करना अति आवश्यक था ।

कैप्टन विक्रम बत्रा को ज्ञात हुआ कि इस हमले में उनके साथी सैनिक को गोली लगी है । उन्होंने सुबेदार रघुनाथ सिंह के साथ उस घायल साथी सैनिक को वहां से सुरक्षित बाहर निकालने का दृढ़ संकल्प लिया । इसके लिए वे दुश्मन के काफ़ी करीब चले गए और तभी एक पाकिस्तानी सैनिक ने बहुत करीब से स्नाइपर से कैप्टन विक्रम बत्रा के सीने में गोली मार दी एवम् कुछ ही सेकंड बाद आर पी जी से एक छर्रा उनके सिर में जा लगा । कैप्टन विक्रम बत्रा घायल सैनिक के बगल में ही गिर पड़े और भारत माँ के इस वीर सपूत ने दम तोड़ दिया । कैप्टन विक्रम बत्रा अपनी आखिरी साँस तक देश की सुरक्षा के लिए लड़ते हुए शहीद हो गए । भारत माँ के इस वीर सपूत का नाम इतिहास में स्वर्ण अक्षरों से अंकित किया जाएगा । हमारी आने वाली पीढ़ियाँ शायद इस बात पर मुश्किल से विश्वास कर पाएंगी कि हमारे जैसे इस हाड़ माँस के शरीर में कैप्टन विक्रम बत्रा जैसा वीर

सैनिक भी जन्मा था, जिसे अपनी मातृभूमि की रक्षा के लिए अपने प्राणों से लेशमात्र का भी मोह नहीं था। धन्य हैं आप कैप्टन विक्रम बत्रा ! आपको कोटि-कोटि नमन है। जिस समय कैप्टन विक्रम बत्रा शहीद हुए उनकी आयु मात्र 24 वर्ष 8 माह की थी।

कैप्टन विक्रम बत्रा को दुश्मन के सामने सर्वोच्च व्यक्तिगत बहादुरी और नेतृत्व का प्रदर्शन करने हेतु, भारत की स्वतंत्रता की 52वीं वर्षगांठ पर 15 अगस्त 1999 को भारत के सर्वोच्च सैन्य सम्मान 'परमवीर चक्र' से सम्मानित किया गया।

उनके सम्मान में परम योद्धा स्थल, राष्ट्रीय युद्ध स्मारक, नई दिल्ली में कैप्टन विक्रम बत्रा (PVC) की प्रतिमा को स्थापित किया गया।

कैप्टन विक्रम बत्रा (PVC) सहित युद्ध के दिग्गजों के लिए उनके विद्यालय डीएवी कॉलेज, चंडीगढ़ में एक स्मारक बनाया गया।

भारतीय सैनिक अकादमी में कैप्टन विक्रम बत्रा (PVC) मेस बनाया गया।

कैप्टन विक्रम बत्रा (PVC) की वीरता व समर्पण की शौर्य गाथा भारतीय जनमानस तक पहुँचे इसलिए उनके सम्मान में कई स्मारकों का नाम, उनके नाम पर रखकर उन्हें सम्मानित किया गया।

- 'पॉइंट 4875' पर ऐतिहासिक जीत के पश्चात् उनके सम्मान में उस पर्वत का नाम 'बत्रा टॉप' रखा गया।
- प्रयागराज स्थित "सेवा चयन केंद्र" के एक हॉल का नाम "विक्रम बत्रा ब्लॉक" रखा गया।
- जबलपुर स्थित एक आवासीय क्षेत्र का नाम "कैप्टन विक्रम बत्रा एन्क्लेव" है।
- भारतीय मिलिट्री एकेडमी (IMA) के एक संयुक्त मेस का नाम 'विक्रम बत्रा मेस' है।

- जम्मू और कश्मीर (केंद्र शासित प्रदेश) स्थित युद्ध स्मारक, बलिदान स्तंभ ने 2009 में उन्हें श्रद्धांजलि अर्पित की एवम् 13 जम्मू और कश्मीर राइफल्स के शहीदों के साथ स्तंभों पर उनका नाम अंकित किया गया। उनका नाम भी अनंत ज्वाला के पास अंकित किया गया तथा साथ ही बाहरी पृष्ठभूमि की दीवार पर उनका एक चित्र भी लगाया गया, जिस पर जम्मू और कश्मीर में शहीद हुए 'परमवीर चक्र' विजेताओं की तस्वीरें हैं।
- कैप्टन विक्रम सहित युद्ध के दिग्गजों के लिए एक स्मारक उनके विद्यालय डीएवी कॉलेज, चंडीगढ़ में बनाया गया है जो वीर सैनिकों की सेवाओं व बलिदान के सम्मान का प्रतीक है।
- राजकीय महाविद्यालय पालमपुर का नाम बदलकर "शहीद कैप्टन विक्रम बत्रा राजकीय महाविद्यालय, पालमपुर" कर दिया गया है।
- दिसम्बर 2019 में बत्रा के सम्मान में नई दिल्ली के 'मुकरबा चौक' और उसके फ्लाईओवर का नाम बदलकर "शहीद कैप्टन विक्रम बत्रा चौक" कर दिया गया।
- पालमपुर स्थित स्टेडियम का नाम "शहीद कैप्टन विक्रम बत्रा स्टेडियम" रखा गया।
- पंजाब विश्वविद्यालय, चंडीगढ़ ने बत्रा के सम्मान में अत्याधुनिक इनडोर शूटिंग रेंज समर्पित की।
- भारतीय सेना ने अपने सोशल मीडिया अकाउंट पर पोस्ट किये गये एक वीडियो में परम वीर चक्र विजेता कैप्टन विक्रम बत्रा (पी वी सी) की 21 वीं पुण्यतिथि पर उन्हें श्रद्धांजलि दी। इस वीडियो में उनका प्रसिद्ध वाक्य **'ये दिल मांगे मोर'** शामिल था। इस पोस्ट में सभी वर्ग व आयु के लोग 'मैं विक्रम बत्रा हूँ' कहते हुए दिखाई दिये।
- कैप्टन विक्रम बत्रा के बलिदान के 22 वर्ष पूरे होने के उपलक्ष्य में, उनके पूर्व कमांडिंग ऑफिसर व वर्तमान में उत्तरी कमांड के सेना कमांडर

लेफ्टिनेंट जनरल योगेश कुमार जोशी ने 'सुखाई-30 एम के आई' में प्रसिद्ध "बत्रा टॉप" के ऊपर से उड़ान भरी एवम् आसमान से राष्ट्र के नायक को श्रद्धांजलि अर्पित की।

- 'परमवीर चक्र' (PVC) कैप्टन विक्रम बत्रा, की एक प्रतिमा का अनावरण कारगिल दिवस की पूर्व संध्या पर पालमपुर सैन्य स्टेशन में किया गया।
- यू आर एस वर्ल्ड रेकॉर्ड्स (यूनिवर्सल रिकॉर्ड्स फोरम) द्वारा दिनांक 26 जुलाई 2022 को कारगिल दिवस की पूर्व संध्या पर पैंगोडे मिलिट्री स्टेशन, तिरुवनंतपुरम, केरल के स्विमिंग पुल में पानी के नीचे कैप्टन विक्रम बत्रा के सबसे बड़े चित्र को स्थापित किया गया।
- पराक्रम दिवस के अवसर पर, भारत सरकार द्वारा यह घोषणा की गई कि "अंदमान व निकोबार" में स्थित 21 सबसे बड़े अनाम द्वीपों का नामकरण 21 'परमवीर चक्र' पुरस्कार विजेताओं के नाम पर किया जाएगा। इसी घोषणा के अंतर्गत एक द्वीप का नाम कैप्टन विक्रम बत्रा (पी वी सी) के नाम पर "बत्रा द्वीप" रखा गया है।

पहला युद्ध विराम :

'पॉइंट 4875' पर भारतीय सेना का अधिकार सुनिश्चित हो चुका था। यहां पर भारतीय झंडा एक बार पुन: लहरा रहा था तथा यहां की हवाओं में 13 जम्मू और कश्मीर राष्ट्रीय राइफल्स की वीरता की महक आ रही थी। भारतीय सेना का विजय रथ आगे बढ़ चला। दिनांक 04 जुलाई से 12 जुलाई 1999 के बीच 17 जाट और 2 नागा रेजिमेंट ने 'पॉइंट 4875' से सटी पहाड़ी चोटियों पर हमला जारी रखा और सफलता प्राप्त की।

06 पैरा एस एफ व 07 पैरा एस एफ ने 'पॉइंट 4700' पहाड़ी पर हमला किया। लेकिन उसी समय भारत सरकार की तरफ से 12 जुलाई को युद्ध विराम की घोषणा कर दी गई। परिणामस्वरूप, 06 पैरा एस एफ व 07 पैरा एस एफ को अपना विजय अभियान बीच में ही स्थगित करना पड़ा। किंतु पाकिस्तानी सरकार

ने युद्ध विराम का सम्मान नहीं किया और पाकिस्तानी सेना को पीछे हटने का आदेश नहीं दिया। परिणामस्वरूप, 06 पैरा एस एफ व 07 पैरा एस एफ ने पुन: अपना विजय अभियान प्रारम्भ किया। अब कि बार हमला पहले से भी तीव्र था। एक बार पुन: पाकिस्तानी सेना को बुरी तरह पराजित होना पड़ा व पीछे हटना पड़ा। पाकिस्तानी सेना, भारतीय सेना का मुकाबला करने में पूर्णतः: असफल हो गई और वहां से पीठ दिखाकर भाग गई। अब 'पॉइंट 4700' पर भी भारतीय सेना का अधिकार था और वहां पर भी तिरंगा शान से लहरा रहा था।

'जुलु स्पर' की लड़ाई

पाकिस्तानी सेना के पीछे हटने से इनकार करने के परिणामस्वरूप 192 माउंटेन ब्रिगेड़ के ब्रिगेड़ कमांडर की कमान में वीरता की प्रतीक 3 गोरखा राइफल्स और 9 पैरा एस एफ ने 'जुलु स्पर' पर जमी पाकिस्तानी सेना के खिलाफ प्रचंड हमला किया एवम् पाकिस्तानी सेना के पैर जमीन से उखाड़ दिये। पाकिस्तानी सेना, भारतीय सेना का मुकाबला करने में पूर्णतः असफल रही और वहां से भी पीठ दिखाकर भाग गई एवम् दिनांक 25 जुलाई 1999 को 'जुलु स्पर' पर भारतीय सेना की विजय गाथा के साथ भारतीय ध्वज तिरंगा शान से लहरा रहा था और कह रहा था कि जिस देश में भारतीय सेना जैसी सेना हो, वहां पर विजय निश्चित है।

'बटालिक सेक्टर' में ऑपरेशन

पॉइंट 5203 की लड़ाई

दिनांक 29 मई 1999 को 'बटालिक सेक्टर' में पाकिस्तानी सेना के विरूद्ध भारतीय सेना ने अपना ऑपरेशन प्रारंभ किया। 70 इन्फैंट्री ब्रिगेड की 1 बिहार रेजिमेंट ने वहां पर जमी हुई पाकिस्तानी सेना पर जोरदार आक्रमण किया एवम् सीमा के पश्चिमी भाग में पॉइंट 5203 सहित कई चौकियों पर कब्जा कर लिया। लेकिन अपनी हार से बौखलाई पाकिस्तानी सेना ने जोरदार पलटवार किया एवम्

भारतीय सेना को वहां से पुन: पीछे हटना पड़ा। भारतीय सेना ने दृढ़ संकल्प के साथ पुन: रणनीति बनाई एवम् दिनांक 01 जून 1999 को पुन: पाकिस्तानी सेना के विरुद्ध आक्रमण किया। अब कि बार 12 जम्मू और कश्मीर राइफल्स एवम् 5 पॅरा एस एफ ने पूर्वी हिस्से पर हमला किया एवम् सफलतापूर्वक 'पॉइंट 5390' पर जीत हासिल की। तत्पश्चात दिनांक 06 जून 1999 को पुन: 'पॉइंट 5203' पर हमला करने का निर्णय लिया गया। इस बार हमला पहले से भी अधिक आक्रामक था। पाकिस्तानी सेना भी प्रत्येक हमले का जवाब दे रही थी एवम् 'पॉइंट 5203' से पीछे हटने को तैयार नहीं थी। अब लद्दाख स्काउटस भी भारतीय सेना के पक्ष में शामिल हो गया। भारी हताहतों के साथ भीषण लड़ाई जारी रही। दिनांक 21 जून 1999 को भारतीय सेना ने पुन: 'पॉइंट 5203' पर जीत हासिल की एवम् 'पॉइंट 5203' पर भारतीय ध्वज तिरंगा लहराया।

'पॉइंट 4812' की लड़ाई

अब भारतीय सेना का अगला सबसे महत्वपूर्ण उद्देश्य 'पॉइंट 4812' को पाकिस्तानी सेना के कब्जे से मुक्त करवाना था। यहां पर पाकिस्तानी सेना मजबूत स्थिति में थी एवम् पाकिस्तानी के दृष्टिकोण से यह एक प्रभावशाली स्थिति थी। भारतीय सेना ने 'पॉइंट 4812' की जीत के लिए उपयुक्त रणनीति बनाई। 70 इन्फैंट्री ब्रिगेड की चार बेहतरीन बटालियनों को दिनांक 30 जून 1999 को 'पॉइंट 4812' पर हमले की जिम्मेदारी दी गई। यहां पर एक बार पुन: भारतीय सेना ने पराक्रम दिखाया एवम् एक भीषण युद्ध के पश्चात् भारतीय सेना ने पाकिस्तानी सेना को पराजित किया एवम् दिनांक 06 जुलाई 1999 को भारत की आन-बान और शान तिरंगा यहां पर लहरा रहा था।

'जुबार' की लड़ाई

बटालिक सीमांत क्षेत्र में अब मात्र 'जुबार की चोटी' पर पाकिस्तानी सेना का कब्जा था। अब भारतीय सेना का पूरा ध्यान 'जुबार की चोटी' पर विजय

प्राप्त करना था। इस स्थान की संरचना अब तक भारतीय सेना द्वारा जीते गये स्थानों से एकदम भिन्न थी। इसके लिए भारतीय सेना ने पुन: उपयुक्त रणनीति तैयार की। इस रणनीति के तहत वायु सेना, तोपखाने व '01 बिहार रेजिमेंट' ने आपसी तालमेल से 'जुबार की चोटी' पर दिनांक 29 जून 1999 को हमला किया। पाकिस्तानी सेना ने भारतीय हमले का मुकाबला करने का भरपूर प्रयत्न किया, लेकिन पूर्णतया असफल रही और दिनांक 07 जुलाई 1999 को वीरता का प्रतीक भारतीय ध्वज तिरंगा 'जुबार की चोटी' पर लहरा रहा था।

अंतिम युद्ध विराम

जैसे ही द्रास उप क्षेत्र को पाकिस्तानी सेना से मुक्त करवाया गया, दिनांक 26 जुलाई 1999 को लड़ाई बंद हो गई। दिनांक 27 जुलाई 1999 को पाकिस्तानी सेना ने फ्लैग मीटिंग का अनुरोध किया और पाकिस्तानी शहीद सैनिकों के शवों को इकट्ठा करने की अनुमति माँगी। पराजित पाकिस्तानी सेना के इस अनुरोध को भारत ने स्वीकार कर लिया।

फ्लैग मीटिंग के पश्चात् पराजित पाकिस्तानी सेना युद्ध विराम की शर्तों का पूर्णतः पालन करने के लिए सहमत हो गई एवम् भारतीय क्षेत्र से पीछे हट गई।

कारगिल में अपनी लगातार सैन्य पराजय, अंतर्राष्ट्रीय क्षेत्र में कूटनीतिक पराजय, अपनी कमजोर आर्थिक स्थिति एवम् अपने विरुद्ध बढ़ते अंतर्राष्ट्रीय दबाव के मद्देनजर पाकिस्तानी सेना को एल ओ सी-लाइन ऑफ कंट्रोल के भारतीय अधिकार के क्षेत्रों से वापसी के लिए मजबूर होना पड़ा एवम् **तब से दिनांक 26 जुलाई को 'कारगिल विजय दिवस' के रूप में मनाया जाता है।**

दिनांक 26 जुलाई 1999 को 'कारगिल युद्ध' अधिकारिक रूप से समाप्त हो गया। भारतीय सेना ने पाकिस्तानी अनियमित और नियमित सैनिक बलों की पूरी तरह वापसी की घोषणा की।

इस युद्ध के माध्यम से सम्पूर्ण विश्व ने भारतीय सेना की वीरता, युद्ध कौशल, निडरता व दृढ़ संकल्प देखा।

'कारगिल युद्ध' के दौरान, सम्पूर्ण भारत में, प्रत्येक जनमानस के हृदय में देशभक्ति अपने पूर्ण उफान पर थी। 'अनेकता में एकता' को सिद्ध करते हुए, भारत का कण-कण एक सूत्र में पिरोया हुआ प्रतीत हो रहा था। इस समय भारत के पास यह अवसर था कि वह 'कारगिल युद्ध' की समाप्ति की घोषणा नहीं करता एवम् युद्ध व कूटनीति के माध्यम से पाकिस्तान को पूर्णतया बरबाद करता जिससे वह भविष्य में कभी भी अकारण भारत के विरुद्ध किसी भी प्रकार की कार्यवाही करने से डरता। किंतु भारत सरकार ने पुन: वही गलती दोहराई जैसी कि 1947 में भारत-पाक युद्ध के दौरान जब भारतीय सेना जीत रही थी, तब दिनांक 31 अगस्त 1948 को युद्ध विराम की घोषणा की गई। परिणामस्वरूप श्रीनगर का एक भाग पाकिस्तान के कब्ज़े में रह गया जोकि पाक कार्यवाही कश्मीर कहलाया और यह मुद्दा आज हमारे लिए एक बहुत बड़ा सिर दर्द बन चुका है।

अब कुछ रक्षा विशेषज्ञ इस बात का ज्ञान देंगे कि चूंकि भारत व पाकिस्तान, दोनों ही परमाणु सम्पन्न देश थे। भारत ने 1974 में अपना पहला परमाणु परीक्षण किया था जबकि पाकिस्तान ने 1998 में अपना पहला परमाणु परीक्षण किया था एवम् पाकिस्तान ने अपने परमाणु परीक्षण के एक वर्ष उपरांत 'कारगिल युद्ध' प्रारम्भ किया था। अतएव परमाणु युद्ध से बचने के लिए भारत ने युद्ध विराम का प्रस्ताव स्वीकार किया था जबकि सच्चाई यह है कि 'कारगिल युद्ध' के दौरान पाकिस्तान के परमाणु हथियार, युद्ध में इस्तेमाल किये जाने की स्थिति में थे ही नहीं। परवेज़ मुशर्रफ़ ने अपने संस्मरणों में खुलासा किया था कि 'कारगिल युद्ध' के दौरान पाकिस्तान की परमाणु वितरण प्रणाली उपयोग किये जाने की स्थिति में नहीं थी। अतएव यदि 'कारगिल युद्ध' न रुकता तो पाकिस्तान को गंभीर नुकसान होता। 'कारगिल युद्ध' में भारतीय सेना के अपेक्षा से अधिक सैनिक वीरगति को प्राप्त हुए, जिसमें एक बड़ा प्रतिशत नए नौजवान कमीशन प्राप्त अधिकारी थे। भारत सरकार को कम से कम शहीद वीर भारतीय सैनिकों की शहादत को ध्यान

में रखते हुए ‘कारगिल युद्ध’ को बंद नहीं करना चाहिए था बल्कि पाकिस्तान को समूल नष्ट कर देना चाहिए था।

किंतु भारत सरकार ने इस महत्वपूर्ण पहलू पर ग़ौर नहीं किया एवम् पाकिस्तान को भारत के विरुद्ध अगले हमले की तैयारी का अवसर थाली में सजाकर दे दिया।

विभिन्न स्रोतों के द्वारा उपलब्ध कराए गए अलग-अलग आँकड़ों के कारण ‘कारगिल युद्ध’ में घायल व वीरगति को प्राप्त सैनिकों की संख्या का निर्धारण करना मुश्किल है। फिर भी प्राप्त आधिकारिक आँकड़ों के अनुसार भारतीय सेना के हताहतों का आँकड़ा 1363 घायल एवम् 527 वीरगति को प्राप्त (मृत) बताया गया है।

पाकिस्तान में अलग-अलग व्यक्तियों ने अलग-अलग आँकड़े प्रदान किए हैं। पाकिस्तान के तत्कालीन प्रधानमंत्री नवाज़ शरीफ़ के अनुसार ‘कारगिल युद्ध’ में पाकिस्तानी सेना के 4000 से अधिक सैनिक, भारतीय सेना के हाथों मारे गए। उनकी पार्टी पाकिस्तान मुस्लिम लीग (नवाज) [PML(N)] ने ‘कारगिल युद्ध’ पर अपने ‘श्वेत पत्र’ में उल्लेख किया है कि 3000 से ज्यादा पाकिस्तानी अधिकारी, सैनिक व मुजाहिदीन मारे गये। भारतीय अनुमान के अनुसार 1042 पाकिस्तानी सैनिक मारे गये। जबकि परवेज़ मुशर्रफ़ ने अपने संस्मरणों के हिंदी संस्करण ‘अग्निपथ’ में सभी अनुमानों से अलग हटकर बताया कि ‘कारगिल युद्ध’ में 357 पाकिस्तानी सैनिक मारे गए एवम् 665 घायल हुए।

भारत सरकार ने ‘कारगिल युद्ध’ में शहीद सैनिकों के सम्मान में ‘कारगिल युद्ध स्मारक’ का निर्माण करवाया। यह स्मारक ‘टोलोलिंग’ पहाड़ी की तलहटी में द्रास में स्थित है। इस स्मारक की दीवार पर ‘कारगिल युद्ध’ में शहीद सैनिकों के नाम अंकित हैं। 20वीं सदी के सुप्रसिद्ध हिंदी कवि श्री माखनलाल चतुर्वेदी की एक कविता ‘पुष्प की अभिलाषा’ को स्मारक के प्रवेश द्वार पर अंकित किया गया है। इसके साथ ही ‘कारगिल युद्ध’ स्मारक से जुड़ा एक संग्रहालय भी यहां

बनाया गया है। इस संग्रहालय में भारतीय सैनिकों की तस्वीरें, महत्वपूर्ण युद्ध दस्तावेज़ व रिकॉर्डिंग के अभिलेखागार, ज़ब्त पाकिस्तानी युद्ध उपकरण व 'कारगिल युद्ध' से सेना के आधिकारिक प्रतीक इत्यादि हैं।

'कारगिल युद्ध' में भारत की विजय की 13वीं वर्षगाँठ मनाने के लिए 'कारगिल विजय दिवस' के अवसर पर 'कारगिल युद्ध' स्मारक पर 15 किलोग्राम वजन का एक विशाल राष्ट्रीय ध्वज तिरंगा फहराया गया था।

'कारगिल युद्ध' के परिणामस्वरूप पहले से ही कमज़ोर पाकिस्तान की अर्थव्यवस्था और अधिक कमज़ोर हो गई। भारतीय सेना से मिली पराजय व वापसी के कारण पाकिस्तानी सेना का मनोबल गिर गया। इस युद्ध में पाकिस्तानी सेना की 'नॉर्दन लाइट इन्फैंट्री' को बड़ा भारी नुकसान हुआ। पाकिस्तानी सरकार ने 'कारगिल युद्ध' में मारे गए कई पाकिस्तानी अधिकारियों के शवों को लेने से इनकार कर दिया, जिसके कारण पाकिस्तान में जन आक्रोश भड़क गया जबकि इसके उलट पाकिस्तानी प्रधानमंत्री नवाज़ शरीफ़ ने स्वयं स्वीकार किया था कि 'कारगिल युद्ध' में 4000 से अधिक पाकिस्तानी सैनिक मारे गए हैं। इसके अतिरिक्त स्वयं को परमाणु सम्पन्न राष्ट्र घोषित करने के (एक वर्ष पश्चात्) फौरन बाद भारत के खिलाफ युद्ध प्रारंभ करने के कारण पाकिस्तान को अंतर्राष्ट्रीय स्तर पर कूटनीतिक व सैन्य रूप से अपमानित भी होना पड़ा।

'कारगिल युद्ध' की आधारशिला रखने हेतु पाकिस्तानी सरकार व पाकिस्तानी सेना, दोनों के बीच परस्पर विरोधाभास रहा। पाकिस्तान के प्रधानमंत्री नवाज़ शरीफ़ का कहना था कि 'कारगिल युद्ध' के संदर्भ में उन्हें कुछ भी नहीं बताया गया था। जबकि पाकिस्तानी सेना प्रमुख जनरल परवेज़ मुशर्रफ़ का कहना था कि 'कारगिल युद्ध' के संदर्भ में प्रधानमंत्री मियां नवाज़ शरीफ़ को सही समय पर उचित जानकारी प्रदान कर दी गई थी एवम् उनकी स्वीकृति भी थी।

ठीक इसी प्रकार कारगिल से पाकिस्तानी सेना की वापसी को लेकर पाकिस्तानी सरकार व पाकिस्तानी सेना के बीच परस्पर विरोधाभास ही रहा।

पाकिस्तानी सैन्य नेतृत्व का यह बयान था कि प्रधानमंत्री नवाज़ शरीफ़ के पाकिस्तानी सेना को कारगिल से वापस बुलाने के उनके इस फैसले से वे निराश हैं व संतुष्ट नहीं हैं। जबकि जनरल परवेज़ मुशर्रफ़ के करीबी दोस्त और पूर्व अमेरिकी सेंटकाम कमांडर जनरल एंथनी जिन्नी, प्रधानमंत्री नवाज़ शरीफ़ और कुछ अन्य लेखकों का कहना था कि जनरल परवेज़ मुशर्रफ़ ने ही प्रधानमंत्री नवाज़ शरीफ़ से पाकिस्तानी सेना को कारगिल से वापस बुलाने का अनुरोध किया था।

एक रिपोर्ट के अनुसार पाकिस्तान के संयुक्त मुख्यालय में आयोजित 'राष्ट्रीय सुरक्षा बैठक', जिसमें पाकिस्तानी प्रधानमंत्री नवाज़ शरीफ़ व जनरल परवेज़ मुशर्रफ़ उपस्थित थे। इस बैठक में पाकिस्तानी नौसेना प्रमुख एडमिरल फ़सीह बोखारी ने 'कारगिल युद्ध' के लिए जनरल परवेज़ मुशर्रफ को दोषी ठहराते हुए उनके कोर्ट मार्शल का आह्वान किया था। प्रधानमंत्री नवाज़ शरीफ़ ने भी नौसेना प्रमुख एडमिरल फ़सीह बोखारी के सुर में सुर मिलाते हुए कारगिल हमलों का दोष सीधे जनरल परवेज़ मुशर्रफ़ पर डाला था। परिणामस्वरूप, दिनांक 12 अक्तूबर 1999 को जनरल परवेज़ मुशर्रफ़ ने रक्तहीन तख्तापलट करके प्रधानमंत्री नवाज़ शरीफ़ को सत्ता से बेदखल कर दिया था एवम् पाकिस्तान की बागडोर अपने हाथों में लेकर स्वयं पाकिस्तान का राष्ट्रपति बन बैठा था। इससे एक बात तो प्रमाणित हो गई थी कि 'सभी देशों के पास अपनी आर्मी होती है किन्तु पाकिस्तान के विषय में एकदम उल्टा है, पाकिस्तानी आर्मी के पास देश है'।

'कारगिल युद्ध' के पीछे पाकिस्तान का एक और भी छुपा हुआ उद्देश्य था कि कश्मीर विवाद को अंतरराष्ट्रीय स्तर पर लाना। लेकिन इसमें भी पाकिस्तान को सफलता प्राप्त नहीं हुई। बल्कि अंतरराष्ट्रीय स्तर पर पाकिस्तान की विश्वसनीयता और भी कम हुई। क्योंकि कारगिल घुसपैठ भारत-पाकिस्तान के बीच तत्कालीन प्रधानमंत्री श्री अटल बिहारी बाजपेई के शांति प्रयासों के बावजूद भी पाकिस्तान कि तरफ से शुरू किया गया था। अंतरराष्ट्रीय स्तर पर पाकिस्तान की विश्वसनीयता कम होने का एक और प्रमाण यह था कि तत्कालीन अमेरिकी राष्ट्रपति बिल क्लिंटन द्वारा इस्लामाबाद को कहा गया था कि भारतीय प्रशासित

कश्मीर से सैकड़ों सशस्त्र आतंकवादियों को वापस बुलाने के लिए आवश्यक कदम उठाएँ।

लेकिन एक सच्चाई यह भी है कि यदि कारगिल घुसपैठ पाकिस्तान की बड़ी भूल थी, किन्तु यह भारतीय खुफिया विभाग की बड़ी विफलता भी थी। जिसकी बहुत बड़ी कीमत भारतीय सेना ने चुकाई थी।

नौसैनिक कार्यवाही

भारतीय नौसेना ने भी 'कारगिल युद्ध' में अति महत्त्वपूर्ण भूमिका निभाई थी। भारतीय नौसेना ने 'ऑपरेशन तलवार' के तहत पाकिस्तानी बंदरगाहों के आपूर्ति मार्ग को बंद कर दिया था। भारतीय नौसेना के पश्चिमी व पूर्वी बेड़े, उत्तरी अरब सागर में आक्रामक गश्त लगा रहे थे एवम् इससे समुद्री रास्ते के माध्यम से पाकिस्तान को मिलने वाली ईंधन व अन्य सामग्री की आपूर्ति बुरी तरह प्रभावित हुई थी। यह भी एक कारण था कि पाकिस्तान को 'कारगिल युद्ध' से अपनी सेना को पीछे हटाना पड़ा था। बाद में पाकिस्तान के तत्कालीन प्रधानमंत्री नवाज़ शरीफ़ ने भी यह खुलासा किया था कि यदि 'कारगिल युद्ध' पूर्ण पैमाने पर छिड़ जाता तो पाकिस्तान के पास मात्र 06 दिन का ही ईंधन शेष था।

एक बार फिर भारतीय सेना ने पुनः वही गलती दोहराई जो कि वह 1947, 1965 व 1971 के भारत-पाकिस्तान युद्ध में कर चुका था। अर्थात जब भारतीय सेना जीत रही थी तभी युद्ध विराम का निर्णय लिया और पाकिस्तान को समूल नष्ट करने की बजाय अगला भारत पर हमला करने की स्थिति में जिंदा छोड़ दिया। परिणामस्वरूप '1947 भारत-पाकिस्तान' युद्ध के दौरान जिस 'ऑपरेशन सिंदूर' कि नींव रखी गई थी वह 'ऑपरेशन सिंदूर' जारी रहा।

संसद भवन हमला

दिनांक 13 दिसम्बर 2001 को पाकिस्तान समर्थित दो आतंकवादी समूहों 'लश्कर-ए-तैयबा' (एल ई टी) एवम् 'जैश-ए-मोहम्मद' (जे ई एम) द्वारा नई दिल्ली में भारतीय संसद पर एक आतंकवादी हमला किया गया। (हालांकि लश्कर-ए-तैयबा ने इसमें शामिल होने से इनकार किया था।)

दिनांक 13 दिसम्बर 2001 की सुबह को पाकिस्तान संचालित 'जैश-ए-मोहम्मद' के पाँच सशस्त्र आतंकवादी, गृह मंत्रालय व सांसद का लेबल लगी कार से गेट नम्बर 12 पर सुरक्षा घेरा तोड़कर संसद भवन में घुस आए थे।

केंद्रीय रिज़र्व पुलिस बल की कांस्टेबल कमलेश कुमारी ने सबसे पहले आतंकवादियों को देखा था। जैसे ही कांस्टेबल कमलेश कुमारी ने आतंकवादियों को देखते ही शोर मचाया, आतंकवादियों ने तुरंत उन्हें गोली मार दी। जिससे मौके पर ही उनकी मृत्यु हो गई एवम् वह वीरगति को प्राप्त हुईं।

जिस समय आतंकवादियों ने संसद भवन में प्रवेश किया था, उनके प्रवेश से 40 मिनट पूर्व ही राज्य सभा व लोकसभा को स्थगित किया गया था। (लेकिन हमले के समय कई संसद सदस्य व सरकारी अधिकारी संसद भवन में मौजूद थे।) जैसे कि गृहमंत्री श्री लाल कृष्ण आडवाणी, रक्षा मंत्री श्री हरिन पाठक अभी भी संसद भवन में ही उपस्थित थे। इस प्रकार हमले के समय प्रमुख राजनेताओं सहित 100 से अधिक व्यक्ति संसद भवन के अंदर मौजूद थे।

आतंकवादी ए के-47 राइफल, ग्रेनेड लांचर, पिस्तौल व ग्रेनेड से लैस थे। आतंकवादियों ने अपनी गाड़ी उपराष्ट्रपति श्री कृष्णकांत की कार में ही घुसा दी एवम् बाहर निकलकर गोलीबारी शुरू कर दी। उपराष्ट्रपति के गार्ड और सुरक्षाकर्मियों ने आतंकवादियों पर जवाबी गोलीबारी की एवम् साथ ही संसद

भवन परिसर के गेट बंद करना शुरू कर दिये थे। इस गोलीबारी में एक आतंकवादी को गोली लगी, जिससे उसकी आत्मघाती जैकेट में विस्फोट हो गया, और एक जोरदार धमाका हुआ जिससे उस आतंकवादी के परखच्चे उड़ गये, अन्य चार आतंकवादियों को भी गोली मार दी गई। इस प्रकार संसद में तैनात भारतीय सुरक्षाकर्मियों की त्वरित कार्यवाही से पाँचों आतंकवादी मार दिये गये एवम् वहां उपस्थित सभी मंत्री व सांसद सुरक्षित बच गए। किंतु इस मामले में दिल्ली पुलिस के पाँच जवान, एक महिला कॉन्स्टेबल एवम् दो सुरक्षा गार्ड शहीद हो गए। इन्होंने अपनी जान देकर, अपने कर्तव्य को पूर्णतया निभाया, परिणामस्वरूप संसद भवन में उपस्थित समस्त नेता, मंत्री व सरकारी अधिकारी सुरक्षित रहे, उनका बाल भी बांका नहीं हुआ। इस हमले ने पुन: देश को हिलाकर रख दिया।

इन पाँचों मारे गए आतंकवादियों के नाम हमज़ा, हैदर उर्फ़ तुफैल, राणा, राज और मोहम्मद थे। बाद में, जाँच में यह पाया गया कि इन हमलावरों को पाकिस्तान से निर्देश मिले थे एवम् भारतीय संसद पर हमला पाकिस्तान की 'इंटर सर्विसेज इंटेलिजेंस' (आई एस आई) के द्वारा करवाया गया था।

भारतीय संसद पर हमले की समस्त विश्व के नेताओं ने कड़ी निंदा की। दिनांक 14 दिसम्बर 2001 को भारत सरकार ने इस हमले के लिए पाकिस्तान स्थित लश्कर-ए-तैयबा और जैश-ए-मोहम्मद आतंकवादी संगठन को दोषी ठहराया। गृहमंत्री श्री लाल कृष्ण आडवाणी ने दावा किया कि भारतीय संसद पर हमले की घटना की जाँच में जो सुराग मिले हैं, उससे यह स्पष्ट होता है कि इस हमले के पीछे पाकिस्तान व पाकिस्तान स्थित आतंकवादी संगठन जिम्मेदार हैं। उसी दिन भारत सरकार की ओर से भारत में पाकिस्तानी उच्चायुक्त 'अशरफ़ जहां गीर काज़ी' को एक ज्ञापन सौंपा गया। जिसमें भारत सरकार ने यह माँग की कि पाकिस्तान सरकार 'लश्कर-ए-तैयबा' और 'जैश-ए-मोहम्मद' आतंकवादी संगठनों की गतिविधियों को रोके।

भारतीय संसद भवन पर हुए आतंकवादी हमले के जवाब में भारत ने दिनांक 15 दिसम्बर 2001 को पाकिस्तान के खिलाफ़ **'ऑपरेशन पराक्रम'** शुरू कर

दिया। ऑपरेशन पराक्रम के तहत, भारत ने पाकिस्तान के साथ सटी अपनी सीमा पर पाँच लाख से अधिक सैनिकों को तैनात कर दिया जो कि सन् 1971 के भारत-पाकिस्तान युद्ध के पश्चात् सबसे बड़ी सैन्य तैनाती थी।

इस बीच संयुक्त राज्य अमेरिका, रूस व संयुक्त राष्ट्र द्वारा भारत को संयम बरतने के लिए कहा गया। भारतीय वित्त मंत्री यशवंत सिन्हा ने घोषणा की कि भारतीय अर्थ व्यवस्था युद्ध के लिए तैयार है। भारत-पाक सीमा पर भारतीय सैनिकों की वृद्धि द्वारा अंतर्राष्ट्रीय समुदाय को भारत की गंभीरता का संकेत दिया गया।

पाकिस्तान ने युद्ध के संकेतों को भाँपते हुए, भारतीय सेना की तैनाती के जवाब में, भारत-पाक सीमा पर तीन लाख सैनिकों को तैनात कर दिया। दिसम्बर 2001 के अंत तक, भारत व पाकिस्तान दोनों देशों ने बैलिस्टिक मिसाइलों को एक दूसरे की सीमा के पास तैनात कर दिया।

भारत ने पाकिस्तान से भारतीय उच्चायुक्त को वापस बुला लिया और पाकिस्तान से भारतीय नागरिक उड़ानों को भी रोकने का ऐलान कर दिया। भारत द्वारा उठाये गये इन कदमों से यह प्रतीत हो रहा था कि इस बार भारत, पाकिस्तान के साथ आर-पार की लड़ाई लड़ेगा एवम् पाकिस्तान को कड़ा सबक सिखाएगा। ऐसा होना भी चाहिये था, क्योंकि पाकिस्तान द्वारा भारतीय संसद भवन पर हमला करवाने जैसी बड़ी आतंकवादी कार्यवाही को अंजाम देने का दुस्साहस किया गया था।

किन्तु अफसोस, ऐसा कुछ भी नहीं हुआ। दिनांक 08 जनवरी 2002 को तत्कालीन भारतीय गृहमंत्री श्री लाल कृष्ण आडवाणी जी ने अमेरिका का दौरा किया, जहां उन्हें पाकिस्तान के राष्ट्रपति परवेज़ मुशर्रफ़ के आगामी ऐतिहासिक भाषण की विषय-वस्तु के रूप में जानकारी दी गई। दिनांक 12 जनवरी 2002 को पाकिस्तान के राष्ट्रपति परवेज़ मुशर्रफ़ द्वारा भारत के साथ तनाव कम करने के उद्देश्य से एक भाषण दिया गया, जिसमें उन्होंने पहली बार भारतीय संसद भवन,

नई दिल्ली पर हुए आतंकवादी हमले की निंदा की और इसकी तुलना 11 सितम्बर के हमलों से की। उन्होंने अपने भाषण में घोषणा की कि कश्मीर के नाम पर आतंकवाद अनुचित है एवम् पाकिस्तान अपनी सरजमीं पर चरमपंथियों का मुकाबला करेगा। पाकिस्तान बातचीत के ज़रिये कश्मीर समस्या का समाधान करेगा और किसी भी संगठन को कश्मीर समस्या के बहाने आतंकवादी कार्यवाही को अंजाम देने की इजाजत नहीं दी जाएगी। भारत की माँग के अनुसार उन्होंने, पाकिस्तान में चल रहे मदरसों के नियमन एवम् पाकिस्तान से संचालित हो रहे ज्ञात आतंकवादी समूहों पर आवश्यक प्रतिबंध लगाने की भी घोषणा की।

तत्कालीन भारतीय प्रधानमंत्री श्री अटल बिहारी वाजपेयी जी को पाकिस्तानी राष्ट्रपति परवेज़ मुशर्रफ की प्रतिज्ञाओं पर संदेह था। फिर भी उन्होंने दिनांक 14 जनवरी 2002 को पाकिस्तान पर नियोजित सैन्य हमले को अंजाम न देने का फैसला करने की ऐतिहासिक बड़ी भारी गलती की, जिसका बड़ा नुकसान भारत को भविष्य में भुगतना पड़ा। भारतीय प्रधानमंत्री श्री अटल बिहारी वाजपेयी जी को यह फैसला लेने से पहले उन सभी शहीदों की शहादत के बारे में सोचना चाहिये था, जिन्होंने पाकिस्तान के साथ हुए अनेक युद्धों में, आतंकवादी घटनाओं में, भारत की रक्षा के लिए लड़ते हुए अपने प्राण न्यौछावर कर दिये थे। पाकिस्तान को सही सबक सिखाने का यही सही समय था, जिसके माध्यम से हम सभी शहीदों को सच्ची श्रद्धांजलि अर्पित करते। किन्तु अफसोस ऐसा कुछ भी नहीं हुआ।

कालूचक नरसंहार

'ऑपरेशन पराक्रम' की विफलता के फलस्वरूप पाकिस्तान ने भारत के विरुद्ध आतंकवादी गतिविधियां जारी रखीं। जिसके कारण दिनांक 14 मई 2002 को तीन पाकिस्तानी आत्मघाती आतंकवादियों ने जम्मू के समीप कालूचक में एक भारतीय सैन्य शिविर पर हमला किया और 34 लोगों की हत्या कर दी एवम् पचास से ज्यादा लोगों को घायल कर दिया। मृतकों व घायलों में

ज्यादातर कश्मीर में तैनात भारतीय सैनिकों की पत्नियाँ और बच्चे थे। इस आतंकवादी घटना ने एक बार पुन: समूचे भारत देश को झकझोर कर रख दिया।

इसके जवाब में तत्कालीन प्रधानमंत्री श्री अटल बिहारी वाजपेयी जी ने संसद में कहा कि 'हमें इसका प्रतिकार करना होगा'।

मेरा स्वयं का यह अनुभव रहा है कि पाकिस्तान जैसा देश, किसी भी कूटनीतिक दबाव में आकर भारत के खिलाफ आतंकवादियों का समर्थन कभी भी बंद नहीं करेगा। क्योंकि मैंने पाकिस्तान की मक्कारी को बहुत करीब से देखा है। मैंने स्वयं भारतीय सेना की सेना शिक्षा कोर में एक सैनिक के रूप में 18 वर्षों तक (मार्च 1996 से फरवरी 2014 तक) अपनी सेवा प्रदान की है। मैंने अपने सेवा काल के दौरान 'कारगिल युद्ध', कश्मीर घाटी में पाकिस्तानी आतंकवादियों के विरूद्ध ऑपरेशन, ऑपरेशन पराक्रम, ऑपरेशन सद्भावना, मणिपुर व नागालैण्ड में आतंकवादियों के विरुद्ध भारतीय सेना की कार्यवाही में सक्रिय भाग लिया है।

दिनांक 12 जनवरी 2002 को पाकिस्तानी राष्ट्रपति परवेज़ मुशर्रफ के भाषण के बाद उनके दिये गये बयान कमज़ोर व कपटी सिद्ध हुए। पाकिस्तान ने भारत द्वारा माँगे गये आतंकवादियों को प्रत्यर्पित नहीं किया एवम् पाकिस्तानी आतंकवादी संगठन 'लश्कर-ए-तैयबा' को एक नए नाम के साथ चैरिटी के रूप में पाकिस्तान में भारत के विरुद्ध अपनी गतिविधियाँ जारी रखने की अनुमति दे दी गई। परिणामस्वरूप वसंत ऋतु के दौरान, पाकिस्तानी आतंकवादियों ने फिर से नियंत्रण रेखा पार करके भारत में अनाधिकृत रूप से आना शुरू कर दिया।

जून आक्रामक

दिनांक 14 मई 2002 को कालूचक नरसंहार के जवाब में भारतीय सरकार ने पाकिस्तान पर सैनिक कार्यवाही करने की योजना बनाना शुरू कर दिया था। दिनांक 18 मई 2002 को प्रधानमंत्री श्री अटल बिहारी वाजपेयी, रक्षा मंत्री

श्री जॉर्ज फर्नांन्डिस ने सैन्य अभियान महानिदेशक और सैन्य खुफ़िया प्रमुख के साथ पाकिस्तान पर सैन्य कार्यवाही कि तैयारियों का जायज़ा लिया।

चूंकि पाकिस्तान नियंत्रण रेखा पर अपनी स्थिति मजबूत कर चुका था, इसलिए यह माना गया कि सीमित सैनिक कार्यवाही से कोई लाभ नहीं होगा। अतएव यह निर्णय लिया गया कि भारत-पाकिस्तान सीमा पर एक बड़ा आक्रमण करना होगा एवम् जब पाकिस्तानी सेना भारतीय सेना के आक्रमण को रोकने के लिए अपनी सैन्य क्षमता का इस्तेमाल करने में व्यस्त रहेगी, उस समय भारतीय सेना पाकिस्तान प्रशासित कश्मीर में प्रवेश करेगी।

इसी योजना के अनुसार भारतीय सेना ने पाकिस्तान की युद्ध क्षमताओं के ठिकानों को निशाना बनाने व आतंकवादी शिविरों को नष्ट करने की दिशा में योजना तैयार की। दिनांक 23 मई से 10 जून 2002 के बीच पाकिस्तान पर बड़ी सैनिक कार्यवाही करने की योजना तैयार की गई थी जोकि जनवरी 2002 में की गई सैनिक कार्यवाही से बहुत बड़ी थी। योजनानुसार भारतीय वायु सेना को, आर्मी की 1 स्ट्राइक कोर के साथ 'शकरगढ़ बल्ज' में हमले की शुरुआत करनी थी, ताकि पाकिस्तान के 'आर्मी रिजर्व नॉर्थ' (ए आर एन) को भारतीय हमले का जवाब देने में उलझाया जा सके। जो कि मुजफ़्फ़राबाद से लाहौर तक फैला हुआ था। भारत के इस हमले का जवाब देने के लिए पाकिस्तान के प्रमुख स्ट्राइक कोर को मैदान में आना पड़ेगा एवम् इसी समय पूर्वी कमान में भारतीय सेना नियंत्रण रेखा पर आक्रामक कार्यवाही करेगी एवम् आतंकवादियों द्वारा भारत में घुसपैठ करनेवाले रणनीतिक ठिकानों पर कब्ज़ा करेगी।

दिनांक 18 मई 2002 को भारत ने पाकिस्तानी उच्चायुक्त को निष्कासित कर दिया। दिनांक 18 मई 2002 को ही जम्मू इलाके में पाकिस्तानी तोपखाने से हमला किया गया, जिससे बचने के लिए हज़ारों ग्रामीणों को भागना पड़ा। दिनांक 21 मई 2002 को हुई झड़पों में छह पाकिस्तानी सैनिक एवम् एक भारतीय सैनिक सहित दोनों पक्षों के नागरिक भी मारे गए। दिनांक 22 मई 2002 प्रधानमंत्री श्री

अटल बिहारी बाजपेयी ने एक 'निर्णायक युद्ध' के लिए तैयार रहने की घोषणा कर दी। इस घोषणा के साथ ही मामला काफ़ी गंभीर हो चुका था।

दिनांक 25 मई से 28 मई 2002 के बीच पाकिस्तान द्वारा तीन मिसाइल परीक्षण किए गए, जिनके माध्यम से पाकिस्तान ने अपनी सैन्य शक्ति का प्रदर्शन किया। इधर भारत ने भी जवाबी हमला करने के लिए अपनी परमाणु क्षमताओं की समीक्षा तक कर डाली, साथ ही दिनांक 5 जून 2002 को भारतीय विदेश मंत्री श्री जसवंत सिंह ने ऐलान किया कि भारत की ओर से पहले परमाणु शस्त्रों का इस्तेमाल नहीं किया जाएगा। दिनांक 07 जून 2002 को भारतीय वायु सेना ने लाहौर के पास एक मानव रहित हवाई विमान खो दिया, जिसे पाकिस्तान ने मार गिराने का दावा दिया था। जबकि पाकिस्तानी राष्ट्रपति परवेज़ मुशर्रफ़ ने दिनांक 5 जून 2002 को ही ऐलान किया कि वह पाकिस्तान के पहले परमाणु हथियारों का इस्तेमाल करने के अधिकार का त्याग नहीं करेंगे। मुशर्रफ़ के इस बयान के साथ ही परमाणु युद्ध होने का खतरा बढ़ गया। अब समूचे विश्व का ध्यान 'ऑपरेशन पराक्रम' की तरफ़ आकर्षित हो गया।

कूटनीति

भारत के प्रधानमंत्री श्री अटल बिहारी बाजपेयी ने अमेरिका के राष्ट्रपति जॉर्ज बुश, ब्रिटेन के राष्ट्रपति टोनी ब्लेयर, रूसी राष्ट्रपति व्लादिमीर पुतिन व फ्रांसीसी राष्ट्रपति जैक्स शिराक सहित विश्व समुदाय के नेताओं से संपर्क किया एवम् उन्हें सूचित किया कि मुशर्रफ़ अपना 12 जनवरी का भाषण नहीं दे पाएंगे और भारत देश का धैर्य जवाब दे रहा है।

इसके साथ ही विश्व स्तर पर कूटनीतिक चालें चली जाने लगीं। बुश, पुतिन, ब्लेयर व जापानी प्रधानमंत्री जुनिचिरो कोइज़ुमी ने श्री अटल बिहारी बाजपेयी से अनुरोध किया कि वह कोई भी अतिवादी कदम न उठाएं। विश्व समुदाय ने भी भारत को सूचित किया कि वह सीमा पर घुसपैठ रोकने पर अपनी स्थिति स्पष्ट करने के लिए पाकिस्तान के राष्ट्रपति परवेज़ मुशर्रफ से बातचीत करेंगे। भारत-

पाकिस्तान के बीच युद्ध स्थिति को शांत करने के प्रयास जारी रहे। रूसी राष्ट्रपति व्लादिमीर पुतिन ने मध्यस्थता करके समाधान निकालने का प्रयास किया, लेकिन कोई नतीजा नहीं निकला, कोई लाभ नहीं हुआ।

दिनांक 5 जून 2002 को अमेरिकी उप-विदेश मंत्री रिचर्ड आर्मिटेज ने पाकिस्तान का दौरा किया। उन्होंने भारत-पाकिस्तान के बीच युद्ध को रोकने के उद्देश्य से पाकिस्तान के राष्ट्रपति मुशर्रफ़ से पूछा कि क्या वह सीमा पार घुसपैठ को 'स्थायी रूप से' रोकेंगे एवम् भारत के विरुद्ध आतंकवाद के लिए इस्तेमाल किये जा रहे बुनियादी ढाँचे को ध्वस्त करने में मदद करेंगे। परवेज़ मुशर्रफ़ ने कहा कि वह ऐसा करेंगे। दिनांक 6 जून 2002 को परवेज़ मुशर्रफ़ की प्रतिबद्धता पॉवेल को बताई गई एवम् बाद में भारत को भी बताई गई। दिनांक 10 जून 2002 को पॉवेल ने मुशर्रफ़ के वैश्विक समुदाय से किये गये इस वादे की घोषणा की। **इस घोषणा के बाद ही भारत ने पाकिस्तान पर अपने हमले की योजना रद्द करने की बड़ी भारी गलती कर दी।**

रक्षा विशेषज्ञों का मानना था कि यदि यह युद्ध होता तो एकदम आमने-सामने का युद्ध होता। चूंकि भारत व पाकिस्तान, दोनों ही परमाणु सम्पन्न देश हैं। भारत ने कहा था कि वह पहले परमाणु बम का इस्तेमाल नहीं करेगा, जबकि पाकिस्तान के राष्ट्रपति परवेज़ मुशर्रफ़ ने कहा था कि वे पहले परमाणु हथियारों का इस्तेमाल करने के अधिकार का त्याग नहीं करेंगे। पाकिस्तान के राष्ट्रपति परवेज़ मुशर्रफ़ के इस ऐलान के साथ ही इस बात की पूर्ण आशंका थी कि यह युद्ध, परमाणु युद्ध में तब्दील हो सकता है। जिसके मद्देनजर जनवरी 2002 से जून 2002 के दौरान भारत द्वारा सीमा पर बड़ी सैन्य तैनाती ने अंतर्राष्ट्रीय समुदाय और पाकिस्तान, दोनों को भारत के विरुद्ध आतंकवादी घटनाओं को रोकने के लिये पाकिस्तान द्वारा आवश्यक कार्यवाही करने के लिए मजबूर कर दिया।

यदि यह युद्ध होता तो भारत की विजय निश्चित थी। इसका मुख्य कारण था संसद पर हमले को लेकर पूरा देश आक्रोश में था। भारतीय सेना, पाकिस्तान का पूर्णतया खात्मा करने के लिए तैयार थी। चूंकि मैं स्वयं इस समय भारतीय सेना में

कार्यरत था एवम् भारत-पाकिस्तान से लगी सीमा पर राजस्थान में तैनात था। हम सभी सैनिक, यही चर्चा करते थे कि यदि युद्ध हुआ तो, इस बार पाकिस्तान का नाम ही विश्व मानचित्र से मिटा देंगे। उसके लिए चाहे हमें अपने प्राण ही क्यों न देने पड़ें, प्रत्येक भारतीय सैनिक पाकिस्तान के विरुद्ध आक्रोश से भरा हुआ था। हम सभी दिन-रात युद्ध की तैयारियों में लगे हुए थे। दिन-रात की मेहनत से समस्त उपकरण व शस्त्र युद्ध के लिए तैयार थे, बंकर खोद दिये गये थे। बंकरों में हमने अपनी पोजीशन ले ली थी। भारतीय तोपों का मुंह पाकिस्तान की तरफ था। हमें आपातकाल की स्थिति में भोजन के लिए गुड़ व सूखे चने बाँट गये थे कि यदि युद्ध की स्थिति में भोजन की व्यवस्था न हो पाये तो इनसे काम चलाया जा सके। भारत-पाक सीमा से लगे आस-पास के पुरुष ग्रामीणों ने सेना के साथ मीटिंग की थी। उन्होंने सेना को आश्वासन दिया था कि आपातकालीन स्थिति में यदि सेना को भोजन व चिकित्सा की अतिरिक्त आवश्यकता होगी तो उसकी पूर्ति उनके द्वारा की जाएगी। सभी धर्मों के नागरिक पाकिस्तान के विरुद्ध भारत सरकार व भारतीय सेना का साथ देने के लिए एकत्र हो चुके थे। अनेकता में एकता का यह जीता जागता सर्वोत्तम उदाहरण मैंने अपने जीवन में साक्षात देखा था।

प्रत्येक भारतीय सैनिक गर्व का अनुभव कर रहा था कि उसे पाकिस्तान को सबक सिखाने का सुअवसर प्रदान मिल था। किसी को भी अपने प्राणों की तनिक भी परवाह नहीं थी। क्या अद्भुत नज़ारा था। शब्दों में बयान नहीं किया जा सकता है।

किंतु अफ़सोस, अंतर्राष्ट्रीय दबाव में आकर भारत ने पाकिस्तान के साथ युद्ध न करने का फैसला लिया। भारत सरकार ने धूर्त पाकिस्तानी राष्ट्रपति परवेज़ मुशर्रफ को एक और अवसर देने की पुन: भारी भूल की जिसकी बहुत बड़ी कीमत भारत ने भविष्य में अदा की। जिसके संदर्भ में हम आगे पढ़ेंगे।

अगले कुछ महीनों तक तनाव बना रहा। लेकिन दोनों सरकारों ने कश्मीर में हालात को सामान्य करना शुरू कर दिया था। अक्तूबर 2002 तक, भारत ने सीमा

से अपने सैनिकों को हटाना प्रारम्भ कर दिया था एवम् बाद में पाकिस्तान ने भी अपनी सेना को सीमा से हटाया। एवम् इस प्रकार नवम्बर 2003 में दोनों देशों के बीच युद्ध विराम पर हस्ताक्षर हुए।

गतिरोध की लागत

एक अनुमान के मुताबिक ऑपरेशन पराक्रम की लागत भारत के लिए 3 बिलियन डॉलर से 4 बिलियन डॉलर थी एवम् पाकिस्तान की लगभग 1.4 बिलियन डॉलर थी। इसके अलावा 1,55,000 भारतीय नागरिकों व 45000 पाकिस्तानी नागरिकों को विस्थापित भी किया गया था।

'ऑपरेशन पराक्रम' की विफलता का कारण

भारतीय सेना का एक सैनिक होने के नाते मुझे ऑपरेशन पराक्रम में सक्रिय रूप से भाग लेने का सुअवसर प्राप्त हुआ। यदि युद्ध होता तो मेरे वापस लौटने की संभावना न के बराबर थी, किंतु यदि मैं देश के काम आता तो ये मेरा सौभाग्य ही होता।

किंतु दुर्भाग्यवश 'ऑपरेशन पराक्रम' विफल रहा। इसकी विफलता का मुख्य कारण पाँच लाख सैनिकों, तीन बख्तरबंद डिविजनों और अन्य सहायक टुकड़ियों को पूरी तरह से सीमा पर तैनात करने में, हमें तीन हफ्तों का समय लग गया। यह तैनाती धीमी गति से की गई थी। भारत की इस धीमी गति से तैनाती के कारण पाकिस्तान को अपने तीन लाख सैनिकों व सहायक टुकड़ियों को सीमा पर तैनात करने का पर्याप्त अवसर मिल गया।

फिर भी धीमी गति से तैनाती के पश्चात् भी भारत को युद्ध करना ही चाहिये था। यदि युद्ध होता तो अवश्य विजय हमारी ही होती। किंतु ऑपरेशन पराक्रम में राजनीतिक व अन्य उच्च स्तर पर स्पष्ट उद्देश्यों का अभाव था। इस कारण भारतीय सेना को पाकिस्तान से बिना युद्ध बिना लड़े वापस बुलाने का गलत निर्णय लिया गया।

‘ऑपरेशन पराक्रम’ की विफलता के साथ ही भारत सरकार ने पाकिस्तान को भारत पर अगला आतंकवादी हमला करने, कश्मीर में भारत विरुद्ध आतंकवादी गतिविधियां जारी रखने का अवसर दे दिया। परिणामस्वरूप ‘1947 भारत-पाकिस्तान’ युद्ध के दौरान जिस ‘ऑपरेशन सिंदूर’ कि नींव रखी गई थी वह ‘ऑपरेशन सिंदूर’ जारी रहा।

मुंबई हमला

दिनांक 26 नवम्बर 2008 की रात, देश की आर्थिक राजधानी मुंबई अचानक गोलियों की आवाज से दहल उठी। पाकिस्तानी आतंकवादी संगठन 'लश्कर-ए-तैयबा' के प्रशिक्षित एवम् भारी हथियारों से लैस दस आतंकवादियों ने मुंबई के कई स्थानों व प्रतिष्ठित इमारतों पर हमला कर दिया था। यह हमला चार दिनों तक चला था। इस हमले में 160 से अधिक बेकसूर भारतीय नागरिक मारे गये थे एवम् लग लगभग 300 घायल हुए थे।

छत्रपति शिवाजी टर्मिनल, ओबेरॉय ट्राइडेंट, हॉटेल ताज पैलेस एंड टॉवर, लियोपोल्ड कैफे, कामा अस्पताल, 'नरिमन हाउस', यहूदी समुदाय केंद्र, मेट्रो सिनेमा, टाइम्स ऑफ इंडिया बिल्डिंग एवम् सेंट ज़ेवियर कॉलेज के पीछे एक लेन में आठ हमले हुए थे। मुंबई के बंदरगाह क्षेत्र में माजगाँव में व विले पार्ले में एक टैक्सी में विस्फोट हुआ था। दिनांक 28 नवम्बर 2008 की सुबह तक, ताज होटल के अलावा अन्य सभी साइटों को मुंबई पुलिस एवम् सुरक्षा बलों द्वारा सुरक्षित किया गया था। दिनांक 29 नवम्बर 2008 को भारतीय 'राष्ट्रीय सुरक्षा गार्ड' (एन एस जी - नेशनल सिक्योरिटी गार्ड) ने शेष आतंकवादियों का सफाया करने के लिए ऑपरेशन 'ब्लैक' टोर्नेडो' चलाया। ताज होटल में अंतिम आतंकवादी की मौत के साथ ऑपरेशन 'ब्लैक' टोर्नेडो समाप्त हुआ।

मुंबई हमलों की योजना और निर्देशन पाकिस्तान के अंदर से संचालित आतंकवादी संगठन 'लश्कर–ए-तैयबा' द्वारा करवाया गया था। इसके लिए 'लश्कर–ए-तैयबा' ने 10 युवा पुरुषों को 'मुंबई हमले' मिशन के लिए चुना था। इन 10 युवा पुरुषों को पाकिस्तानी सेना और 'इंटर सर्विस इंटेलिजेंस' (आई एस आई) के पूर्व अधिकारियों द्वारा हाई एंड हथियारों, विस्फोटों के इस्तेमाल इत्यादि

का उच्च स्तरीय प्रशिक्षण दिया गया था। इन आतंकवादियों को मुख्य रूप से चार लक्ष्यों के खाके उपलब्ध कराये गये थे, जिनमें ताजमहल पैलेस हॉटेल, ओबेरॉय ट्राइडेंट हॉटेल, 'नरिमन हाउस' व छत्रपति शिवाजी टर्मिनल शामिल थे।

इन 10 आतंकवादियों को हमले के दौरान मोबाइल फोन और 'वी ओ आई पी' (VoIP-Voice over Internet Protocol) के माध्यम से पाकिस्तान के अंदर से निर्देशित किया गया था। पाकिस्तान में बैठे हैंडलर्स ने Callphonex के VoIP अकाउंट के जरिए आतंकवादियों से संपर्क रखा। इस तकनीक से कॉल इंटरनेट के माध्यम से होती थी, जिससे ऐसा दिखता था कि कॉल अमेरिका से आ रही है, जब कि कॉल पाकिस्तान से आ रही होती थी। हमले से पहले लगभग 150 टेस्ट कॉल्स की गई थीं ताकि कनेक्शन और आवाज की गुणवत्ता जांची जा सके। VoIP एक ऐसी तकनीक है जिसमें आवाज़ (voice) को इंटरनेट के माध्यम से भेजा जाता है, न कि पारंपरिक टेलीफोन लाइन से। इस तकनीक में आवाज को डिजिटल डेटा (packets) में बदला जाता है। यह डेटा इंटरनेट के जरिए भेजा जाता है और रिसीवर पर फिर से आवाज में कन्वर्ट हो जाता है। इस तकनीक के माध्यम से कहीं से भी कॉल किया जा सकता है, काल सस्ता होता है, इंटरनेट पर आधारित होता है, लोकेशन छुपाना आसान होता है।

योजनानुसार मुंबई में हमला करने के इरादे के साथ ये 10 युवा आतंकवादी 26 नवम्बर 2008 को भारतीय समयानुसार रात्रि 8 बजे समुद्री रास्ते से फूलने वाली स्पीड़ बोट के माध्यम से कुलाबा, मुंबई के दो समुद्री तटों पर उतरे थे। स्थानीय मराठी भाषी मछुआरों ने इनसे पूछा कि वे कौन हैं। इन्होंने जवाब दिया कि 'अपने काम से काम रखो'। मछुआरों ने इस संदर्भ में स्थानीय पुलिस थाने में रिपोर्ट भी की, किंतु स्थानीय पुलिस ने इसको गंभीरता से नहीं लिया। यदि गंभीरता से लिया होता, और सही समय पर आवश्यक कार्रवाई की जाती, तो मुंबई हमला रोका जा सकता था। संभावित हमले से अनभिज्ञ भारत देश की आर्थिक राजधानी मायानगरी मुंबई में प्रतिदिन की भाँति एक सामान्य दिन था। जब भारतीय समयानुसार रात्रि लगभग 9.30 बजे दो सशस्त्र बंदूकधारी आतंकवादियों ने

‘‘छत्रपति शिवाजी महाराज टर्मिनल’’ के यात्री हॉल में प्रवेश किया एवम् ‘ए के 47’ राइफल से वहाँ पर उपस्थित बेकसूर मासूम भारतीय नागरिकों पर अंधाधुंध गोलियाँ बरसानी शुरू कर दीं। इस हमले में 58 मासूम मारे गये एवम् 104 मासूम घायल हो गये। स्थिति की गंभीरता को देखते हुए रेलवे घोषणाकर्ता श्री विष्णु दत्ताराम जेंडे ने घोषणा की एवम् यात्रियों को स्टेशन छोड़ने के लिये सतर्क किया और कई नागरिकों की जिंदगी बचायी। बाद में इन दोनों आतंकवादियों की पहचान इस्माइल खान और अजमल कसाब के रूप में की गई। इस्माइल खान तो भारतीय सुरक्षा बलों के हाथों मारा गया व अजमल कसाब को जिंदा पकड़ा गया था। इनका हमला ‘छत्रपति शिवाजी महाराज टर्मिनल’ पर भारतीय समयानुसार लगभग रात्रि 22.45 बजे तक चला। इसके बाद ये दोनों आतंकवादी घटनास्थल से भाग गये एवम् सड़कों पर चलने वाले भारतीय नागरिकों व पुलिस अधिकारियों पर गोलीबारी की, जिसमें आठ पुलिस अधिकारी शहीद हो गये। हमलावर आतंकवादियों ने एक पुलिस स्टेशन को पार किया। स्टेशन पर तैनात पुलिस अधिकारियों व पुलिस कर्मियों ने स्थिति की गंभीरता को समझ लिया। उन्होंने देखा कि उनके पास भारी हथियारबंद आतंकवादियों से मुकाबला करने हेतु आवश्यक हथियार व गोलाबारूद नहीं है। इसलिए उन्होंने आतंकवादियों से मुकाबला करने की बजाय, पुलिस स्टेशन की लाइट बंद कर दी। आतंकवादियों ने पुलिस स्टेशन को पार किया, फिर रोगियों को मारने के इरादे से ‘कामा’ अस्पताल की तरफ रुख़ किया। लेकिन अस्पताल के कर्मचारियों ने तुरंत कार्यवाही करते हुए सभी रोगी वार्डों को बंद कर दिया एवम् रोगियों को सुरक्षित किया।

इधर मुंबई पुलिस प्रमुख श्री हेमंत करकरे की अगुवाई में मुंबई की आतंकवादी निरोधी दल की टीम हरकत में आ चुकी थी। यह टीम पहले ‘छत्रपति शिवाजी महाराज टर्मिनल’ पहुँची और वहाँ से आतंकवादियों की तलाश में ‘कामा’ अस्पताल की तरफ़ निकल पड़ी। ‘कामा’ अस्पताल की बगल की एक गली में आतंकवादियों से मुठभेड़ में श्री हेमंत करकरे, श्री विजय साळसकर, श्री

अशोक कामटे एवम् एक अन्य पुलिस अधिकारी शहीद हो गये एवम् एकमात्र जीवित कॉन्स्टेबल श्री अरुण जाधव गंभीर रूप से घायल हो गये। अजमल कसाब व इस्माइल खान ने पुलिस वाहन को जब्त कर लिया, लेकिन बाद में उसे छोड़ दिया और एक यात्री वाहन को जब्त कर लिया और वे पुलिस रोड ब्लॉक की तरफ चले गये । कॉन्स्टेबल अरुण जाधव ने रेडियो कॉल की सहायता से आतंकवादियों की लोकेशन को ट्रेस किया, प्राप्त लोकेशन के अनुसार पुलिस का दोनों आतंकवादियों से आमने-सामने मुकाबला हुआ । जिसमें एक आतंकवादी इस्माइल खान मारा गया एवम् पुलिस कॉन्स्टेबल तुकाराम ओम्बले आतंकी अजमल कसाब से भिड़ गये । वे अजमल कसाब को पकड़ने के लिए उसके सामने चले गए । आतंकवादी अजमल कसाब को तो जिंदा पकड़ लिया किंतु कॉन्स्टेबल तुकाराम ओम्बले शहीद हो गये ।

दक्षिण मुंबई में भी कुलाबा कॉजवे स्थान पर एक लोकप्रिय रेस्तरां और बार पर भी हमला किया गया था । दो हमलावर आतंकवादियों, शोएब उर्फ सोहेब और नाज़िर उर्फ अबु उमेर ने 26 नवम्बर 2008 की शाम कैफे पर अंधाधुंध फायरिंग की जिसमें कुछ विदेशियों सहित 10 मासूमों की जान गई और कई घायल भी हो गये ।

टैक्सियों में बम विस्फोट

आतंकवादियों ने दो टैक्सियों में टाइमर बम भी लगा दिये थे जिसके कारण विले पार्ले में दिनांक 26 नवम्बर 2008 की रात्रि भारतीय समयानुसार 10 बजकर 40 मिनट (22.40 बजे) एक टैक्सी में बम विस्फोट हुआ जिसमें बेकसूर मासूम ड्राइवर सहित यात्री मारे गये । एक दूसरी टैक्सी में वाडी बंदर में दिनांक 26 नवम्बर 2008 की रात्रि ही भारतीय समयानुसार 10 बजकर 20 मिनट व 10 बजकर 25 मिनट (22.20-22.25) के इस विस्फोट में भी बेकसूर मासूम टैक्सी ड्राइवर सहित दो यात्री मारे गये एवम् 15 अन्य घायल भी हुए ।

ताज होटल और ओबेरॉय ट्राइडेंट

ताजमहल पैलेस होटल और ओबेरॉय ट्राइडेंट होटल आतंकवादियों के चार लक्षित स्थानों में से एक थे। ताज होटल में आतंकवादियों द्वारा छ: विस्फोटों की सूचना प्राप्त हुई थी। सूचनानुसार लॉबी में एक, लिफ्ट में दो, रेस्तरां में तीन विस्फोट किये गये थे जबकि ओबेरॉय ट्राइडेंट में एक विस्फोट किया गया था। होटल ताज पैलेस में अग्निशामक दलों ने पहली रात के दौरान सीढ़ी का उपयोग करके 200 बंधकों को खिड़की के रास्ते से बचाया था।

'सी एन एन' न्यूज चैनल ने 27 नवम्बर 2008 को सुबह खबर दी कि होटल ताज पैलेस में सभी बंधकों को आतंकवादियों से मुक्त करा लिया गया है एवम् महाराष्ट्र के पुलिस प्रमुख का हवाला देते हुए भी इस खबर की पुष्टि की गयी थी। जबकि उस दिन बाद में पता चला कि अभी भी होटल ताज पैलेस में दो आतंकवादी हमलावर मौजूद हैं, जिन्होंने कुछ विदेशी व भारतीय नागरिकों को बंधक बना रखा है।

'नरिमन हाउस'

'नरिमन हाउस', कुलाबा में एक चाबाद यहूदी केंद्र, मुंबई चाबाद के रूप में जाना जाता है। दो आतंकवादियों ने नरिमन हाउस पर कब्ज़ा कर लिया एवम् कई भारतीय नागरिकों को बंधक बना लिया। पुलिस ने त्वरित कार्रवाई करते हुए 'नरिमन हाउस' के आस-पास की इमारतों को खाली करवा लिया और स्थानीय निवासियों को घर के अंदर रहने को कहा गया। इसके बाद पुलिस व आतंकवादियों के बीच मुठभेड़ हुई जिसमें एक पुलिसकर्मी घायल भी हुआ। जल्दी ही यह निर्णय लिया गया कि आतंकवादियों से निपटने के लिये सेना की सहायता की आवश्यकता है। आतंकवादियों ने पास की एक लेन में ग्रेनेड़ फेंककर हमला किया किंतु सौभाग्यवश इस हमले में कोई भी हताहत नहीं हुआ।

आतंकवादियों से निपटने के लिये भारतीय सेना के 'एन एस जी कमांड़ो' दिल्ली से 'नरिमन हाउस' पहुँचे। भारतीय नौसेना के हेलीकॉप्टरों द्वारा 'नरिमन हाउस' का हवाई सर्वेक्षण किया गया एवम् आवश्यक जानकारी जुटाई गयी। अगले दिन 'एन एस जी कमांड़ो', 'नरिमन हाउस' की छत पर फास्ट रोपींग (हेलिकॉप्टर से रस्सी कि साहयता से उतरना) करके उतरे एवम् 'नरिमन हाउस' के अंदर प्रवेश किया। इसके अलावा 'नरिमन हाउस' के आसपास की इमारतों पर उपयुक्त स्थान पर स्नाइपर्स ने पोजीशन ली और 'नरिमन हाउस' को चारों तरफ से कवर कर लिया गया। लम्बी लड़ाई के पश्चात् 'एन एस जी कमांड़ोज़' ने 'नरिमन हाउस' में छिपे हुए दोनों पाकिस्तानी आतंकवादियों को मार गिराया। इस लड़ाई में 'एन एस जी कमांड़ो' हवलदार गजेंद्र सिंह जी शहीद हुए। उन्होंने अपने प्राणों की परवाह न करते हुए आतंकवादियों को मार गिराने में विशेष भूमिका निभाई थी। वीर हवलदार गजेंद्र सिंह जी को कोटि-कोटि प्रणाम है। किंतु आतंकवादियों ने मारे जाने के पूर्व 'नरिमन हाउस' में चार मासूम भारतीय नागरिकों के अलावा 6 माह की गर्भवती महिला रिबेका होल्ट्ज़बर्ग एवम् उनके पति गेबरीयल होल्ट्ज़बर्ग की हत्या कर दी थी।

हॉटेल ताज पैलेस व ओबेरॉय ट्राइडेंट में टी.वी. प्रसारण को बंद कर दिया गया क्योंकि आतंकवादी को टी.वी. प्रसारण के माध्यम से काफी जानकारी प्राप्त हो रही थी। भारतीय 'एन एस जी कमांडो' ने दिनांक 29 नवम्बर 2008 की सुबह तक सभी नौ आतंकवादियों को मार गिराया था एवम् हॉटेल ताज पैलेस व हॉटेल ओबेरॉय ट्राइडेंट को भी आतंकवादियों के चंगुल से मुक्त करवा लिया गया था। लेकिन दुर्भाग्यवश मेजर संदीप उन्नीकृष्णन हॉटेल ताज पैलेस में आतंकवादियों से लड़ते हुए शहीद हो गये। किंतु शहीद होने से पूर्व उन्होंने अपनी अंतिम सांस तक हॉटेल ताज पैलेस में छिपे आतंकवादियों से भरपूर मुकाबला किया एवम् अपने प्राणों की परवाह न करते हुए हॉटेल ताज पैलेस को आतंकवादियों से मुक्त करवाने में महत्वपूर्ण अग्रणी भूमिका निभाई, किंतु इस आतंकवादी हमले में आतंकवादियों द्वारा 32 मासूम निर्दोष लोग मारे गए।

दिनांक 26 नवम्बर 2008 के मुंबई में किए गए श्रेणीबद्ध आतंकी हमलों में, 10 पाकिस्तानी आतंकवादियों में से मात्र एक हमलावर आतंकवादी 'अजमल कसाब' जिंदा पकड़ा गया था। बाकी के 9 हमलावर आतंकवादी मारे गए थे। एक लम्बी कानूनी प्रक्रिया के पश्चात् दिनांक 21 नवंबर 2012 को अजमल कसाब को पुणे की येरवडा जेल में फ़ाँसी दे दी गई थी। रिपोर्ट के अनुसार दिनांक 26 नवम्बर 2008 को शुरू हुआ मुंबई हमला, जो कि दिनांक 29 नवम्बर 2008 की सुबह समाप्त हुआ। इस हमले में 135 भारतीय नागरिक, दो भारतीय सेना के एन एस जी कमांडो, 29 विदेशी नागरिक व 09 नापाक पाकिस्तानी आतंकी हमलावर सहित कुल 175 लोग मारे गए।

इन आतंकवादियों से निपटने के लिए केंद्र सरकार ने 200 एन एस जी कमांडोज़, सेना के 50 कमांडो एवम् सेना की पाँच टुकड़ियों को भेजा था।

दिनांक 26 नवम्बर 2008 की रात हॉटेल ताज पैलेस में छिपे हुए आतंकवादियों से एन एस जी कमांडोज की मुठभेड प्रारंभ हुई थी। दिनांक 27 नवम्बर 2008 की सुबह होटेल ओबेरॉय ट्राइडेंट व दिनांक 28 नवम्बर 2008 की सुबह राष्ट्रीय सुरक्षा बल के कमांडो 'नरिमन हाउस' में आतंकवादियों से मुकाबला करने पहुँच चुके थे। सबसे पहले होटेल ओबेरॉय ट्राइडेंट को दिनांक 29 नवम्बर 2008 की दोपहर तक आतंकवादियों से मुक्त करवा लिया गया था, दिनांक 28 नवम्बर 2008 की शाम तक 'नरिमन हाउस' के आतंकवादी भी मारे गये थे एवम् 'नरिमन हाउस' भी आतंकवादियों से मुक्त हो चुका था, जबकि हॉटेल ताज पैलेस को आतंकवादियों से मुक्त करवाने में सबसे लम्बा 58 घंटों का समय लगा। दिनांक 29 नवम्बर 2008 की सुबह हॉटेल ताज पैलेस को आतंकवादियों से मुक्त करवाया जा सका था।

मुंबई आतंकवादी हमले में हमने पुलिस तथा आतंकवाद निरोधी दस्ते के कुल मिलाकर भारत माँ के जिन वीर सपूतों को सदा के लिए खो दिया। इन वीर शहीदों के नाम इस प्रकार हैं -

आतंक निरोधी दस्ते के प्रमुख श्री हेमंत करकरे, मुठभेड विशेषज्ञ उप निरीक्षक श्री विजय साळस्कर, अतिरिक्त पुलिस आयुक्त श्री अशोक कामटे, अतिरिक्त पुलिस आयुक्त श्री सदानंद दाते, राष्ट्रीय सुरक्षा बल के कमांडो मेजर संदीप उन्नीकृष्णन, निरीक्षक श्री सुशांत शिंदे, सहायक उप निरीक्षक श्री नमासाहब भोसले, सहायक उप निरीक्षक श्री तुकाराम ओंबले, उप निरीक्षक श्री प्रकाश मोरे, उप निरीक्षक श्री दुदगुडे, कांस्टेबल श्री विजय खांडेकर, श्री जयवंत पाटिल, श्री योगेश पाटिल, श्री अंबादास पवार तथा श्री एम. सी. चौधरी एवम् हवलदार गजेंद्र सिंह हैं।

मुंबई की रक्षा के लिए, मुंबई वासियों की रक्षा के लिए, देश की आन-बयान-शान के लिए भारत माता के जिन वीर सपूतों ने अपने प्राण न्यौछावर कर दिए। उनसे परिचय करना अति आवश्यक है और उन वीरों का परिचय इस प्रकार है-

अशोक चक्र विजेता सहायक उप निरीक्षक तुकाराम ओंबले

ए एस आई तुकाराम ओंबले मुंबई पुलिस में तैनात थे। दिनांक 26 नवम्बर 2008 को रात्रि लगभग 10 बजे मुंबई की डी बी मार्ग स्थित मुंबई पुलिस को एक खबर प्राप्त हुई कि शहर में दो आतंकी एक सिल्वर कलर की स्कॉडा कार में सवार होकर आगे बढ़ रहे हैं। यह खबर प्राप्त होते ही डी बी मार्ग से 15 पुलिसकर्मियों का दल तीव्रता से दोनों आतंकवादियों को रोकने के उद्देश्य से मरीन ड्राइव पर बैरिकेडिंग के लिए आगे बढ़ा। इस पुलिस दल में ए एस आई तुकाराम ओंबले भी शामिल थे। 15 पुलिसकर्मियों के इस दल ने मरीन ड्राइव पर पहुँचकर वहाँ बैरिकेडिंग लगाकर अपनी-अपनी पोजीशन संभाल ली। कुछ समय पश्चात् ही वहाँ पर सिल्वर कलर की स्कॉडा कार आकर सामने रुकी, जिसमें दोनों आतंकवादी सवार थे। आतंकवादियों के समक्ष दो ही रास्ते थे। प्रथम कि वे

पुलिसवालों को मारकर बैरिकेडिंग को पार करते हुए आगे बढ़ें एवम् दूसरा रास्ता यह था कि वे पीछे हटकर अपना मार्ग बदलें। दोनों आतंकवादियों ने पहला रास्ता ही चुना। दोनों आतंकवादियों ने दूर से ही पुलिसवालों पर ताबड़तोड़ फायरिंग शुरू कर दी, जवाब में पुलिस टीम की भी तरफ से फायरिंग शुरू की गयी। दोनों ओर से लगातार गोलियाँ बरसायी जा रही थीं एवम् मुंबई की सड़कें दिल दहला देने वाली गोलियों की आवाज से दहल रही थीं। तभी एकदम आतंकवादियों की तरफ से फायरिंग बंद हो गयी, मुंबई पुलिस ने भी फायरिंग रोक दी, चारों तरफ एका-एक सन्नाटा छा गया। पुलिस टीम ने अनुमान लगाया कि दोनों आतंकी मारे जा चुके हैं। तभी पुलिस टीम से ए एस आई तुकाराम ओंबले, एक हाथ में लाठी लेकर आतंकवादियों की कार की तरफ आगे बढ़े। वह जाँच करना चाहते थे कि क्या दोनों आतंकी पुलिस की फायरिंग से वाकई ढेर हो चुके हैं। कार के पास पहुँचकर उन्होंने देखा कि दोनों आतंकवादी इस्माइल खान व आमिर अजमल कसाब नीचे गिरे पड़े हैं, जिससे उन्हें लगा कि दोनों आतंकवादी मर चुके हैं, जब कि सिर्फ इस्माइल खान ही पुलिस फायरिंग में मारा गया था और आमिर अजमल कसाब जिंदा था। जैसे ही ए एस आई तुकाराम ओंबले कार में अंदर की तरफ झुके (दो आतंकवादियों में से एक) आतंकवादी आमिर अजमल कसाब, जो कि मरने का नाटक कर रहा था, वह अपनी 'ए के 47' राइफल के साथ उठ खड़ा हुआ और अपनी 'ए के 47' राइफल का रुख़ ए एस आई तुकाराम ओंबले की तरफ कर दिया। इस समय पुलिस की पूरी टीम घटना स्थल से लगभग 50 फीट की दूरी पर थी।

आतंकवादी आमिर अजमल कसाब ने बिना एक पल गँवाए अपनी 'ए के 47' राइफल से ए एस आई तुकाराम ओंबले पर एकदम पास से गोलियाँ दागनी शुरू कर दीं, लेकिन इस आतंकवादी को यह अनुमान नहीं था कि उसका सामना एक वीर जांबाज़ से हो रहा है। इसके जवाब में ए एस आई तुकाराम ओंबले ने एक हाथ से अपनी लाठी से आतंकवादी आमिर अजमल कसाब पर प्रहार किया एवम् दूसरे हाथ से आतंकवादी का गिरेबान पकड़ लिया। पुलिस के डंडे से ए एस

आई तुकाराम ओंबले आतंकवादी की ‘ए के 47’ राइफल का डटकर मुकाबला कर रहे थे। ‘ए के 47’ राइफल की गोलियाँ ए एस आई तुकाराम ओंबले के शरीर के आर-पार हो रही थीं। ए एस आई तुकाराम ओंबले जी के दाहिने हाथ से पुलिस का डंडा छूट चुका था। अब उन्होंने दाहिने हाथ से ‘ए के 47’ राइफल की बैरल थामी हुई थी। वे ‘ए के 47’ राइफल का रुख़ बदलना चाहते थे, लेकिन इस बीच उन्होंने बायें हाथ से आतंकवादी का गिरेबान अभी भी मजबूती से पकड़ा हुआ था। ‘ए के 47’ राइफल की गोलियाँ लगातार उनके शरीर के आर-पार हो रही थीं किंतु फिर भी उन्होंने बायें हाथ से मजबूती से आतंकवादी का गिरेबान पकड़ रखा था तथा दाएं हाथ से ‘ए के 47’ राइफल की बैरल थामी हुई थी। 23 गोलियाँ ए एस आई तुकाराम ओंबले जी के शरीर के आर-पार हो चुकी थीं, फिर भी उन्होंने अपनी पकड़ आतंकवादी पर ढीली नहीं पड़ने दी, आतंकवादी चाहकर भी स्वयं को उनकी पकड़ से छुड़ा नहीं पा रहा था। 23 गोलियाँ खाने के बाद भी 45 वर्षीय ए एस आई तुकाराम ओंबले ने 20 वर्षीय आतंकवादी आमिर अजमल कसाब को नहीं छोड़ा। परिणामस्वरूप आतंकवादी आमिर अजमल कसाब को ज़िंदा पकड़ा जा सका एवम् उसके बयान से यह सिद्ध हो पाया कि मुंबई हमले की साज़िश पाकिस्तान द्वारा रची गयी थी।

सामने से मुंबई पुलिस की टीम हमला कर सकती थी। किंतु उद्देश्य था आतंकवादी आमिर अजमल कसाब को ज़िंदा पकड़ना एवम् यह उद्देश्य ए एस आई तुकाराम ओंबले जी की वीरता व बलिदान से ही पूरा हो पाया।

ए एस आई तुकाराम ओंबले जी ने 23 गोलियाँ खाने के बाद भी एक हाथ से आतंकवादी आमिर अजमल कसाब का गिरेबान नहीं छोड़ा एवम् दूसरे हाथ से आतंकवादी की बंदूक की बैरल को अपने हाथ में पकड़े रखा। जिसके परिणामस्वरूप पीछे खड़े अन्य पुलिसकर्मी सुरक्षित रहे और आतंकवादी आमिर अजमल कसाब को ज़िंदा पकड़ना संभव हुआ।

ए एस आई तुकाराम ओंबले जी को उनकी वीरता व शहादत के लिए मरणोपरांत ‘अशोक चक्र’ से सम्मानित किया गया। हम सभी भारतवासी ए एस

आई तुकाराम ओंबले जी के बलिदान के सदैव ऋणी रहेंगे, इन्हीं के बलिदान की वजह से आज हम सभी सुरक्षित हैं। शायद से आने वाली पीढ़ियाँ इस बात पर विश्वास नहीं कर पाएंगी कि भारत माँ की धरती पर ए एस आई तुकाराम ओंबले नाम का, एक ऐसा वीर सपूत भी पैदा हुआ था, जिसने 23 गोलियाँ अपने शरीर पर खाने के बाद भी आतंकवादी पर अपनी मजबूत पकड़ को ढीला नहीं होने दिया और आतंकवादी को ज़िंदा पकड़ना संभव हो पाया।

अशोक चक्र विजेता 'एन एस जी कमांड़ो' हवलदार गजेंद्र सिंह

दिनांक 27 नवम्बर 2008 की रात्रि एन एस सी कमांड़ो हवलदार गजेंद्र सिंह, मुंबई स्थित 'नरिमन हाउस' में आतंकवादियों से बंधकों को बचाने के लिए अपनी टीम का नेतृत्व कर रहे थे। इसके अंतर्गत उनकी टीम ने 'नरिमन हाउस' की छत पर तेजी से हमला किया। एन एस जी कमांड़ो हवलदार गजेंद्र सिंह की अगुवाई में उनकी टीम छत पर फास्ट रोपिंग करके उतरी व इमारत के अंदर प्रवेश किया। आतंकवादी 'नरिमन हाउस' इमारत में पोजीशन लेकर बैठे हुए थे। आतंकवादियों को ऊपरी मंज़िल से साफ करने के पश्चात् जब 'एन एस जी कमांड़ो' हवलदार गजेंद्र सिंह आगे बढ़े तो आतंकवादियों ने उन पर ग्रेनेड से हमला किया जिससे वे घायल हो गये, इसके साथ ही आतंकवादियों ने 'एन एस जी कमांड़ो' हवलदार गजेंद्र सिंह पर फायर भी खोल दिया, किंतु 'एन एस जी कमांड़ो' हवलदार गजेंद्र सिंह आतंकवादियों की गोलीबारी के बीच स्वयं को आगे करके आतंकवादियों पर गोलीबारी करते हुए लगातार आगे बढ़ते रहे। इस साहसिक हमले में 'एन एस जी कमांड़ो' हवलदार गजेंद्र सिंह ने एक आतंकवादी को घायल कर दिया एवम् दूसरे आतंकवादी को एक कमरे के अंदर पीछे हटने के लिए मजबूर कर दिया। यहाँ पर घायल 'एन एस जी कमांड़ो' हवलदार गजेंद्र सिंह के पास पीछे हटने का भी विकल्प था, किंतु उन्होंने आगे बढ़ने का निर्णय लिया और ग्रेनेड फेंककर अपने साथी कमांडोज के लिए आगे बढ़ने का मार्ग बनाया एवम् कई गोलियाँ खाने के बावजूद वे आगे बढ़ते गये। उन्होंने अपनी आखिरी साँस तक मुठभेड़ जारी रखी और अपने कर्तव्य का पालन करते हुए वीरगति को प्राप्त हो गये। 'एन

एस जी कमांड़ो' हवलदार गजेंद्र सिंह ने अपनी अंतिम सांस तक दुश्मन का मुकाबला किया ताकि उनकी टीम सुरक्षित रहे व आतंकवादियों को मारकर बंधकों को सुरक्षित किया जा सके। उनके बलिदान के फलस्वरूप 'नरिमन हाउस' में दोनों आतंकवादी मारे गये।

गणतंत्र दिवस 26 जनवरी 2009 को भारत के राष्ट्रपति द्वारा 'एन एस जी कमांड़ो' हवलदार गजेंद्र सिंह को उनकी बहादुरी व बलिदान के लिए मरणोपरांत 'अशोक चक्र' से सम्मानित किया गया।

अशोक चक्र विजेता मेजर संदीप उन्नीकृष्णन

मेजर संदीप उन्नीकृष्णन आपको, अपनी टीम के साथ तुरंत मुंबई पहुँचना है। यह आदेश मिलते ही मेजर संदीप उन्नीकृष्णन भी बिना एक पल गँवाये अपनी टीम के साथ देश की रक्षा के लिए मुंबई पहुँचे। मुंबई रिपोर्ट करने के पश्चात, दिनांक 26 नवम्बर 2008 की रात्रि साढ़े ग्यारह बजे मेजर संदीप उन्नीकृष्णन ने अपने पिता से फोन पर बात की थी। उन्होंने अपने पिता को यह बताया था कि मुंबई में आतंकवादियों ने होटल ताज पर हमला कर दिया है एवम् इस आतंकी हमले में (स्पेशल टास्क फोर्स) एस टी एफ चीफ श्री हेमंत करकरे भी शहीद हो गये हैं। लेकिन संदीप ने अपने पिता को यह नहीं बताया कि वे भी मुंबई में इसी संदर्भ में ऑपरेशन के लिए आये हुए हैं।

अगले दिन 27 नवम्बर 2008 को भी होटल ताज़ पैलेस में आतंकवादियों से मुठभेड़ चलती रही। उसी दिन जॉइंट कमिश्नर ऑफ पुलिस देवेन भारती के पास पुलिस कंट्रोल रूम से एक कॉल आया जिसमें उन्हें बताया गया कि प्रिया फ्लोरेंस मार्टिस नामक महिला होटल ताज में फँसी हुई है। उनके अलावा कई अन्य लोग भी होटेल ताज़ में फँसे हुए थे। जॉइंट कमिश्नर ऑफ पुलिस देवेन भारती उस समय एन एस जी के साथ को-ऑर्डिनेशन का काम देख रहे थे। उनके पास यह कॉल सीधे नहीं आई थी बल्कि हॉटेल ताज पैलेस में गोलीबारी शुरू होने के समय से ही, उसके डेटा सेंटर में छिपी प्रिया फ्लोरेंस मार्टिस ने अपने अंकल

को फोन किया था एवम् उनके अंकल ने यह सूचना मुंबई पुलिस कंट्रोल रूम को दी थी। प्रिया फ्लोरेंस मार्टिस का एक अन्य साथी मनीष सर्वर रूम के एक अन्य हिस्से में छिपा हुआ था। आतंकी हमले के बाद से उसके पास खाने पीने के लिए कुछ भी नहीं था।

जॉइंट कमिश्नर ऑफ पुलिस देवेन भारती ब्रिगेडियर सिसोदिया के साथ होटेल ताज पैलेस के रिसेप्शन पर गये, वहाँ पर उन्होंने एक्सटेंशन से प्रिया फ्लोरेंस मार्टिस का नंबर डायल किया, दूसरी तरफ से प्रिया फ्लोरेंस मार्टिस की डरी हुई आवाज सुनाई दी। जॉइंट कमिश्नर ऑफ पुलिस देवेन भारती ने ब्रिगेडियर सिसोदिया को सुनाने के लिए फोन को स्पीकर मोड पर डाल दिया, ब्रिगेडियर सिसोदिया ने पूछा, 'मैम' आप कहाँ हैं' ? प्रिया ऐसे माहौल में, घबराहट के कारण, ठीक प्रकार से कुछ भी बता पाने की स्थिति में नहीं थीं। उन्हें होटल के रास्ते भी याद नहीं आ पा रहे थे। बस वो घबराहट में इतना ही बता पाईं कि वे दूसरी मंज़िल पर हैं। ब्रिगेडियर सिसोदिया ने प्रिया को तसल्ली दी, कहा कि वे 'घबरायें नहीं, एन एस जी के कमांडो आपको सकुशल वापस ले आयेंगे'। फिर ब्रिगेडियर सिसोदिया ने प्रिया की बताई गई जगह को एक कागज़ पर लिखा एवम् अपने अन्तर्गत कार्य करने वाले कर्नल श्योराण को दे दिया।

कर्नल श्योराण ने उन्नीकृष्णन को दिया निर्देश

कर्नल श्योराण ने मेजर संदीप उन्नीकृष्णन को प्रिया को सकुशल लाने का निर्देश दिया। एन एस जी के कमांडो ने प्रिया तक पहुँचने के लिए एक वैकल्पिक रास्ता निकाला। इस हेरिटेज विंग की भव्य सीढ़ियों वाले रास्ते से दूसरी मंज़िल तक जाने के लिए मेजर संदीप उन्नीकृष्णन ने योजना बनाई। पिछली रात्रि डी सी पी नांग्रे पाटिल के सिपाहियों को इसी इलाके में आतंकियों की भारी गोलीबारी का सामना करना पड़ा था। मेजर संदीप उन्नीकृष्णन को इस संदर्भ में जानकारी नहीं थी।

मेजर संदीप उन्नीकृष्णन दिनांक 28 नवम्बर 2008 की रात्रि एक बजे अपनी एन एस जी टीम के कमांड़ो सुनील जोधा, मनोज कुमार, बाबूलाल और किशोर कुमार की टीम के साथ इसी रास्ते से ऊपर की ओर बढ़े। यह सीढी का रास्ता शानदार, काफी लम्बा व सीधा था एवम् आगे जाकर अंग्रेजी के वाय अक्षर (Y) की तरह दो भागों में बँट जाता था। कमांड़ोज़ की टीम जैसे ही ऊपर की ओर बढ़ी, अचानक अंधेरे में ताबड़तोड़ गोलीबारी हुई। आतंकवादियों को कमांड़ोज़ की हलचल का पता चल गया था, इसलिए उन्होंने ऊपर से गोलीबारी शुरू कर दी थी।

मेजर संदीप उन्नीकृष्णन ने कमांड़ो बाबूलाल और सुनील को बाईं तरफ जाने का संकेत दिया, उस तरफ भूरे रंग के विशाल दरवाजे थे, जिनसे होकर पाम लाउंज और बॉल रूम तक पहुँचा जा सकता था। कमांड़ोज़ को ग्रेनेड फेंककर पाम लाउंज का रास्ता साफ करना था। दोनों कमांड़ोज़ अपने हथियार पर दुरुस्त पकड़ बनाकर बेहद सतर्कतापूर्वक आगे की तरफ बढ़े, दोनों ने दरवाजे के पास पहुँचकर अपनी पोज़िशन संभाल ली, दरवाजे बंद थे।

तभी अचानक अंधेरे में एक ग्रेनेड़, कालीन वाली शानदार सीढ़ी पर गिरा और फट गया एवम् उसी समय ऊपर से 'ए के 47' राइफल की फायरिंग की आवाज आयी, जिसकी गोलियों ने सीढ़ियों को छेद दिया था। 'ए के 47' राइफल की गोलियाँ दरवाज़े के इर्द-गिर्द दीवारों से टकराई थीं, जिससे दीवारों का पत्थर व चूना झड़ रहा था। टाटा की प्रतिमा को घेरने वाला काँच भी गोलियों से चकनाचूर हो चुका था। लेकिन आतंकवादियों की ताबड़तोड़ फायरिंग के बावजूद भी मेजर संदीप उन्नीकृष्णन अपनी जान की परवाह न करते हुए अपने दो कमांड़ोज़ के कवर फायर के बीच आगे बढ़ रहे थे।

इसके बाद एक और ग्रेनेड ऊपर की किसी मंजिल से लहराता हुआ आया और ग्रेनाइट के फर्श पर गिरकर फटा। ग्रेनेड़ का हमला भयावह व जानलेवा था। ग्रेनेड़ में से निकले लगभग 5000 छर्रों (बॉल बेअरिंग) की चपेट में 'एन एस जी कमांड़ो' सुनील जोधा आ गये थे, उनके शरीर में गोलियाँ व छर्रे घुस गये थे, वे

गिरे एवम् सीढ़ियों से नीचे स्थित टाटा की प्रतिमा तक लुढ़कते चले गये। कवर फायर दे रहे दूसरे कमांड़ो ने बिना एक पल की देरी किये तुरंत छिपे हुए अदृश्य आतंकवादी पर गोलियों की बौछार कर दी। कमांड़ो सुनील के शरीर से बहुत तेजी से खून बह रहा था। दो गोलियाँ उनकी छाती में लगी थीं। एक गोली उनके बुलेटप्रूफ जैकेट में लगे सिरेमिक राइफल प्लेट में फँस गयी थी। उनका बाँया हाथ स्टील के बेयरिंग से बुरी तरह ज़ख्मी हो चुका था।

मेजर संदीप उन्नीकृष्णन तुरंत भागकर खून से लथपथ कमांड़ो सुनील के पास आए और कमांड़ो बाबूलाल से बोले 'इन्हें फर्स्ट एड के लिए ले जाओ' और ऐसा कहकर वह अचानक एक झटके में ऊपर पाम लाउंज तक पहुँच गए। उन्होंने अपने साथियों से कहा कि **'ऊपर मत आना, मैं इनको संभाल लूंगा'** यही शब्द मेजर संदीप उन्नीकृष्णन द्वारा अपनी टीम को दिया गया अंतिम निर्देश था।

कोई नहीं था मेजर संदीप उन्नीकृष्णन को कवर करने वाला

'एन एस जी कमांड़ो' मेजर संदीप उन्नीकृष्णन, अपने सिर पर कफ़न बांधे हुए, अपनी जान की तनिक भी परवाह न करते हुए एकदम विकराल रूप धारण कर चुके थे। उन्होंने अपनी 'एम पी 5' गन लहराते हुए एट्रियम की तरफ अंधाधुंध गोलियों की बौछार कर दी। गोलियाँ दीवारों से टकरायीं, इसके बाद वे बिना किसी कवर के पाम लाउंज की तरफ जाने के लिए सीढ़ियों पर चढ़े, यह बेहद जोखिम भरा कदम था। उन्होंने मन ही मन योजना बनायी कि उन्हें अचानक जोरदार हमला करके आतंकवादियों को ढेर कर देना है। वे इतनी सावधानी से चल रहे थे कि उनके जूतों की आवाज भी नहीं आ रही थी। उन्हें अपने सामने बिखरी हुई विशाल कुर्सियाँ व टेबल नजर आयीं।

उन्होंने अपनी कारतूस की पेटी को टटोला, पाया कि उसमें सिर्फ एक ग्रेनेड़ बचा था, उन्होंने बिना देरी किये ग्रेनेड़ का पिन निकाला और उसे लाउंज की तरफ उछाल दिया। ग्रेनेड़ काफ़ी तेज़ आवाज़ के साथ फटा, जिससे आस-पास की खिड़कियाँ चकनाचूर हो गयीं। इसी विस्फोट के बीच मेजर संदीप उन्नीकृष्णन

भीतर घुस गये। फिर उन्होंने समुद्र की तरफ खुलने वाली खिड़कियों की तरफ गोलीबारी की। उनके सामने एक भूरे रंग की ग्रिल थी, जिसने धातु के आवरण की तरह बॉल रूम को ढक रखा था। उनके लक्ष्य पर यही बॉल रूम था। मेजर संदीप उन्नीकृष्णन गलियारे में तीव्र गति से, सतर्कता पूर्वक, बिना किसी कवर के आगे बढ़ रहे थे। उन्होंने 'एम पी 5' अपने ठीक सामने तानी हुई थी। उनके बायीं तरफ बैठने की छोटी सी आंगननुमा जगह थी, जिसमें दो सोफे और एक गोल आकार का ग्रेनाइट टेबल टॉप रखा हुआ था। अचानक टेबल के नीचे से मेजर संदीप उन्नीकृष्णन पर 'ए के 47' राइफल से फायरिंग हुई। दो आवाजें लगभग एक साथ सुनाई दीं, एक 'ए के 47' की और दूसरी 'एम पी 5' गन से गोलीबारी की ?

शुक्रवार, दिनांक 28 नवम्बर 2008 प्रातः तीन बजे तक भारतीय सेना के कमांड़ोज़ की टीम ने ताज होटेल की सभी 21 मंजिलों को खाली करवाकर मुंबई पुलिस को सौंप दिया था। चार घंटे के पश्चात् दोनों होटलों में सभी कमरों से संभावित बंधकों को निकाल दिया गया था।

कर्नल श्योराण होटेल ताज की चौथी मंजिल पर पहुँचे। उन्होंने सीढ़ियों से नीचे एट्रियम में झाँककर देखा। एट्रियम के इर्द-गिर्द गलियारे क्षत-विक्षत शवों से भरे पड़े थे। कर्नल श्योराण को मेजर संदीप उन्नीकृष्णन की चिंता हो रही थी एवम् उनकी निगाहें मेजर संदीप उन्नीकृष्णन को ही खोज रही थीं। उन्होंने सबसे पहले पहली मंजिल पर देखा, जहाँ मेजर संदीप उन्नीकृष्णन की पहली मुठभेड़ आतंकवादियों से हुई थी। यहाँ चार दरवाजे थे। इनमें से एक दरवाजा टाटा की प्रतिमा की तिर्यक दिशा में था एवम् यह दरवाजा होटल के अंदर ले जाता था। मेजर संदीप उन्नीकृष्णन उल्टी दिशा में आतंकवादियों की तलाश में गये थे। कर्नल श्योराण ने मेजर संदीप उन्नीकृष्णन को तलाश करने के लिए दो टीमें बनाईं। पहली मंज़िल पर मेजर संदीप उन्नीकृष्णन को ढूँढने का कार्य प्रारम्भ कर दिया गया, पहली मंज़िल पर किचन वाले इलाके से ढूँढने का कार्य प्रारम्भ किया गया।

कर्नल श्योराण के अधिकारी लगातार मेजर संदीप उन्नीकृष्णन के मोबाइल पर डायल कर रहे थे, लेकिन वह स्विच ऑफ़ आ रहा था।

करीब साढ़े नौ बजे मेजर कांडवाल और मेजर जसरोटिया को मेजर संदीप उन्नीकृष्णन के कदमों के निशान दिखाई दिए। उन्होंने कदमों के निशानों का अनुसरण करते हुए चलना शुरू किया। दोनों अधिकारी एक जोड़ी की तरह सावधानी पूर्वक आगे बढ रहे थे। मेजर जसरोटिया ने अपनी 'एम पी 5' गन सामने की तरफ तान रखी थी एवम् मेजर कांडवाल पीछे का हिस्सा कवर करते हुए अपनी 'एम पी 5' गन ताने हुए चल रहे थे।

तभी अचानक फर्श पर एक काली आकृति पड़ी हुई दिखाई दी। वो मेजर संदीप उन्नीकृष्णन ही थे, उनकी बाईं टांग दायीं के नीचे मुड़ी हुई थी। दायां बाजू फैला हुआ था और बाया हाथ छाती पर था। उनकी देह गोलियों से छलनी थी। उनका मृत शरीर जम चुके खून के ढेर में पड़ा हुआ था। उन्हें सारी गोलियाँ बाईं तरफ से ही मारी गई थीं। जिस गोली से मेजर संदीप उन्नीकृष्णन शहीद हुए थे, वह गोली निचले जबड़े से घुसी व सिर को चीरती हुई ऊपर की तरफ निकल गई थी। वॉकी-टॉकी उनके सिर से दो फुट दूर बिल्कुल दुरुस्त अवस्था में पड़ा हुआ था, लेकिन स्विच ऑफ था। उनके अंगूठे से एक ग्रेनेड की पिन लटक रही थी।

जाँच में यह सामने आया कि आतंकवादी मूर्ति के पीछे, टेबल व सोफे के नीचे छिपे हुए थे एवम् यहीं से उन्होंने कॉरिडोर में बिना किसी कवर के आगे बढ़ते हुए मेजर संदीप उन्नीकृष्णन को 'ए के 47' राइफल से निशाना बनाया था। ऐसा नहीं था कि मेजर संदीप उन्नीकृष्णन ने इसका जवाब नहीं दिया था। उन्होंने भी अपनी 'एम पी 5' गन से हमलावर आतंकवादियों पर भरपूर गोलीबारी की थी जिसका पता इस बात से चला क्योंकि मेजर संदीप उन्नीकृष्णन की 'एम पी 5' गन की गोलियाँ दीवारों व लकड़ी के जाल में धँसी पायी गयी थीं। वहीं पर एक आतंकवादी का खून से सना जूता भी मिला था एवम् बॉल रूम की तरफ बढ़ते हुए खून के निशान बता रहे थे कि मेजर संदीप उन्नीकृष्णन ने भागते हुए आतंकवादी को जख्मी कर डाला था। आतंकवादी, उनका हथियार लेकर हॉटेल

के उत्तरी हिस्से में निकल गए थे। मेजर संदीप उन्नीकृष्णन के आखिरी हमले के कारण ही आतंकवादियों को ताज हॉटेल के उत्तरी हिस्से में रेस्तरॉं की ओर जाने के लिए मजबूर होना पड़ा था और उसके आगे जाने का कोई रास्ता नहीं था। यहीं पर इन आतंकवादियों को उत्तरी हिस्से को कवर कर रहे स्नायपर ने मार दिया था। मेजर संदीप उन्नीकृष्णन की शहादत बेकार नहीं गई थी। मेजर संदीप उन्नीकृष्णन, इस हमले में मारे गये पहले 'एन एस जी' के अधिकारी थे। उन्होंने हम सभी के लिए वीरता, त्याग व देश प्रेम की एक मिसाल कायम की।

इस दौरान डेटा सेंटर में फ़सी प्रिया फ्लोरेंस मार्टिस फोन के माध्यम से अपने मित्रों व परिजनों से लगातार सम्पर्क में थी। कर्नल श्योराण की टीम ने उन्हें व सर्वर रूम में छिपे हुए मनीष को सकुशल ढूंढ निकाला था। इस प्रकार इस हमले में 14 बंधकों की जान बचाई गई थी।

दिनांक 15 मार्च 1977 को बेंगलुरू में जन्मे मेजर संदीप उन्नीकृष्णन को मरणोपरांत 'अशोक चक्र' से सम्मानित किया गया। वह अपने माता-पिता की इकलौती संतान थे। उनके पिता ने बताया, संदीप हमेशा कहता था कि जब भी मेरी मृत्यु होगी तो कोई साधारण मृत्यु नहीं होगी। मेरी मृत्यु को पूरा देश याद रखेगा और सच में ऐसा ही हुआ। मेजर संदीप उन्नीकृष्णन आपने बिल्कुल ठीक कहा था। आप जैसा वीर न आज तक कोई हुआ है न होगा। आपको कोटि-कोटि नमन।

अशोक चक्र विजेता हेमंत करकरे

ए टी एस (एंटी टेरिरिज्म स्क्वाड) प्रमुख हेमंत करकरे, मुंबई के आतंक विरोधी दस्ते के प्रमुख थे। वह अपनी टीम के साथ 26 नवम्बर 2008 को मुंबई में हुए श्रेणीबद्ध धमाकों और आतंकवादियों कि गोलीबारी का बहादुरी से सामना करते हुए शहीद हुए थे।

1954 को जन्मे ए टी एस प्रमुख श्री हेमंत करकरे 1982 बैच के आई पी एस अधिकारी थे। इन हमलों में हमने ए टी एस प्रमुख श्री हेमंत करकरे के रूप में एक

दिलेर अधिकारी खो दिया। स्वभाव से बेहद शांत और संयमी ए टी एस प्रमुख श्री हेमंत करकरे पुलिस महकमे में अपनी ईमानदारी व निष्ठा के लिए जाने जाते थे। इन्हें मरणोपरांत **'अशोक चक्र'** से सम्मानित किया गया।

अशोक चक्र विजेता श्री विजय सालस्कर

श्री विजय सालस्कर मुंबई पुलिस में सेवारत एक वरिष्ठ पुलिस इंस्पेक्टर और एन्काउंटर स्पेशलिस्ट थे। दिनांक 26 नवम्बर 2008 को हुए मुंबई के श्रेणीबद्ध हमलों में हमने श्री विजय सालस्कर जैसा जांबाज व दिलेर अधिकारी खो दिया। इन्हें मरणोपरांत **'अशोक चक्र'** से सम्मानित किया गया।

श्री अशोक कामटे

श्री अशोक कामटे 1989 बैच के भारतीय पुलिस सेवा (आई पी एस) अधिकारी थे। वह अपने बैच के सबसे काबिल अधिकारियों में से एक थे। उनके व्यक्तित्व की विशेषता यह थी कि उनमें चुनौतियों से लड़ने की गज़ब की काबिलीयत व साहस था। उन्हें बंधकों की रिहाई के लिए आतंकवादियों से बातचीत का विशेष प्रशिक्षण प्राप्त था। यह कारण था कि उन्हें मुंबई की इमारतों में लोगों को बंधक बनाकर छिपे आतंकवादियों से बातचीत की जिम्मेदारी दी गई थी। दिनांक 26 नवम्बर 2008 को उन्हें मुंबई स्थित मेट्रो सिनेमा के पास आतंकवादियों के खिलाफ अभियान चलाने की जिम्मेदारी सौंपी गई थी। अपने कर्तव्य का पालन करते हुए वे शहीद हो गये। उन्होंने अपने जीवन की अंतिम साँस तक देश सेवा की। ऐसी कर्तव्यनिष्ठ, देशप्रेमी, वीर सपूत को मेरा कोटि-कोटि प्रणाम।

उरी हमला

पाकिस्तान स्थित 'जैश-ए-मोहम्मद' के आतंकवादियों की सहायता से कश्मीरी आतंकवादियों ने पुन: एक और आतंकवादी हमले की योजना बनाई। भारत सरकार द्वारा आतंकवादियों पर उचित व सख्त कार्यवाही न करने की वजह से आतंकवादियों के हौसले इतने अधिक बढ़ चुके थे कि अब कि बार कश्मीरी आतंकवादियों ने सीधा भारतीय सेना पर हमला करने की योजना बनाई। इसके लिए उन्होंने नियंत्रण रेखा के पास जम्मू-कश्मीर के बारामूला जिले के 'उरी' नामक स्थान पर स्थित भारतीय सेना के ब्रिगेड मुख्यालय को चुना।

इस हमले की योजना बनाने व उसे जमीन पर अंजाम देने में, पाकिस्तान स्थित 'जैश-ए-मोहम्मद' जिहादी संगठन ने महत्वपूर्ण भूमिका निभाई थी।

दिनांक 18 सितम्बर 2016 को भारतीय समयानुसार लगभग प्रातः 5.30 बजे चार आतंकवादियों ने उरी में स्थित भारतीय सेना के ब्रिगेड मुख्यालय पर घात लगाकर तीव्र हमला करने का दुस्साहस किया। आतंकवादियों ने 3 मिनट में 17 ग्रेनेड फेंके, जिससे 17 सैन्यकर्मी शहीद हो गए, लगभग 19-30 सैनिक घायल हुए एवम् सेना के टेंट से बने प्रशासनिक बेस कैम्प में बड़े पैमाने पर आग लग गई। सेना की ओर से छह घंटे चली जवाबी कार्यवाही में चारों आतंकवादी मारे गए। इस घटना ने पूरे देश को झकझोर कर रख दिया।

सर्जिकल स्ट्राइक के माध्यम से हमने आतंकवादियों के इस हमले का जवाब दिया। भारतीय सेना ने पाकिस्तान में घुसकर उनके आतंकी ठिकानों को तबाह किया एवम् सकुशल वापस भी लौटकर आयी। लेकिन इसके बाद भी आतंकवादियों ने भारतीय सेना को लगातार निशाना बनाया। क्योंकि आतंकवादियों को जड़ से उखाड़कर समाप्त करने की आवश्यकता थी।

आतंकवादियों की जड़ें इतनी गहरी हो चुकी थीं कि सर्जिकल स्ट्राइक जैसे हमलों के बाद तुरंत अगले हमले के लिए तैयार होना इनके लिए कोई बड़ी बात नहीं थी एवम् ऐसा ही हुआ।

सुंजवम हमला

अगला आतंकवादी हमला जम्मू शहर में जम्मू विश्वविद्यालय से छह किलोमीटर दूर स्थित सुंजवम सैन्य स्टेशन पर किया गया। यह हमला 2016 उरी हमले के बाद सबसे बड़ा हमला था जोकि भारतीय सेना के सैन्य स्टेशन पर सीधे किया गया था।

शनिवार, दिनांक 10 फरवरी 2018 भारतीय समयानुसार को प्रात: 4.10 बजे भारी हथियारों से लैस 3 आतंकवादी मुख्यालय 36वीं ब्रिगेड़ सैन्य स्टेशन के अंदर दाखिल हुए। हमलावर ए के-47 असाल्ट राइफल और ग्रेनेड से लैस थे। आतंकवादी सैनिक आवासीय क्वार्टर परिसर में सफलतापूर्वक दाखिल हुए एवम् अंधाधुंध गोलीबारी शुरू कर दी। इस बर्बरतापूर्वक कायराना हमले में जम्मू एण्ड कश्मीर लाइट इंफैंट्री की पहली बटालियन में कार्यरत मदनलाल चौधरी, मोहम्मद अशरफ मीर, हवलदार हबीबुल्लाह कुरैशी, नायक मंजूर अहमद एवम् लेफ्टिनंट मोहम्मद इकबाल शहीद हो गए। इसके अलावा लेफ्टिनंट मोहम्मद इकबाल के पिता भी मारे गये। एक सैनिक आर एफ नजीर की गर्भवती पत्नी को भी आतंकवादियों ने नहीं बख्शा। इस हमले के दौरान उनकी पीठ में गोली लगी। उन्हें तुरंत सैन्य अस्पताल में भर्ती कराया गया, जहां उन्होंने तुरंत बाद एक शिशु को जन्म दिया। इस हमले में महिलाओं व बच्चों सहित नौ अन्य भी घायल हुए।

भारतीय सेना द्वारा 24 घंटे चली जवाबी कार्यवाही में, सभी तीनों हमलावर आतंकवादियों को वहीं घेरकर मार गिराया गया। इस घटना से यह प्रतीत होता है कि अब इन आतंकवादियों के हौसले बहुत बढ़ चुके थे। तभी तो वे सीधे आर्मी कैम्प पर हमला करने का लगातार साहस कर रहे थे। आतंकवादियों का कोई

मज़हब नहीं होता। उनके हमले में हिंदू, मुस्लिम, सिख, महिलाएं, बच्चे सभी मारे गए।

इस घटना के बाद भारतीय रक्षा मंत्री निर्मला सीतारमण ने पाकिस्तान को कड़ा संदेश दिया कि पाकिस्तान को इस दुस्साहस की कीमत चुकानी पड़ेगी। लेकिन सिर्फ कड़े संदेश से काम नहीं चलता, कड़ी कार्यवाही भी करनी पड़ती है, जोकि अभी तक नहीं की गयी थी। इसलिए आतंकवादियों के हौसले इतने बढ़ चुके थे एवम् निकट भविष्य में भी कोई कड़ी कार्यवाही नहीं की गई, जिसके परिणामस्वरूप 14 फरवरी 2019 को पुलवामा हमला हुआ।

पुलवामा हमला

कश्मीर के अलगाववादी आतंकवादियों ने पुन: भारतीय सुरक्षाबलों पर हमला करने की एक और योजना बनाई। इसमें उन्होंने पाकिस्तान से कार्यरत 'जैश-ए-मोहम्मद' आतंकवादी संगठन की सहायता ली एवम् 'जैश-ए-मोहम्मद' ने इस हमले की रूप-रेखा बनाने एवम् कार्यान्वित करने में महत्वपूर्ण व अग्रणी भूमिका निभाई। दिनांक 14 फरवरी 2019 को प्रात: 3.30 बजे केंद्रीय रिजर्व पुलिस बल (सी आर पी एफ) के 78 वाहनों की कॉन्वाय जम्मू से राष्ट्रीय राजमार्ग 44 पर श्रीनगर के लिए रवाना हुई। इस कॉन्वाय में केंद्रीय रिजर्व पुलिस बल (सी आर पी एफ) के 2500 से अधिक सैन्य कर्मी अपने गंतव्य श्रीनगर जाने के लिए यात्रा कर रहे थे। इस कॉन्वाय को सूर्यास्त से पूर्व अपने गंतव्य तक पहुँचना था।

दिन के लगभग 3 बजकर 30 मिनट पर **पुलवामा जिले** के अवंतीपुरा के पास लेथपोरा नामक स्थान पर विस्फोटकों से भरी हुई एक कार ने कॉन्वाय की एक बस को टक्कर मार दी जिससे एक बड़ा भयंकर विस्फ़ोट हुआ। परिणामस्वरूप केंद्रीय रिजर्व पुलिस बल (सी आर पी एफ) के 40 जवान शहीद हो गए एवम् कई घायल भी हुए। पाकिस्तान स्थित 'जैश-ए-मोहम्मद' आतंकवादी समूह ने बड़े गर्व के साथ इस हमले की जिम्मेदारी ली। 'जैश-ए-मोहम्मद' ने मुख्य आरोपी, काकापोरा के निवासी, 22 वर्षीय हमलावर आदिल अहमद डार का एक वीडियो जारी किया, जिसमें वह एक वर्ष पूर्व आतंकवादी समूह में शामिल हुआ था।

बाद में खुफ़िया एजंसियों की जाँच में इस बात की पुष्टि हुई कि मुख्य आरोपी आदिल अहमद डार ही था। पूछताछ के दौरान आदिल अहमद डार के परिवार

ने उसे अंतिम बार मार्च 2018 में देखा था। एक दिन वह साइकिल पर अपने घर से निकला था एवम् उसके बाद कभी लौटकर वापस नहीं आया।

कश्मीर घाटी में 1989 से चल रहे आतंकवाद के दौरान, यह अब तक का सबसे बड़ा आतंकवादी हमला था जो कि भारत के सुरक्षा कर्मियों पर किया गया था। राष्ट्रीय सुरक्षा एजेंसी (एन आइ ए) ने हमले की जाँच हेतु 12 सदस्यीय टीम भेजी। इस टीम ने जम्मू-कश्मीर पुलिस के साथ मिलकर इस घटना की जाँच की। जाँच से ज्ञात हुआ कि इस आत्मघाती हमले में 300 किलोग्राम से अधिक विस्फोटक इस्तेमाल हुआ था। जिसमें 80 किलोग्राम 'आर डी एक्स' एक उच्च विस्फोटक और अमोनियम नाइट्रेट का उपयोग किया गया था। राष्ट्रीय सुरक्षा एजेंसी की जाँच से इस बात की भी पुष्टि की गई कि आत्मघाती हमलावर आदिल अहमद डार ही था।

इस हमले के बाद पूरे भारत में विरोध प्रदर्शन हुआ, मोमबत्ती लाइट मार्च व बंद भी आयोजित किए गए।

युनाइटेड किंगडम में भारतीय समुदाय ने लंदन में स्थित पाकिस्तानी उच्चायोग के समक्ष विरोध प्रदर्शन किया।

इस हमले के विरोध में भारतीय फिल्म उद्योग ने भी एकजुटता का प्रदर्शन किया। इंडियन सिने वर्कर्स असोसिएशन ने भारतीय फिल्म जगत में पाकिस्तानी अभिनेताओं और कलाकारों पर प्रतिबंध लगाने की घोषणा करते हुए चेतावनी देते हुए कहा कि इसका उल्लंघन करने वाले पर सख्त कार्यवाही की जाएगी।

भारतीय प्रसारक 'डी स्पोर्ट' ने भी घोषणा करते हुए कहा कि अब उनके द्वारा 'पाकिस्तान सुपर लीग' क्रिकेट मैचों का प्रसारण नहीं किया जाएगा।

इस शर्मनाक घटना के विरोध की आग भारत के विभिन्न प्रांतों में रह रहे कश्मीरी छात्रों पर भी पड़ी। इन छात्रों को पुलवामा हमले के बाद विभिन्न प्रांतों में अपने घरों अथवा किराये के घरों से बेदखल होने सहित अन्य प्रतिकूल विरोधों का सामना करना पड़ा। परिणामस्वरूप भारत के विभिन्न प्रांतों से इन विरोधों के

कारण भागने वाले कश्मीरियों की संख्या सैकड़ों तक पहुँच गई। देहरादून में स्थित दो भारतीय कॉलेजों ने भविष्य में किसी भी नए कश्मीरी छात्र को प्रवेश न देने की घोषणा की। इन कॉलेजों में से एक कॉलेज ने वहाँ कार्यरत डीन को निलंबित कर दिया क्योंकि वह डीन एक कश्मीरी थे।

55 राष्ट्रीय राइफल्स, सीआरपीएफ और एक विशेष अभियान समूह की संयुक्त टीम ने त्वरित कार्यवाही करते हुए दिनांक 18 फरवरी 2019 की सुबह-सुबह पुलवामा हमले के दोषी, दो आतंकवादियों और उन्हें शरण देनेवाले दो कश्मीरियों को मार गिराया। इनकी पहचान अब्दुल रशीद गाज़ी उर्फ कामरान, जो कि एक पाकिस्तानी नागरिक था, और आतंकवादी समूह जैश-ए-मोहम्मद (जे इ एम) का कमाण्डर था, इसने ही पुलवामा हमले के मास्टरमाइंड की भूमिका निभाई थी। दूसरा आतंकवादी हिलाल अहमद भी जैश-ए-मोहम्मद से ही संबंधित था। हालांकि इस मुठभेड़ में चार सुरक्षाकर्मी भी शहीद हो गए।

पुलवामा हमले को भारत सरकार ने गंभीरता से लिया। इसी सिलसिले में दिनांक 26 फरवरी 2019 को नियंत्रण रेखा पार की और पाकिस्तानी सीमा में अंदर घुसकर बालाकोट नामक स्थान पर स्थित आतंकवादी संगठन 'जैश-ए-मोहम्मद' के प्रशिक्षण शिविर पर हवाई हमले किए। इस हवाई हमले में 300-350 आतंकवादियों को मार गिराया गया। इस हमले में एक भारतीय मिग 21 विमान को पाकिस्तान के ऊपर मार गिराया गया था एवम् उसके पायलट को पाकिस्तान ने बंदी बना लिया था। किंतु भारतीय कूटनीतिक दबाव के कारण दिनांक 1 मार्च 2019 को पाकिस्तान सरकार ने उस पायलट को सकुशल भारत को सौंप दिया था।

पुलवामा हमले के पश्चात् भारत सरकार द्वारा की गई अपर लिखित कार्यवाही से यह संकेत मिल रहा था कि भारत सरकार ने अब यह मान लिया था कि उनके पास अब आतंकवादियों के खिलाफ़ कड़े कदम उठाने के अलावा अन्य कोई भी विकल्प शेष नहीं था।

किंतु, 1989 से चल रहे आतंकवाद की जड़ें बहुत गहरी हो चली थीं, उन्हें पाकिस्तान से हर प्रकार की सहायता भी प्राप्त हो रही थी। इसलिए बालाकोट जैसे हवाई हमलों से उन्हें कोई विशेष नुकसान नहीं हुआ और वे पुन: सक्रिय हो गए। जब कि भारत सरकार ने यह मान लिया कि बालाकोट हवाई हमले के पश्चात् आतंकवादी भविष्य में भारत में अन्य कोई भी आतंकवादी गतिविधि करने का साहस नहीं करेंगे।

अनुच्छेद 370

जम्मू-कश्मीर में आतंकवाद समाप्त करने के सिलसिले में प्रधानमंत्री श्री नरेंद्र मोदी जी के नेतृत्व में भारत सरकार ने एक और अति महत्वपूर्ण ऐतिहासिक कदम उठाया। भारत सरकार ने 05 अगस्त 2019 को राज्य सभा में एक ऐतिहासिक 'जम्मू-कश्मीर पुनर्गठन अधिनियम 2019' पेश किया। जिसमें जम्मू-कश्मीर राज्य से संविधान का 'अनुच्छेद 370' हटाने एवम् राज्य का विभाजन जम्मू-कश्मीर एवम् लद्दाख के दो केंद्र शासित क्षेत्रों के रूप में करने हेतु प्रस्ताव पारित किया गया। जिसके अनुसार जम्मू-कश्मीर केंद्र शासित क्षेत्र में अपनी विधायिका होगी जबकि लद्दाख बिना विधायिका वाला केंद्र शासित क्षेत्र होगा।

यदि संक्षेप में कहें तो दिनांक 5 अगस्त 2019 को, भारत सरकार ने जम्मू और कश्मीर को विशेष दर्जा देने वाले अनुच्छेद 370 और 35A को हटा दिया। केंद्रीय गृह मंत्री श्री अमित शाह जी ने इसे 'ऐतिहासिक भूल को ठीक करनेवाला ऐतिहासिक कदम' कहा था। उन्होंने एकदम ठीक ही कहा था। जम्मू-कश्मीर में अनुच्छेद 370 लागू करना एक बहुत बड़ी ऐतिहासिक भूल थी।

इस कार्य के लिए प्रधानमंत्री श्री नरेंद्र मोदी जी के नेतृत्व वाली भारत सरकार के लिए यह देश सदैव उनका ऋणी रहेगा एवम् इस महान कार्य को स्वर्ण अक्षरों में अंकित किया जाएगा क्योंकि यहाँ से ही जम्मू-कश्मीर की विकास यात्रा का शुभारंभ होगा एवम् इसका लाभ आने वाली पीढ़ियों के बहुमुखी विकास को मिलेगा।

इससे पूर्व भारत देश में जो भी योजना व कानून बनते थे, उनमें लिखा होता था कि यह योजना व कानून जम्मू-कश्मीर पर लागू नहीं है (Except Jammu and Kashmir), किंतु अब ऐसा नहीं होगा। यहाँ पर 'अनुच्छेद 370' के

प्रावधानों के हटने के बाद से जम्मू-कश्मीर में कश्मीर घाटी और वहाँ के निवासियों के बहुमुखी विकास का मार्ग खुल गया। ये कदम एक मास्टर स्ट्रोक था।

'अनुच्छेद 370' के प्रावधानों के हटने के फलस्वरूप जम्मू-कश्मीर ने विकास की राह पर अपने कदम रखकर चलना प्रारंभ किया ही था कि पाकिस्तान से संचालित "लश्कर-ए-तैयबा" नामक आतंकवादी संगठन ने पुन: एक बड़ी आतंकवादी घटना को कार्यान्वित करने का दुस्साहस किया और **दिनांक 22 अप्रैल 2025 को पाकिस्तान समर्थक आतंकवादी समूह 'लश्कर-ए-तैयबा' द्वारा पहलगाम में 26 हिन्दू पुरुष पर्यटकों (25 भारतीय और एक नेपाली) की क्रूरतापूर्वक हत्या कर दी , भारत की 26 बेटियों कि आँखों के सामने उनका सुहाग उजाड़ दिया।**

'ऑपरेशन सिंदूर' जारी है

'ऑपरेशन सिंदूर' जारी है – नहीं- बल्कि यह कहना उचित होगा कि 'ऑपरेशन सिंदूर' अभी भी जारी है।

'ऑपरेशन सिंदूर' दिनांक 06-07 मई 2025 की रात्रि, भारतीय समयानुसार 1:05 से 1:30 बजे के बीच प्रारम्भ नहीं हुआ बल्कि 'ऑपरेशन सिंदूर' तो उसी दिन प्रारंभ हो गया था। जिस दिन आजादी के पश्चात, पाकिस्तान ने पहली बार भारत पर आक्रमण किया था। जिसके परिणामस्वरूप 1947 भारत–पाकिस्तान युद्ध हुआ और पाक-अधिकृत कश्मीर जैसी विकराल समस्या का जन्म हुआ। भारत सरकार को चाहिए था कि उसी समय पाकिस्तान के विरुद्ध कड़ी से कड़ी कार्यवाही करके, उसे ऐसा सबक सीखना चाहिए था कि भविष्य में कभी भी वह भारत के विरुद्ध सिर उठाने का साहस न करता। लेकिन दुर्भाग्यवश, तत्कालीन भारत सरकार ने ऐसा कुछ भी नहीं किया। युद्ध के पश्चात भारत सरकार विराम अवस्था में आ गई। हम सभी भाषा, धर्म, जाती, प्रांत और आरक्षण इत्यादि के नाम पर बंटे रहे।

परिणामस्वरूप 'ऑपरेशन सिंदूर' आगे भी जारी रहा और सन 1962 में चीन ने 'हिन्दी-चीनी भाई-भाई' कहकर भारत कि पीठ में छुरा घोंपा जिसके फलस्वरूप 1962 भारत-चीन युद्ध हुआ। इस युद्ध में भारत को पराजय मिली। युद्ध कि समाप्ति के पश्चात, इस पराजय से सबक सीखते हुए, भारत सरकार को युद्ध स्तर पर चीन के विरुद्ध उचित कार्यवाही करने हेतु जुट जाना चाहिए था। लेकिन पुनः दुर्भाग्यवश ऐसा कुछ भी नहीं हुआ। हम सभी सदैव कि भाँति भाषा, धर्म, जाती, प्रांत और आरक्षण इत्यादि के नाम पर बंटे रहे। हमने राष्ट्र हित से अधिक प्राथमिकता व्यक्तिगत हित को दी। जब कि चीन ने राष्ट्र हित को

सर्वोपरि रखा और बहुमुखी विकास की राह पर तेजी से बढ़ चला बल्कि यह कहना उचित होगा कि बहुमुखी विकास की राह पर तेजी से दौड़ा। इसलिए आज हम चीन से बहुत-बहुत पीछे हैं और न चाहते हुए भी उससे करोड़ों रुपये का व्यापार करने के लिए विवश हैं।

इसलिए 'ऑपरेशन सिंदूर' आगे भी जारी रहा और वर्ष 1965 में पुनः भारत पर पाकिस्तान ने आक्रमण करने का दु:साहस किया। 1965 भारत-पाकिस्तान युद्ध में, भारत ने पाकिस्तान को बुरी तरह पराजित किया। किन्तु हमने पिछले युद्धानुभाव से कुछ सीख न लेते हुए, पुनः वही गलती दोहराई और पाकिस्तान को बहुत सस्ते में छोड़ दिया। 1965 भारत-पाकिस्तान युद्ध के समय भारत परमाणु शक्ति सम्पन्न देश था जबकि पाकिस्तान परमाणु शक्ति सम्पन्न देश नहीं था। भारत को पाकिस्तान के विरुद्ध सख्त से सख्त कार्यवाही करके, पाकिस्तान को ऐसा सबक सीखना चाहिए था कि भविष्य में पाकिस्तान कभी भी भारत के विरुद्ध सिर उठाने कि हिम्मत न करता। किन्तु दुर्भाग्यवश ऐसा कुछ भी नहीं हुआ। सदैव कि भाँति, 1965 भारत-पाकिस्तान युद्ध के पश्चात तत्कालीन भारत सरकार पुनः विश्राम अवस्था में आ गई और हम सभी अपनी आदत से मजबूर, हमेशा कि तरह भाषा, धर्म, जाती, प्रांत और आरक्षण इत्यादि में ही उलझे रहे। उधर चीन महाशक्ति बनने कि राह पर दौड़ पड़ा था। पाकिस्तान अनेक विषम परिस्थितियों का सामना करते हुए परमाणु शक्ति बनने कि राह पर चल चुका था। इधर, हम हजारों भारतीय सैनिकों के बलिदान को भुलाकर, चीन से करोड़ों रुपये का आयात करने की राह पर चल पड़े और पाकिस्तान को खेलकूद व मनोरंजन के माध्यम से करोड़ों रुपये का लाभ प्रदान करने लगे।

इन सभी कारणों से 'ऑपरेशन सिंदूर' आगे भी जारी रहा और वर्ष 1971 में पाकिस्तान ने पुनः भारत पर आक्रमण करने का दु:साहस किया और 1971 भारत-पाकिस्तान युद्ध हुआ। इस युद्ध में भारत ने पाकिस्तान को करारी शिकस्त दी जिसके फलस्वरूप विश्व के मानचित्र पर नए देश बांग्लादेश का जन्म हुआ एवं 93000 पाकिस्तानी सैनिकों को भारत ने युद्ध बंदी बनाया।

एक बार पुनः भारत को सुअवसर मिला कि वह ‘पाक अधिकृत कश्मीर’ को पाकिस्तान के अनाधिकृत कब्जे से छुड़ाकर पाकिस्तान के विरुद्ध सख्त से सख्त कार्यवाही करता। जिससे पाकिस्तान कभी भविष्य में भारत से टकराने का साहस नहीं करता। किन्तु तत्कालीन भारत सरकार ने इस सुअवसर का लाभ नहीं उठाया और पाकिस्तान के 93000 युद्धबंदियों को रिहा कर दिया। हमेशा कि तरह इस युद्ध के पश्चात भारत सरकार विराम अवस्था में आ गई। हम सभी भाषा, धर्म, जाती, प्रांत और आरक्षण इत्यादि के नाम पर बंटे रहे।

लेकिन पाकिस्तान व चीन विश्राम अवस्था में नहीं आये। इन दोनों देशों ने मिलकर पिछले युद्धों से प्राप्त अनुभवों के आधार पर भारत के विरुद्ध नई रणनीति बनाई। चूंकि पाकिस्तान को 1947, 1965 व 1971 के युद्ध में भारत से पराजय मिली थी। चीन ने 1962 के युद्ध में भारत को पराजित अवश्य किया था किन्तु इस पराजय का मुख्य कारण चीनी सेना की बहादुरी नहीं थी बल्कि ‘हिन्दी-चीनी भाई-भाई’ नारे कि आड़ में धोखे से भारत पर आक्रमण करना था। यदि एक अनुभवहीन भारतीय नौकरशाह कि गलत सलाह पर ‘फॉरवर्ड पॉलिसी’ को भारतीय सेना पर जबरदस्ती न थोपा जाता, भारतीय वायु सेना का उपयोग किया जाता और यदि भारतीय सेना भी आधुनिक अस्त्र-शस्त्र, संचार व्यवस्था व युद्ध के अन्य आवश्यक साजों-सामान से लैस होती तो चीन कभी भी भारत को पराजित नहीं कर पाता। किन्तु इस युद्ध में चीन ने भारतीय सैनिकों का वो रौद्र रूप व पराक्रम देखा कि विजय मिलने के बावजूद भी उसने 1962 के बाद कभी भी भारत से सीधे टकराने का साहस नहीं किया।

चीन देश ने रणनीति बनाई कि भविष्य में भारत से सीधे, आमने-सामने युद्ध न किया जाए बल्कि पाकिस्तान को ऋण देकर, अनुदान (फन्डिंग) करके, पाकिस्तान के माध्यम से टकराया जाये। इस उद्देश्य कि पूर्ति के लिए चीन ने पाकिस्तान कि तरफ मित्रता का हाथ बढ़ाया और पाकिस्तान, चीन की कूटनीतिक चाल में फँस गया। परिणामस्वरूप, आज पाकिस्तान सम्पूर्ण विश्व में आतंकवादी देश के नाम से जाना जाता है, विकास में बहुत पीछे रह गया है।

जबकि चीन ने अपना विकास निरंतर जारी रखा किन्तु पाकिस्तान का सर्वनाश कर दिया। इधर पाकिस्तान को भी यह समझ में आ चुका था कि वह कभी भी भारत से सीधे आमने-सामने की लड़ाई में जीत नहीं पायेगा। इसलिए उसने भारत के विरुद्ध छद्म युद्ध छेड़ दिया।

इनसे निपटने के लिए हम सभी भारतवासियों को एकजुट होना ही पड़ेगा। आज तक हम सभी भाषा, धर्म, जाती, प्रांत और आरक्षण इत्यादि के नाम पर बंटे हुए हैं। हम सभी को इससे बाहर निकलना पड़ेगा। हम सभी जिन अलग-अलग धर्मों का पालन कर रहे हैं। इन सभी धर्मों ने समाज व समय कि आवश्यकतानुसार हजारों वर्ष पूर्व जन्म लिया था और हम सभी हजारों वर्ष पूर्व जन्मे इन धर्मों का लगभग उसी स्वरूप में आज भी पालन कर रहे हैं। हम सभी की एक और मूलभूत बड़ी समस्या है कि प्रत्येक व्यक्ति यह मानता है कि उसका धर्म ही सबसे उत्तम है और सबसे ऊपर रहना चाहिए। जबकि हम सभी को एकजुट होकर, वर्तमान परिस्थितियों को देखते हुए, समय, देश व समाज कि आवश्यकतानुसार एक नए धर्म को जन्म देना चाहिए। उस नए धर्म का नाम **'देश प्रेम धर्म'** होना चाहिए और आधार भी **'देश प्रेम'** होना चाहिए। इसके लिए हमें देश के कोने-कोने में 'देश प्रेम पूजा स्थल' का निर्माण करना चाहिए। इस नए पूजा स्थल में कोई भी मूर्ति अथवा चित्र नहीं होना चाहिए, सिर्फ भारत का मानचित्र होना चाहिए। जिस प्रकार हम सभी अपने-अपने धर्मों के अनुसार, समय-समय पर विविध पूजा स्थलों पर एकत्रित होते हैं। ठीक उसी प्रकार हम सभी भारतवासियों को सप्ताह में कम से कम एक दिन निश्चित करके **'देश प्रेम पूजा स्थल'** पर एकत्रित होना चाहिए और वहाँ पर हम सभी मिलकर एक ही प्रतिज्ञा दोहराएं कि **'सबसे पहले देश धर्म उसके बाद शेष धर्म'**। क्योंकि जब देश सुरक्षित व मजबूत रहेगा तभी हम सभी सुरक्षित रहेंगे। तभी हमारी आने वाली पीढ़ियों का भविष्य सुरक्षित को पाएगा। हम सभी को दृढ़ संकल्प के साथ स्वदेशी वस्तुओं का अधिक से अधिक उपयोग करना चाहिए एवं भारत सरकार को भी स्वदेशी वस्तुओं व स्वदेशी उद्योग को बढ़ावा देने के लिए उचित कदम उठाने चाहिए। जिससे निकट भविष्य में चीन

जैसे शत्रु देश पर आयात के लिए हमारी आत्मनिर्भरता शून्य हो सके। क्योंकि हो यह रहा है कि हम चीन से बहुत बड़ी मात्र में आयात करके चीन को अरबों रुपये का व्यापार व लाभ प्रदान कर रहे हैं और चीन उन्हीं अरबों रुपयों का उपयोग भारत के विरुद्ध युद्ध व आतंकवादी कार्यवाही के लिए पाकिस्तान को अनुदान व ऋण देने के लिए कर रहा है। इसके लिए कहीं न कहीं हम सभी जिम्मेदार हैं। इस चक्र को रोकने के लिए हमें स्वदेशी को बढ़ावा देना होगा व आत्मनिर्भर बनना होगा।

भारत सरकार को यह भी दृढ़ संकल्प लेना होगा कि यदि अब भविष्य में पाकिस्तान देश, भारत के विरुद्ध प्रत्यक्ष अथवा अप्रत्यक्ष रूप से किसी भी प्रकार कि आतंकवादी कार्यवाही या गतिविधि में भाग लेता है अथवा हमला करता है तो इसके जवाब में पाकिस्तान देश को जड़ से समाप्त करके यह घोषणा की जाए कि **''1947 भारत-पाकिस्तान युद्ध के साथ जो 'ऑपरेशन सिंदूर' प्रारंभ हुआ था वह 'ऑपरेशन सिंदूर' समाप्त हुआ''**।

किन्तु अफसोस, ''ऑपरेशन सिंदूर को बीच में ही बंद करके, ऑपरेशन सिंदूर अभी जारी है'' का संदेश देने के पश्चात। सदैव की भाँति भारत सरकार विश्राम अवस्था में आ गई। जिसके परिणामस्वरूप, इतने बड़े, कभी न भूलने वाले हादसे के बाद भी ''भारत क्रिकेट कंट्रोल ऑफ बोर्ड'' (BCCI) को भारत सरकार द्वारा पाकिस्तान के साथ क्रिकेट मैच खेलने की अनुमति प्रदान की गई और 'ऑपरेशन सिंदूर' (06 मई 2025) के बाद भारत और पाकिस्तान के बीच पहला क्रिकेट मैच दिनांक 20 जुलाई 2025 को इंग्लैंड के बर्मिंघम में वर्ल्ड चैंपियनशिप ऑफ लीजेंड्स (World Championship of Legends) के तहत खेला गया था। इस मैच में दोनों देशों की 'इंडिया चैंपियंस' और 'पाकिस्तान चैंपियंस' टीमें आमने-सामने थीं। यह मैच एजबेस्टन क्रिकेट ग्राउंड (Edgbaston Cricket Ground) में खेला गया था।

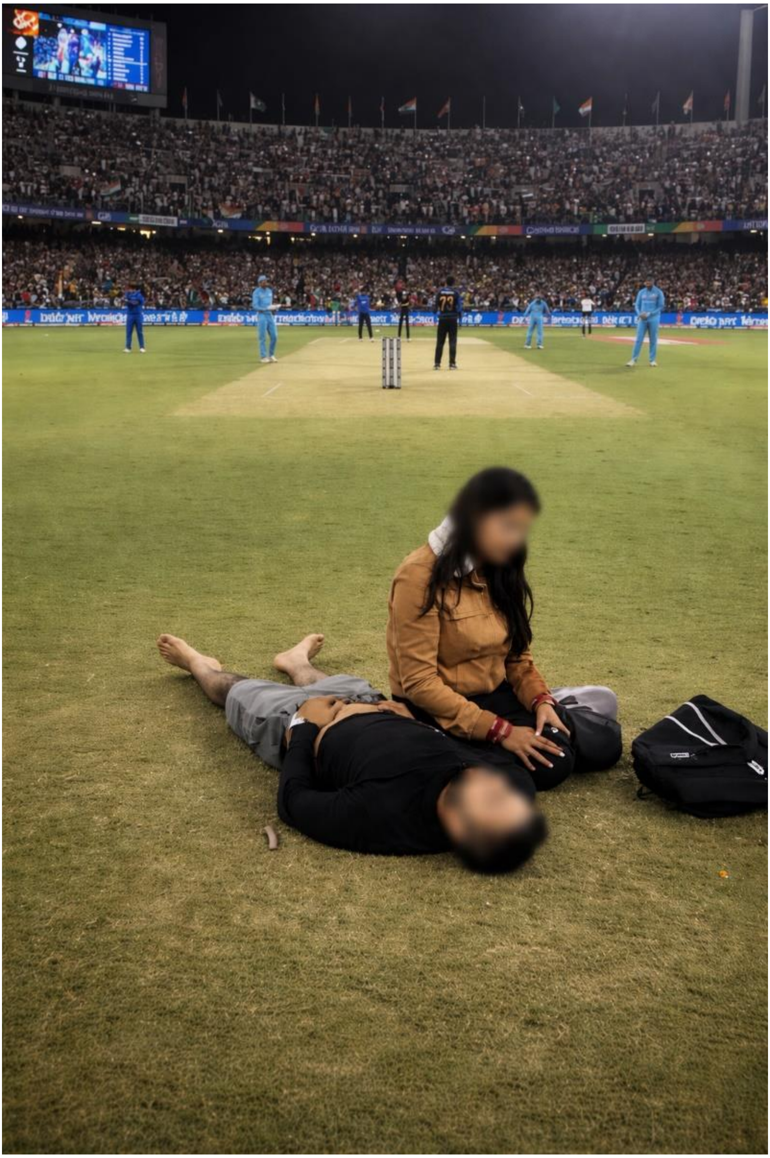

इसका अर्थ है कि हम पुनः विराम अवस्था में आ गए है। इधर हम पाकिस्तान के साथ क्रिकेट मैच खेलते रहेंगे, उधर पाकिस्तान निःसंदेह भारत के विरुद्ध अगला षडयंत्र रच रहा होगा और **दिनांक 31 दिसम्बर 1948 को भारत-**

पाकिस्तान युद्ध के साथ जिस 'ऑपरेशन सिंदूर' की नींव रखी गई थी वह 'ऑपरेशन सिंदूर जारी ही रहेगा' । अर्थात यह कहना उचित होगा 'ऑपरेशन सिंदूर' अभी भी जारी है।

जय हिन्द

जय भारत

'सबसे पहले देश धर्म उसके बाद शेष धर्म'

ऑपरेशन सिंदूर – अभी जारी है

उठो वीर सपूतों, ऑपरेशन सिंदूर अभी जारी है,
दुश्मन कायर ही नहीं, धूर्तता का भी अधिकारी है।
तुम हो सच्चे पराक्रमी, साहस जिनका आभूषण है,
पर दुश्मन दुराचारी है—जिसका हर स्वरूप विनाशकारी है।
उठो वीर सपूतों, ऑपरेशन सिंदूर अभी जारी है।

सन् 1947 और 1965 के रण में,
हमसे पराजित होकर इसने क्षमादान पाया था,
किन्तु छल और कपट से भरे उस मन ने,
1971 में फिर से सिर उठाया था।

सन् 1971 में हमने पुनः इसे हराया,
युद्धबंदी बनाकर भी जीवनदान दिलाया,
किन्तु इसकी प्रवृत्ति में न कोई सुधार आया—
यह सदा से विश्वासघाती और दुराचारी ही कहलाया।
उठो वीर सपूतों, ऑपरेशन सिंदूर अभी जारी है।

करगिल के दुर्गम शिखरों पर भी,
हमने इसे साहस से परास्त किया,
हर बार हारकर भी इसने,
न लज्जा को जाना, न ही पश्चाताप किया।

हर युद्ध में हारकर भी इसने क्षमा माँगी,
और हर बार हमने मानवता की राह थामी,
किन्तु उसी मानवता का इसने अपमान किया—
पीठ पीछे वार कर फिर से विश्वासघात किया।

संसद पर इसका कायराना आघात,
और मुंबई में निर्दोषों का संहार,
पुलवामा में वीरों पर हुआ प्रहार—
इन सबका इतिहास है साक्षी बार-बार।

किन्तु अब समय है जागने का,
हर भूल से सबक लेने का,
वीरता और संयम के संग,
नए संकल्प को गढ़ने का।

मेरा माननीय नेतृत्व से विनम्र निवेदन है—
पाकिस्तान नाम का यह शत्रु अब केवल चेतावनी का नहीं,
दृढ़ और न्यायपूर्ण निर्णय का अधिकारी है।
उठो वीर सपूतों, ऑपरेशन सिंदूर अभी जारी है।

इतिहास गवाह है—
हर क्षमा का इसने दुरुपयोग किया,
हर विश्वास के बदले हमें,
विश्वासघात ही दिया।

अब आवश्यक है—
अन्याय का अंत हो,
सत्य और साहस का वर्चस्व हो,
और राष्ट्र की रक्षा हेतु
अडिग संकल्प का उदय हो।

उठो वीर सपूतों,
समय का यही संदेश है—
धैर्य, शौर्य और नीति के संग,
अब नया इतिहास रचने का परिवेश है।

ऑपरेशन सिंदूर—अभी जारी है।

नोट- यह लेखन उन हजारों भारतीय सैनिकों को सादर श्रद्धांजलि है, जिन्होंने मातृभूमि की रक्षा के लिए अपना सम्पूर्ण जीवन समर्पित कर दिया।

कुछ वीरों का उल्लेख इस लेखन में किया गया है, किन्तु अनेकों ऐसे सैनिक भी हैं जो अपने कर्तव्य का पालन करते हुए गुमनाम शहीद हुए, तथा अनेकों ने गुमनाम जीवन व्यतीत किया । उन सभी वीरों को भी मेरा कोटि-कोटि नमन है ।

जय हिन्द

जय भारत